रसिया रसेश्वरी

(ब्रज लोक गीतेश्वरी)

(मान मंदिर सेवा, संस्थान, बरसाना)

www.MaanMandir.org

रसिया रसेश्वरी

MAAN MANDIR
SEVA SANSTHAN TRUST
Gahvarvan, Barsana, (Mathura)

११ नवम्बर २०१५
श्री मान मंदिर सेवा संस्थान
गह्वर वन, बरसाना, मथुरा, उत्तर प्रदेश

षष्ठम् संस्करण

प्रकाशित ११ नवम्बर २०१५

दीपावली, कार्तिक, अमावस्या, २०७२ विक्रमी सम्वत्

सर्वाधिकार सुरक्षित २०१५ – श्री मानमंदिर सेवा संस्थान

Copyright© 2015 by Shri Maan Mandir Sewa Sansthan

http://www.maanmandir.org

http://www.brajdhamseva.org

ms@maanmandir.org

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means, including photocopying, recording, or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of the publisher, except in the case of brief quotations embodied in critical reviews and certain other noncommercial uses permitted by copyright law. For permission requests, send email to ms@maanmandir.org

Printed in United States of America

ISBN 978-81-928073-7-9

ISBN 978-81-928073-7-9

9 788192 807379 >

अंतर्वस्तु

अंतर्वस्तु....................................i
प्रकाशकीय ii
श्री रमेश बाबा जी महाराज...............1
श्री राधा माधुरी.........................6
श्री कृष्ण माधुरी 44
गोपी माधुरी...........................117
सावन 214
झूलन माधुरी 221
श्रीकृष्ण जन्म बधाई...............236
श्री राधा जन्म बधाई...............248
दधि माधुरी 266
लाल वृषभ-दोहन...................297
साँझी लीला 299
वन विहार 302
मुरली माधुरी 303
ब्रज रस 322
महारास................................324
रास पंचाध्यायी 333
दीपावली 351
गोवर्द्धन धारण........................352
गो-चारण 357
बसंत 360
होरी माधुरी 362
पनघट माधुरी 402
चोर शिखामणि 414
बन्दर लीला......................... 419
मान लीला........................... 422
ब्याहुलौ 426
कालीदह.............................. 429
श्री गहवर-कुञ्ज लीला 432
दाऊजी 439
यमुना तट 442
धाम बरसाना 445
मोर कुटी............................. 453
नन्दगाँव.............................. 454
वात्सल्य माधुरी.................... 458
श्री राम............................... 462
आज के चोर 470
वैराग्य माधुरी 472
विरह माधुरी 495
नाम माधुरी.......................... 498
जड़भरत.............................. 505
अंतर्वस्तु............................... 509

प्रकाशकीय

जिन श्रीकृष्ण का हँसना, बोलना, चलना सब कुछ मधुरातिमधुर है, जो अपनी मधुरता से अनन्त जीवों के मन को मोहित करने वाले हैं, वे ही श्रीकृष्ण वृषभानु नन्दिनी श्रीराधारानी की चरण रज के लिए लालायित रहते हैं; ऐसी परमाराध्या श्रीराधारानी के कर-कमलों से निर्मित गहवर वन, बरसाना ब्रज-रस रसिक सन्तों का निकेतन रहा है।

इसी गहवर वन में स्थित मान मंदिर में पिछले ६२ वर्षों से विराज रहे हैं परम विरक्त संत श्री रमेश बाबा जी महाराज, जिनकी अमृतमयी वाणी का रसास्वादन करने के लिए हजारों की संख्या में भक्तगण आते हैं और पूज्य बाबा श्री के दर्शन व सत्संग पाकर अपने को कृतार्थ समझते हैं।

पूज्य बाबाश्री की आध्यात्मिक स्थिति को ही समझ पाना असम्भव है तो उसे लिखने की कल्पना भी कैसे की जा सकती है? यह पुस्तक श्रीबाबा महाराज की अलौकिक भक्तिमय वाणी को जन-साधारण तक पहुँचाने की अनधिकार चेष्टा मात्र है, ताकि इसके माध्यम से जन-जन में भक्ति का प्रचार-प्रसार हो।

श्री रमेश बाबा जी महाराज

गुण-गरिमागार, करुणा-पारावार, युगललब्ध-साकार इन विभूति विशेष गुरुप्रवर पूज्य बाबाश्री के विलक्षण विभा-वैभव के वर्णन का आद्यन्त कहाँ से हो यह विचार कर मंद मति की गति विथकित हो जाती है।

विधि हरि हर कवि कोविद बानी।
कहत साधु महिमा सकुचानी॥
सो मो सन कहि जात न कैसे।
साक बनिक मनि गुन गन जैसे॥

(रा.बा.का.दोहा.३क)

पुनरपि

जो सुख होत गोपालहि गाये।
सो सुख होत न जप तप कीन्हे कोटिक तीरथ न्हाये।

(सू. वि. प.)

अथवा

रस सागर गोविन्द नाम है रसना जो तू गाये।
तो जड़ जीव जनम की तेरी बिगड़ी हू बन जाये॥
जनम-जनम की जाये मलिनता उज्ज्वलता आ जाये॥

(बाबा श्री द्वारा रचित - ब्र. भा. मा.से संग्रहीत)

कथनाशय इस पवित्र चरित्र के लेखन से निज कर व गिरा पवित्र करने का स्वसुख व जनहित का ही प्रयास है।

अध्येतागण अवगत हों इस बात से कि यह लेख, मात्र सांकेतिक परिचय ही दे पायेगा, अशेष श्रद्धास्पद (बाबाश्री) के विषय में। सर्वगुणसमन्वित इन दिव्य-विभूति का प्रकर्ष-आर्ष जीवन-चरित्र कहीं लेखन-कथन का विषय है?

"करनी करुणासिन्धु की मुख कहत न आवै"

(सू.वि. प.)

मलिन अन्तस् में सिद्ध संतों के वास्तविक वृत्त को यथार्थ रूप से समझने की क्षमता ही कहाँ, फिर लेखन की बात तो अतीव दूर है तथापि इन लोक-लोकान्तरोत्तर विभूति के चरितामृत की श्रवणाभिलाषा ने असंख्यों के मन को निकेतन कर लिया, अतएव सार्वभौम महत् वृत्त को शब्दबद्ध करने की धृष्टता की।

तीर्थराज प्रयाग को जिन्होंने जन्मभूमि बनने का सौभाग्य-दान दिया। माता-पिता के एकमात्र पुत्र होने से उनके विशेष वात्सल्यभाजन रहे। ईश्वरीय-योजना ही मूल हेतु रही आपके अवतरण में। दीर्घकाल तक अवतरित दिव्य दम्पति स्वनामधन्य श्री बलदेव प्रसाद शुक्ल (शुक्ल भगवान् जिन्हें लोग कहते थे) एवं श्रीमती हेमेश्वरी देवी को संतान-सुख अप्राप्य रहा, संतान-प्राप्ति की इच्छा से कोलकाता के समीप तारकेश्वर में जाकर आर्त पुकार की, परिणामतः सन् १९३० पौष मास की सप्तमी को रात्रि ९:२७ बजे कन्यारत्न श्री तारकेश्वरी (दीदी जी) का अवतरण हुआ, अनन्तर दम्पत्ति को पुत्र-कामना ने व्यथित किया। पुत्र-प्राप्ति की इच्छा से कठिन यात्रा कर रामेश्वर पहुँचे, वहाँ जलान्न त्याग कर शिवाराधन में तल्लीन हो गये, पुत्र कामेष्टि महायज्ञ किया। आशुतोष हैं रामेश्वर प्रभु, उस तीव्राराधन से प्रसन्न हो तृतीय रात्रि को माता जी को सर्वजगन्निवासावास होने का वर दिया। शिवाराधन से सन् १९३८ पौष मास कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि को अभिजित मुहूर्त मध्याह्न १२ बजे अद्भुत बालक का ललाट देखते ही पिता (विश्व के प्रख्यात व प्रकाण्ड ज्योतिषाचार्य) ने कह दिया –

“यह बालक गृहस्थ ग्रहण न कर नैष्ठिक ब्रह्मचारी ही रहेगा, इसका प्रादुर्भाव जीव-जगत के निस्तार निमित्त ही हुआ है।”

वही हुआ, गुरु-शिष्य परिपाटी का निर्वाहन करते हुए शिक्षाध्ययन को तो गये किन्तु बहु अल्प काल में अध्ययन समापन भी हो गया।

"अल्पकाल विद्या बहु पायी"

गुरुजनों को गुरु बनने का श्रेय ही देना था अपने अध्ययन से। सर्वक्षेत्र कुशल इस प्रतिभा ने अपने गायन-वादन आदि ललित कलाओं से विस्मयान्वित कर दिया बड़े-बड़े संगीत-मार्तण्डों को। प्रयागराज को भी स्वल्पकाल ही यह सानिध्य सुलभ हो सका "तीर्थी कुर्वन्ति तीर्थानि" ऐसे अचिन्त्य शक्ति सम्पन्न असामान्य पुरुष का। अवतरणोद्देश्य की पूर्ति हेतु दो बार भागे जन्मभूमि छोड़कर ब्रजदेश की ओर किन्तु माँ की पकड़ अधिक मजबूत होने से सफल न हो सके। अब यह तृतीय प्रयास था, इन्द्रियातीत स्तर पर एक ऐसी प्रक्रिया

सक्रिय हुई कि तृणतोड़नवत् एक झटके में सर्वत्याग कर पुनः गति अविराम हो गई ब्रज की ओर।

चित्रकूट के निर्जन अरण्यों में प्राण-परवाह का परित्याग कर परिभ्रमण किया, सूर्यवंशमणि प्रभु श्रीराम का यह वनवास स्थल पूज्यपाद का भी वनवास स्थान रहा। "स रक्षिता रक्षति यो हि गर्भे" इस भावना से निर्भीक घूमे उन हिंसक जीवों के आतंक संभावित भयानक वनों में।

आराध्य के दर्शन को तृषान्वित नयन, उपास्य को पाने के लिए लालसान्वित हृदय अब बार-बार पाद-पद्मों को श्रीधाम बरसाने के लिए ढकेलने लगा, बस पहुँच गए बरसाना। मार्ग में अन्तस् को झकझोर देने वाली अनेकानेक विलक्षण स्थितियों का सामना किया। मार्ग का असाधारण घटना संघटित वृत्त यद्यपि अत्यधिक रोचक, प्रेरक व पुष्कल है तथापि इस दिव्य जीवन की चर्चा स्वतन्त्र रूप से भिन्न ग्रन्थ के निर्माण में ही सम्भव है अतः यहाँ तो संक्षिप्त चर्चा ही है। बरसाने में आकर तन-मन-नयन आध्यात्मिक मार्गदर्शक के अन्वेषण में तत्पर हो गए। श्रीजी ने सहयोग किया एवं निरंतर राधारससुधा सिन्धु में अवस्थित, राधा के परिधान में सुरक्षित, गौरवर्णा की शुभ्रोज्ज्वल कान्ति से आलोकित-अलंकृत युगल सौख्य में आलोडित, नाना पुराणनिगमागम के ज्ञाता, महावाणी जैसे निगूढ़ात्मक ग्रन्थ के प्राकट्यकर्ता "अनन्त श्री सम्पन्न श्री श्री प्रियाशरण जी महाराज" से शिष्यत्व स्वीकार किया।

ब्रज में भामिनी का जन्म स्थान बरसाना, बरसाने में भामिनी की निज कर निर्मित गहवर वाटिका "बीस कोस वृन्दाविपिन पुर वृषभानु उदार, तामें गहवर वाटिका जामें नित्य विहार" और उस गहवरवन में भी महासदाशया मानिनी का मन-भावन मान-स्थान श्री मानमंदिर ही मानद (बाबाश्री) को मनोनुकूल लगा। मानगढ़, ब्रह्माचलपर्वत की चार शिखरों में से एक महान शिखर है। उस समय तो यह बीहड़ स्थान दिन में भी अपनी विकरालता के कारण किसी को मंदिर प्रांगण में न आने देता। मंदिर का आंतरिक मूल स्थान चोरों को चोरी का माल छिपाने के लिए था। चौराग्रगण्य की उपासना में इन विभूति को भला चोरों से क्या भय?

भय को भगाकर भावना की – "तस्कराणां पतये नमः" –चोरों के सरदार को प्रणाम है, पाप-पंक के चोर को भी एवं रकम-बैंक के चोर को भी। ब्रजवासी चोर भी पूज्य हैं हमारे, इस भावना से भावित हो द्रोहार्हणों (द्रोह के योग्य) को भी कभी द्रोहदृष्टि से न देखा, अद्वेष्टा के जीवन्त स्वरुप जो ठहरे। फिर तो शनैः-शनैः विभूति की विद्यमत्ता ने स्थल को जाग्रत कर दिया, अध्यात्म की दिव्य सुवास से परिव्याप्त कर दिया।

जग-हित-निरत इस दिव्य जीवन ने असंख्यों को आत्मोन्नति के पथ पर आरूढ़ कर दिया एवं कर रहे हैं। श्रीमन् चैतन्यदेव के पश्चात् कलिमलदलनार्थ नामामृत की नदियाँ बहाने वाली एकमात्र विभूति के सतत् प्रयास से आज ३२ हजार से अधिक गाँवों में प्रभातफेरी के माध्यम से नाम निनादित हो रहा है। ब्रज के कृष्ण लीला सम्बंधित दिव्य वन, सरोवर, पर्वतों को सुरक्षित करने के साथ-साथ सहस्रों वृक्ष लगाकर सुसज्जित भी किया। अधिक पुरानी बात नहीं है, आपको स्मरण करा दें, सन् २००९ में "श्रीराधारानी ब्रजयात्रा" के दौरान ब्रजयात्रियों को साथ लेकर स्वयं ही बैठ गये आमरण अनशन पर, इस संकल्प के साथ कि जब तक ब्रज-पर्वतों पर हो रहे खनन द्वारा आघात को सरकार रोक नहीं देगी, मुख में जल भी नहीं जायेगा। समस्त ब्रजयात्री भी निष्ठापूर्वक अनशन लिए हुए हरिनाम-संकीर्तन करने लगे और उस समय जो उद्दाम गति से नृत्य-गान हुआ, नाम के प्रति इस अटूट आस्था का ही परिणाम था कि १२ घंटे बाद ही विजयपत्र आ गया। दिव्य विभूति के अपूर्व तेज से साम्राज्य सत्ता भी नत हो गयी। गौवंश के रक्षार्थ गत् ६ वर्ष पूर्व माताजी गौशाला का बीजारोपण किया था, देखते ही देखते आज उस वट बीज ने विशाल तरु का रूप ले लिया, जिसके आतपत्र (छाया) में आज 35, 000 से अधिक गायों का मातृवत् पालन हो रहा है। संग्रह परिग्रह से सर्वथा परे रहने वाले इन महापुरुष की भगवन्नाम ही एकमात्र सरस सम्पत्ति है।

यही करुणा करना करुणामयी मम अंत होय बरसाने में ।
पावन गह्वरवन कुञ्ज निकट रज में रज होय मिलूँ ब्रज में ॥

(बाबा श्री द्वारा रचित – ब्र.भा.मा. से संग्रहीत)

परम विरक्त होते हुए भी बड़े-बड़े कार्य संपादित किये इन ब्रज संस्कृति के एकमात्र संरक्षक, प्रवर्द्धक व उद्धारक ने। गत षष्टि (६०) वर्षों से ब्रज में क्षेत्रसन्यास (ब्रज के बाहर न जाने का प्रण) लिया एवं इस सुदृढ़ भावना से विराज रहे हैं। ब्रज, ब्रजेश व ब्रजवासी ही आपका सर्वस्व हैं। असंख्यों आपके सान्निध्य-सौभाग्य से सुरभित हुये, आपके विषय में जिनके विशेष अनुभव हैं, विलक्षण अनुभूतियाँ हैं, विविध विचार हैं, विपुल भाव साम्राज्य है, विशद अनुशीलन हैं, इस लोकोत्तर व्यक्तित्व ने विमुग्ध कर दिया है विवेकियों का हृदय। वस्तुतः कृष्णकृपालब्ध पुमान् को ही गम्य हो सकता है यह व्यक्तित्व। रसोदधि के जिस अतल-तल में आपका सहज प्रवेश है, यह अतिशयोक्ति नहीं कि रस ज्ञाताओं का हृदय भी उस तल से अस्पृष्ट ही रह गया।

आपकी आंतरिक स्थिति क्या है, यह बाहर की सहजता, सरलता को देखते हुए सर्वथा अगम्य है। आपका अन्तरंग लीलानंद, सुगुप्त भावोत्थान, युगल मिलन का सौख्य इन

गहन भाव-दशाओं का अनुमान आपके सृजित साहित्य के पठन से ही संभव है । आपकी अनुपम कृतियाँ – श्री रसिया रासेश्वरी, स्वर वंशी के शब्द नूपुर के, ब्रजभावमालिका, भक्तद्वय चरित्र इत्यादि हृदयद्रावी भावों से भावित कृतियाँ हैं ।

आपका त्रैकालिक सत्संग अनवरत चलता ही रहता है । साधक-साधु-सिद्ध सबके लिए सम्बल हैं आपके त्रैकालिक रसार्द्रवचन । दैन्य की सुरभि से सुवासित अद्भुत असमोर्ध्व रस का प्रोज्ज्वल पुंज है यह दिव्य रहनी, जो अनेकानेक पावन आध्यात्मास्वाद के लोभी मधुपों का आकर्षण केंद्र बन गयी । सैकड़ों ने छोड़ दिए घर-द्वार और अद्यावधि शरणागत हैं । ऐसा महिमान्वित-सौरभान्वित वृत्त विस्मयान्वित कर देने वाला स्वाभाविक है ।

रस-सिद्ध-संतों की परम्परा इस ब्रजभूमि पर कभी विच्छिन्न नहीं हो पायी । श्रीजी की यह गह्वर वाटिका जो कभी पुष्पविहीन नहीं होती, शीत हो या ग्रीष्म, पतझड़ हो या पावस, एक न एक पुष्प तो आराध्य के आराधन हेतु प्रस्फुटित ही रहता है । आज भी इस अजरामर, सुन्दरतम, शुचितम, महत्तम, पुष्प (बाबाश्री) का जग स्वस्तिवाचन कर रहा है । आपके अपरिसीम उपकारों के लिए हमारा अनवरत वंदन, अनुक्षण प्रणति भी न्यून है ।

प्रार्थना है अवतरित प्रीति-प्रतिमा विभूति से कि निज पादाम्बुजों का अनुगमन करने की शक्ति हम सबको प्रदान करें ।

श्री राधा माधुरी

मेरौ राधा नाम सहारौ, जैसे प्यासे कूँ पानी ॥

राधा नाम रटैं नन्द-नन्दन
याते श्याम भये जग वन्दन
सिद्ध कियो मुरली की तानन
राधा नाम प्रताप सबै मोहैं मुरली रानी।
शिव ने श्री राधा जस गायो
याते महारास रस पायो
रासेश्वरी कृपा दरसायो
राधा नाम प्रताप कृष्ण-रस सब जग ने जानी।
राधा नाम जप्यो ब्रज गोपिन
कृष्ण प्रेमरस चाख्यो आलिन
जग में पूज्य भई ये ग्वालिन
जिनकी चरणधूर विधि माँगैं सनकादिक ज्ञानी।
वृन्दावन राधा महारानी
पक्षी बोलें राधा बानी
ये लीला देवन नाय जानी
राधा नाम रटै सो देखै लीला रस खानी ॥

हमकूँ कहा और सौं काम, हमारी राधे महारानी॥

जाके बल हरि रास रचायो
जाके बल रसराज कहायो
जाके बल हरि बेनु बजायो
जाके चरनन की सेवा हरि करैं भाग मानी।
गहवर वन राजैं श्री राधा
कृष्ण प्रेम रस सार अगाधा
जाके नाम कटैं सब बाधा
श्री बरसानो नित्य धाम वृन्दावन रजधानी।
धन-दौलत की आस नेंक ना
विषय भोग सौं गरज नेंक ना
मुक्ति हू की चाह नेंक ना
प्रेम पंथ में देखैं ना हम राजा और रानी।
शब्द ब्रह्म नूपुर रव व्यापक
पद-नख पार ब्रह्महि प्रकाशक
पद-रज परा भक्ति कौ दायक
कर्म धर्म अन्याश्रय छाड़यो कृपा देओ दानी॥

राधा रानी को सहारौ मेरौ सांचौ है भली॥

श्री राधा वृषभानु कुमारी
महारानी हैं भोरी भारी
चंदा हू ते रूप उजारी
सदा विराजैं बरसाने में कीरति की लली।
कबहूँ खेलैं पीरी पोखर
कदमन छैयाँ प्रेम सरोवर
सुन्दर है वृषभानु सरोवर
ठौर-ठौर पै लता झूम रही कुञ्जन की गली।
कबहूँ आवै खोर साँकरी
मोहन जहाँ मथनिया फोरी
दधि ते भीजी ब्रज की गोरी
श्री राधा उरजन की शोभा देखैं श्याम छली।
श्री गहवरवन नित्य विहारैं
जहाँ साँवरो डगर बुहारैं
राधा राधा नाम उचारैं
फूलन ते सिंगार करैं लै कमलन की कली॥

सोने के द्वै कमल खिले हैं राधा रानी के चरण ॥

प्रेम पंक में हैं उपजाये
रस के जल में हैं सरसाये
लीला लहर झकोरा खाये
भानुलली मुख भानु देखके खिले सुनहरे वरन ।
अंगुली दश पंखुडी खिलीं हैं
दश नख चन्द्रन सों विलसीं हैं
जगर मगर छवि किरनमयी है
कृष्ण भ्रमर गुञ्जार करत नित पीवत रस की झरन ।
दिव्य सुगन्ध उठे अति भारी
श्री गहवरवन कुञ्ज मझारी
आनन्द वायु मोद संचारी
सहचरि देखत यह शोभा मतवारी छवि की भरन ।
शाप शोक अघ सबहि नसावैं
त्रिविध ताप की जरन बुझावैं
रस श्रृंगार दिव्य दरसावैं
युगल प्रेम के दाता जे जन लेवैं इनकी सरन ॥

राधे रानी के नथ पै मोर, नाँचैं थेई-थेई ॥

नीली साड़ी सुरंग रंग अँगिया
साड़ी पै कारी कोर, नाँचैं थेई-थेई ।
गोरे-गोरे हाथन नीली-नीली चुरियाँ
मेंहदी रची है चित्तचोर, नाँचैं थेई-थेई ।
उंगरी बीच नगीना चमकै
गहनन की घनघोर, नाँचैं थेई-थेई ।
झालरदार कौंधनी पायल
बिछुआ कर रहे शोर, नाँचैं थेई-थेई ।
झुकि-झुकि झाँक रहीं सब सखियाँ
बढ़ै आनन्द हिलोर, नाँचैं थेई-थेई ॥

सरस मधुर वृषभानु लाड़िली ॥

गहवर कुंजन केलि करत नित
हरि की चित्त चाड़िली ।
मंदिर मान करति पिय चरननि
लोटत मिलत माड़िली ।
कबहूँ कृपा करेंगी राधा
आशा और छाड़िली ॥

राधे अलबेली सरकार, रटे जा राधे श्रीराधे ॥

श्री बरसाने राज रही हैं
ब्रजमण्डल में गाज रही हैं
है वृन्दावन दरबार, रटे जा राधे श्रीराधे ।
महारानी कौ बड़ौ सहारौ
येई भरोसो मोकूँ भारो
ये नैया है जाये पार, रटे जा राधे श्रीराधे ।
माखन जैसो उनको हिरदय
जाय पिघल झट करदें निर्भय
अति भोरी है सरकार, रटे जा राधे श्रीराधे ।
ब्रह्मा विष्णु शम्भु हू खोजत
इनकी दया श्याम हू माँगत
नित बरसावै रस-धार, रटे जा राधे श्रीराधे ।
सब आत्मन के हैं हरि आत्मा
श्री राधा उनकी हू आत्मा
यह कियो रसिक निरधार, रटे जा राधे श्रीराधे ॥

जै जै वृषभानु दुलार, महारानी ब्रज के मण्डल की ॥

माथे बंधी चन्द्रिका चमकै
जामें हीरा दम-दम दमकै
ये शीश फूल छविदार, महारानी ब्रज के ... ।
कानन झुमके बड़े सलौने
कजरारे नैंना अनहोने
मुख पै दऊँ चन्दा वार, महारानी ब्रज के ... ।
बाँह भरा बाजूबंद सोहै
कञ्चन चूरी हरि को मोहै
मेंहदी की छटा अपार, महारानी ब्रज के ... ।
कंठ सिरी और दुलरी तिलरी
अँगिया हीरा रतन जड़ीली
गल में मोतियन को हार, महारानी ब्रज के ... ।
पचरंग फरिया कैसो नीको
नीली सारी काम जरी कौ
है लहँगा घूम-घुमार, महारानी ब्रज के ... ॥

वृषभानु कुँवरि सुखधाम, जैजै कीरति सुकुमारी की ॥

भानु बबा की बड़ी लाड़िली
कीरति मैया कहे हठीली
बेटी जेंयवे में सकुचीली
भैया श्रीदामा नाम, जै जै कीरति... ।
लाली भोर भये हू सोवै
कीरति मैया आय जगावै
लड्डुवन ते नित भोग लगावै
उठ चमक्यो सूरज घाम, जै जै कीरति... ।
पीरी पोखर खेल मचावै
गुञ्जा और मेवा लै जावै
बेर भये हू घर नहिं आवै
बोलन जावै श्रीदाम, जै जै कीरति... ।
कबहूँ निकसै गली साँकरी
कबहूँ नौबारी चौबारी
कबहूँ गहवर वन की क्यारी
आय मिलै घनश्याम, जै जै कीरति... ॥

शरण में तेरी आयो हेरी बरसाने की ॥

जा प्रभु कौ खोजत सुर मुनि नर
जोगी जपी तपी विद्याधर
भटकत फिरैं प्रेमी जन दर दर
खोज नहिं कोऊ पायौ, हे री बरसाने की ।
ताको बाँध्यो लट-लटकन में
कंचुकि और नीवी बन्धन में
तिरछे नैनन की चितवन में
भेद वेदहु नहिं पायो, हे री बरसाने की ।
मृगमदबिन्दु भाल करि राख्यो
चोवा करि उर चुपरि जु राख्यो
अंजन कर नैनन में राख्यो
श्याम जब तेंई कहायौ, हे री बरसाने की ।
यह रस हियरे में तब आवै
भानु नन्दिनी जब ढरकावै
नहिं तो रंचक हू नहिं पावै
किशोरी कौ जस गायौ, हे री बरसाने की ॥

मेरी टेर सुनो महारानी, रानी राधे जू महाराज ॥

कबते द्वार पर्‌यो हूँ तेरे
तुम बिन और न कोऊ मेरे
भवसागर की रैन अँधेरी, डूब्यौ जाय जहाज।
काम क्रोध की लहरें आवैं
बेटा बहू कच्छ बन खावैं
उठ्यो भभूड़ो मोह जाल कौ सजके अपने साज।
भाव भगति कछु मोमें नाहीं
जाते श्याम ढरैं मो माहीं
अब तौ बहुत भई है लाढ़ो, बेर ते होय अकाज।
राधा चरण शरण में आयो
बड़ौ ठिकानो गहवर पायो
ब्रह्मा शिव तरसैं याको ह्याँ प्यारी जू कौ राज।
नित्य विहार प्रेम कौ धामा
अपने हाथ बनायौ श्यामा
पाऊँ नित्य वास गहवरवन रसिकन जुर्‌यो समाज ॥

अरि मनमोहन की है प्यारी, राधा वृषभानु दुलारी ॥

बरसाने की कुँवरि लाड़िली, ब्रज की रूप उजारी।
रास रसीली छैल छबीली, मधुरे बोलन वारी।
रंग रंगीली गुन गरबीली, प्रेम भरी मतवारी।
बड़ी दयाल कृपा की मूरति, श्यामा भोरी भारी।
गोरे तन पै नीली साड़ी, हीरा जड़ी किनारी।
रतन जड़ीली अँगिया चमकै, लहँगा घूमघुमारी।
इनकौ रूप येई दरसावैं, चरन कमल पर वारी ॥

राधा प्यारी कमल कौ फूल, मोहन भँवर बने ॥

उड़-उड़ भँवर फूल रस लैवे
श्री यमुना के कूल, दोनो प्रीति सने।
दै गलबैंया हँस बतरावैं
आपुन को गये भूल, प्रेमी दोऊ जने।
जैसे चंदा और चकोरा
ऐसे रस में झूल, प्यारे दोऊ बने ॥

चरन जाके दाबैं गिरिधारी, चरन जाके दाबैं गिरिधारी

उनकी लै लई शरण, नाम जिनकौ राधा प्यारी।
हीरा जड़ी चंद्रिका सिर पै
लर मोतिन की लटकै तापै
देख रहे मोहन गिरिधारी, देख रहे मोहन गिरिधारी
उनकी लै लई शरण, नाम जिनकौ राधा ...।
कबहूँ ब्यार करै पीताम्बर
कबहूँ चरनन देय महावर
तोर तिनका जाय बलिहारी, तोर तिनका जाय बलिहारी
उनकी लै लई शरण, नाम जिनकौ राधा ...।
कबहूँ लैकैं चंवर ढुलावें,
कबहूँ लै आरसी दिखावैं
खवावैं बीरी लै प्यारी, खवावैं बीरी लै प्यारी
उनकी लै लई शरण, नाम जिनकौ राधा ...।
कबहूँ चरनन मुकुट छुवावैं,
रूठी मानिनि आय मनावैं
देय वा पै तन मन वारी, देय वा पै तन मन वारी
उनकी लै लई शरण, नाम जिनकौ राधा ...॥

राधा रानी को रंगीलो दरबार, पर्‍यो रह कुंजन में ॥

मार धार सबकी तू सहियो
भूख प्यास को ध्यान न रखियो
तब कृपा करें सरकार, पर्‍यो रह कुंजन में ।
राधा राधा रटन लगैयो
तन मन धन सों सेवा करियो
तेरो है जाय बेड़ा पार, पर्‍यो रह कुंजन में ।
इन द्वारन सों कबहूँ न हटियो
देहरी पर सिर घिसतो रहियो
रस बरसै धूँआधार, पर्‍यो रह कुंजन में ॥

सजनी राधे जू रस की खान, श्यामा की मंद मंद मुसकान ॥

श्यामा बसी श्याम की अँखियाँ
श्याम बसे प्यारी की अँखियाँ
सजनी नैनन की उरझान, श्याम की ... ।
हृदय महल के बीच बसे दोऊ
नैनन सैनन देख हंसे दोऊ
सजनी सखियन के हैं प्रान, श्याम की ... ।
कुंज भवन में फूल बिछौना
ता पै खेलैं प्रेम खिलौना
सजनी गावैं रस के गान, श्याम की ... ॥

राधा बनी कमल की माल, श्याम भँवरा सो बन्यो ॥

राधा कीरत की है जाई
मोहन जसुदा को लाल, श्याम भँवरा ... ।
राधा ऊँचे महलन वारी
वन-वन डोलै गोपाल, श्याम भँवरा ... ।
राधा चूनर जड़ी किनारी
कारी कामर ओढ़ै लाल, श्याम भँवरा ... ।
राधा गोरी सोन जुही सी
नंदलाला नील तमाल, श्याम भँवरा ... ।
राधा हाथन मेंहदी सोहै
लठिया हाथ गुपाल, श्याम भँवरा ... ।
राधा पायल बिछुवा बाजै
बंशी बाजै नंदलाल, श्याम भँवरा ... ।
राधा गहवर कुंजन लेटीं
पद चांपैं नंद को लाल, श्याम भँवरा ... ॥

ये कौन है अनोखी नई आई, कहँ ते ये रूप लूट लाई ॥

ललिता सों बूझत मनमोहन
मोकूँ बहुतै री मन भाई, कहँ ते ये रूप ... ।
गोरो मुख और बड़ी-बड़ी अँखियाँ
कजरा की रेख लगाई, कहँ ते ये रूप ... ।
गोरे गालन झुमका झूमै
नथ झलकारी पहर आई, कहँ ते ये रूप ... ।
साड़ी हरी औ जड़ाव की अँगिया
लहँगा लाल झुका लाई, कहँ ते ये रूप ... ।
ये हैं श्री वृषभानु नंदिनी
रानी कीरति की जाई, कहँ ते ये रूप ... ॥

राधा मार गई री, मार गई री, नैंना तरसैं रे साँवरिया ॥

अँखियाँ बड़ी मानो हिरनी की
अँखियाँ मिली नंदनंदन की
जादू डार गई री, डार गई री, नैंना तरसैं ... ।
गोरे गोरे माथे बेंदा
लाल होठ मुख चमकै चंदा
घूँघट टार गई री, टार गई री, नैंना तरसैं ... ।
हाथन में लै कमल फिरावति
थोरी थोरी सी मुसकावति
गजबै ढार गई री, ढार गई री, नैंना तरसैं ... ।
घूम घुमारे लहँगा वारी
चूनर लाल चाल मतवारी
जियरा फार गई री, फार गई री, नैंना तरसैं ... ॥

पिय की प्रानन प्यारी री, जै जै भानुदुलारी रे,

जै जै भानुदुलारी रे ॥

बरसाने खेलै लै सखियन

नंदगाँव गिरिधारी रे ... ।

बैठी गहवर वन कुंजन में

कृष्ण जाय बलिहारी रे ... ।

कबहूँ पान खवावै प्यारो

कर-कर के मनुहारी रे ... ।

कबहूँ दरपन लै दिखरावै

प्यारी छवि पै वारी रे ... ।

कबहूँ मोहन चरन दबावै

भाग मान बनवारी रे ... ।

कबहूँ मोहन बेनी गूँथै

फूलन माल सँवारी रे ... ॥

बरसाने की गैलन डोलै रे, कान्हा बावरो, कान्हा बावरो ॥

पूछत डोलै राधा प्यारी
चन्द्रमुखी तन नीली सारी
राधा राधा मुख बोलै रे, कान्हा बावरो ... ।
बैठ्यो मोहन खोर साँकरी
देख्यो चुनतो तहाँ काँकरी
दधि मटकी की करै मौलै रे, कान्हा बावरो ... ।
गहवर वन कुंजन की गलियन
सेज बिछावै फूल पंखुड़ियन
मन प्रीति गाँठ तहँ खोलै रे, कान्हा बावरो ... ।
मंदिर मान मनावै प्यारी
मोर पंख पग धर गिरिधारी
हँस-हँस करत किलोलै रे, कान्हा बावरो ... ॥

राधा मेरी कंचन गोरी रे ॥

नंदगाँव को कुँवर कन्हैया, वो तो कारो-कारो,
राधा मेरी सोने सी गोरी रे।
नंदगाँव को कुँवर कन्हैया चोर बड़ो लगवारो,
राधा मेरी भोरी भारी रे।
नंदगाँव को कुँवर कन्हैया बाँस बँसुरिया वारो,
राधा मेरी वीणा वारी रे।
नंदगाँव को कुँवर कन्हैया वन-वन डोलन वारो,
राधा मेरी महलन वारी रे।
नंदगाँव को कुँवर कन्हैया ओढ़े कामर कारो,
राधा मेरी चूनर सारी रे।
नंदगाँव को कुँवर कन्हैया नंदगोप को वारो,
राधा मेरी राज दुलारी रे ॥

बिक गयो कुंज विहारी, देख राधा प्यारी ॥

मोर मुकुट कुंडल हू भूल्यो
टेढ़ी पाग बिसारी, देख राधा प्यारी ।
वंशी गिरी हाथ ते भूल्यो
वन माला हू डारी, देख राधा प्यारी ।
गिर्‌यो पीतपट देख राधिका की
अँखियाँ कजरारी, देख राधा प्यारी ।
मुंदरी गिरी देख प्यारी की
झमक चाल मतवारी, देख राधा प्यारी ।
भूल्यो आपन को मन मोहन
बसी बरसाने वारी, देख राधा प्यारी ॥

राधा रानी तेरो प्यारो मैं देख आई री ॥

घूँघट वारी लटुरी चमकैं
जापै मोर पंख सिर धारो मैं देख आई री ।
प्यारी अँखियाँ चितवन प्यारी
जामें खुभ रह्यो कजरा कारो मैं देख आई री ।
ऐसी वंशी लाल बजाई
जानें ब्रज में जादू डारो मैं देख आई री ।
प्यारी प्यारी मोहिनी मूरति
जाके आगे चंदा खारो मैं देख आई री ॥

कीरति की सुकुमारी लाली ॥

आतुर विवश श्याम संग डोलत
तजि निज बाँकी चाली ।
मान करति हू प्यारी की
मधु ते मीठी गाली ।
रसमय काया बोलन चितवनि
सब विधि रस में घाली ।
बड़भागी गोरी के रस कौ अधिकारी बनमाली ॥

राधे रानी रस की खानी, तेरो जस गायो है ॥

काल डरै जा प्रभु की भौंहन
सो तेरी भौंह डरायो है, डरायो है, तेरो जस ... ।
जाकी उंगरिन जग नाँचैं सो
उंगरी पकर नचायो है, नचायो है, तेरो जस ... ।
काल कर्म गुन बाँध न पावैं
सो तेरो प्रेम बँधायो है, बँधायो है, तेरो जस ... ।
जाको भेद वेद नहिं पावैं
छाछ पै नाच नचायो है, नचायो है, तेरो जस ... ।
नेति-नेति जेहि कोउ न पावै
सो तेरे चरन दबायो है, दबायो है, तेरो जस ... ।
ब्रह्मा वेद पढ़ें तेरे द्वारे
शंकर ध्यान लगायो है, लगायो है, तेरो जस ... ॥

श्रीराधा प्यारी लाड़िली रानी कीरति की सुकुमार ॥

लाड़िली राधे तुम सुख दैन,
द्वार पै आय पर्यो तुम हो मेरी सरकार।
लाड़िली राधे दीन दयाल,
दया की कोर करहु मैं शरण तू ही आधार।
लाड़िली राधे परम कृपाल,
कृपा बरसावो प्यासो जात लाचार।
लाड़िली राधे जन प्रतिपाल,
सहारो चरनन को अब करो देवि उद्धार।
किशोरी करुणामयी उदार,
करो करुणा श्री राधे सुनकर करुण पुकार।
जहाँ ते नाद ब्रह्म प्रगट्यो,
सुनाओ श्रीचरनन के नूपुर की झनकार।
बने हरिहू चकोर जिनके,
दिखावो गौर रूप अपनो तुम परम उदार ॥

श्रीराधा प्यारी लाड़िली हरि रसिया की रिझवार ॥

श्री राधे जहँ जहँ चरन धरो
तहँ तहँ नैन बिछावै री प्यारो सुन्दर नंदकुमार।
श्री राधे जब तुम करो सिंगार
दर्पन तोहि दिखावै री प्यारो सुन्दर नंदकुमार।
श्री राधे कुंज गलियन डोलौ
गलियन में फूल बिछावै री प्यारो सुन्दर नंदकुमार।
श्री राधे कुंजन में राजौ
पंखुड़िन सेज सजावै री प्यारो नंदकुमार।
श्री राधे शैया पै पौढ़ो
तेरे चरनन चांपै री प्यारो सुन्दर नंदकुमार।
श्री राधे सज धज जब बैठो
वार पानी पीवै वह प्यारो सुन्दर नंदकुमार॥

रानी बड़ी है दयाल, दयाल महारानी ॥

राधा श्री राधा श्री राधा रटैं
भव के ये सारे ही बंधन कटैं
रस पावै है जाय निहाल, दयाल महारानी।
राधा है कंचन सी गोरी
भोरी भोरी नित्य किशोरी
जाके पद चांपै नंदलाल, दयाल महारानी।
राधा मुख चंदा सो चमकै
दामिनी सी देही है दमकै
जाके बेंदी सोहे भाल, दयाल महारानी।
सेंदुर माँग जड़ाऊ टीको
वेनी फूलन गुच्छो नीको
(जाकी) चोटी लटकै माल, दयाल महारानी।
अँखियाँ बड़ी बड़ी मतवारी
काजर रेख नुकीली प्यारी
झुमका गोरे गाल, दयाल महारानी।
चोली लाल हार हीरन कौ
कंकण बाजूबंद रतन कौ
हाथन मेंहदी लाल, दयाल महारानी।
तरहरिया फरिया मन मौहै

घूम घुमारो लहँगा सोहै
कटि किंकिणी को जाल, दयाल महारानी।
पायजेब अनवट औ नूपुर
बजने बिछुवा पांय महावर
अलबेली है चाल, दयाल महारानी।
राधा पूजूँ राधा ध्याऊँ
राधा सुमिरूँ और मनाऊँ
दीनन की प्रतिपाल, दयाल महारानी॥

राधा भोरी भोरी नटखट नंदलाला॥

मेरी राधा गोरी सुन्दर,
सुन्दर श्याम पै है वह काला।
राधा सकुचीली औ लजीली,
चोर बड़ौ छलिया भर्यो जाला।
कारो हरि कैसो इतरावै,
गोरो होतो कहा होतो हाला।
राधा सरल उदार छबीली,
तीन ठौर टेढ़ो नंदलाला॥

तेरो चाकर है नंदलाल, श्रीराधे बरसाने वारी ॥

तेरी कजरारी अँखियन में
बस कारो भयो गुपाल, श्री राधे बरसाने वारी ।
चितयो भौंह मरोरा दै
याते भयो त्रिभंगी लाल, श्रीराधे बरसाने वारी ।
(तेरी) तनक छाछ माँगत डोलै
मनमोहन संग लै ग्वाल, श्रीराधे बरसाने वारी ।
जब मान करौ तेरे चरनन में
आय झुकावे भाल, श्रीराधे बरसाने वारी ।
तेरेई रंग को पीताम्बर
पहरै किंकिणि जाल, श्रीराधे बरसाने वारी ।
तेरे ही आधीन सदा
तू नच्चवै दै-दै ताल, श्रीराधे बरसाने वारी ॥

कन्हैया राधा रानी कौ भयो बिना मोल कौ चेरो ॥

राधा राधा रटतो डोलै
राधा गावै राधा बोलै
बंशी में गावै राधा को, भयो बिना मोल ... ।
राधा नाम लिखे सब अंगन
राधा नाम गढ़यो सब गहनन

पीताम्बर रंग राधा को, भयो बिना मोल ... ।
मोर मुकुट में राधे राधे
कानन कुण्डल राधे राधे
तिलक नाम राधा को, भयो बिना मोल ... ।
हार गरे में राधे राधे
कठुला कंगन राधे राधे
गूंठी में नाम राधा को, भयो बिना मोल ... ।
कमर किंकिणी राधे राधे
घुँघरू बोलैं राधे राधे
नाँचैं लै नाम राधा को, भयो बिना मोल ... ।
जब देखूँ डोलै बरसानो
राधा कारन भयो दिवानो
दरस चाहै राधा को, भयो बिना मोल ... ।
गहवरवन आवैं राधा जब
पाय दरस वाकी प्यास बुझै तब
चरन दाबै राधा कौ, भयो बिना मोल ... ॥

प्यारी की पायलिया बाजै ॥

हांथन में कंगना हू बाजै,
पतरी कमर कौंधनी बाजै,
नरम कलैयन चूरी बाजै,
पग उंगरिन में बिछुआ बाजैं,
फिरकैयां फिरत विराजै, प्यारी की ... ।
राधे नाच रही मंडल में
चरन धरति ठुमकन ठुमकन में
देखत श्याम बिके विस्मय में
रीझे मोल बिके चितवन में
घूँघट में प्यारी लाजै, प्यारी की ... ।
ता ता थेइया ता ता थेईया,
छूम छननननन छूम छननननन,
धा धा धुम किट धा धा धुम किट,
झूम झननननन झूम झननननन,
सब गोपिन पर गाजै, प्यारी की ... ॥

साँवरिया लाड़ला प्यारा, राधिका लाड़िली प्यारी ॥

मोर पंख सिर कानन कुण्डल सोहै हो
वन माला वैजन्ती माला गरवा हो, साँवरिया ... ।
माथे चमक चन्द्रिका कानन झुमका हो
दुलरी तिलरी हार गरे मणि माला हो, राधिका ... ।
पीताम्बर तन पै लहरावै फहरावै हो
बिजली में बादर मंडरावै हो, साँवरिया ... ।
कलश सुनहले अँगिया में हलरावैं हो
ऊपर फरिया पचरंगी लहरावै हो, राधिका ... ।
घूम घुमारो जामा रसिया पहरै हो
जैसे दूलह नित्य नयो एंड़ावै हो, साँवरिया ... ।
घेरदार लहँगा गोरी पै सोहै हो
जैसे दुलहिन नित्य बनी सकुचावै हो, लाड़िली ... ॥

लाल-लाल चूनर उड़ाय गोरी कहाँ चली छबीली,
हाय हाय रे कहाँ चली छबीली ॥

वृंदावन की कुंज गलिन में
पीछे-पीछे श्याम रह्यो आय, गोरी कहाँ ... ।
चोली ऊपर मोतिन माला
मुंदरिन कूँ चमकाय, गोरी कहाँ ... ।
गोरे रंग पै बैंगनी सारी
साड़ी पै कौंधनी बँधाय, गोरी कहाँ ... ।
पांयन नूपुर उंगरिन बिछुए
बिछुवन झनक सुनाय, गोरी कहाँ ... ।
लटू-भटू करके गिरधारी को
चितवन चोट चलाय, गोरी कहाँ ... ।
प्रेम बावरो भयो सांवरो
राधे राधे गाय, गोरी कहाँ ... ॥

राधे रानी कृपा बरसाओ, दरस दिखराओ, मैं तेरी हूं शरणी ॥

सुख की आशा सों या जग में
बहुतै भटक्यो विष विषयन में
अब तो मोहि अपनाओ, दरस दिखराओ, मैं ... ।
तेरी चरण शरण हों आयो
हीन जान मोहि ना ठुकराओ
पदरज मोहि बनाओ, दरस दिखराओ, मैं ... ।
और न कोई सुनवे वारो
कोई न मेरो है रखवारो
बरसाने में बसाओ, दरस दिखराओ, मैं ... ।
तेरे ही आधीन कन्हैया
मन मोहन वंशी के बजैया
मेरे जिय में रस सरसाओ, दरस दिखराओ, मैं ... ।
तुमते धनी भये गिरिधारी
तुम ते ही भये रासविहारी
तुमते ही (हरि) रस पायो, दरस दिखराओ, मैं ... ॥

सहारो राधा रानी को, जाकी सरन बसै ब्रजराज ॥

जाकी भौंह तकै मनमोहन
संग डोलै ना छोड़ै गोहन
सरन सुकुमारी को, जाकी सरन बसै ब्रजराज ।
जाके गुन बाँसुरिया गावै
राधा राधा गाय सुनावै
नाम रटूं वाही को, जाकी सरन बसै ब्रजराज ।
जापै प्यारो बलि-बलि जावै
जैसे भँवरा कमल लुभावै
रूप ध्याऊँ वाही को, जाकी सरन बसै ब्रजराज ।
जाके पांय परत गिरिधारी
जब-जब रूठै राधा प्यारी
सरन लऊँ वाही को, जाकी सरन बसै ब्रजराज ॥

राधे क्लेशनाशनी भाम, जय श्री गौरांगी राधे ॥

ऐसो प्रेम दियो ब्रजबालन
पकर नचाये नंद के लालन
राधे प्रेम दायिनी बाम, जय श्री गौरांगी राधे।
कंस, कंस के साथी असुरन
ना झांके बरसाने गलियन
राधे गौर तेज की धाम, जय श्री गौरांगी राधे।
सब जग जिनकी रहै शरण में
वे हरि इनकी रहैं शरण में
हरि रटैं यह राधा नाम, जय श्री गौरांगी राधे।
संकट हरणी भक्त तारणी
शरणागत उद्धार कारिणी
जाको बरसानो है गाम, जय श्री गौरांगी राधे ॥

गई री गई कहाँ गोरी एक भोरी सी,
हाय कहा जाने मोपै कर गई रे ॥

बड़े-बड़े नैना कोर नुकीले
हाय मारी नैन कटारी रे, गई री गई ... ।
काजर रेख बान लगे नैनन
मोहन धनुष चलाई रे, गई री गई ... ।
गोरे-गोरे गालन मुख में बीरी
हाय लाली हिय में समाई रे, गई री गई ... ।
मोतिन हार सुरंग रंग अँगिया
हाय कैसी चूनर ओढ़ाई रे, गई री गई ... ।
चलती चाल बह झूम झूम के
हाय कैसी लहँगा घुमाई रे, गई री गई ... ॥

सज के चली राधा प्यारी, अरे राधा प्यारी ॥

बेंनी फूलन गुच्छा सोहै
मोतिन माँग संवारी, अरे राधा प्यारी, अरे ... ।
बड़ी-बड़ी अँखियाँ बड़ी सलोनी
काजर रेख संवारी, अरे राधा प्यारी, अरे ... ।
अँगिया सुरंग चूनरी पचरंग
सोहै झूमक सारी, अरे राधा प्यारी, अरे ... ।
गोरे-गोरे हाथन मेंहदी रच रही
उंगरिन मुंदरी भारी, अरे राधा प्यारी, अरे ... ।
हँस-हँस बात करति सखियन सौं
मिल गये कुंजविहारी, अरे राधा प्यारी, अरे ... ॥

हमारी श्यामा प्यारी गोरी नथ वारी ।

औरन की कोई और ही जानै,
हमारी भोरी भारी, हमारी श्यामा प्यारी।
श्री वृन्दावन रानी राधा,
मोहन की आराध्या राधा,
हमारी प्रानन प्यारी, हमारी श्यामा प्यारी॥
बरसाने की लाड़िली राधा,
सखियों की जीवन धन राधा,
ऊँचे महलन वारी, हमारी श्यामा प्यारी।
तीन लोक की जीवन राधा,
रसिकन की मन मोहिनी राधा,
चटकीली चूनर वारी, हमारी श्यामा प्यारी।

श्री कृष्ण माधुरी

ऐसो चटक-मटक कौ ठाकुर, तीनों लोकनहूँ में नाय।

तीन ठौर ते टेढ़ौ दीखै
नट की सी चलगत ये सीखै
टेढ़ी सैन चलावै तीखे
सब देवन कौ देव, तऊ ब्रज में यह घेरे गाय।
ब्रह्मा मोह कियो पछतायो
गर्व इन्द्र कौ दूर भजायो
दर्शन कौ शिव ब्रज में आयो
ऐसौ वैभव वारौ तौ भी ब्रज में गारी खाय।
बड़े-बड़े असुरन कूँ मार्‍यो
नाग कालिया पटक पछार्‍यौ
सात दिना तक गिरिवर धार्‍यौ
ऐसौ बली तऊ ग्वालन पै खेलत में पिट जाय।
रूप छबीलौ है ब्रज सुन्दर
बिना बुलाये डोलै घर-घर
प्रेमी ब्रज गोपिन कौ चाकर
ऐसौ प्रेम बँध्यो माखन की चोरी करवे जाय॥

ब्रज कौ रसिया रंगरंगीलौ, मेरौ मोहन अलबेलो ॥

ऋषी मुनी जब यज्ञ करावैं
वेद् मन्त्र सौ याय बुलावैं
कंचन की वेदी सजवावैं
ब्रज की कीच लगै याय प्यारी, लोटै मटमैलो।
जोगी जाय समाधि लगावैं
युग-युग साधन करकैं ध्यावैं
ज्योती हू कौ ध्यान न पावैं
ब्रज में प्रगट रूप सौं खेलै, ग्वालन कौ मेलो।
ज्ञानी याकौ देख न पावैं
याते निराकार बतरावैं
हाथ जोर कै अरज सुनावैं
ब्रज में गोपी गारी देवैं भड़ुआ सौतेलो।
देव जनन हू पार न पावैं
देखत चरित मोह उपजावैं
लीला देख देख पछतावैं
बछरन ते बतरावै ब्रज में, डोलै घर गैलो ॥

मुरली वारौ मेरौ प्यारौ, जाकौ मोर मुकुट चमकै ॥

मुकुट पैंच तुर्रा औ कलगी
मोतिन लरी आड़ सौं हिलगी
रस के भरे कपोल, गाल पै कुण्डल दुति दमकै।
बीरा मुख में सुन्दर वासा
तन ज्योती गज मोती नासा
अरुण अधर पै हरे बाँस की बंशी सुर सरकै।
धातु तिलक अंग पर गुञ्जा
कनक लकुट मोतिन लर पुञ्जा
चन्दन देह उंगरियन मुंदरी, सीस पाग ररकै।
काजर रेख नैन रतनारे
गल वैजन्ती माला धारे
कठुआ गरवा हाथन कंकण, चाल चलत खनकै।
पीरी धोवती तन पै आछी
लाल काछनी कटि में काछी
रुनझुन-रुनझुन नूपुर बाजै, चलगत में ठमकै।
दरसन करवे गोपी आवै
गावैं नाचैं और रिझावैं
बजने बिछुआ कमर कौंधनी, हाथ चुरी झनकै ॥

बंसीवारे ते लगाय लै गोरी नेह, प्रेम रस आवैगो ॥

चन्दा कौ सो रूप हेरी बिन रसिया बेकार
बिन चकोर को रीझ करै, जो खाय लेत अंगार
रीझ को रीझैगो, बंसी वारे ते ...।
माखन कौ सौ मनुआ तेरो जोबन दूध-दुधार
घूँघट कौ क्यों जामन देवै फट जाय जिया हमार
स्वाद कौन पावैगो, बंसी वारे ते ...।
हेरी मेरी गूजरी लै चूनरी तन धार
अँगिया फरिया और तरहरिया लहँगा घूम-घुमार
श्याम तोय पावैगो, बंसी वारे ते ...।
गोरी बैंयन नीली चुरियाँ नथ मोतिन झलकार
बजने बिछुआ और कौंधनी पायल की झनकार
सुनैगो तोय लै जायगो, बंसी वारे ते ...।
शीश फूल माथे पै बैंदी नैना हैं कजरार
मेंहदी रची कान में झुमके नारौ झुब्बादार
श्याम ढिंग आवैगो, बंसी वारे ते ... ॥

खिलौना चन्दा लैहौं, लाय दै री जसुदा माय ॥

मैं तो तेरौ लाला प्यारौ
तेरो लाड़ बहुत है भारौ
चन्दा है जग कौ उजियारौ
गरे कौ हार बनैहौं, लाय दै री जसुदा ... ।
आजा-आजा टेर बुलाऊँ
हाथन कौ झालौ दिखराऊँ
न आवै जब मैं दुःख पाऊँ
आज नाय भोजन करिहौं, लाय दै जसुदा ... ।
समझावै लै जसुदा रानी
लाला नें नाय एकौ मानी
जब थारी भर लाई पानी
तोहि मैं चन्दा दैहौं, लाय दै री जसुदा ... ।
पानी में चन्दा की झाँई
पकरै श्याम हाथ नाय आई
कह्यो मात तैं रोय भजाई
काल मैं फेर बुलैहौं, लाय दै री जसुदा ... ॥

मोहन है चित्त कौ चोर, ढुँढ़वाय लै मेरी भायेली ॥

खोर साँकरी जाय रही हौं
वंशी की भई घोर, ढुँढ़वाय लै मेरी भायेली।
आय गयो नन्द कौ उत्पाती
दान लैन की ठौर, ढुँढ़वाय लै मेरी भायेली।
अचक-अचक मेरौ घूँघट खोल्यो
मटकी दीनी फोर, ढुँढ़वाय लै मेरी भायेली।
मोय पकर कैं बैंया झटकी
ऐसो बन्यो छिछोर, ढुँढ़वाय लै मेरी भायेली।
वा दिन ते मेरी प्रीति लगी है
जैसे चन्द्र-चकोर, ढुँढ़वाय लै मेरी भायेली।
चलत फिरत मोय वोई दीखै
सुन्दर श्याम किशोर, ढुँढ़वाय लै मेरी भायेली।
नील वरन पहरे पीरो पट
ऐसौ माखन चोर, ढुँढ़वाय लै मेरी भायेली ॥

श्री नन्दबाबा के लाल, हमारे अइयो बाखिर में ॥

कारी काजर धौरी धूमर, गैयन के रखवार।
हमारे ... ।
मोर मुकुट कानन में कुण्डल, नैना बड़े विशाल।
हमारे ... ।
हाथ लकुट कम्मर की खोई, गल वैजन्ती माल।
हमारे ... ।
पीताम्बर पै पटका फहरै, बड़े गजब की चाल।
हमारे ... ।
इन्दर कोप कियो ब्रज ऊपर, बरस्यौ मूसर-धार।
हमारे ... ।
सात बरस के कुँवर कन्हैया, गिरिवर लियौ उठाय ॥
हमारे ... ।

मैंने तोसौं नैंन लगाये, कहा करैगो कोई रे ॥

मैं तो चरण कमल लपटानी, होनी होय सो होई रे।
घूँघट खोल उजागर नाची, लोक की लाज डुबोई रे।
लागी ऐसी लगन बिहारी, कुल मर्यादा खोई रे।
तेंरे मिलवे कारन प्रियतम, अँसुवन माल पिरोई रे।
वन वन घायल फिरी दरद में, मिल्यौ न तू निरमोई रे।
कोई कहे ये मर्म रीझ की, जाने मन की धोई रे।
हीरा प्रेम जौहरी जानें, प्रीति दिवानी जोई रे।
मैं माधव की माधव मेंरे, ऐसी प्रीति संजोई रे।
माधव माधव रटते रटते, मैं भी माधव होई रे॥

जाको राखै कृष्ण कन्हैया वाको मार सकै नाय कोय ॥

माँगी गुरु दक्षिणा संदीपनि
डूब मर्‌यो सुत सागर लहरनि
गये स्याम यमपुर के द्वारनि
पुत्र मरे जीवित लाये गुरु-मात न दीनी रोय।
मरे द्वारिका नौ सुत ब्राह्मन
करी प्रतिज्ञा अर्जुन राखन
राख न सक्यौ चल्यौ तन दाहन
भूमा ते दस सुत लाये हरि पहले गये जो खोय।

युद्ध हुआ महाभारत भारी
कौरव पाण्डव लड़े जुझारी
अठारह अक्षौहिणी सेना मारी
ऐसो युद्ध भयो नाय अब लौं नाय आगे हू होय।
खूनन नदिया बही धार में
हाथी बहै बबूला जामें
पक्षी एक न बच्यौ युद्ध में
बच्यौ तहाँ भारुहि कौ अण्डा घंटा बीच समोय।
अश्वत्थामा ब्रह्म अस्त्र लै
छाँड़ दियो अभिमन्यु पुत्र पै
गर्भ घुसे हरि हाथ चक्र लै
रक्षा करी परीक्षित की हरि ब्रह्म अस्त्र दियो धोय।
लगी कर्म की फाँसी जीवन
बँधे दुख पावैं यम शासन
जनमैं मरैं फेर लें जनमन
काल न तोर सकै इक बारहु कृष्ण शरण जो होय।

मैं कैसे प्रीति लगाऊँ री, मनमोहन बंसी वारे ते॥

मैं गोरी मेरौ मनुवा गोरो,
मैं कैसे अंग छुआऊँ री या तन और मन के कारे ते।
मैं भोरी मेरौ मनुआ भोरो,
अरि मैं कैसे पतियाऊँ री या चंचल नैना वारे ते।
बेटी बहू बड़े घर की मैं,
मैं कैसे नात जुराऊँ री या द्वै बापन के वारे ते।
सखी सहेली बड़े घरन की,
अरि मैं कैसे बतराऊँ री या गाय चरावनहारे ते।
रतनन कौ श्रृंगार सजी मैं,
मैं कैसे गाँठ मिलाऊँ री या माखन चोरनहारे ते।
खिलती सोने की चंपा मैं,
कैसे रूप बचाऊँ री कारे भँवरा मतवारे ते।
बिना बुलाये संग ही आवै,
अब तो बच नहिं पाऊँ री वा रसिया मन के प्यारे ते॥

माखन की चोरी बारम्बार करे
फिर भी तो राधा रानी प्यार करे।

माथे कृष्ण के मोर पखउआ
पंखन को धारके गुमान करे। फिर भी तो ...
गले कृष्ण के गुंजा माला,
माला को धारके गुमान करे। फिर भी तो ...
काँधे कृष्ण के कारी कमरिया
कामर को धारके गुमान करे। फिर भी तो ...
अधर कृष्ण के बांस की बांसुरिया
बंशी को धार के गुमान करे। फिर भी तो ...
कारे कान्ह की गोरी से सगाई,
राधा को धारके गुमान करे। फिर भी तो ...
माखन चोर को भानुजा ब्याही,
बरसाने सुसरार पै गुमान करे। फिर भी तो ...

ऐसौ भयो नन्द कौ ढोटा, याय नाय लाज रही ॥

गैल गिरारे उझकत डोलै
चलत सुनावत मीठे बोलै
हँसत-हँसत घूँघट कूँ खोलै
समुझै और बात नाय मानै, डरपै नेंक नही ।
कबहूँ लै लै नाम बुलावै
अरी सहेली कित कूँ जावै
तो पै नेंक डट्यो नाय जावै
गोता लै लै प्रेम नदी में, ब्रज में जो बही ।
कबहूँ मारग रोक लकुट ते
छाँह करे मेरी मोर मुकुट ते
ब्यार करे मेरी पीरे पट ते
बैंया पकर संग लै जावै, मानैं ना कही ।
देखे बिना चैन ना आवै
देखत में नैना घबरावै
लाज निगोड़ी आड़ी आवै
तब की कहा कहौं जब वानें बैयां आय गही ॥

मोहन मोय रिझाय गयौ री, बड़े नैनन कजरा वारौ ॥

मो भोरी भारी पै सखि री
नैनन बान चलाय गयौ री, बड़े नैनन ... ।
अच्चक आय दै झालौ मोहे
कुंजन मांहि बुलाय गयौ री, बड़े नैनन ... ।
डरप रही मुख बोल न आवत
हँस-हँस मोय मनाय गयौ री, बड़े नैनन ... ।
हौं सकुचत नहीं जात री बरबस
बैंया पकर लिवाय गयौ री, बड़े नैनन ... ।
श्याम भँवर की प्रीति निराली
सब जग मोय भुलाय गयौ री, बड़े नैनन ... ।
काजर कांटो हाँसी फाँसी
बावरि मोय बनाय गयौ री, बड़े नैनन ... ।
मोहि सबै जग सांवरौ दीखै
ऐसौ रूप दिखाय गयौ री, बड़े नैनन ... ॥

श्यामसुन्दर मन भाय गयौ री मनमोहन मुरली वारौ ।

उठूँ सवेरे दही बिलोयवे
सदलौनी मेरी खाय गयौ री मनमोहन ... ।
सब सखियन के संग में बैठी
झालौ मार बुलाय गयौ री मनमोहन ... ।
पनघट पै उंचवे कूँ ठाढ़ी
गगरी आय उचाय गयौ री मनमोहन ... ।
जमुना जी में न्हायवे जाऊँ
मेरौ चीर चुराय गयौ री मनमोहन ... ।
दधि मटकी लै घर ते निकसी
लूट-लूट दधि खाय गयौ री मनमोहन ... ।
सोय रही पलका पै इकली
वंशी मधुर सुनाय गयौ री मनमोहन ... ।
गहवरवन की कुञ्ज गलिन में
रास रचाय नचाय गयौ री मनमोहन ... ॥

मैंने तोसों नैन लगाये, कहा करैगो कोई रे ।

मैं तो चरण कमल लिपटानी,
होनी होय सो होई रे।
घूँघट खोल उजागर नाची,
लोक की लाज डुबोई रे।
लागी ऐसी लगन बिहारी,
कुल मर्यादा खोई रे।
तेरे मिलबे कारन प्रियतम,
असुवन माल पिरोई रे।
वन वन घायल फिरी दरद में,
मिल्यौ न तू निरमोई रे।
कोई कहे ये चली बावरी,
बिगरी रैन न सोई रे।
दुष्ट कलंकिन कुलटा नारी,
ऐसी होय हंसोई रे।
कहा जाने ये मर्म रीझ की,
जाने मन की धोई रे।
हीरा प्रेम जौहरी जाने,
प्रीति दिवानी जोई रे।
मैं माधव की माधव मेरे,

ऐसी प्रीति संजोई रे।
माधव माधव रटते रटते,
मैं भी माधव होई रे।

मैं जागूँ नींद न आवै, मेरी अँखियन मोहन करकै री ॥
जब यह सबरौ जग सोवै है
एकहु पंछी नाय जागै है
ये छाती इक संग धरकै री, मैं जागूँ नींद ... ।
पनघट पै छैला आय अर्‌यौ
देखत ही मोपै गाज पर्‌यौ
उंचवावै गगरी भर कै री, मैं जागूँ नींद ... ।
वा दिन की कहा कहूँ सजनी
जब दान लियौ वह रूप धनी
वह पटुका पीरौ फरकै री, मैं जागूँ नींद ... ।
थोरे में बहुत समझ लै री
मोय चैन न नेकहुँ सुन लै री
जियरा यह रस में गरकै री, मैं जागूँ नींद ... ॥

अरि मेरे दोऊ नैनन कौ तारौ, मनमोहन मुरली वारौ ॥

नन्द गाँव कौ चन्दा मोहन
ब्रज कौ है उजियारौ, मनमोहन ... ।
नन्द बाबा कौ कुँवर लाड़िलौ
जसुमति राज दुलारौ, मनमोहन... ।
रंग रंगीले सखा संग लै
धूम मचावनहारौ, मनमोहन ... ।
रास रसीली सखियन के संग
रास रचावनहारौ, मनमोहन ... ।
जब जब भीर परी ब्रज ऊपर
ब्रजवासिन कौ रखवारौ, मनमोहन ... ।
रसिया बड़ौ रूप कौ लोभी
राधा प्रान पियारौ, मनमोहन ... ॥

अरि बिछुर गयौ मन कौ प्यारो, कहाँ छिप गयौ बंसी वारौ ॥

कुञ्ज गली वृन्दावन ढूँढयो
अरि मैंने ढूँढयो गोकुल सारौ, कहाँ छिप ... ।
सिर पै याकै मोर पखौआ
अरि ये तो कानन कुण्डल वारौ, कहाँ छिप ... ।
देखौ री याके बड़े बड़े नैना
अरि ये तो अँखियन कजरा वारौ, कहाँ छिप ... ।
कण्ठ में याके कठुला सोहै
अरि ये तो फूलन माला वारौ, कहाँ छिप ... ।
मुख में याके मुरली सोहै
अरि ये तो माथे चन्दन वारौ, कहाँ छिप ... ।
अंग में याके पीरौ जामा
अरि ये तो पीरे पटुका वारौ, कहाँ छिप ... ।
पीरी धोवती तन पै सोहै
अरि ये तो कमर काछनी वारौ, कहाँ छिप ... ।
पायन याकै नूपुर सोहै
अरि ये तो चाल चलै मतवारौ, कहाँ छिप ... ॥

मोहन की प्यारी अँखियाँ बिन देखे रह्यो न जाय ॥

पतरी रेख लगी कजरा की
बलि-बलि जाऊँ तिरछी नजर की
मुसक-मुसक मेरौ मन मोह्यो, ठौर मरि गई माय।
देखत ही कियौ जादू टोना
अब तो होय गयो जो होना
देखत ही मोय बिजरी मारी, जीऊँगी कै नाय।
नैना मानों मृग के छौना
इक संग करलै ब्याह और गौना
ऐसे लूटन-हारे सौं फिर, कछु बचवे कौ नाय।
अंखियाँ में अंखियाँ हैं करकीं
ताही दिन ते छतियाँ धरकीं
अंखियाँ ढूँढैं उन अँखियन को, करती हाय हाय ॥

मोहन सुजान दिन रैन रटैं राधे राधे ॥

जागत में राधे राधे, सोवत में राधे राधे,
राधा बनी जीवन प्राण, रटैं राधे राधे।
बरसाने में राधे राधे, गहवर में राधे राधे,
नन्दभवन नंदगाम, रटैं राधे राधे।
वृन्दावन में राधे राधे, गोवर्धन में राधे राधे,
राधाकुंड रावल गोकुल गाम, रटैं राधे राधे।
पनघट पै राधे राधे, जमुना पै राधे राधे,
राधा रटन परी वाम, रटैं राधे राधे।
कुंजन में राधे राधे, लतन में राधे राधे,
सब ब्रज राधा ही भान, रटैं राधे राधे।
दिन हू में राधे राधे, रात हू में राधे राधे,
सब पल राधा ही मान, रटैं राधे राधे।
गावत में राधे राधे, नाचत में राधे राधे,
राधा कौ मुख गान, रटैं राधे राधे।
बंसी में राधे राधे, राग अलापत राधे,
राधा ही बन गइ तान, रटैं राधे राधे।
माखन चोरत राधे, दधि लूटत में राधे,
राधा ही ले जब दान, रटैं राधे राधे॥

मेरे घर कबहुँ न आवै साँवरिया, मोय काहे को तरसावै ॥

वन वन गाय चरावत डोलै
तू तो कारी ओढ़ै कामरिया, मोय काहे ... ।
सोय गई और खोय गई मैं
मधुर बजाय दई बाँसुरिया, मोय काहे ... ।
सुन-सुन मोपै रह्यौ न जावै
चलगत में बाजै पायलिया, मोय काहे ... ।
हौले चलूं तो चल्यो न जावै
भाजूँ तो जागै सासुरिया, मोय काहे ... ।
वंशी तो नागिन सी डस गई
फिरती डोलै बावरिया, मोय काहे ... ।
सुन-सुन हियरे हूक उठत है
डोलै पकरे पांसुरिया, मोय काहे ... ।
सुमिर-सुमिर ब्रज बाला गावैं
अँखियन ते बह गई आँसुरिया, मोय काहे ... ॥

मैंने तोही ते नेह लगायो रे सुन प्यारे नन्द दुलारे ॥

जग ते तोर सबन ते तोरी
नाते सब बिसरायो रे सुन प्यारे नन्द ...।
तेरे खातिर जग ने ताने
दै दै गजबहि ढायो रे सुन प्यारे नन्द ...।
रात नींद ना आवै दिनहू
अंगुरिन गिनत बितायो रे सुन प्यारे नन्द ...।
तेरेई द्वारे आय साँवरिया
अपनौं वास जमायौ रे सुन प्यारे नन्द ...।
लोक और परलोक भूल गई
सबरौ भार में डार्यौ रे सुन प्यारे नन्द ...।
हँस के देख नेंक बेदरदी
जुलमी बहुत खिजायौ रे सुन प्यारे नन्द ...॥

गागरिया मेरी उचावैगौ, कन्हैया बंसी वारौ ।

ऊँची सिढ़ियाँ घाट रिपटनो
ये दोनूँ हाथ लगावैगो कन्हैया बंसी वारौ।
जमुना तीर छाँह कदमन की
ये गैया आय चरावैगो कन्हैया बंसी वारौ।
जब देखै सिर दही मथनियाँ
ये दधि की लूट मचावैगो कन्हैया बंसी वारौ।
छींके पै लौनी धर आई
ये चोरी करकै खावैगो कन्हैया बंसी वारौ।
साँझ समय खिरका में मेंरे
ये गैया आय दुहावैगो कन्हैया बंसी वारौ।
मेंरे घर के पिछवारे ते
ये हेलाहेल मचावैगो कन्हैया बंसी वारौ।
जमुना तीर रात आधी पै
ये बंसी मधुर बजावैगो कन्हैया बंसी वारौ॥

मेरो सांवरो सलोना न देखो सजनी ॥

सॉंवरी सुरतिया मोहनी मुरतिया
लागै नजर न टोना, मेरो सांवरो ... ।
मुख में चमकत दूध की सी दतियाँ
तीखे नैनन के कोना, मेरो सांवरो ... ।
किलक किलक पलना में झूलै
खावै माखन कौ लौना. मेरो सांवरो ... ।
भागन ते पायो गरीबनी ने श्याम धन
जीवै जागै ये छोना, मेरो सांवरो ... ॥

नीलम का नगीना मेरा श्याम सलौना ।

सोने की अंगूठी राधे चोरी कहूँ हो ना ।
या मुंदरी को वो ही पहरे बड़ी रसीली होय,
मुंदरी पहरे सब जग भूलै, भूलै रोना धोना ।
मुंदरी पहरी ब्रज की गोपीं छोड़ के दुनियाँ सारी,
प्रेम छ्कीं नाचैं मतवारी होनी होय सो होना ।
ऐसी सुंदर जोरी प्यारी तीन लोक में नाहीं,
नजर न लागै काहू की ना लगै काहू को टोना ॥

नीलम का नगीना प्यारा श्याम सलोना ।

ऐसौ प्रेम भर्‌यो ठाकुर कोई और नहीं है होना ॥
गोकुल छठवें दिन ही हरि के पास पूतना आई,
जहर पिवाय राक्षसी नें हू जननी की गति पाई,
ऐसो दया भर्‌यो ठाकुर कोइ और नहीं है होना ।
दूध दही माखन की चोरी घर-घर करी कन्हाई,
चोरी के मिस गोपिन की दरसन की आस पुराई,
ऐसो कृपा भर्‌यो ठाकुर कोइ और नहीं है होना ।
वृन्दावन वंशीवट मोहन ने जब वंशी बजाई,
गोपी आईं रास रचायो नाचैं सबही नचाई,
ऐसो रंग भर्‌यो ठाकुर कोइ और नहीं है होना ॥

श्याम बड़ौ जादूगर सिरमौर ॥

ब्याही क्वारी कोई होवै, जादू मारै ठौर ।
टोना कामन मूठ घात सब, चलै नैन की कोर ।
मंतर जंतर बसीकरन (सब), याके बैनन बस रहे चोर ।
बंसी मारन जंत्र भई, गोपिन को मारै जोर ।
कौन बचैगी कौन बसै ब्रज, माखन चोर छिछोर ॥

इक श्याम छैल ब्रज आवै री, गोरी बचती रहियो ॥

बच जैयो गलियन जो पावै
वो पीछे पीछे आवे री, गोरी ... ।
जो आगे आड़ो घेरै री
तू घूँघट नाहि उठैयो री, गोरी ... ।
जो घूँघट तेरो खोलै री
तू नैना नाहि मिलैयो री, गोरी ... ।
जो नैना तेरे मिल जावैं
तू नैकौ ना मुसकैयो री, गोरी ... ।
जो बरबस नैना मुसकावैं
तू हँस हँस मत लिपटैयो री, गोरी ... ।
जो हँस लिपटावै कहँ सखी फिर
घर कूँ मत बगदैयो री, गोरी ... ॥

ये कहा तो भयो, श्याम राधा रानी को गुलाम भयो ॥

जब ते देखी भानु लाड़िली,
बिक ही गयो, श्याम राधा रानी को ... ।
चंदा वदनी देख देख के,
चकोर भयो, श्याम राधा रानी को ... ।
प्यारी के मुख कमल पान को,
भ्रमर भयो, श्याम राधा रानी को ... ।
राधा अंग सुगंध लेन कौ,
हरिण भयो, श्याम राधा रानी को ... ।
राधा राधा रटतो डोलै,
पपीहा भयो, श्याम राधा रानी को ... ।
राधा की पायल सुन नाँचैं,
मोर भयो, श्याम राधा रानी को ... ॥

साँवरिया की प्यारी-प्यारी तिरछी नजरिया,
मर मर जाये गुजरिया ॥
तिरछे नैना तिरछै सैना तिरछी रेख कजरिया।
जादू टोना मूठ चलावै, मंतर मार नजरिया।
वशीकरन मानो है सजनी, अपने वश में करिया।
चाहे जैसो नाच नचावै, कीनी काठ पुतरिया।
कुल के घर के बैरी लागैं, लोक लाज सब जरिया।
कृष्ण नाम की टेर लगी है, नैनन सों जल झरिया ॥

मैया ने दियो लड्डू फूट गयो,
कन्हैया प्यारो मैया ते रूठ गयो ॥

भोरइ सोइ उठ्यो नंदलाला
माखन माँग रह्यो गोपाला
पकर्यो आँचर मैया को छूट गयो, कन्हैया ... ।
आँचर छोड़ दह्यो मथ दूँगी
सद लौनी निकसत ही दउँगी
रोवै श्याम आँसू घूँट गयो, कन्हैया प्यारो ... ।
दही चलाऊँ जो लौं छंगना
लड़ुआ लै लै खैयो मगना
कान्हा को मुख खूट गयो, कन्हैया प्यारो... ।
लड़ुआ दियो बड़ौ मोटो सो
पकरो गयो न श्याम सुन्दर सों
लड़ुआ गिर कै टूट गयो, कन्हैया प्यारो... ।
कान्हा रोवत पांवन पटकै
काजर मीड़ै हाथन झटकै
मैया को मन टूट गयो, कन्हैया प्यारो... ॥

परबस है के ठाढ़ी, मोह लइ मोहन ने ॥

जाय रही कुंजन वन इकली
पचरंग चूनर गाढ़ी, खैंच लइ मोहन ने।
बच के निकसी लाजन इकली
लंबो घूँघट मारे, खोल दइ मोहन ने।
जैसे तैसे चली पीठ दै
अपने मुख को फेरे, पकर लई मोहन ने।
रस की बतियाँ कहन लग्यो वह
भाजी जा बजमारे झपट लइ मोहन ने।
सोवत जागत नागर देखूँ
टोना कैसो मोपै कर दियो मोहन ने॥

तेरी नजर है या टोना, ये जादू टोना, नजरिया मत मारै रे ॥

जा दिन लागी नैन कटारी
हिरनी सी तैने घायल मारी
दै गयो रोना धोना, ये जादू टोना ... ।
सुनो जी सुनो तुम नंद के छैया
कृष्ण कन्हैया माखन चुरैया
चित को अब चोरो ना, ये जादू टोना ... ।
लटुरी लटकै कारी कारी
गालन पै छाईं घुँघरारी
कैसो रूप सलोना, ये जादू टोना ... ।
एक बार तू हँस मुसका दे
तिरछे नैना बान चला दे
तिरछे नैना कोना, ये जादू टोना ... ।
बंसी बजैयो कुँवर कन्हाई
दौरी दौरी सुनवे आई
सुध बुध सब ही खोना, ये जादू टोना ... ॥

चोर चोर, माखन चोर, चीर चोर, चित चोर ॥

रात विरात घरन में आवै
माखन के मिस धूम मचावै
चोर चोर मटकी फोर चीर चोर चित चोर।
सब सखियाँ मिल यमुना जावैं
चीर खोल गोता लै न्हावैं
चोर चोर बरजोर चीर चोर चित चोर।
अँखियन में ये हँसै हँसावै
अँखियन में ही मान मनावै
चोर चोर रस चोर चीर चोर चित चोर ॥

ये आया माखन चोर ब्रज की गलियन।

यशुदा को छैया कुँवर कन्हैया
ये नंद किशोर, ब्रज की गलियन।
रंग रंगीले ग्वाल बाल संग
ये कर रहे शोर, ब्रज की गलियन।
नाचैं गावैं सैन चलावैं
ये मटक मरोर, ब्रज की गलियन।
मुरली मह्रुवर ढोलक बाजै
धुनी घनघोर, ब्रज की गलियन।
ऐसी को जो बचके आवै
लुटैगी बरजोर, ब्रज की गलियन।
दूध दही और माखन लैवै
नैनन की कोर, ब्रज की गलियन॥

राधावर कुञ्जविहारी रे राधे गोविंद बोलो ॥

नंद बाबा और यशुदा मैया
भैया बल हलधारी रे राधे गोविंद बोलो ।
दूध पियत पूतना पछारी
अघ बक धेनुक मारी रे राधे गोविंद बोलो ।
बड़े बड़े असुरन संहार्‌यो
नाश्यो सौ फणधारी रे राधे गोविंद बोलो ।
सात दिना तक गिरिवर धार्‌यो
नाम पर्‌यो गिरिधारी रे राधे गोविंद बोलो ।
वृन्दावन में रास रचायो
राधा रास विहारी रे राधे गोविंद बोलो ।
बरसाने ते भई सगाई
जोरी भानदुलारी रे राधे गोविंद बोलो ॥

जुलम करैं ये घूँघट मार मेरी भोरी मैया ॥

यशुदा मैया मेरी बड़ी भोरी
वाको मैं भोरो खिलार मेरी भोरी मैया।
भोरी मैया को भोरोइ बेटा
ये छरछंदी नार मेरी भोरी मैया।
हेला दैकें मोय बुलावैं
नेक कढ़ाय जा धार मेरी भोरी मैया।
तो बिन दूध न देय हमारी
गैया कूँ ऐसी परी ढार मेरी भोरी मैया।
जब जाऊँ मैया चोरी लगावैं
साँच धरम दई डार मेरी भोरी मैया।
चोर-चोर कह नाम बिगार्यो
मैया जाऊँ मैं ब्रज पार मेरी भोरी मैया।
सुनत यशोदा रानी कंठ लगायौ
ग्वालिन दीनी टार मेरी भोरी मैया ॥

मन में बस्यो री कन्हैया प्यारो, वह मोर मुकुट वंशीवारो ॥

मै तो भूली दुनियाँ सारी
मोकूँ लोग कहैं मतवारी
मोहै लगै घरबार सबै खारो, वह मोर ... ।
मैंने ओढ़ी श्याम चुनरिया
सब की लग गई नजरिया
मोपै रंग चढ़्यो है कारो, वह मोर ... ।
मैंने कुल की कान मिटाई
सब छोड़ी मान बड़ाई
सब मैंने भार में डार्यो, वह मोर ... ।
मोहन की अँखियाँ प्यारी
देखत ही तन मन हारी
मोहे जारो चाहे मारो, वह मोर ... ॥

गुजरिया झूठी है सुन मेरी मैया ॥

मैं तो गाय चरायवे जाऊँ
मोकूँ बुलावै है, गुजरिया झूठी है ... ।
मैं भोरो जब घर कूँ जाऊँ
मोकूँ नचावै है, गुजरिया झूठी है ... ।
कबहूँ वंशी ये बजवावै
कबहूँ गवावै है, गुजरिया झूठी है ... ।
कबहूँ संग संग ठुमका देवै
नैन चलावै है, गुजरिया झूठी है ... ।
कबहूँ मोते कारो बोलै
हँसै हँसावै है, गुजरिया झूठी है ... ।
ऊपर ते ये आग लगावै
जाल बनावै है, गुजरिया झूठी है ... ।
क्यों तू याको नांय भगावै
मोय खिसयावै है, गुजरिया झूठी है ... ॥

आज मिल गई गली संकरिया में, गोरी घूँघट वारी।
कैसे घेरी गली सँकरिया में, ओ मोहन दान विहारी॥

सिर पै मटकी दूध दही की
तू जानै है मेरे जिय की
मेरो मनुआं फँस्यो गगरिया में, गोरी घूँघट ...।
दूध दही नांय सेंत-मेंत को
माँगै जैसे याही के बाप को
ना बसूँ मैं तेरी नगरिया में, ओ मोहन दान विहारी।
इतरावै तू नार नवेली
ऐसे खिल रही जैसे चमेली
कैसे जच रही आज घघरिया में, गोरी घूँघट ...।
कारो भँवरा संग संग डोलै
बिना बात के मोते बोलै
तू डोलै गली बजरिया में, ओ मोहन दान विहारी।
बातन देर करै काहे कूँ
दान देय ना नेकउ मोकूँ
आज फँस गई जाल मछरिया में, ओ गोरी ...।
ना दऊँ ना दऊँ ऐसे ना दऊँ
नाच गाय तो तेरी सुन लऊँ
देख माखन धर्यो मथनियाँ में, ओ मोहन दान विहारी।

नाँच देख लै मेरो प्यारी
आ संग नाचैं जोवन वारी
तू मारै बान नजरिया में, ओ गोरी ...॥

यारी मोहन ते लगाय लै, ऐसो यार और कोउ नांय ॥

या जग के सब यार एक दिन, साथ छोड़ भगजाँय,
याकी यारी सच्ची यारी, जनम जनम निभ जाय।
जग के झूठे यार सबै, मतलब ते गाँठ जुराय,
काम बने पै फिर नांय देखैं, नैना लेय फिराय।
लै लै रंग श्याम रसिया कौ, अमृत बहतो जाय,
मलमूतन को कहा भोगवो, माखी देख घिनाय।
ये संसार फूँस को छप्पर, आग लगै जर जाय,
चल री सखी श्याम रसिया घर, जहाँ अमर है जाय॥

अरी डरपावै आयो हाऊ माँ बड़ो बुरो बलदाऊ ॥

लै जावै हमकूँ खेलन कूँ, जहाँ सघन वन छाँह घनी,
ग्वालबाल सब सखा जोर कें, खेल खिलावैं बहुत जनी,
कूदा-कूदी आँख-मिचौनी, राजा चोर सिपाऊ, माँ ... ।
मोते कहै तोय नंदबाबा, मोल लियो है कौड़ी में,
सखा संग के देंय गवाही, हमने सुनी बजरिया में,
याही ते ये रूँगट खेलै, हँस हँस सबै चिराऊ, माँ ... ।
नंद यशोदा गोरे-गोरे, ये कारो कहाँ ते आयो,
याको ब्याह न होवै मैया, तिलकन्ना रच मन भायो,
बन्यो-ठन्यो डोलै छैला सों, कारो ही रह जाऊँ, माँ ... ।
सखा साथ लै चढ़ै ऊख पै, मो पै चढ़्यो न जावै है,
ऊपर ते ये किल्ली ठोकैं, हाऊ काटन आयो है,
बड़े दाँत हैं हाऊ के औ मुँहड़ो जैसे बिलाऊ, माँ ... ।
मैया मैं जब भागन लाग्यो, मोते पहले भज आये
छोड़ अकेले मोकूँ बन में, ऐसेइ सब कूँ सिखराये,
भाजत-भाजत हार गयो तन, काँपै पांय पिराऊँ, माँ ... ।
रिसयायी रोहिणी दाऊ पै, श्याम बड़ो मुसकावै है,
बोले दाऊ ये है झूठो, दाँव दिये बिन भागै है,
दोनों मैया हँस दोनों को, गोद लै लाड़ लड़ाऊँ, माँ ... ॥

वंशी के बजैया रे, श्याम तेरो रंग कारो ॥

तैनें कारी अँधेरी में जनम लियो
तू याही विधि कारो रे, श्याम तेरो रंग कारो।
तैनें कारी गैयन को दूध पियो, तू याही ...।
तैनें कारे नाग को नाथ दियो, तू याही ...।
तू दधि माखन मन को चोरै, तू याही ...।
तू बस रह्यो सब की आँखन में, तू याही ... ॥

गोपिन पाछै डोलै, कान्हा रूप बावरो ॥

काहू की चोटी को पकरै
काहू को घूँघट खोलै, कान्हा रूप ...।
काहू के अँचरा को खेंचै
हँस हँस मीठो बोलै, कान्हा रूप ...।
काहू की छतियन को छूवै
नैनन में रस घोलै, कान्हा रूप ...।
तिरछे सैनन कहै काहू ते
चल री करैं किलोलै, कान्हा रूप ...।
राधा चरन कमल को भौंरा
प्रेम बिक्यो बिन मोलै, कान्हा रूप ... ॥

तेंरे नैना कर रहे टोना श्याम सलोना ॥

जब ते देखे तेंरे नैना, है गयो कछु अनहोना।
तब ते भूल गई सब कछु मैं, नाय भावै घर भोना।
मेरी तेरी बात चली है, सबइ लगावैं लोना।
छूटी लोक लाज सब कुल की, और कहा अब होना।
खान-पान हू भूल गई मैं, भूली सेज पै सोना।
रात रात भर बैठी जागूँ, कर रही रोना धोना ॥

ब्रज में कैसे रहूँ, बताय भोरी मैया ॥

गाय दुहावैं धार कढ़ावैं, ऊपर ते ये चोर बतावैं,
इनते कैसे बचूँ, बताय भोरी मैया।
मैं भोरो ये मोय बुलावैं, दधि में ते चेंटीं बिनवावैं,
अब मैं कैसे करूँ, बताय भोरी मैया।
पनघट पै गगरी उचवावैं, मटकी फोरन को लोना लगावैं,
कैसे ये सब सहूँ, बताय भोरी मैया।
माता पिता गोरे तुम कारे, यों कह गारी देंय उघारे,
कैसे ये सब सुनूँ, बताय भोरी मैया ॥

टेढ़ो टेढ़ो श्याम टेढ़ी नजरिया तेरी॥

टेढ़ो मुकुट शीश पै वाको
टेढ़ो टेढ़ो श्याम टेढ़ी पगिया तेरी।
टेढ़ोई कुण्डल टेढ़ी माला
टेढ़ो टेढ़ो श्याम टेढ़ी लकुटी तेरी।
टेढ़ो ठाढ़ो ललित त्रिभंगी
टेढ़ो टेढ़ो श्याम टेढ़ी चलगत तेरी।
टेढ़े तेरे हैं सब ग्वाला
टेढ़ो टेढ़ो श्याम टेढ़ी चोरी तेरी।
टेढ़ी गोपी टेढ़ी गारी
टेढ़ो टेढ़ो श्याम टेढ़ी जारी तेरी।
टेढ़ी रस लीला कुञ्जन की
ब्रह्मादिक मोहें सुन तेरी॥

तेरे गुलचा गाल जमाय दूँगो, क्यों चोर कहै तू मोते ॥

कबहूँ माखन चोर बतावै
कबहूँ इंडुरी चोर बतावै
कबहूँ मटकी फोर बतावै
कबहूँ सारी लहँगा फरिया चीर चोर कहै मोते ।
कबहूँ नन्द भवन में जावै
मैया ते कछु जाय लगावै
कबहूँ मैया ते पिटवावै
सांटी लैके आँख दिखावै औ किल्लावै मोते ।
कबहूँ कहै चुनरिया फारी
अँचरा खैंचै है बनवारी
मैया तेरो श्याम खिलारी
खट्टी मीठी बात बनावै मुँह बिचकावै मोते ।
कबहूँ कहै कलूटा कारे
गारी देवै नाम निकारै
कबहूँ चिढ़ावै गूठा मारै
ऐसे ही रह जायगो बोले क्वारो बरुआ मोते ॥

कौन दुहावै गैया कन्हैया छलबलिया ॥

आधौ दूध दुहै दोहनी में
आधौ लै गटकैया, कन्हैया छलबलिया ।
छिन दोहत छिन धार भिजावत
छिन पकरै अचरैया, कन्हैया छलबलिया ।
छिनही हँसै तिरछो मुसकावै
यहै सिखाई तेरी मैया, कन्हैया छलबलिया ।
कारो ओढ़ै कारी कामर
बिदक जाय मेरी गैया, कन्हैया छलबलिया ।
रसिया गावै सैन चलावै
ठुमका दै नचकैया, कन्हैया छलबलिया ॥

राधा गोरी मोहन कारो, सगाई नाय होय प्रोतानी ॥

कीरत कहै सुन पूरनमासी
राधा गोरी है चन्दा सी
कारो गिरिधर श्याम घटा सी
कारो दूल्ह गोरी दुल्हन है यह बात लजानी।
सुन कीरत प्रोतानी बोली,
तेरी बतियाँ भोली भोली
जोरी दोनों की अनमोली
गोरो मुख लटकारी पुतरी कारी आँख सुहानी।
अघ बक बकी शकट संहारे
कालीदह में नाश्यो कारे
सात दिना तक गिरिवर धारे
राधा को मन चाह्यो गिरिधर सुन कीरत मुसकानी।
गोपी आपइ श्याम बुलावैं,
माखन अपने हाथ खवावैं,
चोरी को ये नाम लगावैं
देन उरहनो जावैं देखन श्याम रूप दीवानी ।
ब्रज में श्याम मोहनी छाई
सब कूँ मोह लियो है कन्हाई
गोपी माखन दूध मलाई
चोरी औ दधि दान की लीला, ये सब प्रेम कहानी ॥

रस भीनों साँवरिया राधे को रंग रसिया ॥

यमुना तट पै न्हावन बैठी श्री वृषभानु दुलारी,
बैठ कदम पै निरखन लाग्यो मोहन श्री गिरिधारी,
भयो रूप को बावरिया, राधे को रंग रसिया।
कुँजन ह्वै के जाय रही जब श्री राधा सुकुमारी,
आगे आगे मारग झारत, प्यारो श्री बनवारी,
बिछावै फूलन डागरिया, राधे को रंग रसिया।
ऐसी वंशी श्याम बजावै रीझै राधा प्यारी,
वन कुंजन में सुनवे आवै लाज भार में डारी,
छेड़ै तानन बाँसुरिया, राधे को रंग रसिया।
कबहूँ ब्यार करै पीताम्बर वारै लेय बलैयां,
चरन पलोटै प्यारी के निज कर ते कुँवर कन्हैया,
फूलन की सेजरिया, राधे को रंग रसिया॥

ये तो माटी में लोट-पोट होय,
यशोदा मैया तेरो ललना ॥

रच पच कें सिंगार बनायो
ये तो रेती में जावै सोय, यशोदा मैया ... ।
पूँछ पकर बछरन की खिचरै
पूछौ खिरक में कोय, यशोदा मैया ... ।
रोके ते न रुकै यशोदा
बरजे ते देवै रोय, यशोदा मैया ... ।
आँख मीं़ड काजर फैलायो
तिलकहु दीयो खोय, यशोदा मैया ... ।
चोरी हू अब करन लग्यो है
नाम दियो तेरो धोय, यशोदा मैया ... ।
सूने घर में अच्कै आवै
कहा सुनाऊँ तोय, यशोदा मैया ... ॥

देखो नाँचै कन्हैया देखो नाँचै
छूंम छं छं छं छं छन नन नन ॥

काली के फन-फन पै नाँचै
फं फं फं फं फं फन नन नन ।
लाल अधर पै मुरली बाजै
मं मं मं मं मं मन नन नन ।
हाथन में मणि कंकण बाजैं
कं कं कं कं कं कन नन नन ।
पतरी कमर में किंकिणी बाजैं
किं किं किं किं किं कन नन नन ।
चरण कमल में घुँघरू बाजैं
घं घं घं घं घं घन नन नन ।
नभ में शिव को डमरू बाजै
डं डं डं डं डं डन नन नन ।
ऊपर देव मृदंग बजावैं
धे धे धे धे धेन नन नन नन ।
झाँझ झील हू की धुन बाजै
झं झं झं झं झन नन नन नन ॥

पूतना जो तारन हारो, ऐसो और कौन दया वारौ ॥

बाल घातनी चली पूतना,
गोकुल सुंदर रूप धरे,
लै लियो गोद श्याम छह दिन कौ,
नील कमल रसगंध भरे,
कालकूट विष लग्यो स्तनन में
लाला के मुख डार्यो ।
पीयो दूध प्राण के संग हरि,
और न मारे शिशु ब्रज में,
हत्यारिन को मात बनाई,
भोरो श्याम दयालन में,
इन्हें छोड़ कहँ जाये शरण जो ऐसो ब्रज रखवारौ ॥

नखरारो साँवरिया सबन पै जादू डार्यो ॥

यमुना न्हावत चीर चुरावै, बैठै जाय कदम पै,
चीर लैन को नगन बुलावै, बाहर यमुना तट पै,
गोपी बनी है पूतरिया, सबन पै जादू डार्यो।
दूध दही को दान लेय, मारग रोके गिरिधारी,
खाय खवावै सबै लुटावै, फोरै मटकी भारी,
ऐसो नटखट नागरिया, सबन पै जादू डार्यो।
चोर-चोर के माखन खावै, घर भीतर घुस जावै,
बछरा खोलै धूम मचावै, भागै फिर छिप जावै,
देखै तिरछी नाजरिया, सबन पै जादू डार्यो।
वंशी ते जूडो खेंचै औ अपने पास बुलावै,
चोली छुवै हँसै नैनन में, नैना नैन मिलावै,
रोकै इकली डागरिया, सबन पै जादू डार्यो।
पनघट पै इंडुरी लैकें नहिं देवै बहुत खिजावै,
गगरी भर उँचवावै औ पानन की पीक लगावै,
पौंछे मेरी आँचरिया, सबन पै जादू डार्यो ॥

ब्याह कराय दै री, कहै कन्हैया मेरी मैया ॥

ब्रज की गोपी मोय चिढ़ावैं,
कारौ कारौ कह चहकावैं,
इन्हें समझाय दै री, कहै कन्हैया ... ।
मोतै कहै तू कारो रहैगो,
कोई न अपनी बेटी दैगो,
गोरी लाय दै री, कहै कन्हैया ... ।
चोर चोर ये नाम निकारैं,
ये सब मेरो ब्याह बिगारैं,
दुल्हन मँगाय दै री, कहै कन्हैया ... ।
मोते बहू की बात चलावैं,
हेल उचवाय के सींग दिखावैं,
फेरा पार दै री, कहै कन्हैया ... ॥

कोई माखन चोर री ब्रज गलियन डोलै ॥

जो कोई गैल में मिलै अकेली,
बरजोरी गलबैंया मेली,
चलै न कोई जोर री, ब्रज गलियन ... ।
लैके टोली ग्वाल बाल की,
चोरी करै दही माखन की,
घर घर मच रह्यो शोर री, ब्रज गलियन ... ।
सँग सँग बंदर डोलैं वाके,
मटका फोरैं दूध दही के,
छींके डारैं तोर री, ब्रज गलियन ... ।
साँझ सवेरे वंशी बाजै,
आधी रात को गोपी भाजैं,
घर लौटें बड़े भोर री, ब्रज गलियन ... ।
ब्रज को चंदा है मनमोहन,
रस बरसावत डोलै गलियन,
गोपी बनी चकोर री ब्रज गलियन ... ।
जल भरवे कूँ गोरी जावैं,
पनघट पै पीछे ते आवैं,
खैंचै अचरा छोर री, ब्रज गलियन ... ॥

कैसी चतुर सयानी गूजरिया ॥

मैं भोरो मेरी मैया भोरी,
तू छलछंदिन है ठगवारी,
कैसी मैयाय सिखाय गई गूजरिया।
मैंने ना देख्यो याको घर,
घुसे होंयेगे घर में बंदर,
कैसे लौना लगाय गई गूजरिया।
मैया ये है चोट्टी भारी,
खाय-जाय मटकी पूरी सारी,
मोते कह गई याकी सासरिया।
याके घर कौ सजन मोधुआ,
इत उत डोलै खाती पूवा,
कैसी आँख दिखाय गई गूजरिया॥

नैना गिरिधर ते मिलाय लै, भारी सुख पावैगी गोरी ॥

इत उत काहे डोलै सब मतलब के तू है भोरी,
लै जोबन को रस उड़ जावैं, फिर होय माथा फोरी।
गोरौ छूटै कारौ छूटै छूटै सब की जोरी,
बिछरौ मीत मिलै नाय जग में, जाय प्रीति सब तोरी।
फल फूलन की डारी ये शोभा है दिन की थोरी,
जोबन नदिया बह जावैं ज्यों धन है जावै चोरी।
अमर सुहागिन है जावैगी चूनर रस में बोरी,
लाल लाड़ली मिलैं खेलते गहवर साँकरी खोरी ॥

ढीठ हठीलो अलबेलो कैसौ जायो यशोदा ने लाल,

रानी यशुमति भोरी सजनी (येतो)
छलिया छलके जाल।
रानी यशुमति कैसी गोरी, तन मन कारो गुपाल,
यशुदा भोरी है सकुचीली, लंगर गाय को ग्वाल।
घर कौ याय माखन नाय भावै
चोरी कौ खाय निहाल,
गूजरी की मटकी नित फोरै, छेड़ै करै कुचाल।
बोली बोलै सैन चलावै और बजावै गाल,
रसिया गावै मुँह मटकावै, नाँचै दै दै ताल।
अँचरा खेंचै पायन छीवै तोरै मोती लाल,
ऐसी नदिया बही प्रेम की, रात दिना सब काल॥

वा दिन भाज गई, गोरी रस की भरी गुजरिया ॥

मोते बोली तोर ला पतौआ,
दही पिवाऊँ तोय कन्हैया,
धोखो दै कें गई, गोरी छल की भरी ... ।
काउ दिन हाथ परैगी मेंरे,
वा दिन देखूँ नखरे तेंरे,
नखरे दिखाय गई, गोरी छल की भरी ... ।
तेंरे बाखर में मैं आऊँ,
बछरा खोल दूध चोखाऊँ,
सींग दिखाय गई, गोरी छल की भरी ... ।
पनघट पै गागर लुढकाऊँ,
इंडुरी लै यमुना में बहाऊँ,
जुलम गुजार गई, गोरी छल की भरी ... ।
मारग में लूटूँ दधि माखन,
मटकी फोर खवाऊँ बंदरन,
बच के निकर गई, गोरी छल की भरी ... ।
मोते अटकी है तू गोरी,
तेंरे घर में करूँ मैं चोरी,
फेंटी पर जो गई, गोरी छल की भरी ... ॥

इतनी मती उड़ै तू नार, चिरैया उड़ कहँ जावैगी ॥

होलै होलै तू कित जावै,
अचकै अचक सरकती जावै,
बातन में मोकूँ बहकावै,
दान दिये बिन कैसे मोते बचकें जावैगी।
मत पकरै मोहन मेरी बैंया,
मोकूँ है रही देर कन्हैया,
देख दूर गई तेरी गैंया,
खैंचा खैंची मतकर ये मटकी गिर जावैगी।
ठाढ़ो श्याम तू नैन मिला दै,
अपने हाथन दही पिवाय दै,
घूँघट खोल तनक मुसकाय दै,
इतनी सूम बनें ये बिरियाँ फिर नाय पावैगी।
मोहन तेरो कहा बिगरैगो,
घर को सजन कछु बहम करैगो,
मेरो देस निकारो होयगो,
सास ननद छरछंदी कह कह मोय पिटवावैंगी।
गली साँकरी मोहन घेरी,

रूप माधुरी ऐसी फेरी,
ग्वालिन बस में है गई चेरी,
नैन मिले मुसकाय श्याम के गर लग जावैगी ॥

धीरे चलो पीछे ते श्याम रह्यो आय ॥
गोरे-गोरे माथे पै टीको चमकै,
धीरे चलो टीको सरक नाय जाय।
बड़ी-बड़ी अँखियन काजर सोहै,
धीरे चलो रेख बिगर नाय जाय।
मोतिन हार गरे में सोहै,
धीरे चलो अँगिया दरक नाय जाय।
घूम घुमारो लहँगा सोहै,
धीरे चलो घूम बिगर नाय जाय।
रसिया ते बचती रहियो री,
धीरे चलो आय लिपट नाय जाय।
कानन झुमके बड़े सलौने,
धीरे चलो नथली ररक नाय जाय ॥

ऐसी कौंन न मोहै श्याम देखे ॥

बड़े बड़े नैना पैनी कटारी,
ऐसी कौन कटै न श्याम देखे।
कजरा कोर कटीली बरछी,
ऐसी कौन चुभै न श्याम देखे।
भौहें बनी धनुष सी टेढ़ी,
ऐसी कौन मरै न श्याम देखे।
चितवन में मधुरे मुसकावै,
ऐसी कौन हँसै न श्याम देखे।
मस्तानी सी चाल झूमती,
ऐसी कौन चलै न श्याम देखे।
पीरौ पटुका उड़ फहरावै,
ऐसी कौन उड़ै न श्याम देखे ॥

अरी दधि बेचनहारी, ऐयो अकेले में ।
अरे नांय आऊँ साँवरिया, मैं तो अकेले में ॥

गोरी गोरी सोने की सी लगै पूतरी प्यारी,
पतरी कमर बड़ी लचकावै चाल चलै मतवारी,
अरी दधि बेचनहारी ... ।
कारौ-कारौ भँवरा को सौ, सौ-सौ फेरा देवै,
तेरे संग कारी ना होऊँ काहै बलैंया लेवै,
अरे नाय आऊँ साँवरिया... ।
प्रेम पेंठ ब्रज में लागी है क्यों भाजै तू प्यारी,
हम दोनों की प्रीति जुरी है, मत बन भोरी भारी,
अरी दधि बेचनहारी ... ।
प्रीति न जानें कारो भँवरा, उड़-उड़ के रस लेय,
गायन को ग्वारिया श्याम क्यों प्रेम दुहाई देय,
अरे नाय आऊँ साँवरिया... ।
सबरो जग है प्रेम रंगीलो, तू क्यों बच रही गोरी,
मत चूकै मैं तेरो प्यारो देखै चोरी-चोरी,
अरी दधि बेचनहारी... ।
बंशी तनक बजा दै मोहन कुंजन यमुना तीर,
बंशी सुन गलबैंया लागी, रह्यो न मन में धीर,
अरे नाय आऊँ साँवरिया... ।

यशुदा दह्यो बिलोवै, कन्हैया बारो अँगना में खेलै ॥

महलों में खेलै अँगना में खेलै,
घुटमन घुटमन डोलै, कन्हैया बारो ... ।
कबहूँ ठाढ़ो है कैं किलकै,
ओंगो मोंगो बोलै, कन्हैया बारो ... ।
पैजनियाँ बाजै छुम छननन
पायन पटकत डोलै, कन्हैया बारो ... ।
पीरी झंगुलिया कमर घंटिका,
घूमैं हौलै हौलै, कन्हैया बारो ... ।
कबहूँ गिरै देहरी लाँघत,
रोवत अँसुवा ढोलै, कन्हैया बारो ... ।
मैया गोदी लै पुचकारै,
फिरते करत किलोलै, कन्हैया बारो ... ॥

छोटो सो मेरो छोना ये ब्रज को खिलौना,

ये कौंन ने रुलायो श्याम रोवत घर आयो ॥
अब ही मैंने सिंगार्‍यो रे,
पीरी झँगुली धरायो रे,
काजर को दियो डिठोना, ये ब्रज को ...।
सबरी ब्रज की बैर परी,
माखन चोर बनावें सगरी,
चोरी कौ दै दियो लोना, ये ब्रज को ...।
दिन रात चरावै गैया है,
संझा को घर बगदैया है,
कैसे खायो दधि दोना, ये ब्रज को ...।
आँख मीड़ कजरा फैलायो,
हिलकिन ते रोयो बिलखायो,
ये कौन दै गई रोना, ये ब्रज को ...।
ज्वानी की सब मस्तानी हैं,
दोष छिनारे को लगावैं हैं,
बालक है नंद डिठोना, ये ब्रज को ...।
यो आगे पीछे डोलैं हैं,

मोहन को आप बुलावैं हैं,
कर देवैं जादू टोना, यो ब्रज को ... ॥

ग्वालिन कैसी झूँठी बात बनाय रही ॥

माखन की तो कहा कही,
मैंने छाछऊ नाय चखी,
याय नेंक सरम ना आवै झूँठी बात कही।
माखन चोर और दधिदानी,
मटकी फोर नाम मनमानी,
रोजइ नाम बिगारत डोलैं जहीं तहीं।
मैया ये सब चोट्टीं भारी,
चोर लई मेरी बंशी प्यारी,
इननें जुलम गुजार्यो नहीं जाय सही।
आपै मोकूँ झालो देवैं,
अपने घर में मोय बुलावैं,
आपइ मेरे सामइ धरदैं मटकी दही।
भोरइ तू मोय माखन देवै,
भर-भर थारी दही पिवावै,
झिके पेट ना खावै कोई काहे मान रही ॥

झूठी बड़ी ये लुगैया, सुन लै मेरी मैया ॥

दूध दही मुक्तेरो घर में,
माखन घैया भरे माट में,
नौ लख बंध रहीं गैंया, सुन लै मेरी मैया।
अपने हाथन मोय जिमावै,
भर-भर कें थारी तू प्यावै,
भूखो न तेरो कन्हैया, सुन लै मेरी मैया।
भोरे ही गैयन पै मैं जाऊँ,
गाय चराय साँझ को आऊँ,
कब मैं गयो याकी ठैंया, सुन लै मेरी मैया।
ये घर फोरी घर-घर डोलै,
मीठी बातन में विष घोलै,
इनते बचावै रमैया, सुन लै मेरी मैया।
घर बैठे को चोर बतावै,
बाहर दान को लौना लगावै,
ऐसी लगै ज्यों ततैया, सुन लै मेरी मैया।
डंक मार कें फिर उड़ जावै,
ऊखल में बँधवा पिटवावै,
पूछ लै तू बलमैया, सुन लै मेरी मैया ॥

ला रे नाव अरे मल्लहा के, उतार पार यमुना के ।

हम तोहे पुकारैं रह-रह के, किनारे ठाढ़ी यमुना के ॥
लै रहीं यमुना अधिक हिलोरें
चढ़ रहीं ऊपर देय झकोरे
उड़ै चूनरी ये झोंके ब्यार के, उतार पार ... ।
आओ बैठो ब्रज की नारी
उतराई कहा देंगी सारी
मैं पहले लऊँ ठहराय के, उतार पार ... ।
पहले पार उतार नवरिया
देंगी नाव लगाय किनरिया
जाय बैठी हैं ऊपर नाव के, उतार पार ... ।
यमुना बीच पहुँच गई नैया
गाय उठ्यो कछु गीत नवरिया
अरि ये तो है ढोटा नंद के, उतार पार ... ।
सबरी हँसी हँसी हैं प्यारी
आय मिले प्यारे गिरिधारी
कैसे कैसे हैं छंद नंदलाल के, उतार पार ... ॥

तैंने छोड़े कहाँ मोर मुकुट धारे ओ कृष्ण बँसुरिया वारे ॥

मोर मुकुट तज ओढ़ी चूनरी
हाथन में क्यों पहरी चूरी
गोपी रूप धरे न्यारे, धरे न्यारे ओ कृष्ण ... ।
पीताम्बर तज चोली पहरी
कटि काछनी तज पहरी सारी
छतियन पै मोतिन हारे, मोतिन हारे ओ कृष्ण ... ।
कड़े छड़े बाजूबंद सुन्दर
हाथन मेंहदी पाँव महावर
बिछुआ मुंदरी कर धारे, मुंदरी कर धारे ओ कृष्ण ... ।
ललिता पूछ रही गिरिधर सों
सखी साँवरी बोली छवि सों
राधा दरस आस धारे, आस धारे ओ कृष्ण ... ।
ललिता लै गई महल साँवरी
लम्बो घूँघट लहँगा वारी
ये आई चरन लगै त्यारे, लगै त्यारे ओ कृष्ण ... ।
प्यारी मिलवे लगीं गरे ते
समझीं धोखो भयो है मोते
हँस फूलन लै-लै मारे, लै-लै मारे ओ कृष्ण ... ॥

मालिन बरसाने में आई ॥

लेओ रंग बिरंगे फूलन, हार बहुत से लाई।
ललिता ने टेरी वह मालिन, महलन में वह आई।
कौंन गाँव ते आई मालिन, कौंन कौंन की जाई।
नेही नाम पिता को जानों, प्रीती मेरी माई।
प्रेम नगरिया गाँव हमारो, जहाँ जनम है पाई।
कैसे आई तू बरसाने, दूर देस क्यों आई।
सब कोऊ जानैं भानुलाड़िली, जस सुनकें मैं आई।
पायन लगी लाड़िली के तब, बोली कीरति जाई।
ऐसी रूपवती तू सजनी, सुनत ही गई लजाई।
लै पहरा फूलन के हरवा, सुनत साँवरी धाई।
पहरावन लागी लै हरवा, नैनन में मुसकाई।
जान गई प्यारी ये छलिया, हँसन लगी मन भाई।
सबनें जान लिए ये प्यारे, नंदलाल सुखदाई।
राधा माधव मिले कुंज में, लीला रसिकन गाई ॥

लग जायेगी नजर (तोहे) घनश्याम,
मत चलै झूमतो इतरातौ ॥
जो कहुँ देखेंगी ब्रज गोपी,
बिक जामेंगी बिन दाम, मत चलै ... ।
जुलम करै तेरी ये चितवन,
जाने मोल लियौ सब गाम, मत चलै ... ।
जुलम करै तेरी ये मुसकन,
जाने कर दियो काम तमाम, मत चलै ... ।
जुलम करै तेरी ये मुरली,
जाने मोह्यो सब ब्रजधाम, मत चलै ... ।
जुलम करै तेरी माखन चोरी,
जाते चोर भयो तेरो नाम, मत चलै ... ।
जुलम करै तेरी छेड़ा-छेड़ी,
जाते बहुत भयो बदनाम, मत चलै ... ॥

राधारानी को कन्हैया बड़ो प्यारो, मन मोहन मुरली वारो ॥

घर-घर माखन जाय चुरावै
माखन खाय दही फैलावै
माखनचोरी हू पै लागै बड़ो प्यारो, मन ... ।
पनघट पै जल भरन न देवै
गगरी भरी शीश लुढकावै
गगरी फोरै पै हू लागै बड़ो प्यारो, मन ... ।
गली साँकरी घेरै नित ही
दधि को दान लेय बरबस ही
लूटै मटकी हू पै लागै बड़ो प्यारो, मन ... ।
कुंज गली में जो मिल जावै
बैंया पकर के रार मचावै
रार करत हू पै लागै बड़ो प्यारो, मन ... ॥

तेरे नैना बान कमान छैल सुन नंदगैयाँ ॥

टेढ़ी भौंह मरोरा मारै
करै घायल ये मुसकान, छैल सुन नंदगैयाँ।
मोर पंख सिर पै लहरावै
कैसी अलबेली शान, छैल सुन नंदगैयाँ।
लटुरी लटकैं गोल कपोलन
तेरे झलकैं कुंडल कान, छैल सुन नंदगैयाँ।
नैनन की कोरन सौं तिरछे
देखे मारै बान, छैल सुन नंदगैयाँ।
झूम चलै मुड़-मुड़ के देखै
पीताम्बर फहरान, छैल सुन नंदगैयाँ।
बंसी तो ठगनी सी है गइ
मोहे मीठे तान, छैल सुन नंदगैयाँ॥

अरे मत निकसै गोकुलचंदा, लग जायेगी नजर नंदनंदा ॥

बाहर है मदमाती गुजरिया, अँखियाँ बनी कटारी सी,
काजर रेख नुकीली पैंनी, मारै चोट दुधारी सी,
ऐसी मार बुरी है इनकी भूलैगो सब धंधा।
बन्यो ठन्यो डोलै छैला तू, रूप तेरो है चटकीलौ,
चलै झूमकें चाल छबीलौ, ऐसो है तू मटकीलौ,
कैसेहु नांय बचैगो इनको बड़ो विकट है फंदा।
भगजा यहाँ ते बेग लाढ़ले, नंदभवन कूँ जल्दी सों,
मैया पै लगवाय डिठोना, माथै पै इक चौड़ो सौ,
मेरी मान साँवरे तू अलबेलो रस को कंदा ॥

मोहन मुरली वारे तुमको लाखों प्रणाम-
तुमको लाखों प्रणाम ॥

राधा नंद दुलारे तुमको लाखों प्रणाम-तुमको ...।
राधा प्राण पियारे तुमको लाखों प्रणाम-तुमको ...।
भक्तन के रखवारे तुमको लाखों प्रणाम-तुमको ...।
रास रचावन हारे तुमको लाखों प्रणाम-तुमको ...।
माखन चोरन हारे तुमको लाखों प्रणाम-तुमको ...।
दही लूटवे वारे तुमको लाखों प्रणाम-तुमको ...।
गोवर्धन गिरिधारे तुमको लाखों प्रणाम-तुमको ...।
चीर चोरवे वारे तुमको लाखों प्रणाम-तुमको ...।
नंद जसोदा वारे तुमको लाखों प्रणाम-तुमको ...।
ब्रज मण्डल उजियारे तुमको लाखों प्रणाम-तुमको ...।

गोपी माधुरी

जा परे मोहि मत छुवै साँवरे कारी है जाऊँगी ॥

तन को कारो मन को कारो
ता पर ओढ़ै कामर कारो
चोरी जारी नाम है कारो
ऐसे कारो कान्हा तो ते बच के जाऊँगी।
सुन ओ गोरी मन की कारी
कारो काजर अँखियाँ कारी
कारी भौहें पुतरी कारी
कारे केस बिना वेणी ये कैसे गुहावैगी।
तू टेढ़ो तेरी लठिया टेढ़ी
टेढ़ी चाल नजरिया टेढ़ी
टेढ़े सखा मंडली टेढ़ी
दूरै रहियो नाय मैं भी टेढ़ी है जाऊँगी।
टेढ़ी देखै टेढ़ी बोलै
टेढ़ी टेढ़ी बचती डोलै
सूधी कर दूँ आ बिन मोलै
हाथ पकर बोल्यो अब कैसे तू बच पावैगी ॥

ढीटो-ढीटो रे भयो, श्याम हाय बड़ो ढीटो ।

घेरै बाट कुवाट अकेली,
जब कोऊ रहै न संग सहेली,
हाय मैया री ब्रज को बसिबो,
बड़ो कठिन है ब्रज को रहिवो ।
ग्वाल बाल लै संग में आवै,
बछरा खोल कहूँ छिप जावै,
हाय मैया री बछरा कूदै,
बछरा कूदैं इत उत भाजैं ।
गगरी भर लौटूँ पनघट ते,
कँकरी मार भजै झटपट ते,
हाय मैया री गगरी फूटै,
गगरी फूटै हम सब भीजैं ।
माखन की घर धरी कमोरी,
माखन खाय मथनियां फोरी,
हाय मैया री दह्यो बखेरो,
दह्यो बखेरो दूध ढुरायो ॥

तैंने जादू डाला रे अरे साँवरे ॥

गूजर बनी दधी बेचन गई,
मारग में पाय गयो रे, अरे साँवरे।
मालिन बन के बाग गई,
मलिया बन आयो रे, अरे साँवरे।
पनिहारिन बन गई कुँवा पै,
देवरा बन आयो रे, अरे साँवरे।
रनियां बन के गइ महलों में,
राजा बन आयो रे, अरे साँवरे।
हिरनी बन के गइ जंगल में,
नैनन तीर मारा रे, अरे साँवरे ॥

यशोदा मैया लालाय पालने झुलावै ॥

हीरा मोती जड्यो पालनों, रेशम डोर लगावै।
रंग बिरंगे लिये खिलौना, लाला को दिखरावै।
लै हाथन झुनझुना बजावै, चुटकी लै चटकावै।
कबहूँ लालाय गीत सुनावै, हँस हँस ताहि सुनावै।
किलकि किलकि हरि पलना झूलैं, पीं बलि बलि जावैं ॥

मैया तेरो लाला बड़ो जुलमी ॥

देखत में ये छोटो दीखै,
बादर फारै ये जुलमी।
सात बरस को याय मत जानै,
चूनर फारै ये जुलमी।
घर में घुस कें माखन गटकै,
पकरत सटकै ये जुलमी।
जब जब जाऊँ यमुना इकली,
तब तब छेड़ै ये जुलमी।
जब जब जाऊँ कुंज गलिन में,
बैंया पकरै ये जुलमी ॥

नेक हेल उचाय जा रे, छोरा नंद जू के ॥

भारी हेल को छबड़ो भारो
नेक हाथ लगाय जा रे, छोरा नंद जू के।
ऊबट बाट कोऊ ना संग में
नेंक दरस दिखाय जा रे, छोरा नंद जू के।
सद लौनी माखन की दउँगी
नेंक भोग लगाय जा रे, छोरा नंद जू के।
टेढ़ी मेढ़ी चाल छोड़ दै
सूधी चाल चलाय जा रे, छोरा नंद जू के।
ऐंठो ऐंठो कितकूँ डोलै
नेंक लटक दिखाय जा रे, छोरा नंद जू के ॥

लगन ऐसी लागै कुँवर कन्हैया ॥

नाम तिहारो पल-पल लेऊँ,
पीऊ-पीऊ जैसे रटत पपैया, लगन ऐसी ... ।
छूटै ना यह लगन तिहारी,
जैसे पतंगा अगिन जरैया, लगन ऐसी ... ।
आँसू बहवै तुमरे मिलन कूँ,
जैसे मेहा झर बरसैया, लगन ऐसी ... ॥

बड़ो जुलमी हमारो श्याम रसिया,
वो कितनो मोय तरसावै है ॥

ब्रज की गलियन भटक रही मैं,
बड़ो जुलमी हमारो श्याम रसिया,
वह मोते रूप छिपावै है।
टेरत टेरत हार गई मैं,
बड़ो जुलमी हमारो श्याम रसिया,
नाय सुनवे को ढोंग बनावै है।
ठोकर लगी और जाय गिरी मैं,
बड़ो जुलमी हमारो श्याम रसिया,
नाय अचकैं मोय उठावै है।
या छलिया कूँ करूँ सूधरो,
बड़ो जुलमी हमारो श्याम रसिया,
बरसाने में लगन लगावै है॥

ठाढ़ो रहियो रे श्याम मैं आऊँगी ॥

पनियाँ भरन मैं घर ते निकसी
रीती कैसे जाऊँगी, ठाढ़ो रहियो रे ... ।
बंशी बजैयो गैया चरैयो
नेक न देर लगाऊँगी, ठाढ़ो रहियो रे ... ।
सास ननद ते बछरा के मिस
पानी पियायवे लाऊँगी, ठाढ़ो रहियो रे ... ।
मेरी सौं तू ह्याँई रहियो
तेरी सौं मैं आऊँगी, ठाढ़ो रहियो रे ... ।
मेरे मन की राख लाड़िले
मैं तेरे गुन गाऊँगी, ठाढ़ो रहियो रे ... ॥

ऐयो ऐयो मेरे घर रे साँवरे ॥

रे साँवरे मेरे बागों में ऐयो,
ऐयो फूल चुनैयो रे, रे साँवरे।
रे साँवरे यमुना तट पै ऐयो,
ऐयो चीर चुरैयो रे, रे साँवरे।
रे साँवरे मेरे खिरकों में ऐयो,
ऐयो दूध दुहैयो रे, रे साँवरे।
रे साँवरे तू पनघट पै ऐयो,
ऐयो गगरी उचैयो रे, रे साँवरे।
रे साँवरे मेरे महलों में ऐयो,
मेरी सेजों पै ऐयो रे, रे साँवरे ॥

हँस हँस कण्ठ लगाय लै पियरवा ॥

काहे मोते रूठ्यो नाहिं बोलै
मीठी-मीठी बतियाँ बनाय रे
रस भरी बतियाँ प्यारी लागैं
बोल बोल मोते बोल पियरवा।
मरि-मरि जांऊ तेरी बात सुनन कूँ
बतियन रस बरसाय रे
काहे अपनी आँख चुरावै
नैनन नैन मिलाय रे पियरवा।
साँवरी सुरत तेरी मेंरे मन मोह्यो
मुख छवि तनक दिखाय रे
श्याम पियरवा नंदकुँवरवा
चरनन ते लिपटाय लै रे पियरवा ॥

ये गजरा फूलन को पहनाऊँगी तोहे श्याम ॥

रंग बिरंगे फूल गूँथ के,
आज मैं सजाऊँगी तोय श्याम।
बेला जुही गुलाब चमेली,
चंपा धराऊँगी तोपै श्याम।
कमल केवड़ा कदम मोंगरा,
खसहू लगाऊँगी तोपै श्याम।
पत्रावली करुँ चंदन की,
इत्र छिरकाऊँगी तोपै श्याम।
ऐसी माला मैं पहराऊँ,
आज बिकवाऊँगी तोहै श्याम॥

यशुदा के छैया आजा कदम के नीचे ॥

मोर मुकुट सिर लहरा लेवै,
लट लटकाय जा कदम के नीचे।
'कोयलिया की कूक' कूक कें,
मोहि बुलाय जा कदम के नीचे।
दधि बेचन मैं घर ते निकसी,
डगर में पाय जा कदम के नीचे।
हरे बाँस की बाँसुरिया तेरी,
मधुर बजाय जा कदम के नीचे।
बूँदन बरसै कारी कामरिया,
तनक ओढ़ाय जा कदम के नीचे।
पनघट पै न्हायवे मैं जाऊँ,
यमुना पै पाय जा कदम के नीचे ॥

यशुदा के छैया बहुत नचाई मोय ॥

भरी मटुकिया मेंरे सिर पै
गेरी आय न जाने कितते
यशुदा के छैया अचक गिराई मोय।
ग्वाल बाल लै घर में आवै
बंदर हू संग-संग लै आवै
यशुदा के छैया बहुत डराई मोय।
पकर एक दिन मात दिखायो
मेंरे पिय को रूप बनायो
यशुदा के छैया बहुत लजाई मोय॥

बलिहारी तेरी बतियाँ प्यारी बड़ी रिझवार ॥

आजा रे आजा लाला मेंरे अँगनवा
बलिहार जब माँगै मखनियां तू हाथ पसार।
मैं जो हठीली तू भी हठीलो
बलिहार रस समझै कोई रसीलौ रसदार।
जब तू उरझै दान मान कूँ
बलिहार जब पकरै मेरी सारी को किनार।
रस की पैनी मार दुधारी
बलिहार हिय चीरै घायल करै आर पार॥

ठाढ़ो यहाँ कहा करै नंद के ठगैल,

आड़ो है कें काहे रोकै मेरी गैल ॥
हट जा रे छाड़ दै रे मेरी गली,
कारे भँवरा क्यों घेर्यो नरम कली,
नैकहुँ हटै न ये तो बड़ो री अड़ैल, आड़ो ... ।
जित मैं जाऊँ तित ही धावै,
घूँघट के सामई वह आवै,
सैन चलावै मीठे ऐसो भारी छैल, आड़ो ... ।
अचरा खैंचे और मुसकावै,
घूँघट खोल कछु कहि कहि जावै,
ऐसो तो कहूँ ना देख्यो संग लगैल, आड़ो ... ॥

मोहन काहे को पकरी बैंया ॥

तुम तो रसिया भँवरा जैसे, डोलत रस के लैंया ।
प्रीति रीति ना जानों छैला, करत फिरत लरकैंया ।
बाँह पकर कें कठिन निभानो, भँवरा फूल उड़ैया ।
हमरी तो हम ही इक जानैं, कैसी है तरसैंया ।
जब-जब घटा उमड़ बरसै झर, विरहा मन लहरैंया ।
हे घनश्याम श्याम तुम घन हो, रहो सदा बरसैंया ॥

आवो रे कुँवर कन्हाई, साँवरे तोकूँ नंद दुहाई ॥

जो तू आवै कान्हा पीरी फाटै,
मिलूँगी दह्यो चलाई ।
जो तू आवै कान्हा सूरज ऊगे,
मिलूँगी पनघट जाई ।
जो तू आवै कान्हा तनक चढ़े दिन,
मिलूँगी यमुना न्हाई ।
जो तू आवै कान्हा बीच दुपहरी,
मिलूँगी पनघट जाई ।
जो तू आवै कान्हा साँझ की बिरियाँ,
मिलूँगी गाय दुहाई ।
जो तू आवै कान्हा रैन अँधेरी,
मिलूँगी सबन सुवाई ॥

बन बन ढूँढ़ूँ साँवरिया ऐसी है गयी बावरिया ॥

ताल तलैयन में ढूँढ़ूँ,
जमुना के सब तट पर ढूँढ़ूँ,
लहरन ढूँढ़ूँ साँवरिया ऐसी है गई बावरिया।
कुंजन-कुंजन में ढूँढ़ूँ,
गलियन-गलियन में ढूँढ़ूँ,
कदमन ढूँढ़ूँ साँवरिया ऐसी है गई बावरिया।
पर्वत-पर्वत पर ढूँढ़ूँ,
गोवर्द्धन ऊपर ढूँढ़ूँ,
चोटी ढूँढ़ूँ साँवरिया ऐसी है गई बावरिया।
दिन सूरज धूपन में ढूँढ़ूँ,
चंदा तारे में ढूँढ़ूँ,
रैना ढूँढ़ूँ साँवरिया ऐसी है गई बावरिया।
जागत ढूँढ़ूँ सोवत ढूँढ़ूँ,
साँझ सवेरे वाको ढूँढ़ूँ,
सब पल ढूँढ़ूँ साँवरिया ऐसी है गयी बावरिया॥

तो ते नैना जो मिलायो, हल्ला है गयो सबरे गाम ॥

घाट बाट में ताने मारै,
गूजरिया ने तो अपने बस में कर लीये हैं घनश्याम ।
घर के बाहर के सब टोकें,
मोतें कहैं दिवानी ऐसी है गई मैं बद्नाम ।
ये लगवारिन है मोहन की,
याको लगवारो मतवारो रसिया घनश्याम ॥

देखो छाँड़ो न पकरो हाथ, नई री मैं तो नई आई अनजानी ॥

मानों-मानों कान्हा छोड़ो डगरिया,
कैसे छुडाऊँ (हाय) बीच डगरिया,
हट जाओजी छोड़ो मेरो साथ, नई री ... ।
कैसो निडर मेरो अँचरा पकरै,
मुख देखन घूँघट ते झगरै,
देखो कारो करो न मेरो माथ, नई री ... ॥

मेरे मन में बस्यो कन्हैया, नंद लाल मुरलिया वारौ ॥

जैसे दूध मिलै पानी में, ऐसो मिल गयो प्यारो,
श्याम बिना सब दुनियाँ सूनी, कैसे जीऊँ मेरी मैया।
साँवरी सूरत आँखन में बसी, जैसे कजरा कारो,
मोहनी सूरत मन पै छाई, जो यशुदा को छैया।
चारों ओर कृष्ण को देखूँ, श्याम आँख को तारो,
कृष्ण हमारो प्राण भयो है, जो दाऊ को भैया।
मैं पूछूँ ऐ मेरे मनुवा, क्यों बिक गयो बजमारौ,
अब तू काहे रोमत डोलै, ढूँढै वंशी बजैया ॥

ऐयो रे मेरी डगरिया, अरे प्यारे साँवरिया ॥

तिखने पै चढ़ देख रही मैं,
आवत दीख पर्‌यो कदमन में,
मोर पंख चमक्यो माथे पै,
दूरइ ते मैंने सुनी बँसुरिया।
तिखने ते मैं उतर कन्हाई,
बछरा बाहर दिये भजाई,
बछरा पकरन के मिस जाती,
समझ न पाई सासरिया।
ठाढ़ी ठाढ़ी बाट देखती,
कबहूँ बछरा पकरन जाती,
पकर कबहूँ आगे दौराती,
ऐसी कर रही बावरिया।
कबहूँ घूँघट खोल देखती,
कबहूँ घूँघट ते मुख ढकती,
कबहूँ ऊँचे टेर लगाती,
बह रही आँखन आँसुरिया ॥

अरे मान ले घनश्याम, कर जोरूँ छीऊँ तेरे पाम ॥

या बाखर में मैं ही अकेली,
ना घर की ना कोई सहेली,
चरचा करेंगी सब ब्रजवाम।
पनघट पै सब सखियाँ बोलें,
हँस हँस बात मरम की खोलैं,
कहाँ तेरो श्याम बता री भाम।
कजरा तैंने कैसो लगायो,
तेरे नैनन श्यामहि छायो,
सखी तू है गयी री बेकाम।
रात नींद न आई तोकूँ,
बाट देखती रही कौन कूँ,
सखी तू बिक गई बेदाम।
कूँआ पै यमुना पै टोकैं,
तानों मार राह में रोकैं,
श्याम मिलनियाँ धर्‌यो मेरो नाम ॥

सुन री यसोदा मैया री,

तेरो कैसो कन्हैया, तेरो कैसो कन्हैया ॥
राह चलत मेरो अँचरा खेंचै,
लूँगौ मोल कहा तू बेचै,
ओढ़ै मेरी चुनरिया री, तेरो कैसो कन्हैया ... ।
वंशी ते मेरो खेंचै जूरो,
छूवै मेरो कंचन चूरो,
पकरै नरम कलैया री, तेरो कैसो कन्हैया ... ।
राह चलत मेरी बैंया पकरै,
बिना बात के मोते झगरै,
(क्यों) गारी दई लुगईया री, तेरो कैसो कन्हैया ... ।
मेरे आगे पीछे डोलै,
लै लै नाम ये मोते बोलै,
चल री दुहूँ तेरी गैया री, तेरो कैसो कन्हैया ... ।
पनघट पै ये ठाढ़ो पावै,
पानी भर भर मोय उचावै,
पीछे घट लुढ़कैया री, तेरो कैसो कन्हैया ... ॥

श्याम तू बड़ौ अनाड़ी रस कौ ॥

जब मैं बैठूँ सखिन के ढिंग,
हाय तू काहे बुलावै मोकौं, श्याम तू ... ।
तेरी मेरी बात चलै है,
रह्यो ग्वारिया तू गायन कौ, श्याम तू ... ।
राह चलत अँचरा मेरो खैंचै,
ना जानै तू भेद मरम कौ, श्याम तू ... ।
कबहूँ लै लै नाम पुकारै,
सुन हँसैं सब मोकौं तोकौ, श्याम तू ... ।
पनघट ही पै तू बतरावै,
नेंक न सोचै भीर सखिन कौ, श्याम तू ... ।
कारी कामर ओढ़ै ऊपर,
तैसोई है कारो तन कौ, श्याम तू ... ।
चोरी के सब काम हैं कारे,
रसिया रस कौ कारौ मन कौ, श्याम तू ... ।
बंशी में लै नाम बुलावै,
लोभी भँवरा अपने रस को, श्याम तू ... ॥

मैं तो तेरे हाथ बिकानी, औ जादूगर साँवरिया।

प्यार करै चाहे ठुकरावै, चंचल नटखट नागरिया॥
भूल गयी ये दुनियाँ सारी,
सुध-बुध भूली तन की भारी,
सुनूँ न मैं काहू की गारी,
मैं तो रंग रही तेरी यारी,
चाहे मारै चाहे जिवावै, तू अंधे की लाकरिया।
तेरे नैनों की हों मारी,
बाँके रसिया औ गिरिधारी,
नैनों की मदिरा को पीकै,
डोल रही लै के मद्भारी,
चाहे बुलाले चाहे हटादे, मैं तो तेरी बावरिया।
सोऊँ तो सपने में देखूँ,
जागूँ तो भी तुम को देखूँ,
लता-पतन में, वन कुंजन में,
यमुना की लहरन में देखूँ,
पल-पल तेरो नाम रटूँ मैं, पड़ी हूँ तेरी डागरिया॥

जोगिन भेष बनाया ।

तेरे कारन सब छोड़ा,
सब ही से मैंने नाता तोड़ा
तू दिल बीच समाया, जोगिन ... ।
साँवरी सूरत मेरे मन भाई,
लोग कहैं ये बावरी आई
मेरे मन तू भरमाया, जोगिन ... ।
श्याम नाम की कसक ही देखैं,
दुनिया की सूरत क्या देखैं,
नैनन में विरमाया, जोगिन ... ।
कोई मेरी पीर न जाने,
बावरी कह कह मोहे पहिचाने,
कहे जोई मन भाया, जोगिन ... ॥

दिखाओ गिरिधारी दरद की मैं मारी ॥

नैना मेंरे बस रह्यो, मोहन नंद को लाल,
नैंक टरै ना नैन ते, कसरत है सब काल,
दिखाओ गिरिधारी ...।
जित देखूँ तित श्याम ही सब जग है गयो श्याम,
मोते कहें सब बावरी, बैरी है गयो गाम।
दिखाओ गिरिधारी ...।
लगी कटारी नेंह की, हियरे को गई चीर,
हाय श्याम करती रहूँ, नैनन बरसै नीर।
दिखाओ गिरिधारी ...।
श्याम हियो श्याम ही धड़कन, श्याम श्वास औ प्रान,
श्याम ही दरपण, श्याम ही नैना, ऐसी भई पहचान।
दिखाओ गिरिधारी ...।
नैनन की प्याली करूँ, और श्याम रूप को नीर,
भर-भर प्याली पीमती, अँसुवन भीजै चीर।
दिखाओ गिरिधारी ...॥

जब ते देख्यो बलबीर मन कूँ प्यारो लगै।

मोहि चैन न मन में धीर दुनियाँ बैरी लगै॥
एक दिना मैं निकसी घर ते,
आय मिल्यो वह बीच गैल ते,
नैनन को लाग्यो तीर, मन कूँ प्यारो लगै।
बंशी बाजै दूर कुंज में,
मेरे हूक उठै है मन में,
ये कठिन प्रेम की पीर, मन कूँ प्यारो लगै।
रात दिना मैं टेरूँ श्यामहिं,
लागै न मन घर परिवारहिं,
नहिं भावै घर की भीर, मन कूँ प्यारो लगै।
रात-रात भर जागूँ बैठी,
उठ-उठ देखूँ कबहूँ लेटी,
मेरे नैनन बरसै नीर, मन कूँ प्यारो लगै॥

मैं तो साँवरिया के जाऊँगी, चाहे रोकै सबरी दुनियाँ।

पीहर सासरो सब मिल रोकैं,
मैं ऐसी ही इठलाऊँगी चाहे रोके ...।
ना मैं प्यार करूँ करवाऊँ,
वाही ते नेह जुराऊँगी चाहे रोके ...।
सुरत साँवरी प्यारी अँखियाँ,
नैनन माँहि बसाऊँगी चाहे रोके ...।
काहू ते न बोल बतराऊँ,
मैं तो वाही ते बतराऊँगी चाहे रोके ...।
देखूँ ना काहू की सूरत,
वाही ते नैन लड़ाऊँगी चाहे रोके ...।
कृष्ण नाम की रटन लगाऊँ,
मैं गाऊँगी और नचाऊँगी चाहे रोके ...।
कुंजन-कुंजन में ढूँढूँगी,
तड़पूँ और तड़पाऊँगी चाहे रोके ...।
ब्रज की धूर सिंदूर बनाऊँ,
मैं अपने शीश चढ़ाऊँगी चाहे रोके ...।
विरह अगिन में सब तन जारूँ,
मैं ब्रज की रज बन जाऊँगी चाहे रोके ...॥

मोहि बावरी कहैं सब गाम की,
मैं तो चेरी भई कारे कान्ह की ॥

सिर मोर मुकुट लहरावै है,
कानन कुण्डल झलकावै है,
तिरछी चितवन मुसकान की, मैं तो चेरी ... ।
कहुँ गैल गिरारे मिल जावै,
हँस हँस के मीठो बतरावै,
नई नई भई पहचान की, मैं तो चेरी ... ।
कबहूँ वह आय दुहावै गैया,
यशुदा को बारो सो छैया,
कहुँ बात करै दधि दान की, मैं तो चेरी ... ।
कबहूँ वंशी बाजै कदमन,
डस गई जैसे कारी नागिन,
जहरीली मीठे तान की, मैं तो चेरी ... ।
कबहूँ नाँचैं लै गलबैंयन,
रस बात करै नैनन सैनन,
कहा कहूँ रसीली बान की, मैं तो चेरी ... ॥

दुनियाँ भर के दुख सह लूँगी, तेरो विरह सह्यो न जाय ॥

ए रे कारे नंद दुलारे,
माथे मोरा पंखन वारे,
नैनां तेरे औगुनगारे,
मारैं बान करैं ये घायल, तौ हू मनको भाय।
प्रीति तेरी कारी सी नागिन,
डस गई जहर डार गई बैरिन,
कारो रंग रह्यो मेरी अँखियन,
अंग-अंग में जहर विरह कौ, लहर-लहर लहराय।
बंसी तो बंसी सी है गई,
मन मछली कूँ हर के लै गई,
मीठी काँटे सी वह चुभ गई,
तड़पत डोलूँ हिरनी सी, वन वन कर-कर हाय-हाय।
सजन सनेही सब ही छूटे,
पीहरिया सासरिया रूठे,
लाज बड़ाई बंधन टूटे,
जागत सोवत स्यामहि देखूँ, ऐसो रंग रह्यो छाय॥

मेरे आगे डोले री, वो नंद महर को बारो ॥

जैसे भँवरा उड़ै मालती,
ऐसो उड़तो डोलै री, वो नंद महर ...।
महकै जैसे नील-कमल सों,
मेरे चारो घां रस घोलै री, वो नंद महर ...।
कबहूँ हेला देय दूर सों,
नाम लेय कछु बोलै री, वो नंद महर ...।
कबहूँ सामइ आय सखी री,
घूँघट झाँकत खोलै री, वो नंद महर ...।
पीताम्बर लै अपने हाथन,
मेरी छाँह करतो डोलै री, वो नंद महर ...।
मुकुट छाँह ते चरन छुवावै,
प्रीति करै अनमोलै री, वो नंद महर ...।
नाँचैं गावै नैन चलावै,
जोवन को करतो मोलै री, वो नंद महर ... ॥

मैं तो श्याम मिलन को जाऊँ बैरिन बाजै पायलिया ॥

ब्रज के बासी सब हैं सोये,
गहरी नींदन में हैं खोये,
मीठे सपनन में हैं पोये,
मैं जागी हूँ श्याम विरहिणी उड़ गई नींदरिया।
दूर बजै बंशी मोहन की,
यमुना तट छैंया कदमन की,
फैल रही चाँदनी चाँद की,
मोय बुलाय रही है हरि की मीठी बाँसुरिया।
जागै ना कोई घर वारो,
खोल्यो घर को अचक किवारो,
चलत झूम रह्यो फुंदना नारो,
प्रेम मगन भागी नैनन ते बह रही आँसुरिया।
लिपटी जाय श्याम प्यारे सों,
जैसे दामिनि घन कारे सों,
ऐसी मिली मुकुट वारे सों,
लेटी अंक निशंक श्याम भुज की कर तकिया ॥

नैना चुभे पीर न जानैं, जाके काँटो चुभै सोई जानैं ॥

एक दिना पनघट पै मिल गयो,
आय अचानक गगरी भर गयो बिन जाने पहचानैं।
एक दिना मेरी गैया दुह गयो,
दोहनी दूध भरी सिर धर गयो बिना बोलै ही पहचानैं।
एक दिना बरसत में आयो,
अपनी कामर मोय ओढ़ायो बिन पूछे ही पहचानैं ॥

साँवरिया मोते मत अटकै बजमारे,

मत अटकै बजमारे, मेरी गैल छोड़ दै दइयारे ॥
आय रही है पीछे ते ननदिया, अब ही बादर फारै।
मोय देख तू सैन चलावै, और भरै सैंकारे।
रसिया गावै नाच दिखावै, नाँचैं ठुमका मारै।
लिपटत आवै हँसतो हँसतो, घूँघट देय उघारै।
अब ही तो गोने की आई, काहे जुलम गुजारै।
जाय कहूँगी घर सासू ते, सजन माजनों झारै।

मेरे धुकर पुकर जिय होय रे,

हो साँवरे, तू गलियन में आना छोड़ दे ॥
तेरो मोर पंख सिर ऊपर,
मेरे लहर-लहर जिय होय रे, हो साँवरे ... ।
तेरो घूम घुमारो जामा,
मेरे झहर-झहर जिय होय रे, हो साँवरे ... ।
तेरे पीताम्बर पै पटका,
मेरे फहर-फहर जिय होय रे, हो साँवरे ... ।
तेरे गरवा मोती माला,
मेरे छहर-छहर जिय होय रे, हो साँवरे ... ।
तेरे पाँयन घुँघरू बाजैं,
मेरे छनन-छनन जिय होय रे, हो साँवरे ... ।
तेरे नैना विष के बानन,
मेरे भहर-भहर जिय होय रे, हो साँवरे ... ।
तेरी मुसकन बनी कटारी,
मेरे हहर हहर जिय होय रे, हो साँवरे ... ॥

कैसे जाऊँ बचके कान्हा ठाढ़ो अड़कै,

रोकै गैल हमारी मोहना सखी-२ ॥

कदमन छैंया कृष्ण कन्हैया,

बीच खड़ो यशुदा को छैया,

कान्हा मंद मुसकावै, चित को चुरावै, रोकै ... ।

गैल छोड़ चलूँ मन नाय मानै,

बिन देखे नैना तरसाने,

श्याम बंशी बजावै, मीठे गीत सुनावै, रोकै ... ।

कैसी भई हाय बेचैनी,

चितवन चोट बड़ी वाकी पैनी,

ठाढ़ी लाजन मरी, पानी की सी भंवरी, रोकै ... ॥

काहे मोहन संग हमारे परै, ब्रज में मेरो लै लै नाम धरै ॥

सखी सहेली हाँसी देवैं,
नंद को छैया तेरे पीछे परै।
कोई कहे रिझवार कृष्ण की,
याही ते बन ठन निकरै।
कोई कहै ये श्याम मिलनियाँ,
नहिं श्याम बिना याय चैन परै।
कोई कहै याको यार कन्हैया,
(याकी) चन्द-चकोर सी प्रीति जुरैं।
कोई कछू कहै सुन सजनी,
मेरी प्रीति न नेंक टरै ॥

सुनलै री यशोदा मैया, ऊधमगारो री तेरो कृष्ण कन्हैया ॥

भोर सवेरे बछरा ढीलै, सबरो दूध चुखावैं,
औगुनगारो री यशोदा तेरौ छैया।
भर गगरी पनियाँ लै आई, पाछे ते लुढ़कावै,
भगजा बैरी गायन चरवैया।
टोल-टोल गोपी दधि लैकें, निकसी कदम की छैया,
ऊपर ते लै लेवै दधि भरी मथनियां।
ग्वालबाल लै घर में आवै, माखन चोरै खावै,
पी जाय री दूध मलैया।
संझा कर रही दीयो बाती, पीछे खड़ौ बुझावै,
अँचरा खैंचे री माखन चुरवैया॥

ये तो मोहन की लगवार, ऐसो हल्लो भयो मोहल्लो ।

गैलगिरारे बाट तकत है,
श्याम श्याम की रटन लगी है,
जाको साँवरिया है यार, ऐसो हल्लो ... ।
यमुना तट पै बैठे कबहूँ,
रीती गगरी डोलै कबहूँ,
ये तो सबरी भई गमार, ऐसो हल्लो ... ।
कबहूँ सिर पै दधि मटकी लै,
बेचूँ गिरिधर कोई लै लै,
ये तो डोलै गली गिरार, ऐसो हल्लो ... ।
रात विरात घरन सों भाजै,
जहाँ श्याम की वंशी बाजै,
याकौ छूट गयो घर द्वार, ऐसो हल्लो ... ॥

मेरो प्यारो है साँवरिया, दुनियाँ बैर करै ।

जब जब देखूँ मैं साँवरिया, मन कूँ चैन परै ॥
मैं तो है गई श्याम दिवानी, श्याम मेरे मन भायो,
नैनों में हियरे में मेरे, रोम-रोम में समायो,
नैनों का तारा साँवरिया, दुनियाँ देख जरै ... ।
रात-रात उठ बाट तकूँ मैं, मोकूँ नींद न आवै,
कैसे कहूँ कौंन ते बोलूँ, विरहा कौन बुझावै,
मीठी बाजै रे बाँसुरिया, धीरज कौन धरै ... ।
जा लिपटूँगी ऐसे जैसे, बादर से बीजुरिया,
भूल गई मैं सारी दुनियाँ, ऐसी भई बावरिया,
बैरी पीहर औ सासुरिया, दुनियाँ नाम धरै ... ॥

बाट तकूँ मैं तेरी श्याम, बिरज की गलियाँ ॥

दिल मैं दरद और आँखों में आँसू,
टेर्यो करूँ मैं आठों याम बिरज की गलियाँ।
छोड़ दई सब सुध-बुध तनकी,
भूली जगत के काम, बिरज की गलियाँ।
कृष्ण कन्हैया श्याम गोविन्दा,
लेती फिरूँ ये नाम, बिरज की गलियाँ।
अँखियाँ थक गई ढूँढत ढूँढत,
डोलत थक गये पाम, बिरज की गलियाँ।
कब आओगे कुंज बिहारी,
फूल खिले ब्रज धाम, बिरज की गलियाँ।
सजी सजाई नटवर झाँकी,
देख बिको ब्रजधाम, बिरज की गलियाँ ॥

मैं तो जोगनियाँ बन जाऊँगी,
मेरी लगन लगी गिरिधर सौं ॥

ना चहिये मोय कुटिया लुटिया,
ना चहिये मोय दुनियाँ,
मैं तो लता तरे रह जाऊँगी, मेरी लगन लगी ... ।
ना चहिये मोय गहना गुरिया,
ना मैं साज सिंगारूँ,
मैं तो फटे चीथरा पहरूँगी, मेरी लगन लगी ... ।
ना चहिये मोय लहँगा सारी,
ना चहिये मोय फरिया,
मैं तो गूदरिया ही ओढ़ूँगी, मेरी लगन लगी ... ।
ना चहिये मोय पलका खटिया,
ना चहिये मोय तकिया,
मैं तो धरती पै सो जाऊँगी, मेरी लगन लगी ... ।
ना चहिये मोय पूरी हलुवा,
ना चहिये मोय लड्डुवा,
मैं तो भूखी ही रह जाऊँगी, मेरी लगन लगी ... ॥

गोरी कब तक नैन छिपावैगी, तेंरे पीछे पर्‌यो कन्हैया ॥

तेंरे हित यमुना पै बैठ्यो,
तू यमुना न्हायवे जावैगी, तेंरे पीछे पर्‌यो... ।
तेंरे हित खिरका घुस बैठ्यो,
तू दूध दुहायवे जावैगी, तेंरे पीछे पर्‌यो... ।
आसन मार कुँआ पै बैठ्यो,
तू पनियाँ भरवे जावैगी, तेंरे पीछे पर्‌यो... ।
आसन मार राह में बैठ्यो,
तू दही बेचवे जावैगी, तेंरे पीछे पर्‌यो... ।
आसन मार बाग में बैठ्यो,
तू फुलवा तोरन जावैगी, तेंरे पीछे पर्‌यो... ॥

काउ दिन सबरी अकड़ झराय दूँगी,

ओ कृष्ण मुरलिया वारे ॥
पोली तेरी बाँस बँसुरिया,
फूँकत डोलै बन्यो साँवरिया,
काउ दिन वंशी तोर मरोरूँगी, ओ कृष्ण ... ।
हँस-हँस मोपै आँख दिखावै,
धौंस दिखावै औ डरपावै,
काउ दिन गैल बंद करवाय दूँगी, ओ कृष्ण ... ।
यशुदा मैया ते कह आई,
जातेई तेरी होय पिटाई,
काउ दिन ऊखल ते बँधवाय दूँगी, ओ कृष्ण ... ।
मत मोते लिपटै औ चिपटै,
बिना बात के मोते अटकै,
काउ दिन मोहन हाथ लगाय दूँगी, ओ कृष्ण ... ॥

आये-आये मन मोहन हमारी गलियाँ ॥

जब मनमोहन बागों में आये,
खिल गई फूलन की डरियाँ।
जब मनमोहन गलियों में आये,
महक उठी सबरी गलियाँ।
जब मनमोहन द्वारे पै आये,
केला की लटकैं फरियाँ।
जब मनमोहन अँगना में आये,
बिछ गई फूलन की कलियाँ।
सेजन गिलम गलीचा तकिया,
मिल खेलत हैं रंगरलियाँ ॥

आओ बिहारी मेरे अँगना आओ-आओ बिहारी ॥

हम टेरत तुम आवत नाहीं,
जानों प्रीति के ढँग ना, आओ बिहारी ... ।
गायन घेरत रहे ग्वारिया,
सुनों नंद् जू के छँगना, आओ बिहारी ... ।
तेरे नैनन की हों मारी,
बंशी सुन भई मँगना, आओ बिहारी ... ।
आधी रात चमक रही बिंदिया,
रह-रह बाजै कंगना, आओ बिहारी ... ।
मीठो माखन मीठी मिसरी,
खाओ-खाओ मेरे अँगना, आओ बिहारी ... ।
फूलन सेज अतर सों छिरकी,
सोओ मेरे संग ना, आओ बिहारी ... ॥

जाने कब मेरे घर आवैगो, मोहन मुरली वारो ॥

ऊँची अटरिया पचरंग पलका,
जाने कब वह चढ़कै आवैगो, मोहन मुरली ... ।
आधी पै मेरी लाल किवरिया,
जाने कब वह खोलकें आवैगो, मोहन मुरली ... ।
जोवन फूल रह्यो फूलन ते,
जाने कब वह भँवरा आवैगो, मोहन मुरली ... ।
रात रसीली सजन रसीलो,
जाने कब रस दैवे आवैगो, मोहन मुरली ... ।
सोय रहे सबरे घर वारे,
जाने कब वह आय जगावेगो, मोहन मुरली ... ॥

हो मोहना मेंरे बागों में अैयो ॥

फूल रहीं बेला की कलियाँ,
हो मोहना मेरी चोटी गुहियो।
फूल रही कद्मन की डारी,
हो मोहना मेंरे झुमके बनैयो।
फूल रही डाली गुलाब की,
हो मोहना मेरो गजरा बनैयो।
चंपा और चमेली फूली,
हो मोहना मेरो हार बनैयो।
रायबेल मालती मोंगरा,
हो मोहना मेरी तगड़ी बनैयो।
सोन जुही की कलियाँ लैकैं,
हो मोहन मेरी पायल बनैयो ॥

नजरिया मत मारै, मर जाऊँगी ॥

श्याम तेंरे नैना बड़े नुकीले,
कोर मेंरे गड़ जायेगी, मर जाऊँगी।
श्याम तेंरे नैना बड़े कजरारे,
रेख मेंरे चुभ जायगी, मर जाऊँगी।
श्याम तेंरे नैना हैं मदमाते,
बावरी है जाऊँगी, मर जाऊँगी।
श्याम तेंरे नैना हैं खंजन से,
संग तेंरे उड़ जाऊँगी, मर जाऊँगी।
श्याम तेंरे नैना हैं मछली से,
संग तेंरे बह जाऊँगी, मर जाऊँगी ॥

साँवरिया होलै बोल, पिछवारे वारी सुन लेंगी ॥

पिछवारे वारी है बैरिन,
इत में देखै टेढ़ी आँखिन,
कानन में रस घोल, पिछवारे वारी ... ।
जो कहूँ देखैगी तोहि प्यारे,
कह देगी गामन में सारे,
वह तो पीटैगी ढोल, पिछवारे वारी ... ।
रह्यो गमर्रा तू साँवरिया,
आखिर तो गायन को ग्वारिया,
प्रीति गाँठ मत खोल, पिछवारे वारी ... ।
हौलै हौलै तू बतराय लै,
अपनी लागी लगन बुझाय लै,
रह्यो याही बात को डोल, पिछवारे वारी ... ॥

अइयो-अइयो कान्हा यमुना किनारे आधी रात,

कैसे जीऊँ मरी मैं जात ॥

यमुना किनारे कदम हैं फूले,
झूलूँगी सारी रात, कैसे जीऊँ ... ।
यमुना किनारे बेला चमेली,
फूल खिले हैं हरे पात, कैसे जीऊँ ... ।
यमुना किनारे खिली चाँदनी,
तो बिन नैक न भात, कैसे जीऊँ ... ।
यमुना किनारे मीठी लहरिया,
मीठी बह रही बात, कैसे जीऊँ ... ।
यमुना किनारे विरहा सतावे,
पजरे जात हैं गात, कैसे जीऊँ ... ॥

तोते नेहा लगाय कहा पायो रे ॥

नैन मिलाये जनक नंदिनी,
वन में भेज पठायो रे।
नैन मिलाये ब्रज की गोपीं,
आप द्वारिका छायो रे।
नैन मिलाये मीरा बाई,
जहर को प्यालो पिवायो रे।
नैन मिलाय भये बहु जोगी,
दर दर भीख मँगायो रे॥

नैना चलावै घनघोर, बड़ौ री चित चोर,
लाड़लो नंद को हाय ॥

नैना सों मारै, मदन सों मारै,
मारै री भौंह मरोर, बड़ो री चितचोर ... ।
कैसे छिपाऊँ गोरो बदन,
नाय छिपै घन चंद चकोर, बड़ो री चितचोर ... ।
कहाँ छिपाऊँ जोवन की थाती,
खिले फूल सुगंधन बोर, बड़ो री चितचोर ... ।
कहाँ छिपाऊँ ये बात रसीली,
चलै नदिया पाथर फोर, बड़ो री चितचोर ... ।
कहाँ छिपाऊँ नैन चमकीले,
ऐसे चमकैं तीखे कोर, बड़ो री चितचोर ... ॥

चढ़ी रे अटरिया पै कान्ह बुलावै ॥

कबहूँ ऊपर कबहूँ नीचे,
चकई सी वह फिर-फिर जावै।
पिंजरा की मैना सी है गई,
उड़नों चहै उड़न नहिं पावै।
भई पतंग वह उड़त अटा पै,
हाथन अँचरा लै फहरावै।
रस में मगन भई है गोपी,
अँखियन निरख-निरख अकुलावै।
नंदलाल को नाम न लेवै,
औरन के मिस टेर लगावै।
वन में मेरी गाय भाज गई,
कोई लै मोहि पकर दिखावै ॥

कान्हा कारे तुम तो क्यों भये ॥

तेरी मैया यशुदा है गोरी,
नंदबाबा गोरे रंग छये।
मात पिता गोरे तुम कारे,
कहा ढँग यामें तो ढये।
तुम हमते साँची कहो लाला,

कहा नैना नीचे को नये।
कछु यशुदा की ही कचाई लगै,
मैया ते क्यों न पूछ लये।
हमने तो सुने वसुदेव पिता,
यह गरग मुनि कहते जो गये।
झगरो कैसे द्वै बापन को,
याको निरबेरो क्यो न दये॥

सुन्दर श्याम सलोना, सलोना मेरी सजनी॥
प्यारो प्यारो नंद दुलारो,
खावै माखन लोना, लोना मेरी सजनी।
मोर पंख घुँघरारी लट पै,
हँस रह्यो नैनन कोना, कोना मेरी सजनी।
नटवर की छवि देखै जो कोई,
है जाय ब्याह औ गोना, गोना मेरी सजनी।
याकी वंशी तान सुनै जो,
लोकलाज दै खोना, खोना मेरी सजनी।
प्रेम बावरी गोपी डोलैं,
भावै न घर भौना, भौना मेरी सजनी॥

कोई मिलाय दै नंद जू के लालन ॥

वाको दूँगी अपनी नथली,
दूँगी बेसर मोती लटकन।
शीश फूल माथे को दूँगी,
दूँगी बेंदी चमकै चटकन।
कानन के झुमके दै दूँगी,
दूँगी मुंदरी कंकण हाथन।
कड़े छड़े बाजूबंद दूँगी,
हार हमेल गरे को हारन।
कमर कौंधनी हू दै दूँगी,
पायल बिछुवे अनवट पायन।
एक बार दिखरावै श्यामहि,
करूँ न्योछावर अपने प्रानन ॥

मन रम रह्यो नंद के लालन ते ॥

आली री मैं वन-वन ढूँढ़ती डोलती,
मोय काम कछू ना महलन ते।
आली री मैं बिक गई जैसे उधार री,
वाकी चंचल तिरछी चितवन ते।
आली री नाय भावै महल मिठाई हू,
मोय काम न छप्पन भोगन ते।
आली री नांय भावै गहनों पहरनो,
मोय काम न चहलन पहलन ते।
आली री नाय भावै सासरो पीहरो,
मन फट गयो जग के जालन ते।
आली री नहिं नैनन निंदिया आवही,
पूछत डोलूँ वन डालन ते॥

घूँघट में ते देख-देख पीछे आवै चल्यो नंदलाल ॥

तो पै भटू लटू है ऐसो, जैसे भँवर कमल की माल।
तेरे आगे पीछे आवै, तेरे झाँकै गोरे गाल।
तेरे चरनन पै मुकुटन की, छाँह छुवावै गोपाल।
तेरी ब्यार करै पीरे पट, संग चलै मटकती चाल।
राधा राधा गावै झूमै, नाँचै दै-दै ताल॥

रैना कारी नागिन लागै, सूनी है गई सेजरिया ॥

सोऊँ तो निंदिया नाय आवै,
जागूँ तो जियरा घबरावै,
बिना मिले पिय चैन न आवै,
सपने हू पिय नहिं पाऊँ, बैरिन भई नींदरिया ॥
श्याम बिना सब जग है सूनों,
छिन छिन विरहा बाढ़ै दूनों,
आवै सजन तो है जाय पूनों,
तकिया गिलम गलीचे चुभ रहे जैसे कांटरिया ।
वन में फूले फूल अनोंखे,
बिना सजन ये लगें न चोखे,
प्रीति न करियो कोई धोखे,
वन वन डोलूँ खोई खोई, ढूँढूँ साँवरिया ।
आँसू नेंकउ रुकैं न रोके,
गली-गली सब रोकें टोकें,
मेरी दसा देख सब चोंके,
भूली सुध बुध खान-पान सब, है गई बावरिया ॥

यशुदा को छैया बड़ौ रसिया री, बड़ौ रसिया, बड़ौ रसिया ॥

जो कोई आवै नई नौधरी,
पीछे डोलै संग लगिया री, बड़ो रसिया ... ।
जो कोई घूँघट मारै निकसै,
घूँघट खोल करै बतियाँ री, बड़ौ रसिया ... ।
जो कोई जावै पनघट इकली,
गगरी लैके भरै पनियाँ री, बड़ौ रसिया ... ।
जू कोई जावै खिरक दुहावै,
आपई दूध दुहै गैया री, बड़ौ रसिया ... ।
जो कोई पावै कुंजन इकली,
पैंया पर करै रस घतियाँ री, बड़ौ रसिया ... ॥

मेरे हियरे में आग लगाय रे,
हो लाड़ले तू बंशी बजाना छोड़ दे ॥
मैं भोरइ दही बिलोऊँ,
मेरी लोनी पिघली जाय रे, हो लाड़ले ... ।
मैं धार काढ़वे जाऊँ,
मोपै थन नाय पकर्‍यो जाय रे, हो लाड़ले ... ।
मैं पानी भरवे जाऊँ,
मोपै पानी भर्‍यो न जाय रे, हो लाड़ले ... ।
मैं बैठ रसोई करती,
लकड़ी आली भई जाय रे, हो लाड़ले ... ।
तेरी वंशी जादू है गई,
मोपै परी ठगोरी आय रे, हो लाड़ले ... ॥

श्याम टेढ़ी नजर मत मार्‍यो करै, मर जावैगी गोरी कोई ॥

नैन बना लै व्याध ज्यों डोलै,
बिंध जावैगी गोरी कोई, श्याम टेढ़ी ... ।
मुसकावै या छुरी चलावै,
कैसे बचेगी भोरी कोई, श्याम टेढ़ी ... ।
चाल चलै या मूठ चलावै,
लुट जावैगी छोरी कोई, श्याम टेढ़ी ... ।
काजर रेखा है या बरछी,
मर जावैगी देख के कोई, श्याम टेढ़ी ... ।
वंशी है या जादू की लकड़ी,
बस होवैगी सुनके कोई, श्याम टेढ़ी ... ॥

मेरे हियरे में बस्यो आय नंद को साँवरिया ।

हरि के बिन जीवन ख्वार, भई मैं बावरिया ॥
पहले पहले ब्रज में आई मैं तो नई नवेली,
नयो नयो ब्रज नई नई यमुना की कुंज सहेली,
मोय मिल गयो वो बटमार, भई मैं बावरिया ।
बीच गैल में ठाढ़ो है के बंशी मधुर बजाई,
ऐसी मीठी तान रसीली मेरे मन को भाई,
मेरे है गये नैना चार, भई मैं बावरिया ।
अँखियाँ बड़ी नुकीली जाकी कोर चुभी मेरे मन में,
मुसकन की तो लगी कटारी जहर चढ़्यो सब तन में,
मैंने सब कुछ दीयो वार, भई मैं बावरिया ॥

अरे मत घूँघट मेरो खोल, मैं परूँ तिहारे पैंया ॥

मैं अबहीं ब्रज में आई, औ नई बहू कहलाई,
अरे मोय छोड़ कहूँ जा डोल, मैं परूँ ... ।
तू बीच गैल में ठाढ़ो, नेंक तिरछे है जा आड़ो,
अरे मोते बिना बात मत बोल, मैं परूँ ... ।
तेरी दही दान की बतियाँ, मैं सब जानूँ तेरी घतियाँ,
तू करै जोबन कौ मोल, मैं परूँ ... ।
तू बन ठन डोलै ऐसौ, बारात बिना वर जैसौ,
तैनें सब गोरी लई तोल, मैं परूँ ... ।
तेरी तिरछी तिरछी अँखियाँ, जो देखेंगी मेरी सखियाँ,
सब ब्रज में पिट जाय ढोल, मैं परूँ ... ।
तेरी चितवन नैक न भावै, तू काहे को मुसकावै,
रह्यो काहे कौ रस घोल, मैं परूँ ... ।
अब ही मैं मथुरा जाऊँ, औ कंस राजा को बुलाऊँ,
माखन खाय भयो है गोल, मैं परूँ ... ॥

कान्हा चोरी करवो छोड़, सगाई तेरी है जायगी ॥

बड़ो चोर नंद है महर कौ बातहु मिट जायगी,
बिन चोरी छोड़े कैसेहु नहिं भांवर पड़ जायगी।
बन्यो ठन्यो डोलै सब तेरी बात बिगर जायगी,
चोर उचक्कन के पल्ले नांय कोई बँध जायगी।
कितनेउ तिलक लगाय लै लाला नाहिं सुधर जायगी,
घर-घर माखन चोरत डोलत हाँसी है जायगी।
क्वारो ही रह जायगो मन की हौंसहु रह जायगी,
आगे पीछे डोलौ करियो गाँठ न जुर जायगी।
पातर चाटे ते नाय मन की भूखहु मिट जायेगी,
तौ लों भटकैगो जौ लों नाय राधा मिल जायगी ॥

कहँ ते आय गयो साँवरिया, मेरी बैयां पकरी आय ॥

मैं तो चौंक परी ये कैसी मोते लगी बलाय,
नेंक परे हट जा रे मेरो घूँघट खूट्यो जाय।
मारग बीच अकेली घेरी नेंकहु ना सकुचाय,
दूर सरक जा बजमारे मोहि लाज सरम रहि खाय।
भयो नंद को तू उतपाती तेरी मति बौराय,
माखन खाय भयो मस्तानो काहू नाय गिनाय।
जितकूँ घूमूँ तितही जावै आड़ो-आड़ो आय,
ऊपर कारो भीतर कारो नैना रह्यो नचाय।
कबहूँ हा-हा खावै कबहूँ सैनन में मुसकाय,
कौतुक करकें हँसै हँसावै गीत रसीले गाय॥

यारी जोरूँगी मोहन ते, मेरो कोई रुकवैया नाय ॥

वा देखे बिन गैल गिरारो उड़-उड़ के मोय खाय,
कबै सिरावैंगी ये अँखियाँ देखूँगी छवि जाय।
वा बिन चैन परै नांय मोकूँ नाय डटैं घर पाँय,
सास ठाढ़ी मोहि गारी देवै ननदी लोना लगाय।
डोरी खेंचै सांवरो मन मेरो खिंचतो जाय,
गैल न जानूँ लाड़ले मोहि अपनी गैल बताय।
कब आवैगो मुरली वारौ वन कदमन की छाँह,
हिरनी जैसी डोलूँ वन-वन मुरली तनक सुनाय।
मेरो मन भटकै मोहन बिन कैसेहु रह्यो न जाय,
जा भेंटूँगी बिछरो मिन्तर ऐसी ही मन भाय॥

ऐसी गल रही मैं गिरिधर बिन,
जैसे पानी परे बतासो ॥
घर में सासू आँख दिखावै, ननदी करै तमासो,
बाहर के मेरे नाम निकारैं, आई बहू कहाँ सों।
घबराऊँ मैं ना इन बातन, कहूँ मैं मन की कासों,
मेरी अँखियन कौ वह तारो, वा बिन मरी जहाँ सों।
जैसे-जैसे ये सब बैरी, बाँधै लै मोहि फाँसो,
गाँठ प्रीति की है गई पक्की, ज्यों भीजै चौंमासो।
मैं तो अपने रंग चलूँगी, कितनोई करो हाँसो,
पिया बिना नहिं जीऊँ वाते, मेरी आस उसासो ॥

मार गई तानों गुजरिया, देखूँगी साँवरिया ॥
घूँघट खोल उझकतो डोलै,
गली गिरारे छेड़ै बोले,
बंद करूँगी डगरिया, देखूँगी साँवरिया।
कारो कैसो है इतरातो,
गोरो होतो तो कहा करतो,
कारे की कारी कमरिया, देखूँगी साँवरिया।
ऐसी वैसी मोय मत जानैं,
तू मोय नेंकहु ना पहचानैं,

वारी है तेरी उमरिया, देखूँगी साँवरिया।
कुंजन बंशी बैठ बजावै,
बंशी में लै नाम बुलावै,
छीनूँगी तेरी बँसुरिया, देखूँगी साँवरिया।
टेढ़ो है ठाढ़ो मुसकावै,
टेढ़ी टेढ़ी सैन चलावै,
टेढ़ी है तेरी नजरिया, देखूँगी साँवरिया।
चोर-चोर के माखन खायो,
जाके बल गिरिराज उठायो,
जानैं है ब्रज की नगरिया, देखूँगी साँवरिया।
काऊ दिन हाथ परैगो घर में,
बदलो लूँगी ये है मन में,
फारी है कारी चुनरिया, देखूँगी साँवरिया॥

कारे-कारे हट जा रे, मोते अंग न छुवा।

आ री आ री गोरी-गोरी, मोते अंग तो छुवा॥
मैं सोने की सी गोरी,
मेरो रूप चंदा चमक्यो री,
तू तो कारो है रे पियारे, मोते अंग न छुवा।
गोरी नैना तेरे कारे,
कारे नैन बान तैंने मारे,
तोते रंग मेरौ सुधरैगो, मोते अंग तो छुवा।
ऐसो कारो तू है कान्हा,
न्हाय कें कारी कर दई जमुना,
मैं भी कारी ना है जाऊँ, मोते अंग न छुवा।
कारे केश तेरे है प्यारी,
धोय करी तैंने जमुना कारी,
मैं कारो तू मन की कारी, मोते जोट मिला।
मैं तन की मन की हूँ गोरी,
तू तनमन को कारो बिहारी,
याही ते तू भयो त्रिभंगी, मोते अंग न छुवा।
तैनें देख्यो टेढ़ी चितवन,
बन्यो त्रिभंगी याही ते तन,
तेरे बोल बड़े टेढ़े हैं, मोते अंग मिला।

बातन-बातन प्रीति बढ़ी है,
गोरी श्याम के रंग ढली है,
बादर बिजरी जोट बनी है, आ तू गरे लगा ॥

ऐ श्याम चलो ऐयो, ऐ श्याम चलो ऐयो ॥
बैठी अकेली रात में जमुना किनारे में,
तेरी ही राह देखूँ चाँदी की रेत में,
ऐ श्याम चलो ऐयो ... ।
लहरों की छपछपाहट जैसे कि आयो तू,
पत्ते खड़कते लगतो आयो कहीं से तू,
ऐ श्याम चलो ऐयो ... ।
बहतौ हवा को झोंको कछु कह रह्यो है तू,
फूलों की महक आई महको है मानो तू,
ऐ श्याम चलो ऐयो ... ।
चंदा को देख तेरो मुख याद में आयो,
यमुना को देख तेरो रंग ध्यान में आयो,
ऐ श्याम चलो ऐयो ... ॥

अपने लालाय तनक समझाय दीजो,
मोपै ऊधम सह्यो न जाय ॥
जब मैं जाऊँ पनियाँ भरन कूँ,
संग न जावै, समझाय दीजो ... ।
जब मैं जाऊँ यमुना न्हायवे, संग न जावै ... ।
जब मैं जाऊँ दही बेचवे, संग न जावै ... ।
जब मैं जाऊँ धार काढ़वे, संग न जावै ... ।
जब मैं जाऊँ वन कुंजन में, संग न जावै ... ॥

राधिका लाड़िली अलक लड़ी ॥
अलक लड़ैतो मोहन पिय के मनमन्दिर में मूरति अड़ी ।
ऐसी लिपटी श्याम कंठ सौं, नीलमणी मोतियन लड़ी ।
गौर घटा घनश्याम घटा पर रस की बरसा रही झड़ी ।
कोटि कामशर मूर्छित हरि के जीवन की संजीवनी जड़ी ।
शरणागत के सिर धरबे कौ वरद अभय कर लिये खड़ी ॥

मार्‌यो मार्‌यो री घड़े में कंकर आय सहेली,
टूक-टूक घड़ो है गयो ॥
जैसे जल भर चली घड़ो लै
जाने आय गयो वो कहँ ते
जान न पाई आय सहेली, टूक-टूक ... ।
भीजी साड़ी चूनर सबरी
हँस -हँस देखै करै अचगरी
कहै कौंन ते जाय सहेली, टूक-टूक ... ।
कैसे जाऊँगी मैं घर को
कहा कहूँगी सास ननद को
बात बनैगी मोपै नाय सहेली, टूक-टूक ... ।
पीताम्बर लै मोय उढ़ावै,
चूनर लै निचोर सुखवावै
व्यार करै मेरी आय सहेली, टूक-टूक ... ।
मोहि सिखावै बात बनानो
पांय रिपटवे को कीजो बहानो
नेंक न सास रिसाय सहेली, टूक-टूक ... ।
नंद को नटखट बड़ो रसीलो
ऊधम पै हू लगै छबीलो
(वाकी) मुसकन चित चुभ जाय सहेली, टूक-टूक ... ॥

भायेली छैला श्याम आज मेरे दीनो हाथ कमरिया में,
मोय रोकी गली संकरिया में ॥
मैं जाय रही दधि बेचन कूँ
ये आयो मारग रोकन कूँ
ये ऐसो बन्यो छिछोर देख मेरी पोंछी पीक अँचरिया में।
जित मैं जाऊँ तित ये जावै
बैठूं बैठै चलूं संग आवै
ठट्ठा करै हँसै उतपाती हल्ला भयो नगरिया में।
पहले याने मटकी छीनी
पाछे ते बरजोरी कीनी
नैनन ते घायल करै अरे याके लग रहे बान नजरिया में।
मेरी आयो रात अटरिया में
जब चंदा छिप्यो बदरिया में
मैं पांय परी पै नाय मान्यो मेरे सोवै साथ सेजरिया में ॥

मतजा मतजा ओ नन्दलाला, सुनजा सुनजा बतियाँ मेरी ।

मेरे हाथन मेंहदी लग रही
लटुरी नथ सौं उरझी जा रही
आजा आजा ओ नन्दलाला, लट कूँ नथ से सुरझा मेरी ।
चूनर सिर से सरक गई है
घुंघटा की छवि बिगर गई है
रुक जा रुक जा ओ नन्दलाला,चूनर सिर पै ढक दै मेरी ।
फरिया उघर गयो चोली ते
लाज हटी या तेज ब्यार ते
मैं तेरे गुन न भूलूँगी, चोली ढक दे तू मेरी ॥

सबरै ब्रज कौ मोह लियो, राधा के रसिया श्याम ने ॥

राधा नाम बड़ौ मस्तानो
राधा गावै भयो दिवानो
ऐसी कर दी ब्रज नगरी, राधा के रसिया ... ।
राधा ऐसी है गोरांगी
गोरो भयो वह ललित त्रिभंगी
करी बावरी ब्रज नारि, राधा के रसिया ... ।
राधा ऐसी प्रेम तरंगिनी
डूब्यो जामें श्याम विहंगिनी
राधा रस में डार्‌यो, राधा के रसिया ... ।
श्री वृन्दावन भयो राधामय
शुक पिक चातक सब राधामय
लता पता राधामय की, राधा के रसिया ... ॥

आयो माखन चोर मेरी अटरिया में ॥

जाने कैसे ये चढ़ आयो
साँकर कुंदा ना खटकायो
मोय जगाई झकझोर, मेरी अटरिया में।
चौंक उठी जागी घबराई
देखूँ तो ये कुँवर कन्हाई
मेरे हियरे उठी हिलोर, मेरी अटरिया में।
चंदा रे तू छिप मत जैयो
कृष्ण चंद के संग थिर रहियो
बोलै कोयल मोर, मेरी अटरिया में।
कृष्ण रंग में रंगी गोपिका
गोपी प्रेम में श्याम हू बिका
जागत ही भई भोर, मेरी अटरिया में॥

मत बनै निरमोही साँवरिया रे ॥

यमुना तट पर रात-रात भर बैठी देखूँ लहरिया रे।
चाँदी सी चमकै सब रेती, खिलै जब रात जुन्हैया रे।
देख्यो करूँ बाट मैं हरदम, आवै कौन डगरिया रे।
सावन गरजै भादों बरसै, ब्यार चलै पुरवैया रे।
देख्यो करूँ बाट मैं तेरी, सूनी परी अटरिया रे।
रिमझिम-रिमझिम मेहा बरसै, चमक रही है बिजुरिया रे।
देख्यो करूँ बाट डार के झूला कदम की डरियाँ रे।
पूनों की जब खिलै उजारी, महकै फूल कियरिया रे।
कहाँ मिलैगो रे बेदरदी, सुनती रहूँ बँसुरिया रे।
आवै ना कर के निठुराई, तरफूँ जैसे मछरिया रे ॥

कन्हैया ते प्रीति किये पछतानी ॥

उनकी प्रीति रही सखी कैसे, जैसे कोई कहानी।
हम जानी यह प्रीति निभैगी, नैंक न राखी कानी।
कारो भँवरा कहाँ वह उड़ गयो, सूनी भई जिंदगानी।
ब्रज की गोपी ऐसे बोलीं, कुब्जा भई पटरानी।
ऐसो निठुर अहीर को जायो, जोग की बात बखानी।
तन को कारो मन को कारो, पहले ना हम जानी।
अब ये नैना हू पछतावै, झर-झर बरसत पानी ॥

कौन मेरे धँस आयो, कारी अँधेरी में ॥

जैसी कारी रात अँधेरी
तैसौ कारौ कौउ धस्यो री
मैं निधरक है सोय रही री
आय औचकइ जगायो, कारी अँधेरी में।
पूछन लागी कौन तू आयौ
कहा गरज ते मोय जगायौ
नाम गाम कछु नाय बतायौ
कह्यौ सुन क्यों मैं आयौ, कारी अँधेरी में।
मेरौ नाम गाम तू जानैं
पनघट ही ते मोय पहचानैं
सैनन में तेरौ मन मानैं
कियौ तें मन कौ भायौ, कारी अँधेरी में।
अपनौ गाँव नाम मैं खोलूँ
मैं ब्रज के गामन में डोलूँ
ब्रजवासिन सौं हँसतौ बोलूँ
नाम ब्रजराज कहायौ, कारी अँधेरी में।
जो तू ब्रज कौ राजा ऐसौ
बिना बुलाये आयबो कैसो
चोरन कौ तू राजा वैसौ

चोर के माखन खायौ, कारी अँधेरी में।
गोपी ग्वाला ब्रज में मेंरे
चोरी के नाय दोष घनेंरे
बन्यो श्याम तुम सबके चेंरे
प्रेम सौं कण्ठ लगायौ, कारी अँधेरी में॥

ऐयो ऐयो रे साँवरिया मेरी गलियन ऐयो रे।

जमुना तट पें गाँव लहर कों झोंका खैयो रे,
छपका छपकी चुब्बक खेलें नहैयो रे।
जमुना तट फूली फुलवारी बगियन ऐयो रे,
कमलन की माला पहराऊँ हार धरेंयो रे।
कारी काजर धौरी धूमर गाय घिरैयो रे,
खिरक दोहनी लैंकें आऊँ दूध दुहैयो रे।
पनघट पें लें गागर आऊँ तू मिल जैयो रे,
गागर भर ठाढ़ी जब देखूँ आय उचैयो रे।
बड़ें भोर मैं दही बिलोऊँ मिसरी पैयो रे,
सदलौनी माखन की दूँगी झिककें खैयो रे।
ऊँची अटरिया लाल किवरिया चढ़के जैयो रे,
फूलन सेज लिपट के तन की तपन बुझैयो रे॥

वा दिन बिक गई जा दिन देख्यो, मैंने सुन्दर नन्द कुमार।

गौने की मैं नई लुगाई
ब्याही बड़े घरन में जाई
लाज बँधी मैं बहू कहाई
दुखने तिखने बास भयौ जहाँ जाय न नर और नार।
बड़ौ चतुर है ब्रज कौ रसिया
करै छेद नभ की हु बदरिया
निकस्यो मेरी गली सँकरिया
गेंद खेलतो चलतौ आयौ लैकें संग के ग्वार।
सुन कोलाहल लागी झाँकन
ठाढ़ी देखन लगी झरोखन
चतुराई कीनी मनमोहन
गेंद उछार देख ऊपर कूँ दीयो जादू डार।
मिली आँख कोऊ देख न पायो
बाँकी चितवन चितहि चुरायो
श्याम रंग हिय नैन समायो
सावन के अँधरे को सूझै सबरो जग हरियार॥

नैना हरि सौं ऐसे उरझे, सुरझन की नहीं नेंकहु आस।

मैं जब ते या ब्रज में आई
घूँघट कबहुँ न खोल्यो माई
काहू ते नहिं हँसी हँसाई
बचती रहियो नंदलाला सों, कहती मेरी सास।
बचती रही बहुत भय खाती
जानें कहा करै उत्पाती
एक दिना मैं जमुना जाती
गैल गिरी मोतिन की माला, ढूँढ फिरी चहुँ पास।
माला ढूँढ रच्यो हरि जाला
पीछे टेर रह्यो नंदलाला
माला परी मिली ब्रजबाला
मैंने पीछे मुरकैं देख्यो, सुन्दर रूप प्रकास।
मो देखत ही भई ठगोरी
गई कहाँ वह लाज निगोरी
नैन धरे को फल देख्यो री
नैना चुभे नुकीले हियरे मधुर हास की फाँस॥

ठाढ़ो रहियो रे मत जैयो तेरी सौं मैं आऊँगी ॥

कुँवर लाड़ले नन्द महर के
तो ते नेह लग्यो मन करके
मैं वारी या श्यामल रंग पै
जल भरवे निकसी हूँ, कैसे रीती जाऊँगी।
याही कदमन नीचे आऊँ
बछरा पानी प्यायवे लाऊँ
पक्की कर लै अब मैं जाऊँ
चूनर मेरी छोड़ दै, माखन मिसरी लाऊँगी।
जैयो मत ह्याँई मिल जैयो
तौ लौं कान्हा वंशी बजैयो
या वन में तू गाय चरैयो
मेरे मन की रखियो, तेरे गुन मैं गाऊँगी।
मैं तो फूल, भँवर तू चंचल
उड़-उड़ अइयो मेरे अंचल
निधरक रस लीजो तज कें छल
मैं गोरी तू मेरो रसिया, जोट मिलाऊँगी ॥

मैं वारी तेरी अइयो रे कान्हा, दऊँगी तोकूँ सदमाखन ॥

ऐसो माखन कोउ न चाख्यो
मैं वारी तेरी खैयो रे कान्हा, दऊँगी तोकूँ ... ।
ऐसो माखन कोउ न देख्यो
मैं वारी हँस पैयो रे कान्हा, दऊँगी तोकूँ ... ।
ऐसो माखन मीठो रस भर्‍यो
मैं वारी रस लैयो रे कान्हा, दऊँगी तोकूँ ... ।
ऐसो माखन सब भुलवावै
मैं वारी मत जैयो रे कान्हा, दऊँगी तोकूँ ... ।
वंशी बजैयो नाच नचैयो
मैं वारी कछु गैयो रे कान्हा, दऊँगी तोकूँ ... ।
तिरछी चितवन देख-देख कें
मैं वारी हँस दैयो रे कान्हा, दऊँगी तोकूँ ... ।
मेरी गलियन नित-नित अइयो
मैं वारी तहँ छैयो रे कान्हा, दऊँगी तोकूँ ... ॥

खेलैं गेंद कृष्ण ब्रजराय बिरज की डागरिया ।

पनिहारी उत त जाय सीस पै गागरिया ॥
खेलत गेंद गिरी मग माहीं प्यारी लई उठाय,
हरि की दृष्टि बचाय लाड़िली अँचरा लई छिपाय,
रंगीली चूनरिया। खेलैं गेंद ...
ढूँढ़त हार गये नंदनंदन चतुराई गई भूल,
मुसक्याई वृषभानुनंदिनी श्री यमुना के कूल,
समझ गये साँवरिया। खेलैं गेंद ...
मेरी गेंद लई है तुमनें, दै देओ भानुदुलार,
मैं भोरौ तुम चतुर नागरी हमने मानी हार,
चुराई तब बाँसुरिया। खेलैं गेंद ...
पहले लियौ नचाय लाल को, फिर वंशी बजवाय,
मन चाही करवाय कृष्ण ते, गेंद दई तरसाय,
कियौ वश नागरिया। खेलैं गेंद ...

तेरे बिना मैं रोई रे साँवरिया तेरी याद में,
कन्हैया तेरी याद में ॥

जब आई रैन अँधेरी, तालों पै आई अकेली,
घाटों पै बैठी रोई रे, साँवरिया तेरी ... ।
जब आई रैन अँधेरी, जमुना पै गई अकेली,
जमुना तट बैठी रोई रे, साँवरिया तेरी ... ।
जब आई रैन अँधेरी, वन कुंजन गई अकेली,
डाली पकड़ मैं रोई रे, साँवरिया तेरी ... ।
जब दही चलावन बैठी, घर में मैं रही अकेली,
मथनियां पकड़ मैं रोई रे, साँवरिया तेरी ... ॥

कन्हैया प्यारे आय जइयो, बरसानों मेरौ गाँव ॥

बहुत दिना ते बाट देख रही सुन्दर श्याम सुजान,
अबतो दरस दिखायजा लाला, अटक रहे हैं प्रान,
तू मोय जियावन आय जइयो, बरसानो मेरो गाँव।
सूनो सूनो लागत प्यारे तो बिन सब संसार,
रस की बगिया सूख गई है, सूख गयो व्यवहार,
तू मेहा बनकें आय जइयो, बरसानो मेरो गाँव।
वंशी मधुर बजाय कें मन मेरो लीयो छीन,
बावरी सी इत-उत मैं डोलूँ, जल बिन तरफै मीन,
वंशी की टेर सुनाय जइयो, बरसानो मेरो गाँव।
टेढ़ी पाग लटकती बायें, तापै पेंच जड़ाव,
कजरारे तीखे नैना लटकी लट देत घुमाव,
प्यारी झाँकी दिखराय जइयो, बरसानो मेरो गाँव ॥

श्याम रंग में ऐसी भीजी, श्याम भई मैं श्याम ॥

घर में श्याम श्याम बाहर हू, जित देखूँ तित श्याम,
मेरे तो जीवन हैं श्यामहि, श्याम भई मैं श्याम।
सोवत श्याम श्याम जागत ही, चलते फिरते श्याम,
श्याम श्याम की रटना लागी, श्याम भई मैं श्याम।
पनघट श्याम श्याम जमुना तट, ब्रज गलियन में श्याम,
डगर-डगर में श्याम देख रही, श्याम भई मैं श्याम।
कुञ्ज-कुञ्ज में श्याम डार में, पात-पात में श्याम,
दूध दही माखन में श्यामहि, श्याम भई मैं श्याम।
श्याम सजन श्यामहि प्रिय संगी, मेरी सजनी श्याम,
श्याम प्राण और श्यामहि काया, श्याम भई मैं श्याम।

मन तो मेरो लै लियो राधा के रसिया श्याम नें ॥

यमुना तट पै मैं खड़ी नीले जल से टेरूँ,
लहरों से उठकर ओ रसिया ऐयो मेरे सामने।
गहवर वन में मैं खड़ी लता वृक्ष में टेरूँ,
वन उपवन ते बाहर रसिया ऐयो मेरे सामने।
कुंज निकुंजन में मैं खड़ी पात-पात से टेरूँ,
फूलन ते बाहर ओ रसिया ऐयो मेरे सामने।
गिरि गोवर्द्धन में खड़ी ठौर-ठौर पै टेरूँ,
शिला-शिला ते रूप धरे तू ऐयो मेरे सामने॥

आई घटा कारी-कारी, आओ श्याम मुरारी ॥

आधी रात में बादर गरजै
बिजुरी चमकै भारी, आओ ...।
मोतिन झालर पचरंग पलका
ऊँची हमारी अटारी, आओ ...।
ठंडी ब्यार चलै पुरवैया
खूटी हमारी किवारी, आओ ...।
आस-पास नांय कोई बाखर
सब ते रहूँ मैं न्यारी, आओ ...।
कोयल कूँकै मोरा बोलै
झींगुर की झनकारी, आओ ...।
नहनी परैं फुहार सुहानी
ओढ़ कमरिया कारी, आओ ... ॥

चलो ऐयो तू मेरी डगरिया ॥

नंद महर के कुँवर लाड़ले,
मैं वारी रे तेरी साँवरी सुरतिया।
टेढ़ी पाग लटुरिया कारी,
मैं वारी रे तेरी मृदु मुसकनियां।
अलबेलो छैला तू रसिया,
मैं वारी रे तेरी उठती उमरिया।
गावै नाचैं धूम मचावै,
मैं वारी रे तेरी मीठी बँसुरिया।
रस के भरे रसीले नैना,
मैं वारी रे तेरी तिरछी नजरिया।
बड़ी-बड़ी बैंया लै गलबैंया,
मैं वारी तेरी पतरी कमरिया ॥

ऊधम मोपै सह्यो न जाय, यशोदा हम तो बसें कहुँ और ॥

आगे पीछे मेंरे डोलै तेरो नंद किशोर,
घूँघट खोलै बैंया पकरै, खेंचै अँचरा छोर।
ग्वाल बाल लै घर घुस आवै, तेरो माखन चोर,
माखन दूध दही सब चोंरै, मटकी देवै फोर।
गली साँकरी मारग घेंरै, करै अनीती घोर,
माँगै दान अटपटो छैला, पकर दई झकझोर।
अचकै आय झरोकन झाँकै, बात करै रस बोर,
कहँ लों कहों कुचाल लाल की, रात न जानै भोर।
बड़ो लाड़लो कान्हा मेरी, बात सुनै ना थोर,
छोड़ जायेंगी यह ब्रज नगरी, अंतहि ठौर टटोर ॥

पिया तेरे संग नचूँगी नचूँगी ॥

कुल की लाज भार में डारूँ,
घूँघट आग दऊँगी दऊँगी।
कोई कितनो रोकै टोकै,
तोते आय मिलूँगी मिलूँगी।
कोई कितनो बंधन बाँधै,
तेरे संग चलूँगी चलूँगी।
जैसे रखैगो तैसे रहूँगी,
तेरे बिन ना रहूँगी रहूँगी।
भूख प्यास औ मरनो जीनों,
विपत अनेक सहूँगी सहूँगी।
यमुना तट कदमन की छैया,
बंशी मधुर सुनूँगी सुनूँगी ॥

श्याम नें अकेली पायकें घेर लई मोहि आज,
बैरिन आय गई लाज ॥

जाय रही मैं घूँघट मारे, पीछे ते चुप आयो वो,
अचक-अचक मेरो अँचरा पकर्यो, खैंच्यो औ चौंकायो वो ।
मैंने मुड़कें पीछे देख्यो नील कमल ब्रजराज ॥
इक टक देख रह्यो वो मोकूँ, मोपै चितै न जावै है,
मीठे-मीठे सैन चलावै, मेरी आँख झंपावै है ।
लाजन मेरे आँसू आ गए देखत भयौ अकाज ॥
धीरे-धीरे कहन लग्यो कछु, मेरी समझ न आवै है,
बाँह गहत तन काँपन लाग्यो, तन की दशा हिरावै है ।
बेसुध सी मैं ऐसी है गई, भूली सबै समाज ॥
वा दिन ते मेरी अँखियन में, ऐसो रूप समायो है,
घर में वन में जल थल नभ में, सब ठां श्याम दिखायो है ।
कैसी प्रीति जुरी बैरिन सी, गिरी हो जैसे गाज गाज ॥

अइयो-अइयो रे साँवरिया मेरी गलियन अइयो रे।

जमुना तट पै गाँव लहर को झोंका खैयो रे,
छपका छपकी चुब्बक खेलैं, खूब नहैयो रे।
जमुना तट फूली फुलवारी बगियन अइयो रे,
कमलन की माला पहराऊँ, हार धरैयो रे।
कारी काजर धौरी धूमर गाय घिरैयो रे,
खिरक दोहनी लैंके आऊँ, दूध दुहैयो रे।
पनघट पै लै गागर आऊँ, तू मिल जैयो रे,
गागर भर ठाढ़ी जब देखूँ, आय उचैयो रे।
बड़े भोर मैं दही बिलोऊँ, मिसरी पैयो रे,
सदलौनी माखन की दूँगी, झिक कें खैयो रे।
ऊँची अटरिया लाल किवरिया चढ़ के जैयो रे,
फूलन सेज लिपट के तन की तपन बुझैयो रे॥

साँवरे तोहे नन्द दुहाई, अइयो रे कुँवर कन्हाई ॥

जो तू आवै पीरी फाटै,
मैं तो मिलूँगी दह्यो चलाई, अइयो रे ... ।
जो तू आवै सूरज ऊगे,
मैं तो मिलूँगी पनघट जाई, अइयो रे ... ।
जो तू आवै तनक चढ़े दिन,
मैं तो मिलूँगी जमुना न्हाई, अइयो रे ... ।
जो तू आवै बीच दुपहरी,
मैं तो मिलूँ पिछवारे आई, अइयो रे ... ।
जो तू आवै साँझ की बिरियां,
मैं तो मिलूँगी गाय दुहाई, अइयो रे ... ।
जो तू आवै रैन अँधेरी,
मैं तो मिलूँगी सबन सुवाई, अइयो रे ... ॥

सखि अब घनश्याम मिलें कैसें ।

सखि ये दोउ नैन मिले कैसें ॥
चिठिया होय तो बाँच सुनाऊँ,
सखि करम की रेख बचै कैसे ।
लकड़ी होय तो काट दिखाऊँ,
सखि वारी उमरिया कटे कैसे ।
धन दौलत होय बाँट दिखाऊँ,
सखि आई विपत्ति बँटै कैसे ।
नदिया होय तो पार लगाऊँ,
सखि (भव से) विरह से पार लगाऊँ कैसे ॥

मेरी तोते लागी लगन रे साँवरे पिया

जैसे चंदा औ चकोरी की सी लगन पिया ॥
जैसे वन में मोरा नाँचैं,
ऐसे तोकूँ देख मेरो नाँचै जिया।
मेरी तोते लागी लगन रे साँवरे पिया ...
जैसे वन में पपीहा बोलै,
जैसे प्यासो पपीहा रटै पिया पिया।
मेरी तोते लागी लगन रे साँवरे पिया ...
जैसे लट्टू डोरी से बँध्यो,
जैसे तेरे संग मैं लट्टू नचिया।
मेरी तोते लागी लगन रे साँवरे पिया ...
जैसे सारस जोरी संग रह्यो,
ऐसे तेरे बिन नहिं जीऊँ रसिया।
मेरी तोते लागी लगन रे साँवरे पिया ...

आओ आओ बिहारी मेंरे अँगना – आओ आओ बिहारी ।

हम टेरत तुम आवत नाहीं, जानो प्रीति के ढंगना ।
आओ आओ बिहारी ...
गायन घेरत रहे ग्वारिया, सुनो नंद जू के छंगना ।
आओ आओ बिहारी ...
तेंरे नैनन की हौं मारी, वंशी सुन भइ मँगना ।
आओ आओ बिहारी ...
आधी रात चमक रही बिंदिया, रहर बाजै कंगना ।
आओ आओ बिहारी ...
मीठो माखन मीठी मिसरी, खाओ मेंरे अँगना ।
आओ आओ बिहारी ...
फूलन सेज अतर सों छिरकी, सोओ मेंरे संगना ।
आओ आओ बिहारी ...

देखो किया है ये हाल मैया तेरो नंदलाल,
हमें रोके रोज डगरिया में ॥

दधि मेरो खाय मटुकिया फोरी,
गैल चलत मोते करै जोरी।
कारो कारो गोपाल संग लीने हैं ग्वाल ॥ हमें ....
बीच डगर में करत ठिठोली,
फोरी सारी चुरियाँ चुनर मेरी ओढ़ी।
हम भोरी ब्रजबाल, करै हमसे ये जाल ॥ हमें ...
पनियाँ भरन पनघट पै जाऊँ,
एक नहीं मानै मैं लाख समझाऊँ।
तेरो वारो वारो लाल, तेरो मदन गोपाल ॥ हमें ...

मेरे हूक उठी है मन में दिखाय दै कोई साँवरिया ।

जमुना तट पै कदम के नीचे बंसी श्याम बजावै,
वन के पंछी मौन भये औ भँवरा चुप है जावै,
कैसे धरूँ धीरज मन में मेरे चुभ गई, हियरे बाँसुरिया ॥
मैं हूँ इकली घर में, कान्हा वन में रस बरसावै ।
पानी बिना जियै कहो कैसे मछरी प्रान गंवावै,
बंसी मोहि टेरै वन में तरफूँ बिन पानी माछरिया ॥
गल वैजन्ती माला सिर पै मोर पंख लहरावै ।
हाथन कंकण कानन कुंडल पीताम्बर फहरावै,
ये मूरत गड़ गइ हिय मनमोहन, प्यारो नागरिया ॥

सावन

मोरा कोंहक कोंहक कें बोलैं, आई सावन की बहार।

नभ में घुर रहे बादर कारे,
जैसे ऊपर बजैं नगारे,
देख कें मोरा पंख पसारे,
झूम-झूम के नाच रहे हैं मंदी परै फुहार।
ऐसे में निकसे पिय प्यारी,
मन में लहर उठी मतवारी,
लता-पतन की झूमन न्यारी,
पटुका और चुनरिया फहरै सीरी चल रही ब्यार।
वन विहरैं रस भीनी जोरी,
सुन्दर नवल किशोर किशोरी,
चले जात गहवर वन ओरी,
मधु टपकाय लता फूलन ते बरसावैं रसधार।
कबहूँ जावैं मोर-कुटी चढ़,
कबहूँ देखैं चढ़ै मानगढ़,
कबहूँ गलबैंया विलासगढ़,
धन्य-धन्य ब्रह्माचल विहरैं जहाँ युगल सरकार॥

बादर गरजैं बिजुरी चमकै पानी बरसै गोलाढार ॥

बादर चढ़ रहे घूम-घुमारे,
धौरे पीरे कारे कारे,
कोई कोई घूम घुमारे,
मानों फौज चढ़ी राजा की करदे पटिया पार ।
तैसी ब्यार चलै पुरवैया,
देय झकोरे है सुखदैया,
मोरा लेय रहे फिरकैया,
बूँदन की वे लगैं पछाटैं अर्राटे की मार ।
ऐसे में इक बनी अटारी,
जा पै बैठे प्रीतम प्यारी,
श्री राधा और श्री बनवारी,
हरियाली की छटा देख रहे सावन पै बलिहार ।
देखैं गहवर की हरियारी,
सुनैं कूक कोयल की प्यारी,
पी पी करै पपैया भारी,
सुन रीझैं रस भीजैं देवैं गरबैंयन के हार ॥

सावन की अँधियारी रात बिजुरिया चमकै आरम्पार।

घुप्प अँधेरी नभ में छाई
कारी घटा बड़ी टकराई
मानों है रही बड़ी लड़ाई
गहर गहर के कारे बादर गरजैं बारम्बार।
बिजरी कौंध रही मतवारी
अँखियन चौंधा दै रही भारी
थिर न रहै ऐसी सटकारी
बड़ी-बड़ी बूँदन मेहा बरस्यौ है गई धारम्धार।
डरप रही इक ब्रज की नारी
ह्वांई देख रहे गिरिधारी
मन में रीझ बहुत भई भारी
श्री मोहन ने बाँह गही जब कीनी तारम्तार।
कामर की हरि करी खोइया
एकइ में गोरी औ रसिया
लाजन गोरी रोकै हँसिया
बाहर भीतर रस बरसै झर लग गई झारम्झार॥

कैसे झूम रहे अम्बर में प्यारे बादर मतवारे ॥

टोल टोल हाथी से आये
लटक लटक धरती लौं छाये
चारों ओर घूम रहे धाये
धौरे पीरे धूम घुमारे कजरारे कारे।
गरजन लगे एक संग मिल कें
बरसन लगे बड़ी बूँदन ते
धूंआँधार भयो मेहन ते
ताल तलैया नदी सरोवर भर गये जल भारे।
आय फँसी या लता पतन में
सखी सहेली कोऊ न संग में
इकली रह गई गहवर वन में
लेहु उढ़ाय कमरिया अपनी हा-हा खाऊँ रे।
सुनतइ आये श्री गिरिधारी
खोइ में लीनी ब्रज की नारी
कोयल बोल रहीं धुनि प्यारी
कैसी हरियाली छाई, चल तोय दिखाऊँ रे।
चले संग लै भीतर कुंजन

गोरी भीज रही है लाजन
अँगिया चूनर पकरे हाथन
सुन इक बात रसीली, प्यारी तोय सुनाऊँ रे ॥

रिमझिम बरस रही बादरिया कान्हा भीजी जाऊँ रे ॥

मन कर पहरी नई चुनरिया
सारी नई औ जड़ी किनरिया
अंगिया में बोलैं मोर पपैया
सजी सबै सिंगार बूँद मैं कैसे बचाऊँ रे।
कारे बदरा घेरत आवैं
चमकैं गरजैं औ डरपावैं
घहर घहर कैं जल बरसावैं
सननन ब्यार चलै पुरवैया झोंका खाऊँ रे।
आय फँसी या लता पतन में
सखी सहेली कोउ न संग में
इकली रह गई गहवर वन में
लेहु उढ़ाय कमरिया अपनी हा-हा खाऊँ रे।
सुनतइ आये श्री गिरिधारी
खोइ में लीनी ब्रज की नारी

कोयल बोल रही धुनि प्यारी
कैसी हरियाली छाई चल तोय दिखाऊँ रे ॥
चले संग लै भीतर कुंजन
गोरी भीज रही है लाजन
अंगिया चूनर पकरे हाथन
सुन एक बात रसीली प्यारी तोय सुनाऊँ रे ।

पानी बरसत रात अँधेरी आयो श्याम हमारे द्वार ॥

रात अँधेरी कारी कारी
घटा घिर रही कारी कारी
ओढ़ कमरिया कारी कारी
बिजरी चमकी तब मैं देखो पीताम्बर की धार ।
कब की तलफ रही मैं विरहिन
विरह अगिन की सह रही पजरन
नीर बिना मछरी की तरफन
कैसे श्याम मिलन को जाऊँ बैरी सब संसार ।
आय मिल्यो वह ब्रज को रसिया
श्यामहि मेरे मन को बसिया
श्याम रंग मेरो मन रंगिया
श्याम श्याम रट रही सेज पै मिल्यो श्याम भरतार ।
श्याम बिना नागिन सी रैना
श्याम मिले तो सब सुखचैना
श्याम प्राण जीवन रस दैना
कोयल कूक पपैया बोलै पुरवैया की ब्यार ॥

झूलन माधुरी

एजी सुनो बंशी बजैया, कन्हैया झूलूँगी हिंडोरे ॥

घर में झूलूँ बाहर झूलूँ,
तेरे संग झूलूँ अँगनिया।
ऊपर झूलूँ अटरिया पै झूलूँ,
तेरे संग झूलूँ सेजरिया।
कुंजन झूलूँ निकुंजन झूलूँ,
संग झूलूँ यमुना लहरिया।
उपवन झूलूँ कदम वन झूलूँ,
झूलत में बाजै बाँसुरिया।
फूलन की डारन पै झूलूँ,
झूलूँ मैं फूलन पटुलिया ॥

आयो आयो मेंरे झूलन आयो मोहना ॥

फूलन की पटरी फूलन की डोरी,
मेंरे फूल हिंडोरा छाये मोहना।
मेंरे हिंडोरा पै फूल बिछौना,
मैंने चुन-चुन कलियाँ सजाये मोहना।
मेंरे हिंडोरा पै जूही मालती,
मैंने बेला गुलाब सजाये मोहना।
मेंरे हिंडोरा पै खस छिरकायो,
जामें भीनी सुगन्ध फैलाये मोहना।
मेंरे हिंडोरा पै बंसी बाजी,
गीत अनेक गवाये मोहना।
मेरो हिंडोरा जमुना तट पै,
लहरन झोंका खाये मोहना ॥

सररर सररर रे हाँ, सररर सररर रे
झूला झूलें राधेश्याम ॥

फररर फररर रे हाँ पटका फहरै श्री घनश्याम।
फररर फररर रे हाँ चूनर फहरै प्यारी भाम।
झररर झररर रे हाँ फूलन बरसै कुंजन धाम।
हररर हररर रे हाँ यमुना बह रही आठों याम।
छररर छररर रे हाँ बूँदरिया पर रहीं अविराम।
चमचम चमचम रे हाँ बिजरी चमकै चामाचाम ॥

रसीलो सावन आयो, झूलें कदम की छाँह ॥

विनती सुनिये राधा प्यारी
हरियाली में फूली क्यारी
मुसक्याई सुन भानुदुलारी
कह्यौ यह मन कौ भायो डार चली गर बाँह ।
चले जात दोउ धीरे धीरे
श्री यमुना के तीरे तीरे
छलक रह्यौ जल नीरे नीरे
पपैया बोल सुनायो, कुञ्ज गली की राह ।
फूल्यो कदम फूल अति भारौ
झूला फूलन तेई सँवारौ
वा पै झूलैं प्यारी प्यारौ
अनौखो रस बरसायो, लता-पतन की छाँह ।
गीत गवावैं ब्रज की बाला
चिरजीवो राधा नन्दलाला
झोटा में सखि दै रहीं ताला
घोर गीतन कौ छायौ, वृन्दावन के माँह ॥

कैसी ऋतु सामन की आई, जामें झूलन की बहार ॥

कोयल कैसी गाती डोलैं
मोरा नाचैं पंखन खोलैं
दादुर और चकोरा बोलैं
पीउ पीउ ये रटैं पपैया झींगुर की झनकार।
इन्द्र-धनुष ऊग्यो रंगीलो
बादर झमक चढ़्यो गरबीलो
मन्द-मन्द गरजै बरसीलो
नहनी-नहनी बूँदरिया की ठंडी परै फुहार।
ऐसे बचन कहैं मनमोहन
चलीं छबीली चन्द लजोहन
जाय छिप्यौ बदरी के गोहन
रेशम की डोरन ते झूला पर्‌यो कदम की डार।
झूला नव फूलनहिं सँवार्‌यो
फूलन सब सिंगारहि धार्‌यो
गोद उठाय प्रिया बैठार्‌यो
दोनूँ झूला गावैं बरसै गहवर रस की धार ॥

प्यारी झूलन में रस बरसै झूलैं चल कें दोऊ आज।

फूल रही कदमन की डाली
जमुना तीर निरखिये आली
नये नये कमलन की लाली
रेशम डोर हिंडोरा डार्‍यौ सामन कौ सब साज।
नवल किशोरी चढ़ीं हिंडोरैं
जैसे दामिनी लेत हिलोरैं
गावैं गीत चित्त को चोरैं
सुन्दर श्याम राधिका गोरी ज्यों बादर संग गाज।
इक हाथन ते डोरी पकरें
दूजे गलबैंया में जकरें
झोटा ते पीताम्बर फहरे
जमुना जल के ऊपर झूला उड़ रह्यो जैसे बाज।
झोटा जोर दिये गिरिधारी
डरपन लगीं प्रिया सुकुमारी
बरजे नहिं मानैं बनवारी
लिपट गईं घनश्याम लाल सौं जोरी अविचल राज॥

झूला झूल रहे पिय प्यारी, तीज हरियाली आई है ॥

हरी-हरी लता झूम रही प्यारी
छाय रहीं धरती पै न्यारी
मानों सारी हरी सँवारी
हरे हरे वृक्षन में ऋतु ये जोबन लाई है।
श्यामा-श्याम हिंडोरे झूलैं
अरस-परस ते मन में फूलैं
प्यारी बतियाँ कह-कह भूलैं
देखो देखो यह झूलन की ऋतु मन भाई है।
डालन पै बैठे पंछी गन
खेलैं चोंचन में दै चोंचन
पीवैं बरसा के झीने कन
झूलन में रस बरसै कारी घटा सुहाई है।
तीज मनावैं पंछी ब्रज के
लाल लाड़िली के उत्सव के
मोरा नाचैं पंख खोल के
भँवरा छेड़ैं खरज, रागिनी कोयल गाई है ॥

झूला झूलैं राधा प्यारी, चुनरिया फहर-फहर फहरै ॥

सामन की हरियाली छाई
कारी घटा बड़ी घिर आई
ऋतु झूलन की है मन भाई
जमुना तीर बहै पुरवैया सरर-सरर सररै।
झूला पर्‌यो कदम की डरियाँ
झीनी पर रहीं नहनी बुंदियाँ
झोटा देय रही सब सखियाँ
मुख पै लटक रही लट कारी लहर-लहर लहरै।
उरझ परी वैजन्ती माला
सुरझावत हैं श्री नन्दलाला
खैंच लियो तब भोरी बाला
टूट परी मोतिन की माला छहर-छहर छहरै।
ररकैं मोती झूला पर ते
सखियाँ बीन रहीं नीचे ते
टपकैं खिले फूल ऊपर ते
फूलन गहना हार झरैं हैं झहर-झहर झहरैं॥

मुरलिया मधुर बजाई झूलत में गोपाल ॥

झूला झूल रहे गिरिधारी
संग बैठी कीरति सुकुमारी
मुरली सुनत मगन भई भारी
रीझ कैं कण्ठ लगाई, नवल किशोरी बाल ।
गावन लगीं मल्हार कुमारी
कोयल मौन भई मतवारी
मोर पपैया हू बलिहारी
रसीली तान सुनाई, हाथन सौं दै ताल ।
सोई तान भरैं मुरली में
जो-जो प्यारी गावैं स्वर में
लाग डाट के या गायन में
प्रेम की बरसा छाई, भीजैं राधा लाल ।
राग मालिका गाय दिखावैं
ताल मालिका भेद बतावैं
लय माला सुन्दर दरसावैं
अद्भुत भाव दिखाई, धारैं स्वर के माल ॥

झूला झूलैं यमुना के किनरिया, राधा संग साँवरिया।

झूला कदम की डारन डार्‌यो
झूला फूलन तेई सँवार्‌यो
ठंडी बह रही ब्यार पुरवैया, राधा संग ...।
चोटी श्यामा जू की लहरै
पटुका गिरिधारी को फहरै
राधा रानी की उड़ती चुनरिया, राधा संग ...।
मोरा पंखन खोल पसारे
झूमैं नाचैं हैं मतवारे
पीऊ-पीऊ बोलै प्यारो रे पपैया, राधा संग ...।
कारे कारे बादर आये
उमड़ घुमड़ कर ऊपर छाये
कैसी चमक रही है बिजुरिया, राधा संग ...।
फूल रही है कदमन डारी
सुगन्ध फूलन की है भारी
झीनी-झीनी पड़ रही फुहरिया, राधा संग ...।
बेला जुही मोंगरा फूले
फूल फूल पै भँवरा झूले
प्यारी लागै नन्ही-नन्ही बूँदरिया, राधा संग ...।
बादर धीरे धीरे गरजैं

ताल मृदंग बजै मन लरजै
मीठी बाजै मोहन की बाँसुरिया, राधा संग ... ।
झूला ऊपर नीचे जावै
आँचर प्यारी को उड़ जावै
लग रही नटवर की ये नजरिया, राधा संग ... ॥

अरे राधा रानी चढ़ी हिंडोरे, लैकें गिरिधर को झूलैं ॥

इक घन गरजै इक घन बरसै
अरे पुरवाई चलै झकझोरे, लैकें गिरिधर ... ।
बादर बीच बीजरी चमकै
अरे इत भामिनी लेत हिलोरे, लैकें गिरिधर ... ।
झीनी बुँदिया ऊपर पड़ रही
अरे झरै सीस ते माला फूलें, लैकें गिरिधर ... ।
पपीहा बोलैं कोयल गावैं
अरे इत चुनरी उड़ै न थोरें, लैकें गिरिधर ... ॥

कदम वन झूलन आई श्यामा ॥

फूलन सारी फूलन अँगिया,
वो तो फूलन लहँगा लाई श्यामा ।
कदम के फूलन सज्यो हिंडोरा,
वो तो पटुरी कदम की लाई श्यामा ।
कदम फूल की बनी कौंधनी,
कदम के बिछुवा लाई श्यामा ।
कदमन कुंडल कदम की गूँठी,
वो तो फूलन गहने लाई श्यामा ।
कुँवर कान्ह को संग बैठार्यो,
वो तो फूल घटा सरसाई श्यामा ॥

झूलन लागीं झूला प्यारी हुलसाय ॥

यमुना तीर कदम की डारन,
हिंडोरे संग बैठे गिरिधर राय।
झमकि हिंडोरे पै जैसे बैठीं,
चुनरिया हाये फरर-फरर फहराय।
चल्यो हिंडोरा तेज चाल पै,
जियरवा हाये धकर-धकर धकराय।
जैसे हिंडोरे पै दुमची लागी,
लिपट गई पिय सौं डरप डरपाय।
जबहि हिंडोरा पै गावन लागी,
कोयलिया हाय मौंन भई सकुचाय ॥

झूलन चुनरी फररर होय-होय मेरी मैया ॥

ये झूला जोर झुलावै, मेरो मन भारी डरपावै,
मन में धकधक होय ...
ये रह्यो गाय कौ ग्वाला, जाते नाम परयो गोपाला,
झूला झररर होय ...
डटियो रे कुँवर कन्हाई, ऐसो ना करै ढिठाई,
डारी अररर होय ...
मेरो अंचर उड़ उड़ जावै, मोती माला उरझावै,
मोती छररर होय ...
ये जमुना जोर जनावै, पानी ऊपर झूला जावै,
पानी हररर होय ...

श्री राधा प्रेम नदी उमड़ी ॥

फैली ब्रज मण्डल वृन्दावन रस ही रस उमड़ी घुमड़ी ।
नव जीवनी सोन चंपा तन फूलन फूली सोन छड़ी ।
पिय के तन में मन में हिय में राधा मूरति रहति गड़ी ।
श्याम सिंधु सौं मिलति कुंज में सदा रहत पिय अंग पड़ी ।
चापत चरन बिहारी निशिदिन नित्य सुहागिन भाग बड़ी ।
नित्य बिहार महारस सुख की राधा पदरेणुका कड़ी ॥

श्रीकृष्ण जन्म बधाई

जन्में दीनदयाल रे, आठें बुद्ध रोहिणी भादों ॥

कृष्ण चन्द्र जन्मे मथुरा में
दूर भयो अंधियारो जग में
जगे भाग्य सब भक्त जनन के
बन्धन खुल गये मात-पिता के
कट गई बेड़ी जाल रे, आठें बुद्ध रोहिणी ... ।
सोय गये सब पहरे वारे
कारागृह के खुल गये तारे
बालक सूप मध्य पौढ़ायौ
मात-पिता को हिय भर आयो
वसुदेव चले लै लाल रे, आठें बुद्ध रोहिणी ... ।
रैन अँधेरी चल्यो न जावै
चमक बीजुरी राह दिखावै
बादर रिमझिम जल बरसावैं
देख पिता कौ मन घबरावै
कियौ छत्र जब व्याल रे, आठें बुद्ध रोहिणी ... ।
चढ़ रही जमुना तीखी धारें

जल में पाँव कहूँ ना ठहरे
डूब रहे वसुदेव पुकारे
कोई बचावो लाल हमारे
हरि नीचे पग डाल रे, आठें बुद्ध रोहिणी ... ।
चरन परस के उतरी जमुना
पार भये भय रह्यो कछुक ना
पहुँचे नन्द भवन में जाई
सोय रहीं जहाँ यशुदा माई ।
सब सोये तेहि काल रे, आठें बुद्ध रोहिणी ... ।
यमुना ढिंग लाला पौढ़ायो
कन्या लै निज गोद लगायो
चलन लगे तब हिय भरि आयो
अँखियन ते अँसुवा बरसायो
छाँड़ चले गोपाल रे, आठें बुद्ध रोहिणी ... ।
कन्या लै कारागृह आये
बन्धन ज्यों के त्यों लग आये
रोवन लागी कन्या भारी
आयो कंसासुर संहारी
छीन लई वह बाल रे, आठें बुद्ध रोहिणी ... ।
पाँव पकर पटकी बरि आई

अष्ट भुजा भई नभ में जाई
देवी बोल रही यह बानी
रे शठ तेरी मति बौरानी
जन्म्यौ कहुँ तब काल रे, आठें बुद्ध रोहिणी ... ।
भोरहि गोकुल बज्यो बधायो
नन्द महर घर ढोटा जायो
आनंद भयो नन्द के द्वारे
लाल कन्हैया की जैकारें
नाचैं दै दै ताल रे, आठें बुद्ध रोहिणी ... ।
हरि के चरित बड़े सुखदाई
जन्म अष्टमी लीला गाई
कृष्ण चरित जो गाय सुनावै
निश्चय कृष्ण चरण कूँ पावै
भक्तन के प्रतिपाल रे, आठें बुद्ध रोहिणी ... ।

बाबा नन्द् द्वार पै ठाढ़े, कह रहे सुनो मेरे प्यारे ॥

जन्म्यौ पूत एक मेरे जो रहे भाग भारे,
तुम बारन कौ भयौ लाड़िलौ आँखिन के तारे।
जो चहिये सो लेउ निसर कें, हम तो हैं त्यारे,
अपने मन की आशा पुजवौ, बूढे औ बारे।
सोना चाँदी रतन अमोलक मोतिन के हारे,
हार हमेल गले कौ कठुला आभूषण सारे।
पाग पिछौरा और अंगरखा पटुका दै डारे,
खुरचन दूध दही लडुअन के भोजन सुखकारे।
उछर उछर कें हेरी गावैं मदमाते ग्वारे,
नन्द् बाबा कौ ढोटा जीवै, दै रहे जैकारे।
द्वै लख गैयां दई विप्र मंत्रन कौ उच्चारे,
बछरा उछरैं कूदैं घननन गर घण्टा वारे।
तिल के सात पहाड़ दिये जो ढके रत्न ढारे,
पूजा पितर देवतन की करवाय अशुभ टारे।
दूध दही छिरकैं माटन ते चले बह पनारे,
आँगन पाँव न ठहरें, ऐसे बहे तहाँ खारे ॥

बधाई बाजै मन्दिर में मंगल गावैं हुलसाय ॥

न्हाय धोय के नन्द बबा जू बैठे फर्स बिछाय,
सोने सींग मढ़ी गैया दई सब बाम्हनन बुलाय,
मंत्र बोलें मन्दिर में, कानन में दूब धराय।
लै दधि माँट सीस पै गोपी, आई महल के बीच,
दूध दही की होरी है गई, भई रिपटनी कीच,
हार टूटैं मन्दिर में गहना खुल खुल गिर जाय।
ग्वाला नाचैं गोपी नाचैं रिपट-रिपट गिर जाँय,
तारी दै-दै हँसैं हँसावैं, खेलैं खाय सिहाय,
कौर देवैं होंठन में घूँघट में कर पहुँचाय।
ग्वालन को दिये पाग पिछौरा पटुका झुब्बादार,
गोपिन को अँगिया लहँगा जा में नारो फुंदनादार,
झमक नाचैं मन्दिर में नर नारी जोट मिलाय।
जसुदा ढिंग आईं सब गोपी कहैं बधाई आज,
लाला सदमाखन कौ लौंदा श्याम रंग सरताज,
लाल देखैं मन्दिर में, आसीस देंय मन भाय ॥

कान्हा जनम लियौ आधी पै,

घिर रही बादरिया कारी।
भादों कृष्ण अष्टमी आई
सब जग में अँधियारी छाई
नखत रोहिणी नभ में भाई
ताही समय चन्द्रमा ऊग्यौ सबकौ सुखकारी।
जै जैकार मची अम्बर में
नाच रही अप्सरा गगन में
गंधर्वन के गान तान में
चढ़ विमान सुर करन लगे फूलन बरसा भारी।
नदियाँ सुख सौं बहन लगीं सब
फूली पृथ्वी पवन चल्यौ जब
चारों ओर भये मंगल तब
जीव चराचर सुखी भये सब सृष्टि भई प्यारी।
अग्निहोत्र की अग्नि उठी जल
भय ते पहले बुझी कंस खल
साधुन के मन आनंद निश्चल
श्री देवी भू देवी मिल ब्रज छाईं कर यारी॥

बाजै बाजै री बधाई मैया तेरे अँगना ॥

बड़ौ अनोखो लाला जायो
श्याम रंग सबको मन भायो
ब्रजवासिन कौ मन हुलसायो
उमग-उमग सब चले नन्द घर बाँधे बँधना।
नन्द भवन ऐसौ सजवायौ
बैकुण्ठहु कौ दियौ लजायौ
सब लोकन ते घनो सुहायौ
टोल टोल गोपी उठ धाईं गावैं मँगना।
बाम्हन अपने वेद पढ़त हैं
नंद बाबा जू दान करत हैं
पाग पिछौरा ग्वाल लेत हैं
गोपिन को दियो लहँगा फरिया रतन जटित कंगना।
नाच नाच के प्रेम दिखायौ
नन्द भवन में धूम मचायौ
देंय असीस सबन मन भायौ
अरी जसोदा रानी तेरौ जीवै छंगना॥

गोपी झमक झमक कें नाचैं, ग्वाला गावैं मीठे तान ॥

नन्द् भवन में बजी बधाई
कोयल सी कौंहकी सहनाई
ढोल झाँझ ढप धुनी सुहाई
गहक गहक के बाजन लागे चारों ओर निसान।
हेरी कह-कह ग्वाला गावैं
लकुट पिछौरा लै फहरावैं
उछरें और सबन उछरावैं
तारी दै दै हँसें हँसावैं नैंक न राखें मान।
झूमक नाचैं ब्रज की नारी
ऐसौ कोहकंदो भयौ भारी
मन भाई सी देवैं गारी
ऐसौ आनन्द् बढ़्यौ नन्द् घर जब जनमें ब्रजप्रान।
मणि कुण्डल कानन में झूमैं
गुँथे फूल झुक गालन चूमैं
उछरत हार कुचन पै घूमैं
झमकैं रवा कौंधनी बिछुआ मुंदरी कर पग पान ॥

खिल गये कमल रात में प्यारे, जब हरि जनमें आधी रात ॥

भादो कृष्ण पक्ष शुभ आयो
रोहिणी बुद्धवार दिन गायो
तिथि अष्टमी सुमंगल छायो
आठें में भई पूरणमासी ऐसो निकस्यौ चन्द,
विद्याधरी सुनाचतीं सबके मन निर्द्वन्द्व ।
निर्मल भई दिशाएँ सगरी, तारन सजी बारात ॥
खिल गये कमल रात में प्यारे ... ॥१॥
पृथ्वी देवी मोदमयी हैं
विविध रतन सौं छाय रही हैं
हरि पति आये वधू भई हैं
ब्रह्मचारी वामन परशु सीतापति दामाद,
अबलौं तरसी अब ब्रजपति संग विलसूंगी धर ह्लाद ।
रंग बिरंगी फूलन साड़ी धरनी पहरि सुहात ॥
खिल गये कमल रात में प्यारे ... ॥२॥
चौमासे की उमगी नदियाँ
निर्मल जल सौं झरती झरियाँ
संगम कर बतराती सखियाँ
प्रभु अवतार अनेक धरि नदियन मानी मात,
कृष्ण रूप पति पाय कें सब नदियाँ सरसात ।

कालिन्दी पति जीजा सौं बतरावैंगी बलखात ॥
खिल गये कमल रात में प्यारे ... ॥३॥
पाँच तत्व हू मगन भये सब
हम कूँ शुद्ध करेंगे हरि अब
व्योमासुर वध सौं शोधें नभ
तृणावर्त वध वायु कालिया सो जल माटी खाय,
भूशोधै कर पान अग्नि कौ सबै तत्व हुलसाय।
निर्मल तत्वन सौं सब सृष्टि भई प्यारी रसमात ॥
खिल गये कमल रात में प्यारे ... ॥४॥

कैसे जाऊँ रे हाँ-हाँ नंद जू के द्वार, सोच रहे वसुदेव जी।

हाथ हथकड़ी पाँयन बेड़ी, लग रहे वज्र किवार,
बादर गरजै पानी बरसै, भयो घोर अँधियार,
डरप रहे वसुदेव जी।
या पार मथुरा वा पार गोकुल, बीच यमुन की धार,
चढ़ रही नदिया भँवर पड़ रहे सूझै नहीं किनार,
देख रहे वसुदेव जी।
खुली हथकड़ी खुल गई बेड़ी, खुल गये वज्र किवार,
शेष नाग ने छत्र कर्‌यो है, चमकै नव लख तार,
जाय रहे वसुदेव जी।
मथुरा सोयो गोकुल सोयो, सोई सृष्टी सारी,
लीलाधर लाली लै आये, योग माया औतारी,
आय गये वसुदेव जी।
लग गये तारे लग गई बेड़ी रोई कन्या भारी,
आयो कंसा पटक पछारी अष्टभुजा भई नारी,
कर जोरैं वसुदेव जी।
बोली देवी नभ में ठाढ़ी, ओ रे अधम कसाई,
तेरौ काल कहूँ है प्रगट्यो, काहे शिशु मरवाई,
सिर नावैं वसुदेव जी॥

नन्द के भये नंदलाल, बिरज में आनन्द भयो ॥

कौन ने पूजे कुआँ बावड़ी, कौन ने पूजे ताल,
यशोदा ने पूजे कुआँ बावड़ी, नन्द जू ने पूजे ताल।
कौन के बाजे ढोल मँजीरा, कौन के नगारे पै ढाल,
यशोदा के बाजै ढोल मँजीरा, नन्द जू के बाजे ढाल।
कौन ने बाँटे लड़ुआ गूँजा, कौन ने छकाये माल,
जसुदा ने बाँटे लड़ुआ गूँजा, नन्द जू ने छकाये माल।
कौन पहराये लहँगा फरिया, कौन ने पटका माल,
जसुदा पहरावे लहँगा फरिया, नन्द जू ने पटका माल।
कौन ने लुटाये गहना गुरिया, कौन ने हीरा लाल,
नाँचैं गावैं सब ब्रजवासी, उछर-उछर दैं ताल ।
दै असीस मगन सब गोपी, चिरजीवो गोपाल ॥

भयो देवकी के लाल जसोदा जच्चा बनी ।

(भयो दसरथ के लाल कौसल्या....)
रात भादों की घोर दादुर बोलै चारों ओर,
दधि माखन को सखियाँ लुटायवे लगीं।
भयो नंद भवन में सोर ननदी आइवे लगीं,
साक्षिये धराई को नेग माँगन लगीं।
बाजे संख घड़ियाल लियो कृष्ण अवतार,
सारे गोकुल में बधाई बजवे लगी ॥

श्री राधा जन्म बधाई

नाचूँगी-नाचूँगी-नाचूँगी आज राधा बधाई नाचूँगी ॥

घूम घुमारो लहँगा पहरूँ, लहँगा की घूम घुमाऊँगी ।
पचरंगी फरिया ओढ़ूँगी, फरिया फरर उड़ाऊँगी ।
पायन में पायलिया पहरूँ, छननन घोर सुनाऊँगी ।
बजने बिछुआ खूब बजाऊँ, ठुमका जोर लगाऊँगी ।
ऐसे नाचूँगी मैं रस में, देखन हारे नचाऊँगी ॥

गावो गावो री बधायो, रानी कीरति के घर आज ॥

रमक झमक के चलो भानुघर सज धज के सब साज,
राजा श्री वृषभानु महल में मंगल के भये काज।
गांम गांम ते आईं नारी लोगन जुरे समाज,
धौंसा की धधकार सुनो जहँ ठाढ़े हैं महाराज।
बीना वैन और सारंगी महुवर ह्वै रहे बाज,
कोउ नाँचैं कोउ हाँसी देवैं कौन करे ह्वां लाज।
अनहोनी भई लली सोहनी लोकन की सरताज,
जाके प्रगट होत बरसाने सबके दुख गये भाज।
नन्दगाँव ते नन्द जसोदा आये महल विराज,
कीरति जसुदा भेंटी जैसे भेंटी हैं द्वै गाज।
लाली ढिंग लाला पौढ़ायो जोरी अति छवि छाज,
पलना में खेलैं और किलकैं रूप के दोउ जहाज ॥

राधा जनम भयौ बरसाने, आये नन्द यशोदा धाय।

सुन सुन फूलीं जसुदा माई
लिये गोद में कुँवर कन्हाई
गईं जहाँ बज रही बधाई
नाचैं गावैं गीत मनोहर, आनन्द नहीं समाय।
ब्रज गोपी महलन में आवैं
कन्या लै के गोद खिलावैं
जसुमति कीरति हँसैं हँसावैं
या बेटी के ऊपर लाखों बेटा हू नहिं भाय।
कान्हा को राधा पै वारैं
तन मन प्राण सबै न्यौछारैं
देवन को अँचरा पैसारें
देख देख जसुदा की करनी कीरतिहू मुसकाय।
नंद वृषभानु सभा में ठाढ़े
कौंरी भर भर मिलै जु गाढ़े
पौरी में बज रहे नगाड़े
खुर और सींग मढ़ी सोने ते ऐसी दीनी गाय॥

आनन्द झूम रह्यो वृषभानु भवन में, राधा जनमी आय ॥

सब लोकन में बजी बधाई
भादों सुदी अष्टमी आई
पीरी फाट रही सुखदाई
दुंदुभि नभ में देव बजावैं, फूलन कूँ बरसाय।
ध्वजा पताका फहरन लागे
बाजे बहुत बजावन लागे
घर घर धूम मचावन लागे
बरसाने की गली गलिन में मंगल ही रह्यो छाय।
दूध दही के माँट ढुरावैं
ऐसी गाढ़ी कीच मचावैं
कन्या को आसीस सुनावैं
बहुतै भाग हमारे भैया या लाली को पाय।
सजी धजी गोपी जन आवैं
उमा रमा के भाग लजावैं
श्री राधा को लै दुलरावैं
जाकौ ध्यान धरैं त्रिभुवन पति मोहनहू तरसाय ॥

रानी कीरति के कन्या भई, नाँचैं नन्दराय वृषभान ॥

मंगल भयौ बड़ो अनहोनों
आयो नन्द गाँव बरसानों
इक संग नाँचैं समधी दोनों
देख देख जसुदा औ कीरति हँसि न्यौछारैं प्रान।
मन्दिर के सब गली गिरारे
चन्दन और अतर के गारे
बहु सुगन्ध के बहैं पनारे
केला खम्भ धुजा और झालर मोतिन के बन्धान।
ऐसी धूम मची बरसाने
नर-नारिन के जूथ जुराने
बाजे बहुत बजे सहदाने
इक नाँचैं इक सैन चलावै, गावैं मीठे गान।
कहा बूढ़े कहा लोग लुगाई
लैंकें चाव चले उमगाई
बज रही आठों पहर बधाई
जै जैकार करैं अम्बर में चढ़ कें देव विमान।

अरि बरसाने बजी बधाई, कीरति नें लाली जाई ॥

वन्दनवार बँधे महलन में
अरि ऊँचे पै धुजा लगाई, कीरति ने ...।

उमा रमा वाय धन्य कहैं
अरि जो बरसाने की दाई, कीरति ने ... ।
हार दियौ हियरे कौ रानी
अरि वाय खपरा रतन भराई, कीरति ने ... ।
भानुमति राधा की बूआ
अरि वो लेत नेग मन भाई, कीरति ने ... ।
दौरी-दौरी फिरैं मलिनियां
अरि वो तो फूलन गजरे लाईं, कीरति ने ... ।
दौरी-दौरी फिरैं ढांढ़िनी
अरि वंसावलि नाच सुनाई, कीरति ने ... ।
जसुदा गावत चली बधाई
अरि वो तो भानुराय घर आई, कीरति ने ... ।
कनक थार में नीली झँगुली
अरि वो चूरो हँसली लाई, कीरति ने ... ।
चकवा चकई भौंरा भौंरी
अरि वो संग में कुँवर कन्हाई, कीरति ने ... ।
धन्य कूँख कीरति मैया की
अरि जाते राधा ब्रज में आई, कीरति ने ... ।
जुग-जुग जीवैं लली भानु की
अरि सब दैं असीस सुखदाई, कीरति ने ... ।

कीरति जू के कन्या भई, जै जै राधा रानी की ॥

एक लली अनहोनी जनमी, जै जै राधा ... ।
वृन्दावन की रानी प्रगटी, जै जै राधा ... ।
मोहन की स्वामिनी प्रगट भई, जै जै राधा ... ।
महारास रासेश्वरी प्रगटी, जै जै राधा ... ।
करुणामयी स्वामिनी प्रगटी, जै जै राधा ... ।
प्रेमदायिनी स्वामिनी प्रगटी, जै जै राधा ... ।
रस विस्तारिणी स्वामिनी प्रगटी, जै जै राधा ... ।
हरिवशकारिणि स्वामिनी प्रगटी, जै जै राधा ... ।
कृष्णाराध्या स्वामिनी प्रगटी, जै जै राधा ... ।
ब्रह्माराध्या स्वामिनी प्रगटी, जै जै राधा ... ।
कृष्ण सजीवनमूरी, जै जै राधा ... ।
कृष्णप्रिया श्री राधा प्रगटी, जै जै राधा ... ।
कृष्णप्राणाराध्या प्रगटी, जै जै राधा ... ।
गोपीश्वरी किशोरी प्रगटी, जै जै राधा ... ।
कृष्ण पूजिता शक्ती प्रगटी, जै जै राधा ... ।
कृष्ण सेविता देवी प्रगटी, जै जै राधा ... ।
गौरांगी श्रीराधा प्रगटी, जै जै राधा ... ।
नित्ययौवने राधा प्रगटी, जै जै राधा ... ।
कमलांगी श्रीराधा प्रगटी, जै जै राधा ... ।

कृपाशीलनी राधा प्रगटी, जै जै राधा ... ।
दयाशीलनी राधा प्रगटी, जै जै राधा ... ।
प्रेमशीलनी राधा प्रगटी, जै जै राधा ... ।
कोकिल कंठी राधा प्रगटी, जै जै राधा ... ।
नित्यकिशोरी राधा प्रगटी, जै जै राधा ... ।
चित्सौंदर्या राधा प्रगटी, जै जै राधा ... ।
जै जै राधा रानी की, जै जै राधा ... ।

आज बजी बधाई भोर, राधिका जनम लियो ॥

सिंहपौर चढ़ ऊँचे टेरैं, अपने-अपने पटुका फेरैं,
ऊँचे कर रहे सोर, राधिका जनम लियो।
बजे निसान नगाड़े बारे, चोट दै रहे बल कर भारे,
जैकारे दै रहे जोर, राधिका जनम लियो।
ग्वाला लै रहे पाग पिछोरा, लाल गुलाबी पीरे घौरा,
धोती पीरे छोर, राधिका जनम लियो।
लहँगा फरिया गोपी लै रहीं, रतनन के गहने लै पहरहिं,
धन बरसै घनघोर, राधिका जनम लियो।
धूम मचावैं नाँचैं गावैं, घूँघट में ते सैन चलावैं,
मुसकावैं मुख मोर, राधिका जनम लियो।
सोने मढ़ी गाय के ठाठैं, दूध दही माखन के माटैं,
अँगना में रहे फोर, राधिका जनम लियो।
लोग परस्पर दै रहे हाँसी, सबके परी प्रीति की फाँसी,
बँधे प्रेम की डोर, राधिका जनम लियो।
बरसाने की गली गलिन में, रस बरसै गहवर कुंजन में,
सरसै साँकरी खोर, राधिका जनम लियो।
ब्रह्माचल की ऊँची सिखरन, मंदिर मान होय नित गायन,
मोर कुटी पै मोर, राधिका जनम लियो।
सज कै बैठी कीरति रानी, गोद लिये लाली सुखदानी,

सब ब्रज रस में बोर, राधिका जनम लियो।
राधा नाम भयो रसदायी, राधा शरण रहत है कन्हाई,
भजौ मोह कौ तोर, राधिका जनम लियो॥ [1]

---

[1] ऊपर के रसिया में "बँधे प्रेम की डोर..." तक केवल राधिका के स्थान पर कन्हैया बदल दो तो ठाकुरजी की बधाई इस प्रकार होगी ...

'आज बजी बधाई भोर, कन्हैया जनम लियो॥'

"बँधे प्रेम की डोर..." तक पूर्ववत् ...अब आगे इस प्रकार है ...

श्रीगोकुल की गली गलिन में, रस बरसै जमुना लहरन में,

रस की बढ़ै हिलोर, कन्हैया जनम लियो।

सज के बैठी जसुमति रानी, गोद लिये कान्हा सुखदानी,

सब ब्रज रस में बोर, कन्हैया जनम लियो।

नाम भयो रस कौ दायी, पलना खेलै कुँवर कन्हाई,

भजो मोह कौ तोर, कन्हैया जनम लियो॥

ढाँढ़िनि कहै सजन सों हँस हँस, चल बरसाने दोनूँ जाँय ॥

रानी कीरति के भई कन्या तीन लोक भये धन्या,
चलै बधाई गावैं नाँचैं पावैं जो मन भाय।
ना मैं लूँगी लहँगा फरिया, नाय मैं लउँगी अँगिया,
मैं तो माँगूंगी रानी से बरसाने मोहि बसाय।
ना मैं लूँगी सोना चाँदी, मोती पन्ना हीरा,
मैं तो लउँगी रानी के मुख को बीरा हुलसाय।
ना मैं लूँगी हार हमेला, कड़ा कौंधनी छल्ला,
मैं लउँगी राधा की झिंगुली दैंगी कीरति माय।
ऐसो नाच दिखाऊँ देखन हारे नाचैं सबरे,
जो देखूँ कन्या के मुख को सबरी आस पुजाय ॥

जनम लियो राधा ने कीरति के बधाई आज ॥

रानी कीरति द्वारे आयो, मँगता एक अनन्य,
तेरे कूँखन राधा आई, तेरी काया धन्य।
पुरुष जाति ते दान न लैहौं, ये ही मेरी टेक,
उमा रमा हू ते नहिं लैहौं, यह व्रत मेरो एक।
भानु बाबा औ नंद बाबा, इनके उदार सब भ्राता,
कृष्ण सखन हू ते नहिं लैहौं यद्यपि सब हैं दाता।
जिनके कीरति कुँवरी पियारी, तिन ते दान हि लैहौं,
तिनकी जूठन खाय तिनहिं के चरनन माथो नैहौं।
ललिता विशाखा चंपक चित्रा, तुंगविद्या इंदुलेखा,
रंगदेवि सुदेवि महासखि पूजौ इनहिं विसेखा।
बरसाने प्रगटीं राधा पद, सेवैं श्याम बिहारी,
होय बधाई राधा की जहँ, नाचैं सब नर नारी।
ज्ञानयोग संयम साधन व्रत, नहिं देखैं भूलेहू,
वृन्दावन की धूरि धरैं सिर, सेवैं तन दै मनहू।
कछू न संग्रह करौं न माँगौं, नहिं कछु आस लगाऊँ,
राधा नाम रटूँ राधा जस, सुनूँ राधिका ध्याऊँ।
तुच्छ विषय की कौन कहै जब, मुक्ती हू तज डारौं,
बरसाने के घूरे बसके, दिव्यलोक सब वारौं।
सुनत बधाई कीरति मैया, कृपा करी मनमानी,
खोल दियो भंडार कृपा कौ, लली दिखाई रानी ॥

बधाई बाजै भानुराय दरबार ॥

बजे नगाड़े बड़े भोर ही जनमी भानुदुलार,
घनननननननन घंटा बाजै धौंसा की धधकार।
दधि कौ कांदौ अँगना में भयो बह रहे खार पनार,
माखन के लौंदा फिक रहे जहँ बही दूध की धार।
गोपी नाचैं झूमक फुंदना लटके झुब्बादार,
फरिया फररर कर सैंकारो लहँगा घूमघुमार।
ग्वाला गावैं उछर-उछर ढोलक झाँझन झनकार,
भानुराय की लाली जीवै कीरति की सुकुमार।
ब्रह्मा नाँचैं विष्णु नाँचैं नाँचैं शिव त्रिपुरार,
तैंतिस कोटी देवता नाँचैं दै दै के जैकार।
राधा वृन्दावन की रानी महारानी रस सार,
जाको पग चापै चेरो बन रसिया नंदकुमार॥

आज बधाई आज बधाई राधा जनमी आज बधाई ॥

आज भोर शहनाई बाजी राधा जनमी आई,
मोधू बलम जगावन लागी पलका ते लुढकाई।
भाज चली मैं भानुभवन कौ चोटी खुल लहराई,
देख न पाई धक्का लाग्यो जेठ गिर्‌यो भहराई।
देख खिस्याय गयो देवरिया नाच्यो संग में आई,
पीछे ते चूतर में धक्का दै गेरी मेरी माई।
उठके भाज गई भीतर ते खट्टी छाछ लै आई,
भर्‌यो माट देवर पै डार्‌यो हर गंगा अन्हवाई।
तौ लौं मोटी सास हमारी आई लिये बधाई,
ककिया सुसर को करके नंगो तारी रही बजाई।
माखन के गोला लै फेंकैं दधि की कीच मचाई,
गोपी ग्वाला गिर रहे ऊपर एक एक रपटाई।
मोंहड़े खोल द्वार ते देखै बूढी एक लुगाई,
लौंनी घुसी पोपले मोहड़े चाटै जीभ बढ़ाई ॥

राधा जनम बधाई होय, होय मेरी मैया ॥

कीरति के जनमी बाला
जहँ लुट रही मोती माला
मोती छ र र र होय, होय मेरी मैया ॥
कोई माखन माट ढुरावै
दधि दूध पनारो बहावै
झरना झ र र र होय, होय मेरी मैया ।
कोई लड्डुआ लै लुड़कावै
बरफी की चोट चलावै
पापड़ प र र र होय, होय मेरी मैया ।
नाचैं फिरकैयाँ लैके
सब कूदैं तारी दैके
तानन त न न न होय, होय मेरी मैया ।
कोई महुवर बैन बजावै
कोई गीत रसीले गावै
ढोलक ढम ढम ढम ढम होय, होय मेरी मैया ।
सब नाच रही हैं गोरी
श्री भानु भवन की पौरी
ठुमके ठम ठम ठम ठम होय, होय मेरी मैया ।
कोई कर देवै गठजोरा

नर नारी रस में बोरा
हाँसी हा हा हा हा होय, होय मेरी मैया।
कोई ऐंडो ऐंडो डोलै
मटकै चटकै रस घोलै
घुँघरू छम छम छम छम होय, होय मेरी मैया॥

सुन्दर भानुराय की बेटी॥
नंदराय को ढोटा मोहन, भुज भरि तासौं भेटी।
कोटि कामशर मूर्छित हरि की, बाधा साधा मेटी।
वश करि पिय चेटी सी करिकै, विहरति कुंजन लेटी।
बाँध्यो लट लटकन ते नागर, बंधन कटि की फेंटी॥

चलो लै के बधाई आज री ॥

कीरति ने राधा है जाई रसिकन की सरताज री।
बजे नगाड़े धूं धूंकारे बाजे बहुतै बाज री।
कंचन थार हार मोतिन के चौक पुरावन काज री।
गोरी लाली नीली झँगुली और खिलौना साज री।
भौंरा की भिर्र और चकई की फिर्र, छूटी आतसबाज री ।
देस देस के ढाँढ़ी ढाँढ़न, भाँडन जुरी समाज री।
भान दान दै धन बरसा करि, दुख दलिद्दर भाज री।
दधि कांदो महलन में है रह्यो, आनंद को है राज री।
फैल रह्यो जस बरसाने कौ सब धामन पै गाज री।
जहाँ बुहारी रमा लगावै, अद्भुत शोभा छाज री।
गावो गीत जनम मंगल के, नाचौ तज के लाज री ॥

बाजै बाजै आज बधाई, माई सोहिलो ॥

सोय रही बड़े भोर ही,
सुनी महलन में शहनाई, माई सोहिलो।
उमा रमा बरसाने आई,
रूप बनाई बनाई, माई सोहिलो।
कोई बनी मालिन कोई बनी ढाँढ़िन,
दाई कौ रूप बनाई, माई सोहिलो।

महादेव ब्रह्मा सब धाये,
बरसाने में आई, माई सोहिलो।
कोई न्हाय रही कोई जेंय रही,
कोई सब सिंगार सजाई, माई सोहिलो।
अपने-अपने घर ते सज-सज,
चली सुंदरी धाई, माई सोहिलो।
पहुँची भानु भवन जहँ बज रहि,
आठों पहर बधाई, माई सोहिलो॥

बाजी बधैया सवेरे सवेरे, लली कीरति ने जाई सवेरे सवेरे॥

गोपी हू नाचै ग्वाला हू नाचै,
सब कौउ नाँचैं सवेरे सवेरे, लली कीरति ...।
नंद जू नाँचैं जसोदा जू नाचै,
कीरति जू देखै सवेरे सवेरे, लली कीरति ...।
गैया हू नाचै बछराहू नाचै,
ठैलरा हू नाचै सवेरे सवेरे, लली कीरति ...।
भानु बाबा हू नाचन लागै,
हँसति जसोदा सवेरे सवेरे, लली कीरति ...।
पलना में नंद लाल पौढ़े,
किलकत नाचै सवेरे सवेरे, लली कीरति ...॥

दधि माधुरी

खोर साँकरी की गलियन में, माँगै दान दही कौ श्याम ॥

इतते आईं भानुदुलारी, सखी सहेली संग में भारी,
शीश दधि माखन दूध अपार,
बड़ौ तन पै जोबन को भार,
सजी सोहैं सोरह श्रृंगार,

दोहा - ताहू पै गहनान ते लदी भईं ब्रजनार,
प्रेम भार हू ते भरीं तनीं चलीं ज्यों धार ।

कानन झनक सुनी अनवट बिछुवन पायल अभिराम ॥

सुनतइ आये दान विहारी, टोल सखन कौ लैकैं भारी ।
तिलक गल छप्पा मुख पै धार,
फूल पत्ता ते कर सिंगार,
कान में कुण्डल झुब्बादार,

दोहा - बेरन की गुंजान की फल-फूलन की माल,
रंग बिरंगी धातु तन सोहैं गेरू लाल ।

लकुट हाथ लै हेला दैंके रोकीं ब्रज की बाम ॥

हेला ते न रुकीं ब्रजनारी, ग्वारन कूँ चलीं दैंकै गारी ।
पड़े आड़े जब श्रीनन्दलाल,

मोह गईं सबरी ब्रज की बाल,
न जाने कहा बखेर्‌यो जाल,

दोहा - ठाढ़ी है रहीं ठगी सी आगे श्रीब्रजचन्द,
रूप अनूपम देखती हँस बोलै नन्दनन्द ।

तुम बारन सौं दान माँगवौ यही हमारौ काम ॥

इतनी सुनत हँसी ब्रजनारी, इत में मुसके दान बिहारी ।
कही सुन नंद बाबा के लाल,
सुन्यौ तेरे घर कौ बड़ौ हवाल,
माँगनो सीख्यौ उल्टी चाल,

दोहा - ब्रजराजा कौ लाड़िलौ माँग माँग कें खाय,
दूध दही के कारनें चोरी करवे जाय ।

इन बातन ते लाला तेरौ सबै निकारैं नाम ॥

इक तौ ब्रज में चोर कहायौ, विधि नें कारौ रंग बनायौ ।
कौंन तोय बेटी देगौ ब्याह,
बने तुम डोलौ लैकें चाह,
भरे मन में ब्याहन कौ उछाह,

दोहा - काजर बैंदा तिलक ते सजे धजे तैयार,
दान अनेकन कौ धरे मन में भारौ भार ।

ऐसे ते कहा प्यास बुझै चाहे माँग फिरौ सब गाम ॥

कृष्ण कहैं सुन भोरी-भारी, मोमें औगुन तनक न प्यारी ।

रही तू क्यों इतनी इतराय,
नेंक से दधि पै हू गरवाय,
रूप तेरौ मोकूँ रह्यौ भाय,
दोहा - मेरो रंग है सोहनों चन्दा हू लजियाय,
तुम्हरी ही अँखियन कौ खोट रह्यौ दरसाय ।
श्याम रंग की छाप लगै जब और रंग बेकाम ॥

सब बातन को तोर यही है, सुन लै मेरी बात सही है ।
बड़े राजा हैं श्री वृषभान,
करैं जाचक कौ वे सनमान,
आस पुरवैं वेई जिजमान,
दोहा - बड़े घरन की लाड़िली रही तिहारे साथ,
मेरे दान मान की लज्जा उनके हाथ ।
दाता बड़ी उदार गुनीली श्रीराधा रस भाम ॥

नाम सुन्यो वृषभानु दुलारी, खिल रही जैसे चन्द उजारी ।
सखिन कौ हुक्म दियौ इक साथ,
दूध दधि सौंपो इनके हाथ,
दीनता इनकी हमरे माथ,
दोहा - मेरे बाबा नृपति की फिरै दुहाई नित्त,
बरसाने नहिं राखिहौं जाचक कोई दुचित्त ।
यही आस ते पर्यौ बड़ौ प्यारौ बरसानौं धाम ॥

श्रीराधा पद पद्म रस पगी रसीली भूमि,
प्रणवौं श्रीवृषभानुपुर लता लूम रहीं झूमि।
गहवर वन अरु साँकरी गलियन लीला होय,
तब ही अनुभव होत जब भाव सरस हिय पोय॥

तेरे मन में कहा बसी है, मेरौ मारग रोक्यो आय।
न कोऊ और पास ह्याँ री
घिरी मैं इकली मतवारी
मधुर मुसक्यावै गिरिधारी
सिर ऊपर मटकी दधि की मैं निकसूँ कैसे हाय।
हमारौ दान देओ प्यारी
यहाँ की रीति यही न्यारी
चतुर तुम हो बिछुवा वारी
बहुत दिना में आज हमारे हाथ परी मन भाय।
साँवरे जोरूँ तेरे हाथ
अकेली और न कोऊ साथ
ऊजरौ ना होवैगो माथ
या ब्रज के सब हैं उत्पाती लाज हमारी जाय।
लाज ते कहा सरैगो काम
दान दधि को दै माँगै श्याम

होय यहाँ दाता ही कौ नाम
इतनी सूम बनें मत गोरी दान देत घबराय।
बनाओ बात बहुत तुम लाल
पिटे तुम मैया ते हो काल
न छूटै इतने हू पै जाल
मात-पिता गोरे तुम कारे, कुल को रहे लजाय।
पिता माता को देति हवाल
डरै ना नेंकहु अपनौ ख्याल
बजावै री क्यों इतनों गाल
आज लेऊँगो दान यहीं क्यों आँखें रही दिखाय।
चली ग्वालिन बच कै कतराय
पकर लई मोहन नें झट जाय
छुड़ाई बाँह सखी इठलाय
झटका पटकी मटकी फूटी दही चल्यो ढरकाय।
गली यह धन्य साँकरी खोर
मिले ग्वालिन को श्याम किशोर
चली गहवर को लै चित्तचोर
धन्य धन्य ब्रजधाम जहाँ ऐसौ आनन्द दरसाय।

दधि लूट लियौ दगरे में, कुंजन ते तनक परे में ॥

आय रही दधि बेच वृन्दावन साँझ भई दिन ढुर रह्यो रे,
जमुना नीर तीर बन मारग मेरे मन रस घुर रह्यो रे,
इकली देख मोय बीच बनी के झपट लियो गहरे में।
छोड़ दे कान्हा बेर भये घर सास देय मोय गारी रे,
तानों दै दै जायगी ननदिया रार करैगी भारी रे,
सबरी सखी चबाव करैंगी हँसी होय सगरे में।
अरी गूजरी बहुत दिना ते तू मेरे मन बस रही री,
वा दिन बच गई बात बनायके चाल बहुत तू जानैं री,
वा दिन लूट्यो मो मन हँसके नखरेई नखरे में।
कंचन मोल दही है मेरो कहा ग्वारिया खावैगो,
कंचन मटकी ऐंडुइ कंचन कैसे कोई लेवैगो,
सेंत मेंत मे कंचन चाहै झगरेई झगरे में।
कैसे सेंत मेंत में चाहूँ दान लऊँ सब मेरो है,
ब्रज में मैं ब्रजराज कहाऊँ कहा नाय तू जाने है,
बीच डगर में ग्वालिन लुट गई संकरेई संकरे में ॥

अनोखौ छैला ठाढ़ो माँगै दही कौ दान ॥

दधि मटकी लै निकसी घर ते
आय मिल्यो जानें वह कित ते
देखन लग्यो एक टक टक ते
लकुटिया दै दियो आड़ो मारग रोक्यो आन ।
इत उत देखूँ कोइ न पावै
लाज लोक की मोय डरपावै
भीतर ते जियरा सकुचावै
पर्यो मोपै यह गाढ़ौ कौंन देय ह्याँ कान ।
झटका पटकी करन लग्यो वह
फूटी मटकी दही चल्यो बह
मीठे बोल सुनावै कह कह
दही लैकैं मुख माड़यो मैंने न राख्यो मान ।
आय पर्यो वह मेरे गोहन
अपनो मुख यह लाग्यो पोंछन
अँचरा छोरन साड़ी कोरन
प्रेम कौ सागर बाढ़्यो ऐसी भई पहचान ।

बरसाने वारी दैजा दान, बड़ो प्यासो रसिया ॥

गोरो मुख घूँघट में चमकै
तेरे झुमके झूमैं कान, बड़ो प्यासो रसिया।
माथे बेंदी चम-चम चमकै
लट लटकै गालन आन, बड़ो प्यासो रसिया।
नथवारी के मोती चमकै
तेरे रच रहे होठन पान, बड़ो प्यासो रसिया।
नैनन कजरा नोंक नुकीली
ये मारै बान कमान, बड़ो प्यासो रसिया।
चाल चलत लहँगा सैंकारै
चोली की गजब उठान, बड़ो प्यासो रसिया।
कमर कोंधनी रुनझुन बाजै
बिछुवा भर रहे तान, बड़ो प्यासो रसिया।
फहरावै फरिया और फुंदना
लटकत लगै महान, बड़ो प्यासो रसिया।
रूप तेरो उड़-उड़ के खावै
तेरी घायल करै मुसकान, बड़ो प्यासो रसिया।
ब्रज की सब गोरिन में तेरी
अजब निराली शान, बड़ो प्यासो रसिया।
ऐसी ना चहिए मुख मोरी
मेरी कर जोरे की मान, बड़ो प्यासो रसिया ॥

कान्हा तोर ला पतौआ तोये प्याय दऊँगी दही ॥

यों मत रोकै मोहन प्यारे
निकसैंगी हम साँझ सकारे
देख हँसैंगे ये गैलहारे
मेंरे प्यारे मोहन मेरी मान तो सही।
बहुत पुरानी मेरी दोहनी
घुट-घुट के अब भई चीकनी
रंग रंगी ये बड़ी मोहनी
फूटैगी ये छाँड़ दै मेरी बैंया जो गही।
चढ़े कदम पै कुँवर कन्हैया
भाज चली वह छुम्मक छैया
साफ निकर गयी चतुर लुगैया
चोरी करूँ आज मैं तेंरे हरि ने खीज कही।
दूर गई वह देखत श्यामहि
गूँठा मार रही नंदलालहि
उँगरी चाट-चाट दिखरावहि
उड़ गई मैंना देखत देखत मन की मनहि रही।

मोय दैजा दधि कौ दान गुजरिया बरसाने वारी ॥

या मारग ते नित ही निकसौ, भरी गरूर गुमान।
दान दही कौ आज लेऊँगो, तुम सब रस की खान।
ठाले डोलौ तुम क्यों लाला, मेंटौ कुल की कान।
मैं तो ब्रज कौ चन्द्र छबीलौ, ठाले कैसे जान।
बिना दान के जान न दूँगो, ये ही मेरी आन।
सुनके मुसक्याई वह ग्वालिन, हरि कौ राख्यौ मान।
अपने हाथन दह्यो खवायो, कर लीनी पहचान।
बहुविधि दान दियो चित्तचोरहि, दीयो नागर पान।
गली साँकरी रस में डूबी, कोयल गावै गान॥

आयो मोहन हमारे, वो तो कर गयो काम करारे ॥

हौलै हौलै घर में आयो
मैं भोरी सी जान न पायो
पीछे ते मेरी आँख मींच कें गालन मूँठा मारे।
मैं बोली तू नंद को लाला
हम भोरी हैं ब्रज की बाला
झिक कें माखन दूँगी तोकूँ पीछे ते हट जा रे।
जब वह मेंरे सामई आयो
दौना भर माखन धरवायो
हौलै-हौलै सब गटकायो मोपै जुलम गुजारे॥

मीठी तेरी छाछ पिवाय दै प्यारी मन भरके ॥

कहा डार कें दही जमायो
मीठो बहुत भयो मन भायो
मैंने लीयो चाख, पिवाय दै प्यारी ... ।
तू मीठी तेरो मनुआ मीठो
दूध दही माखन सब मीठो
सांच कहूँ मैं साख, पिवाय दै प्यारी ... ।
बहुत दिना कौ रसिया प्यासौ
भागन ते तू मिली कहाँ सों
काहे चुरावै आँख, पिवाय दै प्यारी ... ।
मन भाई सी टहल कराय लै
मुरली सुनलै नाच नचाय लै
मेरे मन की राख, पिवाय दै प्यारी ... ।
तेरी लऊँ बलैंया ग्वालिन
बिक जाऊँ मैं तेरी गारिन
धीरे ते कछु भाख, पिवाय दै प्यारी ... ॥

आओ आओ रे सखा, घेरो घेरो रे सखा,

दही लैकैं ग्वालिन जाय रही ॥
बरसाने की साँकरी गलियन
जाय रही ब्रजनारी झुण्डन
चलो चलो रे सखा, आओ आओ रे सखा,
सब गोपी चलीं न जाँय कहीं।
दूध दही के माँट भरे हैं
माखन अपने सीस धरे हैं
मैंने जानी रे सखा, पहचानी रे सखा,
सौंधी ही सुगंध है आय रही।
झाँझर झनक सुने हैं कानन
बिछुवन की भई घोर झनाझन
दौरो दौरो रे सखा, गली रोकौ रे सखा,
गये साँकरी गली दही वारी रोकही।
गीतन की हू घोर सुनी है
ऐसी मानो लाल मुनी है
देखो देखो रे सखा, धाओ धाओ रे सखा,
आड़े भये सबन की गैल गही ॥

माखन दै दै तनक गुजरिया, अपनी मटकी तनक उतार ।

कौन गाँव की रहवे वारी
नई नवेली बिछुवा वारी
कैसी डोल रही मतवारी
चाल चलै झोंके ते प्यारी लम्बो घूँघट मार ।
हम ते मत माँगै तू माखन
पीछे आय रही लै माँटन
देंगी माखन तोकूँ चाखन
सास ननद् भारी झगरेंगी मोकूँ होत अवार ।
तेरोई मैं लूँगो माखन
तू मीठी मद्‌वारी ग्वालिन
दै-दै लै अपने ही हाथन
श्याम नाम मैं बंशी वारो कर लै मोते प्यार ।
मत रोकै तू गैल हमारो
भारी माट बोझ है भारो
कहा बिगरैगो श्याम तिहारो
चरचा होय गाँम में हमकूँ है जाय देश-निकार ।
लई उतार श्याम नें मटकी
मांखन खायो खबर न तन की
गप्फा मार रह्यो लोनी की
जान न पायो श्याम फेंट ते बंशी लई निकार ॥

कोई मोते लै लेओ री गोपाला ॥

दधि को नाम न लेवै ग्वालिन, टेरत मदन गोपाला ।
जिनको नाम श्याम सुन्दर है, हैं यशुदा के लाला ।
वृन्दावन की कुंज गलिन में, नटखट नैन विशाला ।
बनी बावरी कुंज गलिन में, ढूँढत ब्रज हरि ग्वाला ॥

कान्हा मेरे माखन खायवे आवैगो कि नांय ॥

दऊँगी माखन की सदलोनी,
मिसरी भोग लगावैगो कि नाय ।
कदम की डारन झूला डार्‌यो,
संग-संग मोय झुलावैगो कि नाय ।
मेरी बगिया में फूल खिले हैं,
फूलन तोर गुँथावैगो कि नाय ।
हरे-हरे गोबर अँगना लिपायो,
संग-संग मोय नचावैगो कि नाय ।
ऊँची अटरिया पै पचरंग पलका,
मेरी अटरिया पै जावैगो कि नाय ॥

छोड़ दै गैल हमारी काहे को ठानी तैंने रार।

भयो नंद को तू उतपाती तैंने चराई गाय,
घर-घर करै खखोरा चोरा चोरी माखन खाय,
मान जा बात हमारी, काहे को ठानी ...।
देस हमारो गैल हमारी हम ब्रज के सिरताज,
हमरी हो तुम सब ब्रजनारी दान लेऊँगो आज,
खोल दै मटकी प्यारी, काहे को ठानी ...।
सबरो ब्रज वृषभान बबा को जाकी बसते छाँह,
बाँह पकर कें नंद बसाये याते रोकै राह,
यही है रीति तुम्हारी, काहे को ठानी ...।
देश भानु को लली भानु की भानु हमारे माथ,
दयो दहेज सबै कछु जा दिन पीरे कीये हाथ,
भई तुम सब घर वारी, काहे को ठानी ...।
कैसी बात बनावै छलिया हम न भोरी भारी,
चोरन के कहुँ ब्याह होत हैं को दे बेटी प्यारी,
बाप (नंद) की बात बिगारी, काहे को ठानी ...।
मटकी फोरूँ हरवा तोरूँ जो ना देंगी दान,
नांचूँ गाऊँ तोय रिझाऊँ जो राखेगी मान,
रही तू बड़ी गमारी, काहे को ठानी ...।
आप गमार गमार ग्वारिया दधि के लूटनहार,

पहले नाचो गाओ हमकूँ रिझवो कृष्णमुरार,
मान रखेंगी भारी, काहे को ठानी ... ।
फेंटा कस नाँचे गिरिधारी बंशी मधुर बजाय,
रीझ गईं सद माखन लोनी हाथन रहीं खवाय,
जुरी गिरिधर सों यारी, काहे को ठानी ... ॥

आजा आजा नंदलाल दही मीठो ॥

ऐसो मीठो कबहु न खायो, लड़ुआहू है गयो सीठो ।
बरसाने को सब कुछ मीठो, दूध दही माखन मीठो ।
पै भागन ते मिलै नंद के, करनों परै बहुत नीठो ।
ऐसी भईं सब ढीठ गोपिका, ऐसोइ तू बन गयो ढीठो ।
ग्वाल ऊपर ग्वाला ठाढ़े, ठाढ़ो तू सब कै पीठो ।
तो यह पायी दही मथनियाँ, भजचल कहूँ न परै दीठो ।
आय गईं तौ लौं घरवारी, खाय भजै मारैं गूँठो ॥

साँवरिया जान दै काहे मारग रोकै श्याम।

सजनियाँ प्याय दै दधि, हाथ पसारै श्याम॥
साँवरिया कल फिर आऊँगी,
आज तो छोड़ दै तेरे हाथन जोरूँ श्याम।
सजनियाँ कल कौनें देखी,
आज ही प्याय दै तेरी हा-हा खावै श्याम।
साँवरिया घूँघट मत खोलै,
हँसी होवैगी मेरी ये बुरी बान है श्याम।
सजनियाँ मुख कैसे देखूँ,
धार कजरा की बुरी ये घायल है गयो श्याम।
साँवरिया राह छोड़ दही लै,
नांय यशुदा सों तोहि पिटवाऊँगी मैं श्याम।
सजनियाँ मैया ते पिटवैयो,
हाथ दोऊ जोरे गोरी तेरे आगे खड़ो है श्याम॥

चली है मटकी लैकैं, चली है मटकी लैकैं,

अरी दधि बेचन ब्रज की वाम चली है ॥
आगेई मिल्यो गुपाला, सँग लिये पाँच दस ग्वाला,
घेर्‍यो खोर साँकरी धाम, चली है ... ।
अब दान देओ तुम प्यारी, माखन की मटुकी भारी,
मेरो माखन चोरा नाम, चली है ... ।
नांय सेंतमेंत में माखन, ना दूँगी तोकूँ चाखन,
ठालो डोलै तू बेकाम, चली है ... ।
मैं नंद महर को वारो, मत समझै मोय गमारो,
मेरो नामी है नंदगाम, चली है ... ।
चल हट क्यों मारग रोकै, लपटा झपटी क्यों टोकै,
मैं ऊँचे घर की वाम, चली है ... ।
बिन दान लिये ना जाऊँ, चाहे गारी सौ-सौ खाऊँ,
गारी दै लै मेरो नाम, चली है ... ।
कछु नाँच गाय नंदलाला, तब दान देय ब्रजबाला,
धमकी ते न बनैं यह काम, चली है ... ।
मोहन ने नाँच दिखायो, ब्रजबाला सबै रिझायो,
तब दधि दान दियो ब्रजवाम, चली है ... ॥

जा रे जा रे मोहना रे छोड़ गैल तो मेरी ।

दैजा दैजा दही वारी दही की गगरी ॥
आयो बड़ो बन ठन करके सिंगार,
छैला बन्यो डोलै बड़ो चोर लबार,
हट जा रे बजमारे नांय तेरी चेरी ।
ऐसी इतरावै बड़े गोप की सी नार,
तेरी जैसी डोलैं दही वारी हजार,
नेंक घुँघटा तो खोल ओ घूँघट वारी ।
दही के बहाने घूँघट काहे खोलै,
हट जा हट मोते काहे बोलै,
जाय मैया ते कहूँगी सब बात तेरी ।
मैया ते मोकूँ पिटवाय लीजो,
दही तो नेंक चखवाय दीजो,
भई नई पहचान गोरी तेरी मेरी ॥

कैसे माँगै दान गँवार ढीठ तू साँवरिया।

कैसी बोलै नार गँवार ढीठ तू फूहरिया॥
हरे बाँस की पोली बंशी लै कितनों इतरावै,
तोर मरोरूँगी काऊ दिन देखत ही रह जावै,
है बैरिन सोत छिनार ये तेरी बाँसुरिया।
बंसी सुनवे कूँ काहे तू दौरी-दौरी आवै,
मन में भावै मूड़ हिलावै तेरो भेद न पावै,
नांय बंसी सौत छिनार अरी सुन गूजरिया।
चार टका की कामर ओढ़ै कैसी धोंस जमावै,
वन-वन डोलै गाय चरावै लूट लूट दधि खावै,
ऐसो डोलै ज्यों बटमार तू ठालो साँवरिया।
तू कामर कौ भेद न जानें मन में बनी सयानी,
तू भी छिपी कामर की खोई बरस रह्यो जब पानी,
अब नखरे करै हजार ओढ़ रंग चूनरिया।
तू कारो तेरी बंशी कारी कामर कारी-कारी,
चोरी और बरजोरी तेरी सबरी बात है कारी,
कारे हैं तेरे यार लुटेरे बावरिया।
बड़ी मटक्को बड़ी चटक्को कारे कह-कह बोलै,
मन की कारी भेद बड़े तेरी कारी अँखियाँ खोलै,
चले गलबैंयन को डार कुंज की डागरिया॥

गोरी बच के चली कहाँ कूँ, नजरिया फेर फेर फेर।

कन्हैया दधि बेचन कूँ जाऊँ, रोकै मत घेर घेर घेर॥
बहुत दिना में हाथ परी है,
खिल रही जैसे फूल छरी है,
आज सब दान चुकाऊँ, मटकिया गेर गेर गेर।
कान्हा सास बड़ी लड़हारी,
ननदुल गारी देय हजारी,
देख कहुँ बलम न आवै, है रही देर देर देर।
गोरी झूठे सबै बहाने,
नैना तेरे हैं मस्ताने,
छबीली काहे झूठी बात बनावै ढेर ढेर ढेर।
दूर निकस गईं तेरी गैयां,
ढूँढैगो तू कैसे कन्हैया,
देख बलदाऊ भैया रह्यो तोय टेर टेर टेर॥

श्याम तैंने काहे को रार मचाई।

इकली घेरी गली साँकरी कैसे करूँ मेरी माई॥
ऐसौ कोई नाय या ब्रज में,
छेद करै ऊपर बादर में,
नंद महर को बड़ो लाड़लो अकल गई बौराई।
आप सयानी बनैं छबीली,
मोहि बावरो कहै रसीली,
दान देत क्यों सूम बनै सूमन ते परी लराई।
कहा बात को दान सँवरिया,
रोकी तैंने काहे डगरिया,
मोहि बताय गँवार ग्वारिया वन-वन गाय चराई।
लिये जात तुम दधि औ माखन,
मटकी खोल मोय दै चाखन,
मोय गँवार बतावै ठग्गो आँखें रही दिखाई।
श्याम तिहारो ही सब माखन,
कल आऊँगी तोहि चखावन,
आज छोड़ दै देर होत है तेरी हा-हा खाई।
जो मेरो माखन तो गोरी,
अबई खवाय दै बाँकी छोरी,
दै दियो दान सजन मोहन को अपने हाथ खवाई॥

दै जाओ तुम दान अरी औ ग्वालिनियाँ।

हम न देंगी दान अरे औ साँवरिया॥
नित-नित बच-बच चली जात तुम ग्वालिनियाँ,
आज परी हो हाथ हमारे ग्वालिनियाँ।
सुनत रही बटमार बसै ह्याँ साँवरिया,
दृष्टि परे तुम आज हमारे साँवरिया।
दान दिये बिन ना जाओगी ग्वालिनियाँ,
बड़ी सयानी नार सबै तुम ग्वालिनियाँ।
दान दियो ना कबहूँ हटो तुम साँवरिया,
काहे ठानी रार अरे तुम साँवरिया।
नई नई दधि बेचनहारी ग्वालिनियाँ,
नयो हमारो दान अरी सुन ग्वालिनियाँ।
कैसे लेवन हार अरे सुन साँवरिया,
काहे कौ यह दान अरे सुन साँवरिया।
दही दूध आभूषण बसनन ग्वालिनियाँ,
जोवन को है भार अरी सुन ग्वालिनियाँ।
टेढ़े तुम और टेढ़े बोलो साँवरिया,
कारे चोर लबार अरे सुन साँवरिया।
तुमरे कारे नैन बैन जिय ग्वालिनियाँ,
टेढ़ो कारो मोहि कर दियो ग्वालिनियाँ।
या विधि माँगे दान लियो है साँवरिया,
बतरस प्रीति कौ दान लियो है साँवरिया॥

दान मैं तो नाय दऊँगी औ नंदलाला।

दान मैं तो लै लऊँगो औ दही वारी॥
कितनोई कर लै जतन साँवरिया,
पास न आऊँगी, दान मैं तो नाय दऊँगी।
मैं तो तेरे गोहन आयो,
मटकी लै लउँगो, दान मैं तो लै लऊँगो।
बटमारी बरजोरी लूटै,
जाय कंस कहूँगी, दान मैं तो नाय दऊँगी।
धौंस दिखावत कंस ममा की,
काऊ दिन मारूँगो, दान मैं तो लै लऊँगो।
ठगिया बात बनावत ठग सौं,
नाय छूवन दऊँगी, दान मैं तो नाय दऊँगी।
ठगनी फंदा फाँसन वारी,
ठग्गो बताय दऊँगो, दान मैं तो लै लऊँगो।
हम तो सूधी हैं ब्रजनारी,
सूधी जाऊँगी, दान मैं तो नाय दऊँगी।
सूधेपन के साज न तेरे,
सूधी बनाय दऊँगो, दान मैं तो लै लऊँगो।
तीन ठौर ते टेढ़ो रसिया,
टेढ़ ना छोड़ूँगी, दान मैं तो नाय दऊँगी।

मन की टेढ़ी टेढ़ी बोलै,
टेढ़ निकारूँगो, दान मैं तो लै लऊँगो।
बंशी जादू सी जादू में,
मैं ना आऊँगी, दान मैं तो नाय दऊँगी।
टोना तेरे चंचल नैना,
टोना देखूँगो, दान मैं तो लै लऊँगो।
मुसकावै कछु मूठ चलावै,
मूठ मिटाय दउँगी, दान मैं तो नाय दऊँगी।
चाल चलै कछु मंतर पढ़ कैं,
जंतर मैं पढ़ूँगो, दान मैं तो लै लऊँगो।
बसी करन करतो सो डोलै,
बस नाय होऊँगी, दान मैं तो नाय दऊँगी।
पीछे पीछे तू डोलैगी,
तोय नचाय दऊँगो, दान मैं तो लै लऊँगो।
पक्के गुरू की हूँ मैं चेली,
आँख दिखाय दऊँगी, दान मैं तो नाय दऊँगी।
हम तो तेरे तू है मेरी,
आँख मिलाय लऊँगो, दान मैं तो लै लऊँगो।
बातन प्रीति जुरी दोउन की,
दह्यो पिवाय दऊँगी, दान मैं तो दै दऊँगी॥

नाय छोड़ै री मेरी कलैयाँ। दान देय तो छोड़ूँ कलैयाँ॥

कैसे करूँ मैं नार अकेली,
पहले पहले ही आई नवेली,
नाय मानैं री ढीट कन्हैया, नाय छोड़ै री ...।
पहलै अपनी मटकी धर दै,
अपने हाथन लौनी दै दै,
तब छोड़ूँ मैं तोय लुगैया, दान देय तो ...।
तेरे जोरूँ हाथ संवरिया,
पैंया परूँ मेरी छोड़ डगरिया,
दूखैगी मेरी नरम कलैया, नाय छोड़ै री ...।
हा हा खाऊँ मैं हूँ तेरी,
लेऊँ बलैयाँ तेरी गोरी,
दै दे दूर गईं मेरी गैयाँ, दान देय तो ...।
दान देत मुसकाई नारी,
हँस हँस दान लियो गिरिधारी,
कैसी प्रीति जुरी है दैया, नाय छोड़ै री ...।

मटकी बरसाने में फोरेंगे, नंदगाँव के ग्वाल ॥

आठें राधा जनम बधाई,
भादों सुदी त्रयोदशी आई,
बूढ़ी लीला ब्रज में गाई,
बन ठन ग्वाला ह्वाँ आवेंगे संग सजे नंदलाल ।
सजी धजी सब गोपी आईं,
चिकसौली की मटकी लाईं,
माखन दही लिए सब धाईं,
सखा दान बिन ना जावेंगे, नाचैं दै दै ताल ।
रोकी गोपी सिर पै मटकी,
कहाँ चली तुम ठिठकी ठिठकी,
तेरे बाबा की ना हटकी,
हम लूट-लूट दधि खावेंगे हँस बोले गोपाल ।
झटका पटकी मटकी फूटी,
माखन दूध दही सब लूटी,
रस की सरिता सबनें घूँटी,
ये लीला सब गावेंगे जो कीनी वा काल ॥

समझाय लै अपनों कान्ह, यानें मटकी मेरी फोरी ॥

तू जानें याहि भोरो भारो,
बालक है नादान, यानें मटकी ... ।
सबरे ब्रज में हल्ला है रह्यो,
रानी तू लै मान, यानें मटकी ... ।
हम तो कान करैं तेरो जायो,
अटकै बिन पहचान, यानें मटकी ... ।
माखन सटकै आँख दिखावै,
चोरी की परी बान, यानें मटकी ... ।
तू जानें याय सीधो साधो,
ये सब औगुन की खान, यानें मटकी ... ।
दही दान के धोखे हमते,
माँगे जोवन दान, यानें मटकी ... ।
नाचै मटकै सैन चलावै,
छेड़ै वंशी की तान, यानें मटकी ... ।
गैल चलत खैंचै अँचरा,
मुख पोंछै पीक औ पान, यानें मटकी ... ।
गैल गिरारे आड़ो है कें,
दान की ठानैं ठान, यानें मटकी ... ।
सबरे ब्रज में पूछ लै मैया,

याय जानैं सबै जहान, यानें मटकी ... ।
मैया यों समझावै सबकूँ,
धीरज राखो कान, यानें मटकी ... ।
आवन दै तू श्याम सलोने,
ऊखल बाँधूँगी आन, यानें मटकी ... ॥

कैसे नाहिं करूँ जब दधि माँगै, अँखियन में भर-भर पानी ॥

प्यारो वह नंद जू को छैया, कर जोर परै मेरे पैंया,
कैसे मुख फेरूँ जब आशा सों देखै मोकों मनमानी ।
मैं चतुर नार करी चतुराई, घूँघट ते देखत पछताई,
कैसे आँख चुराऊँ वाते है गई नई-नई पहचानी ।
बचके मैं चली किनारो देय, चुनरी पकरी मेरो नाम लेय,
कैसे कानन मूंदूँ कहै मोते जब प्यारी वह दधि दानी ।
वह छाय गयो मेरे हियरे, बस रह्यो वो नैनन में मेरे,
कैसे रोकूँ जागत सोवत रटती, कृष्ण नाम यह बानी ।

भम्भो जो नांय देगी दान, आज तेरी चोरी है जायगी ॥

पहले ते कह दऊँ मैं ग्वालिन,
आई नई बिरज के गामन,
नयो रंग नयो है जोवन,
दान देन की रीति मान लै नाय पछतावैगी ।
कैसो दान कहाँ को है तू,
नारी पराई रोकै क्यों तू,
कामर कारी कारो है तू,
मैया ते जाय कहूँ पिटाई तेरी है जायगी ।
गोरी मैया ते कह ऐयो,
पर तू बिना दान मत जैयो,
दान देत तू मत घबरैयो,
मेरे मन में बस गई लाजो बच नांय जावैगी ।
बड़ो लाड़लो बड़े महर को,
कछु तो सोच नंद राय को,
नाम हँसावै जसुदा जू को,
टेढ़ी चाल छोड़ दै नंद के बात बिगर जायगी ।
मटकी लै दधि लाग्यो खावन,
भाज गई लै बंसी ग्वालिन,
टेर कह्यो तब नंद के लालन,
आजहि रात घुसूँ घर तेरे जब तू मानेंगी ॥

दहिया मथ रही रई घमरकन, माखन खा जा साँवरिया ॥

सब धौरिन को दूध कढ़ायो औटायो मन करके,
जामन दैके दह्यो जमायो सौंधो गाढ़ो करके।
सास ननद घर नांय अकेली मैं ही दह्यो चलाऊँ,
आजा प्यारे बंसीवारे गाय गाय के बुलाऊँ।
खीर खांड़ धर कनक कटोरा अपने हाथ खिलाऊँ,
अँचरा ते तेरी ब्यार करूँ और मन कर लाड़ लड़ाऊँ।
जागत श्याम श्याम टेरूँ सोवत तेरे सपने देखूँ,
कबै सवेरो होवै तोकूँ लोनी खामत देखूँ॥

लाल वृषभ-दोहन

गाय छोड़ हरि दुह रहे नाटे, राधा रूप दिवाने हैं।

आये भोरई श्याम खिरक में,
राधा मुख देखन की मन में,
लिये सखा कछु अपने संग में,
कियो बहानो गाय दुहन को घुस बरसाने हैं।
सुन के आये हैं गिरिधारी,
चली दुहावन भानुकुमारी,
कनक दोहिनी लैकें प्यारी,
जोवन नयो रूप सोनो नैना मनमाने हैं।
देखत भूल रहे नंदलाला,
बिन पी भाँग भये बेहाला,
झुक्यो मुकुट गिरि मुरली माला,
इकटक नैना लगे प्रिया मुख देख भुलाने हैं।
खबर रही ना कहाँ है गैया,
वृषभ एक तहँ पकर कन्हैया,
बाँधे पाँव नोय कर लैया,
थन पंसावत देख दूर ते सखा हँसाने हैं।
सखा एक बोलै सुन प्यारे,

जल्दी दुह लै नन्ददुलारे,
दोहनी भर दै वंशी वारे,
सुनें न कछुक श्याम राधावश प्रीति लुभाने हैं ॥

जसुदा मैया लाल तिहारौ भारौ औगुनगारौ है ॥

जा दिन मैं या ब्रज में आई,
गौने की मैं नई लुगाई,
वाई दिन ते घात लगाई,
रसिया गावै लेय नाम यह बकै उघारौ है ।
इक दिन बहू रूप धर आयो,
आन गाँम की मोहि बतायो,
याके ढोंगन मन पतियायो,
एक रैन को माँग बसेरो जुलम गुजारो है ।
बड़े भोर ये गयो हमारे,
जान न पाई मैं अँधियारे,
पति के से हेला तब मारे,
गई पास मिल भेट्यो मेरो घूँघट टार्‌यो है ।
धार काढ़वे गई खिरक में,
जुलम कियौ यह अँधियारे में,
नाट्यो बाँध्यो गाय ठौर में,
थन पंसावत सबरो मूठा भर्‌यो हमारो है ॥

साँझी लीला

फुलवा बीनें राधा प्यारी भोरी रंग रंगीली बाल ॥

गोरे तन पै सारी नीली,
फरिया लाल कंचुकी पीली,
बोलन मीठी बहुत रसीली,
घूम घुमारौ लहँगा घूमै, मतवारी है चाल।
उत ते आये श्याम बिहारी,
रसिया बड़े चतुर बनवारी,
अचक देखवे कौतुक भारी,
खेल रही जहाँ गोप कुमारी, छिप के बैठे लाल।
कोउ द्रुमन की डार नवावैं,
कोउ रंगीले फूल चुनावैं,
कोउ गिरे फूलन बिनवावैं,
पातन के दोना में रख के कोउ बनावै माल।
बीनत फूल दूर गईं संग की,
बैठ रही ह्वां लली भानु की,
खिली उजारी चन्द्रवदन की,
सम्मुख आय गये मनमोहन, देख मनोहर काल।

दोनों रूप रंग कौ झेलैं,
सैनन ही ते साँझी खेलैं,
देखन ही में करैं किलोलैं,
अँखियन ही में उरझत जावैं, सुरझन के नहिं ख्याल।

साँझी खेलैं छैल छबीली, राधा श्रीवृषभानु दुलार॥
बैठी सिंह पौर अलबेली,
सजी धजी सब सखी सहेली,
झोरी फूलन भरी नवेली,
आई एक नई सी कोई, श्याम रंग सुकुमार।
देख छकीं सब रूप अनोंखो,
हाव भाव दिखरावै चोखो,
मिलवे लगीं तनक नाय धोखो,
आदर दै कें पास बिठार्‌यो, आसन सुन्दर डार।
पूछन लगीं कौन की जाई,
कैसे बरसाने में आई,
मेरे मन को रही लुभाई,
ऐसे पूछ रहीं जब प्यारी, बोली बचन संभार।
मैं हूँ साँझी चीतन हारी,
नंदगाँव की रहवे वारी,

तुमरो नाम सुन्यौ मैं प्यारी,
खेलूँगी मैं संग तिहारे, जब तुम देंगी प्यार।
दै गलबैंया चली लाड़िली,
मुसकाई वह चित्त चाड़िली,
रस भीजीं भई प्रेम माड़िली,
श्याम सखी जब साँझी चीतै, देखैं ब्रज की नार।
सुन्दर सी साँझी चितवायो,
सुन्दर मीठे गीत गवायो,
सुन्दर व्यंजन भोग लगायो,
मन भाई सी करै आरती, लै कैं कंचन थार।
ललिता हाव भाव पहिचान्यो,
ये तो नन्दलाल मैं जान्यो,
ऐसोई सबकौ मन मान्यो,
तारी दै दै हँसी सखी सब, आनन्द भयौ अपार।

वन विहार

गगन में कौन उड़ै, मोहि मोहन देहु बताय ॥

सुन राधे प्यारी ये हंसा सब पक्षिन कौ राय,
लिये हंसिनी नभ में बिहरै मोतिन चुग-चुग खाय,
पंख धौरे ऊजरे ॥१॥ गगन में ...
देखो श्रीवृषभानु नन्दिनी कोयल गुन की खान,
कुहू-कुहू की बोलन मीठी हर ले सबके प्रान,
बोल सब मोहने ॥२॥ गगन में ...
ये तोता हरियल है दीखै ऐसौ घनौं मलूक,
चौंच लाल कछु पीरी गरदन तीखी याकी कूक,
देख तन सोहने ॥३॥ गगन में ...
ये है मेरौ प्यारौ मोरा बोलै घोरा घोर,
रंग-बिरंगी पैंचन वारौ नाचैं पंख मरोर,
देख घन घोरने ॥४॥ गगन में ...
श्यामा देखो सारस लम्बी गरदन ऊँची टाँग,
छाँड़ै प्रान न सहै वियोगहि मीठी याकी बांग,
प्रीति रंग बौरनै ॥५॥ गगन में ...

मुरली माधुरी

तेरी बंशी ने कियो कमाल रे, मुरली के बजैया ॥

चढ़ी विमान मगन भईं देवी,
काम जगे ते खुल रही नीवी,
ढीली किंकिणी जाल रे, मुरली के बजैया।
गैयाँ घांस चरैं नेंकहु ना,
मुरली सुनती सुध हु रही न,
भूल रहे सब ग्वाल रे, मुरली के बजैया।
नदियाँ थम गईं बंशी सुनकै,
पानी चढ़्यो श्याम के पग पै,
लाईं कमलन माल रे, मुरली के बजैया।
वृक्ष लदे सबरे फूलन ते,
सींच रहे ब्रज मधु धारा ते,
जँह ठाढ़े राधा लाल रे, मुरली के बजैया।
तोता मोर हंस पक्षी तब,
दरसन कर सुधि भूल गये सब,
फँस मुरली के जाल रे, मुरली के बजैया।
बंशी सुन नभ बादर आये,

गरजत ताल देत हैं सुहाये,
बरसैं फूलन माल रे, मुरली के बजैया।
बछरा दूध नेंक ना पीवें,
मोहड़े दूध घूँट ना लेवैं,
दूध भरे हैं गाल रे, मुरली के बजैया।
वन के पक्षी उड़नों भूले,
लटक रहे ऊपर को झूले,
सब वृक्षन के डाल रे, मुरली के बजैया।
बंशी सुन हिरनी हैं आईं,
घेर रहीं सब कुँवर कन्हाई,
जैसे सब ब्रज बाल रे, मुरली के बजैया।
शम्भु इन्द्र ब्रह्मा देवी सब,
आईं बंशी राग सुनन तब,
समझें ना स्वर चाल रे, मुरली के बजैया॥

बाँसुरिया बजाय जा बंशी वारे श्याम ॥

बंशी की धुन कानन में परी,
भूली रह गई खरी-खरी,
सुधा बरसाय जा बंशी वारे श्याम ॥
वन की हिरनी भूल रही,
मुरलीधर को निरख रही,
छटा दरसाय जा बंशी वारे श्याम ।
बंशी ने पत्थर पिघलाये,
झरना झरे निशि कमल खिलाये,
जियरा सरसाय जा बंशी वारे श्याम ॥

हरि प्यारे की बंशी बजत आवै,
प्यारी श्री राधा जू नचत आवै ॥

लता पता वृन्दावन मोह्यो,
लहर जमुना की उलटी आवै, प्यारी ... ।
हरि जू के कानन कुंडल सोहै,
प्यारी जू की चन्द्रिका चमक आवै, प्यारी ... ।
हरि जू के गले सोहै वनमाला,
प्यारी जू के हार दमक आवै, प्यारी ... ।
हरि जू के चरनन नूपुर सोहै,
प्यारी राधा के बिछुवा झनक आवै, प्यारी ... ।
जो गति ताल बजै बंशी में,
सो गति ताल चलत आवै, प्यारी ... ॥

बाजी बाजी री बँसुरिया कदमवन ॥

ऐसी तो बाजी पार निकस गई,
जादू सी है गई बँसुरिया कदमवन।
कसक करेजे ऐसी लागी,
बैरिन है गई बँसुरिया कदमवन।
लोट पोट भई घायल ऐसी,
नागिन सी है गई बँसुरिया कदमवन।
ऐसो जहर चढ़्यो सब तन में,
बेसुध सी कर गई बँसुरिया कदमवन।
श्याम गारड़ू मिले तो उतरै,
विष की लहर बँसुरिया कदमवन॥

बंशी तो बाजी आधी रात बिरज में ॥

सोये बिरज में लोग, सोई हैं गोपी सब,
सोये हैं ग्वाला सब, सोई हैं गैयाँ सब,
सोये हैं बछरा सब, सोये बिरज में।
जागे बिरज में लोग, जागी हैं गोपी सब,
जागे हैं ग्वाला सब, जागी हैं गैंया सब,
जागे हैं बछरा सब, जागे बिरज में।
मोहे बिरज में लोग, मोही हैं गोपी सब,
मोहे हैं ग्वाला सब, मोही हैं गैया सब,
मोहे हैं बछरा सब, मोहे बिरज में॥

सुन-सुन रसिया, मीठी-मीठी नाहिं बजाओ बंसिया ॥

वा दिन बजाई तैंने घर पिछवारे,
सुन-सुन रसिया, वाई दिना ते मेरे मन बसिया ।
मुरली बजाई मोंकू बावरी सी कर दई,
सुन-सुन रसिया, मेरी घूँघट लाज सबै नसिया ।
आज हू बजाई तैंने, भाजी–भाजी आई,
सुन-सुन रसिया, तेरे चरनन मेरो मन बसिया ।
बाजू बंद गिरै खुल खुल के,
सुन-सुन रसिया नीवी बन्धन हू खसिया ।
वेंन बजाई मोह लई हिरनी,
सुन-सुन रसिया तेरेई प्रेम धार धँसिया ॥

मैं कैसे आऊँ कान्हा पायलिया मेरी बाजै ॥

बंशी में लै नाम बुलावै,
सुन-सुन मेरो मन ललचावै,
मैं कैसे आऊँ कान्हा, आँगन में ननदी गाजै।
रात अँधेरी सब हैं सोये,
मैं जागूँ मोय नींद न आये,
मैं कैसे आऊँ कान्हा, पौरी में सास विराजै।
पड़ी पड़ी तरफूँ ज्यों मछरी,
करवट लै लै भई अधमरी,
मैं कैसे आऊँ कान्हा, तरसूँ मैं तेरे काजै।
बंसी तो बंसी सी है गई,
गोपी तो मछरी सी है गई,
मैं आऊँ चली कान्हा, मेरो मनुवा घर ते भाजै ॥

ऐसी वंशी श्याम बजाई, सबके मन में गई समाय ॥

मोह गईं सुन सुन ब्रज नारी,
भूल गईं सब कुछ मतवारी,
चन्दा की खिल रही उजारी,
जो जैसे तैसे उठ दौरी, तन मन में अकुलाय।
कोऊ नें जेंवत पति छोड़े,
घर के कामन ते मुख मोड़े,
लज्जा के सब बन्धन तोड़े,
रोके हू न रुकैं ज्यों नदिया सावन में इतराय।
भूल गईं काजर और बिंदिया,
लहँगा ओढ़ पहर लईं फरिया,
कानन में लटकाईं चुरियाँ,
हार कमर में बाँध कौंधनी माला सी लटकाय।
गहना मारग में गिर जावैं,
चोटी ते फूलन बरसावैं,
नैंनन ते अँसुआ ढरकावैं,
साड़ी और अँगिया के बन्धन खुल खुल के फहराय।
देख्यो जाय नंद के नन्दन,
जमुना तट ठाढ़े जग वन्दन,
मिट गये सबही के दुख द्वन्दन,
खेलन लगीं रासलीला को, नाँचैं और नचायँ।

सुनाय मुरली कन्हैया प्यारे,
मधुर मुरली की तान सुना रे ॥

मैं आई तेंरे काज दौरी-दौरी,
खिरक में छोड़ गया बछरा रे।
मैं आई तेंरे काज दौरी-दौरी,
छोड़ यमुना पै सब सखियाँ रे।
मैं आई तेंरे काज दौरी-दौरी,
छोड़ पनघट भरो गगरा रे।
मैं आई तेंरे काज दौरी-दौरी,
लै बागों ते फूल हरवा रे।
मैं आई तेंरे काज दौरी-दौरी,
तरस गये ढूँढ़ते नैना रे ॥

काहे बंशी तू रात बजावै रसिया, बजावै रसिया,

मोहे नैनन नींद न आवै है ॥
जतन जतन कर नींद बुलाऊँ,
काहे बंशी की फूँक भगावै रसिया, भगावै रसिया,
मोहे नैनन नींद न आवै है।
पलका पड़ी-पड़ी मैं सुन रही,
काहे बंशी सुनाय जगावै रसिया, जगावै रसिया,
मोहे नैनन नींद न आवै है।
घर के बाहर के सब सोये,
मोपै रह्यो न जाय रसिया, न जाय रसिया,
मोहे नैनन नींद न आवै है।
श्याम प्रेम में भई बाँवरी,
मेरी घर में रुकै बलाय रसिया, बलाय रसिया,
मोहे नैनन नींद न आवै है ॥

बंशी बाज रही कद्मन में कैसे जाऊँ मेरी बीर ॥

औचक सुनी मुरलिया बाजी,
मेरो मनुआ है गयो राजी,
सुध बुध मेरी उत ही भाजी,
लोक लाज की कौंन सुने, मेरो जियरा धरै न धीर।
एक तो चन्द्र उजेरी छाई,
सोय रहे सब लोग लुगाई,
ऐसी रैन सलौनी आई,
ऐसे में को घर बैठे, मैं भाजूँ मेरी बीर।
कहा करैंगी पार परोसिन,
ये तो जनम-जनम की बैरिन,
प्रीति की रीति न जानै गँवारिन,
नन्दनन्दन ते बिना मिले मेरो पजर्‌यो जाय सरीर।
जाय मिली वह नन्दनन्दन सों,
तन सों मन सों रोम रोम सों,
जैसे बिछुरी मीन नीर सों,
लोक वेद की कठिन श्रृंखला तोड़ैं गोपी बीर।

बरसाने सुन लई घोर गिरिवर पै बंशी बाज रही ॥

ऊँची ऊँची बनी अटारी,
सोय रही सुख सों ब्रजनारी,
नींद खुली बरजोर, गिरिवर पै बंशी ... ।
बंशी की धुनि लागी कानन,
चौंक परी सुन मीठी तानन,
ये मनुआ लीयो चोर, गिरिवर पै बंशी ... ।
भूल गई गुरु जन की लाजैं,
बंशी सुन सुन गोपी भाजैं,
सब बन्धन को तोर, गिरिवर पै बंशी ... ।
चंदा की है चटक उजारी,
फूलन की शोभा है न्यारी,
नाचैं ब्रज में मोर, गिरिवर पै बंशी ... ।
बंसी सुन बंसीधर पाये,
रास विलास किये मन भाये,
देखैं हँस नैनन कोर, गिरिवर पै बंशी ... ॥

अरि मोपै सुन-सुन रह्यो न जाई, ये वंशी श्याम बजाई ॥

साँझ समय चौका के भीतर बैठ रसोई कर रही मैं,
वंशी सुन लकड़ी भई आली आँच बुझी और भज चली मैं,
देखूँ बाहर दीख्यो जा नें गोपी सबई रिझाई।
काँधे लकुट कामरी कारी गाय चराय घर आवत है,
चारों ओर घेर रही गऊएँ बीच बीच छवि पावत है,
कारी कारी और घुंघरारी लटुरी मुख पै छाई।
गोरज छाय रही सब अंगन तिरछो मुकुट विराजत है,
तिरछी रेख लगी कजरा की तिरछो ही मुसकावत है,
तिरछी चाल देख मो तिरछो तिरछी सैन चलाई।
बन ते आवनि मधु मुसकावनि नैन नचावनि मन मोहै,
सैनन ही सब बात भई संकेत देत अँखियाँ सोहैं,
कदम फूल लै हाथन में कदमन की ठौर बताई।

तू बंशी नेंक बजैयो रे, बंशी के बजवैया ॥

तेरे कारन वन को धाई,
घर ते पानी के मिस आई,
संग नाय ननदी को लाई,
कोई मीठो गीत सुनैयो रे, ओ जसुदा के छैया ।
यमुना लहर लहर लहराई,
कदमन की छाया मन भाई,
फूल सुगंध रही है छाई,
तू भँवरा सो मंडरैयो रे, माखन के चुरवैया ।
तेरी चितवन भई कटारी,
तिरछी तिरछी औगुनगारी,
बिना मोल बिक जावै नारी,
तू यारी तनक निभैयो रे नैनन में मुसकैया ॥

परलै पर गई बंसी वारे नें बजाय दई बंसिया ॥

घर के सब सोये हैं लै लै अपनी खटिया,
मैं ही इकली जागूं करवट लै-लै तकिया।
बंशी चुभी कटारी जैसी मेंरे बीच जिया,
मर गई मैं तो श्याम विरह में रटती पिया-पिया।
कैसे जाऊँ कैसे पाऊँ अपनो मन बसिया,
कैसे श्याम अंक में लागूँ भुजभर कसिया ॥

बाज रही आधी रात बंसी बाज रही ॥

वन के हिरना वन में कूदैं लै लै हिरनी साथ,
बंसी सुन चौकड़ी भूल सब ठाढ़े नाये माथ,
हिरनी मोह रही, बाज रही आधी रात ...।
सिला पिघल गई परवत की सुन के बंसी की तान,
झरना फूट बहें धरती से झर-झर ताल बंधान,
धरती मोह रही, बाज रही आधी रात ...।
खिल गये कमल रात में ऐसी बाजी बंसी वीर,
चंदा थम गयो बंसी सुनके थम गयो यमुना नीर,
यमुना मोह रही, बाज रही आधी रात ...।
बंशी सुन बादर घिर आये छाँह करैं हरि ऊपर,
धीमें गरज के ताल लगावैं फूलन बरसें झर झर,
बदरी मोह रही, बाज रही आधी रात ... ॥

मेरी मुँह लगी मुरली री, कोई लै गई चुराय,
कोई लै गई चुराय ॥

मुरली ते मैं गाय चराऊँ,
जब जहँ चाहूँ गाय बुलाऊँ,
वन लै जाऊँ घर बगदाऊँ,
कौंन जुलम मोपै कर गई री, कोई लै गई .... ।
मुरली ते मैं रास रचाऊँ,
ब्रज गोपिन को घर ते बुलाऊँ,
जैसे चाहूँ वैसे नचाऊँ,
कैसो धोखो दै गई री, कोई लै गई चुराय .... ।
मुरली है प्रानन ते प्यारी,
मुरली बिना चैन मोहे नां री,
नाम पर्‍यो मेरो मुरली धारी,
भारी गजबहिं ढाय गई री, कोई लै गई .... ॥

हो कान्हा प्यारे सुना दे बँसुरिया ॥

बंशी कारन घर ते निकसीं,
हो कान्हा रे मैं यमुना किनरिया।
पनियाँ को मैं पनघट आई,
हो कान्हा रे सिर धरे गगरिया।
भाजी-भाजी आई न कोई देखै,
हो कान्हा रे टेढ़ी गोकुल नगरिया।
तोय देख मेरे बिछुवा बाजें,
हो कान्हा रे मेरी उड़ रही चुनरिया।
अब तांई तोय इकलो न पाई,
हो कान्हा रे इकले में संवरिया॥

बंशी बाजै कदम के नीचे मन में कसक रही।

औचक मेरी नींद उचट गयी, करवट सेज लही।
ऐसी विलखें रई घमरकन, जैसे चलत दही।
सास सयानी बाहर घर में, ननदुल पास रही।
जौ मैं होती वन की चिड़िया उड़ उड़ जात वहीं।
बैरिन है गयी बाँस बँसुरिया, कैसे जात कही।
छलकर चली सेज तज गोपी, लोक की लाज ढही।
लपक झपक लइ नंदलाल को, नदिया प्रेम वही॥

बाजी मीठी-मीठी बंसी बाजी रे रसिया, बंसी के बजैया ॥

मीठी बंसी बाजी भोर भुरहरे,
जागी जागत ही भाजी रे रसिया, बंसी के ... ।
मीठी बंसी बाजी पीरी फाटे,
धार काढ़त ते भाजी रे रसिया, बंसी के ... ।
मीठी बंसी बाजी सूरज ऊगे,
पनियाँ को मैं भाजी रे रसिया, बंसी के ... ।
मीठी बंसी बाजी जेंय रही मैं,
जेंवत ते उठ भाजी रे रसिया, बंसी के ... ।
मीठी बंसी बाजी पति संग सोई,
पलका तज कें भाजी रे रसिया, बंशी के ... ।

ब्रज रस

ब्रजरस ब्रजवासी ही जानें याको मूरख समझें नांय ॥

धूर में खेलैं हरि के संग
करैं खेलत में हरि को तंग
देखकें ब्रह्मा हू भयो दंग
गऊ ग्वाल चोर लियो औ फिर पीछे पछताय।
चराईं गैंया मोहन लाल,
एक संग जैवें बाल गोपाल
नेंक नहिं जूठन हू कौ ख्याल
यह लीला देखन कूँ ब्रज में शंकर आवैं धाय।
जगत कौ जो पालन हारो
सोई माखन चोरन हारो
लूट के दधि खावन हारो
चोरी लीला कौ मीठो रस सुन नीरस खिसियाय।
बड़ौ अलबेलौ मदन गुपाल
देव कौ देव काल कौ काल
नचावैं तारी दै ब्रजबाल
राधा चरन कमल कौ भौंरो बनवे कूँ ललचाय ॥

ब्रज में फिर प्रेम भरी प्यारी, मुरली की तान सुना देना।

बलराम कृष्ण दोनूँ भैया,
मधुर दरस दिखला देना॥
फिर घर घर में मंगल होवे,
फिर दूध दही नदिया बहवे,
फिर प्रेम रूप माखन खाकर,
तुम माखन चोर कहा लेना।
वंशी की जादू की तानन,
सुन गोपी तोड़ें जग बंधन,
फिर चरनन घुँघरू घोर बजें,
यमुना तट रास रचा लेना।
फिर ब्रज की प्यारी बने छटा,
नित ही बरसे फिर श्याम घटा,
यह आस हमारी है नटवर,
तुम हमको दरस दिखा देना॥

महारास

खेलैं महारास वृन्दावन राधा प्यारी औ नन्दलाल।

शरद मास की पूरणमासी,
सब जीवन को है सुखरासी।
लतन में फूल खिले भारी,
झूम रही धरती पै न्यारी,
सबै ऋतु छाईं हैं प्यारी,

दोहा – सुन्दर जल औ वायु है सुन्दर है आकाश,
सुन्दर धरती सोहनी सुन्दर चन्द्र प्रकाश।

रास खेलवे को मन करकै वंशी लई गुपाल॥
मुरली मधुर बजाई गिरिधर,
तीनों लोकन में फैल्यो स्वर।
सुनत ही मोह गयीं ब्रजनार,
भूल गईं सुधि बुधि नाहि सम्हार,
चलीं सब छोड़ जगत व्यवहार,

दोहा – कछु गोपी रोकीं गई, जान न पावै रास,
तन तज पहुँची सबन ते पहले नित्य विलास।

बंधन तोर चलीं मतवारी नाय लाज कौ ख्याल॥
उलटीं चाल चलें ब्रजनारी,

भूल चतुरता भईं गमारी।
होठ पै काजर दियो लगाय,
गाल पै बेंदी को चिपकाय,
घूँघरू हाथन में लटकाय,

दोहा – घर घर ते सब निकस के गयीं जहाँ बलवीर,
कल्पवृक्ष के निकट बहै निर्मल जमुना नीर ।

आओ आओ ब्रजगोपी हँस बोलें मोहनलाल ॥
कैसे तुम सब वन को आईं,
रात भयानक नाहिं डराईं।
बड़े घर की हो तुम सब नारि,
रात में आईं कहा विचारि,
हँसेंगे लोग दैंय सब गारि,

दोहा – युवतिन कौ यह धर्म है मानें पति कौ देव,
भजैं पराये पुरुष कौ कुलटनि की यह टेव ।

वन की शोभा देख चुकीं अब जाओ घर यहि काल ॥
कपट भरी हरि की यह बानी,
सुन-सुन कैं गोपी कुम्हिलानी।
लगी रोवन दुख में ब्रजवाम,
बही धारा असुवन उर धाम,
कही विनती सुनिये घनश्याम,

दोहा – तुम तजि और न जान ही तुम जीवन तुम प्रान,
तुम पति मति गति एक ही तुम मर्यादा कान ।
कृष्ण बिना मर्याद धर्म सब लोक वेद जंजाल ॥
धन्य धन्य बोले हरि नागर,
दृढ है तुम्हरौ प्रेम उजागर।
चलो अब खेलैं रास विहार,
सम्हारे उलटे सब श्रृंगार,
माँग मोती सिंदूर सम्हार,
दोहा – शीश फूल पाटी कड़े बाजूबंद औ हार,
जेहरि नूपुर घूँघरू बिछुआ छल्लेदार ।
रूप अनेक बनायौ हरि तब गोपी भईं निहाल ॥
इधर विहार कियो राधा हरि,
फूल सिंगार कियौ अंकन धरि।
थकी जब प्यारी कह्यो पुकारि,
तनक काँधे पै लेऊ बिठारि,
लोप हरि भये छाँड़ि सुकुमारि,
दोहा – श्रीराधा के विरह कूँ देख्यो सब ब्रजनारि,
अपने-अपने प्रेम कौ गर्व दियौ सब डारि ।
बहुत भांति रोई सुर सों तुम आओ दीनदयाल ॥
प्रगट भये वृन्दावन चन्दा,
घेर लई सबनें नंदनंदा।

लाल की शोभा देखैं भाम,
पकर पीताम्बर बोलीं बाम,
निठुर तुम प्रेम न जानों श्याम,

दोहा – बोले हरि या विरह सों प्रीति बढ़ी नहिं थोर,
तुम सबको ऋणियाँ भयौ जनम जनम मैं घोर ।

खेलैं हिल-मिल रास सबई नाचैं दै दै सुरताल ॥
कोऊ तिरछे नैंन मिलावैं,
कमर हिलाय बदन मटकावैं ।
कौंधनी बाज रही सुर घोर,
फिरत में फहरें साड़ी छोर,
चूम मुख लेवें चित्त कूँ चोर,

दोहा – दै गलबैंया विहरहीं गावैं गीत रसाल,
ज्यों बादर संग बीजरी खेल रही थिर चाल ।

कंकण माला हार फिरैं औ झुमका गोरे गाल ॥
धन्य भई रस में ब्रजनारी,
बहुविधि रास कियौ गिरिधारी ।
किये जमुना में बहुतइ खेल,
कमल फूलन की रेला पेल,
सकै को गाय श्याम की केल,

दोहा – चार अरब उनतीस कोटि लख चालीस असी हजार,
बरस ब्रह्म निशि सम निशा जानें न संसार ।

महारास गावैं भव नासैं हियरा होय विशाल ॥ [2]

---

[2] टिप्पणी – ४ अरब, २९ करोड़, ४० लाख, ८० हजार वर्ष सुनकै चौंकवे कौ काम नांय । ये तौ अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक और उनके साहूकार गोपिन की लीला हैं । चेंटी की और हाथी की खुराक में अन्तर क्यों है, याकौ कहा उत्तर? अरे भगवान् रस पीवे लग्यो तौ समय कौ कहाबन्धन? ये ४ अरब तौ थोड़ो समय है, मायिक जीवन कूँ समझायवे कूँ अन्यथा लीला अनादि व अनन्त है ।

रासपंचाध्यायी भागवत में "ब्रह्मरात्र उपावृते" का अर्थ है – ब्रह्मा जी की रात जितनी बड़ी होय है, उतनी देर रास भयौ है । देखो प्रमाण में ...

श्रीमच्छुकदेव कृत सिद्धान्त प्रदीप

श्रीधपतिसूरि कृत भागवत गूढार्थ दीपिका

श्रीरामनारायण कृत भावाभाव विभाविका

श्रीमत् किशोरी प्रसाद् विद्वत्कृत विशुद्ध रसदीपिका

श्रीमत् विश्वनाथचक्रवर्ती कृत सारार्थ दर्शिनी आदि

कुछ आचार्यन ने 'ब्रह्म श्रीकृष्ण की जितनी रात होय है' यह अर्थ कियौ है । या रीति सौं तो याऊ ते हजारन गुनों होय है, क्योंकि ब्रह्माजी की रात ते बड़ी विष्णु की, फिर महाविष्णु की, फिर कहूँ ब्रह्म श्रीकृष्ण की, और कहाँ तांई लिखें ...पंडिताई ते कहा काम! रस पीयवे ते गरज ॥

रासेश्वरी राधिका नाचैं, मोहन वंशी रहे बजाय ॥

शरद् की फैली उजियारी,
बहै यमुना लहरन वारी,
कमल के फूल खिले भारी,
सीरी ब्यार बहै हौले लैकैं सुगन्ध सुखदाय।
चौंतरा सोने कौ तट पै,
सबै वारूँ गिरिधर नट पै,
चमक बिजरी पीरे पट पै,
ठाढ़ो तान भरैं मुरली में प्यारी के मन भाय।
बहुत रीझी स्यामा प्यारी,
लगी नाचन लहँगा वारी,
चुनरिया उड़ फहरै भारी,
ताल मृदंग दुन्दुभी बाजै धा दिन ता किट धाय।
फिरावैं उंगरिन कौ गति में,
नचावैं अँखियन को रस में,
बतावैं भाव बहुत अंग में,
रीझि-रीझि मोहन नें पकरी हँस-हँस कें लिपटाय।

नाँचैं-नाँचैं रे कन्हैया राधारानी रही नचाय ॥

हाथन ते हाथन कूँ पकरें,
कबहूँ गलबैयाँ में जकरें,
पीताम्बर औ फरियाँ फहरें,
उड़-उड़ जावै पीरो पटुका साड़ी ते लिपटाय।
मोर मुकुट सिर पर फहरावै,
शीश फूल झलमल झलकावै,
मुख पै कारी लट लटकावै,
बैजंती माला हरवा सों इरझ उरझ लहराय।
कोऊ सखियाँ ताल लगावैं,
कोऊ बीना बैन बजावैं,
कोऊ थेइ थेइ बोल सुनावैं,
राधा माधव दैं फिरकैयाँ घूमैं ठुमका लाय।
ऐसे नाँच रहे गिरिधारी,
संग सजी वृषभानुदुलारी,
मुसक्यावै मधुरै पिय-प्यारी,
लीला रास मधुर देखन को लक्ष्मी हू ललचाय ॥

ऐसो रास रच्यो वृन्दावन है रही पायल की झनकार ॥

घुँघरू खूब छमाछम बाजैं,
बजने बिछुआ बहुतै बाजैं,
रवा कौंधनी केहू बाजैं,
अंग-अंग में गहना बाजैं चुरियन की खनकार ।
बाजे भाँति भाँति के बाजै,
झाँझ पखावज दुन्दुभि बाजै,
सारंगी और महुवर बाजै,
वंशी बाजै मधुर-मधुर बाजैं बीना के तार ।
राधा मोहन दै गलबैंया,
नाँचैं संग-संग लैं फिरकैंयाँ,
ब्यार चलै शीतल सुखदैया,
जामा पटुका लहँगा फरिया करैं सनन सनकार ।
मंडल रास बन्यो है अम्बर,
ऐसे नाँचैं राधा गिरिधर,
उड़ैं पखेरू मानों ऊपर,
तारी दै सम देवैं बोलैं धा धा की धनकार ॥

वृन्दावन रास रचायो री मनमोहन रास रचैया ॥

वंशीवट पै वंशी बजाई,
सबके मनहिं लुभायो री वंशी के बजैया।
सब गोपी घर-घर ते निकसीं,
वंशी ने सब छुडवायो री आई जहाँ कन्हैया।
क्यों तुम मात-पिता पति छोड़े,
ऐसे वचन सुनायो री बलदाऊ के भैया।
साँची प्रीति घर नाय लौटीं,
सबको रमण करायो री कल्प वृक्ष की छैंया।
मान देख कें छिप गयो कान्हा,
बहुविधि रुदन करायो री आयो गाय चरैया।
कुंज कुंज यमुना तट ढूँढ्यो,
नैनन जल बरसायो री चरनन की बलि जैया।
आयो श्याम लिपट गई गोपी,
प्रीति रीति समझायो री रिनियाँ आप कन्हैया।
जितनी गोपी उतनेइ कान्हा,
मण्डल रास बनायो री नाचैं दैं गलबैंया।

रास पंचाध्यायी

आई रात शरद पूनो की जामे रच्यो कृष्ण महारास ॥

पहले बंसी मधुर बजाई
राधा-राधा की धुन गाई
राधा ही को ध्यान लगाई
बंसी सुन धाई सब गोपी कृष्ण मिलन की आस ॥१॥
मात-पिता पति नाते तोड़े
दुहती गायन सो मुख मोड़े
गृह सेवा पति सेवा छोड़े
रुकी न रोके ते नहि मानी लोक लाज की त्रास ॥२॥
कुछ गोपी घर बंद भई जब
ध्यान धरैं नन्द नन्दन को तब
मिले ध्यान में श्याम उन्हें सब
विरह ध्यान से अशुभ जले शुभ सब कर्मन की फाँस ॥३॥
गई जहाँ ठाढ़े नन्दनन्दन
स्वागत है बोले मन मोहन
आई क्यों छोड़े सब लोकन
गुरुजन पति सेवा छोड़े ते सब लोक धर्म को नास ॥४॥

मेरो प्रेम परम है पावन
धरैं निरन्तर मेरे ध्यानन
मेरो श्रवण करै मम दर्शन
वैसी प्रीत न पास रहे ते पावैगो मम दास ॥५॥

गोपी कह रही काहे श्याम निठुरता बैनन सों बोलै ।

हमने त्याग दिये सब विषयन
तब ही लिये तिहारे चरनन
मत छाड़ै हठ कर हम भक्तन
तू ही बंधु आत्मा ये ही सार धर्म खोलै ॥१॥
चतुर नार तव प्रेमहि चाहै
तुम प्रिय आत्मा तुमहि सराहै
पति सुत की आसक्ती दाहैं
आशा मत तोड़े इन प्रीती को तोलै ॥२॥
पांव डिगै ना लौटें कैसे
छोड़ेगो तन तजैगीं वैसे
लक्ष्मी नहिं पावै पद ऐसे
नील कमल मुख लट घुँघराली देख बिकी बिनमोल ॥३॥
विकल वचन सुन रमण कियो हरि
यमुना ठंडी बालुन ऊपर
गर्व करी निज सौभाग्यन पर
अन्तर्धान भये हरि हरवे गर्व कृपा ढोलैं ॥४॥

ढूँढत रही गोपिका वन में कहँ तुम कृष्ण छिपे हो जाय ॥

कहाँ कृष्ण बोलो हे पीपर
बोलो वट बोलो हे पाकर
कहँ चितचोर प्रेम के नागर
हँस-हँस तिरछी चितवन से मन हमरे लिए लुभाय ॥
हे अशोक तुम शोक हरो अब
देहु दिखाय मदन मोहन सब
मौलसिरी देखे मोहन कब
छीने मान माननिन को जिनने मधुरे मुसकाय ॥
हे कल्याणी तुलसी प्यारी,
तुमको धारत है गिरिधारी
पिय के चरनन की मतवारी
कब ते पूछ रही हम पिय को क्यों ना रही बताय ॥
हे मालती सुगन्ध की भीनी,
महक रही तू जूही झीनी
खिली चमेली मन वश कीन्ही
बिना पिया के परस न होवै ऐसे फूल फुलाय ॥
आम कदम्ब नीम औ जामुन
कटहल बेल मौलश्री वृक्षन
परोपकार है तुमरो जीवन

जमुना तट पै सबै तपस्वी मोहन देहु दिखाय ॥
गोपी ऐसे पूछत डोली,
विरह भरे वचननि को बोली
अन्तर्व्यथा रही सब खोली
आँसू भरे गीत सुनके हरि आय गये ब्रजराय ॥

हरि ही बनि गई ब्रज की गोपी ढूँढ़त हरि को आधी रात ।
बनी पूतना गोपी कोई
कृष्ण बनी स्तन पीवै कोई
शकटासुर बनी छकड़ा कोई
कृष्ण बनी रोवत रोवत इक पलटै मारैं लात ।
तृणावर्त बनी गोपी कोई
हर लै गई बनी हरि कोई
घुटुमन चली कृष्ण बन कोई
झनक-झनक बाजै नूपुर वह बन गई साँवल गात ।
दाऊ बनी कृष्ण बनी कोई
सुबल तोक दाम बनी कोई
वत्सासुर सी बन गई कोई
बनी बकासुर हरि बन कोई चोंचन फारत जात ।
हरि बन वेणु बजावै कोई

गाय बुलाय प्रशंसै कोई
मैं ही कृष्ण दिखावै कोई
देख चाल छबीली मेरी चलगत झोंका खात।
गिरिधर बन चूनर को खोलैं
हाथनि लै गिरिवर को तोलैं
अभयदान दै सबसों बोलैं
भय मत करो इन्द्र से मैंने रक्षा कीनी तात।
बनी कालिया गोपी कोई
नाथै नाग कृष्ण बनी कोई
दावानल को पीवै कोई
बनी यशोदा बाँधे कोई ऊखल डरपी जात।
पूछत डोली लता पतन में
विरहाकुल भई गोपी मन में
देखे चरण चिन्ह तब वन में
आसा बँधी कृष्ण मिलवे को उधर चली सब जात।

ढूँढत फिरी गोपिका प्यारी कहाँ गये प्यारे नंदलाल ॥

बड़ी तपस्विनी पृथ्वी तू है
हरि चरननि ते साज रही है
वामन वराह के स्पर्शमयी है
निश्चय कृष्ण चरन परसन ते फूल रही तू बाल।
कृष्ण दिखा दे हिरनी प्यारी
गये इधर राधा बनवारी
कुच कुमकुम राधा ने धारी
वही सुगन्ध ले महक रही है हरि की कुन्दनमाल।
पूछो री इन वन के वृक्षन
रहै झुकाय भूमि पै डारन
करत प्रणाम युगल के चरणन
कर में कमल फिराय गये दोऊ गलबैंया दे डाल।
पूछो इन लतान ते फूली
वृक्षन ते लिपटी सब भूली
मानो प्रेम मगन सब भूली
कृष्ण परस को पाय नाचती मानो दै दै ताल।

ढूँढत कृष्ण चरण चिन्हन ते मिल गई श्री राधा रानी ।

गोपिन खोज रहीं हरि वन में
देखे हरिपद चिन्ह लतन में
ध्वज यव अंकुश वज्र चरण में
बोली देख चलो पद चिन्हन मिलि है दधिदानी ॥१॥
हरि पद संग प्रिया पद देखे
कौन गई हरि संग सुलेखे,
दै गलबैयाँ प्रेम विसेखे
याने बस किए कृष्ण छोड़ हम सब की पहचानी॥२॥
धन्य-धन्य ये युगल चरण रज
विधि शिव श्री धारै सिर पर सज
रज धरि शीश अघन तज,
कौन प्रिया यह इकली भोगै माधव रसखानी ॥३॥
जान गई राधा की महिमा
कौन कह सकै इनकी गरिमा
अद्भुत सौभग प्रेम मधुरिमा
अन्तर्धान को सार यहाँ सबने राधा जानी ॥४॥

गोपी जानि गई राधा संग हरि ने कीयो प्रेम विहार ॥

पहले देखे चारों चरनन
पीछे रह गए द्वै पद चिन्हन
जानि गई हरि लै गए अंकन
कोमल चरन प्रिया के होवै कहुं ना खेद अपार ॥१॥
देखे आगे फूल चयन थल
उछरे हरि तहँ पंजनि के बल
राधा सेवा करी श्याम भल
फूलनि ते मोहन ने कीयो राधा को सिंगार ॥२॥
थल देखीं वेणी गूँथनि कौ
प्रिया पीठ हरि के बैठन कौ
कच डोरी औ पुंज सुमन कौ
मान मनावन चरन परन, जानी विलास सुख सार ॥३॥
गोपी ऐसे डोल रही सब
युगल केलि कौ समझ रही तब
देखेंगी हम प्राणनाथ कब
खोजत घूम रहीं सब देखीं राधा भानुदुलार ॥४॥

दौर-दौर सब ब्रज की विरहिन राधा चरन गहे सुखसार ॥

पूछन लागी ब्रज की नारी
हे राधे वृषभानु दुलारी
तुमरे संग हे गिरिवरधारी
तुमको पाय तजी हम सबको सब सुन्दर ब्रजनार ॥१॥
बोली कीरति की सुकुमारी,
मेंरे साथ चले बनवारी
देखत वन की शोभाप्यारी
चटक चांदनी शीतल मंद सुगंध बह रही ब्यार ॥२॥
मेंरे साथ चले गलबैंया
चीरचोर चितचोर कन्हैया
नागरवर नवनीत चुरैया,
कमल नयन मधुमुसकन चितवन पै पर जावै मार ॥३॥
फूलन चुनि सिंगार किये मम
वेनी गूँथी मेरी प्रियतम
मान मनावन लैके अंकम
अकथ प्रेम दै अकथ मान दै बहुविध किए विहार ॥४॥
मान कियौ मैंने अति भारी,
मोहि मनायो बहु गिरिधारी,
मानी ना मैं अति हठ धारी

गए छोड़ मोकूँ हूँ प्यारे लई निठुरता धार ॥५॥
मिलन विहर दो पक्ष प्रेम के
मिलन गर्व भयौ चूर तियन के
देखे विरह प्रिया राधा के
जासौं प्रेम गर्व तज निर्मल है जावैं ब्रजनार ॥६॥

श्याम विरह में श्याम विरहिनी मिलकै गावैं गोपी गीत ॥

सब धामन ते बड़ौ भयो ब्रज
श्याम जन्म ते रह्यो सदा सज
लक्ष्मी ने वैकुण्ठ दियौ तज,
ब्रज में वास रही कर लक्ष्मी ऐसी बाढ़ी प्रीत ॥१॥
कियौ हमारो वध नैनन ते
काहे बचाई कालिया दह ते
इन्द्रकोप अघ व्योमासुर ते
विरह ताप ते दसों दिसन में पजर रही ओ मीत ॥२॥
अपने कर हमरे सिर धारो
अभयदान को देवै वारो
ब्रज के कष्टन हरिवै वारो
मुख दिखरावो हम दासिन को प्रेमिन की परतीत ॥३॥
देहु चरनन जहँ कमलावासा
शरणागत के पापन नासा
गोचारन में रहते पासा
मीठौ बैनन मोह अधर रस देहु यही है रीत ॥४॥
कथा तिहारी ही है जीवन
मीठी मुसकन तीखी चितवन
रस बतियाँ औं मंगल विहरन

कपटी हमरे मन में क्षोभ करते हैं भारी तीत ॥५॥
नैना श्याम दरस के लुभाए
जड़ ब्रह्मा ने पलक बनाए
हमरे पति कुल सब बिसराए
हम असहायन को तजि तुमने कपटिन को लई जीत ॥६॥
जिन चरनन को हमतो डरकर
कठिन कुचन पै धरती निजकर
उनते ही वन डोलौ वनचर
हमें धीर ना होवै जीवन कंकड़ काँटिन भीत ॥७॥

गोपी गाई सुरसों रोयीं सुनत ही प्रगट भये गोपाल ॥

हाथन सों पकरे पीताम्बर
मीठी मुसकन मधुर अधर पर
जाहि देखि कामहु जावै मर
प्राण मिल्यो हरि को देखत भइ ठाढ़ी सब ब्रजबाल।
काहू ने पकरे हरि के कर
हरि कर धरी काहु कन्धन पर
हरि मुख पान लियो काहू कर
टेढ़ी भौंह देख दाँतन सों दाबै अधरन लाल।
इकटक देखै गोपी कोई
देखि मनहिं आलिंगै कोई

पुलकित आनन्द भीनी कोई
गये सबन लै जमुना तट जहँ कुन्द फूल अलि जाल।
अपनी अपनी फरिया को लै
बैठारे पिय को आसन दै
पूछन लगी सबै मोहन ते
प्यार करन सों प्यार करें ना करै कौन तुम लाल।
जग में प्रेम नहीं सब कामहि
स्वारथ को है सब व्यवहारहि
मात पिता की दया सुधर्महि
आत्माराम आप्तकाम अकृतज्ञ प्रेम को टाल।
मैं प्रेमी पोसूँ जो प्रेमधन
छिपूँ कबहु उत्कंठा बढ़वन
सदा भजूँ मैं प्रेमी भक्तन
मेरे लिए जगत सब छोड़े तुम्हें न छोड़ूँ बाल।
मैं ऋणियाँ अब भयो तिहारौ
ऋण न चुकैगो मोपै भारौ
अजर बन्ध तोड़े तुम सारौ
मोकूँ उऋण करो तुम सब जु उदार प्रेम की चाल॥

गोपी नाची हरि संग महारास में कालिन्दी के तीर ॥

एक-एक गोपी सँग मोहन
सब के सँग देकै गलबैयन
बादर बिजरी की सी जोटन
जितनी गोपी उतने कान्हा मिटी विरह की पीर ।
दुन्दुभी नभ से देव बजावैं
फूलनि की बरसा बरसावैं
गन्धर्वी गन्धर्वनन गावैं
कंगन नूपुर कौंधनी सुन चुप भए कोकिल कीर ।
हाथ हिलाय कै ठुमका देवैं
कमर हिलाय मंद मुसकावैं
टेढ़ी भौंहन नैन मिलावैं
ढीली भई गाँठ नीवी की खुल गए अंगन चीर ।
हरि के गीतन की धुनि छाई
श्री जी उनते ऊँची गाई
धन्य धन्य कही कुँवर कन्हाई
बहुतै मान दियो मण्डल में रासेश्वर बलवीर ।
काहू ने थकि पकरे मोहन
चूमे हरि भुज लागे चन्दन
पान लियो हरि मुख ते गण्डन

गहनन के तालनि में गायो गान भ्रमर की भीर।
चतुर श्याम शिशु से भोरे भए
देख रूप रस गोपिन के नए
टूटे फूलनि हार बिखर गए
ग्रह नक्षत्र चन्द्र विस्मित सुरदेविन छूटी धीर।
प्रति गोपी संग कुंजविहारी
अमित विलास किए सुखकारी
अद्भुत रस पायीं ब्रजनारी
आत्मा राधा संग रमण हरि आत्माराम सुधीर॥

प्रेम बँधे हरि सेवा करैं थकी जब सब गोपी सुकुमार॥
कबहुँ सँवारें आभूषन गन कबहूँ पहरावें लै वस्त्रन
कहूँ सँवारै काजल तिलकन
कबहूँ पौंछें मुख लेकैं पीताम्बर सौं कर ब्यार।
पिय की सेवा मधुर परसते
गावन लागी हरि यश सुरते
लट कुण्डल चमकै गालन ते
दूर भयै श्रम हरि कौ जब मुसुकाई ब्रज की नार।
जल विहार को सबै चले मिल

श्री जमुना को पानी निर्मल
वनमाला पर अलिकुल चंचल
हथिनी सँग गजमत्त घुसे मर्यादा तोर कगार।
छिरका छिरकी खेल भयौ जब
हारे पिय जीती गोपी तब
हँसवे लागी ब्रजनारी सब
चढ़े विमान देव नभ में बरसावैं फूल अपार।
करैं विहार सबै मिल कै वन
जल थल शोभा छायी उपवन
शरद् चाँदनी चमकै चमचम
अमित विहार विलास किये प्रभु सत्यकाम रससार॥

पूछै प्रश्न परीक्षित राजा काहे रास रच्यो भगवान।

इनके नहीं कामना कोई
आप्तकाम श्रुति कहै सो येई
परदारा संगम क्यों होई
पूर्णकाम ये सत्यकाम ये आत्माराम महान।
अवतारनि के हरि अवतारी
करैं धर्म संस्थापन भारी

अधर्म नाश असुरन संहारी
कर्ता वक्ता रक्षक धर्म के तोरी धर्म की कान।
शुक बोले हरि को नहिं बंधन
सर्वभक्षशक्ति अनल समर्थन
कालकूट विष शिव कियो पाचन
समरथ की जो नकल करै वह मरै मूर्ख अज्ञान।
करुणा कर हरि लीला करते
मधुर मधुर रस से चित्त हरते
गाय गाय सब भव से तरते
कामनाशिनी लीला देती परा भक्ति को दान॥

दीपावली

दिवला भानु भवन में जुर रहे,

भीतर ज्योति जगामग होय ॥
भाँति भाँति जुरे दीप री आली,
कैसी सुन्दर आई दिवाली,
सज के बैठी भानु की लाली,
मन्दिर के भीतर की शोभा नाय बखाने कोय।
ढिंग बैंठे सब सखी सहेली,
बतरावै गलबैंया मेली, गामन को पहचानें हेली,
नंदगाँव ये प्रेम सरोवर मैं दिखराऊँ तोय।
ये है राधाकुण्ड गोवर्द्धन,
चमक रहे सब ब्रज के गामन,
कैसो दमक रह्यो वृन्दावन,
ऊँची शिखर दिपै बरसाने देखो नैन संजोय।
ललिता कहै सुनहु सुकुमारी,
देखो नंदगाँव यह प्यारी,
मुसकाई सुन भानु दुलारी,
देखत मगन भई हैं प्यारी तन की सब सुधि खोय।

गोवर्द्धन धारण

ब्रज में बादर पानी बरसै हरि गिरिराज उठायौ है ॥

कार्तिक मास दिवारी आई
सुरपति पूजा घर घर छाई।
दियौ हरि पूजन बन्द कराय
भोग गिरिवर कौ दियो लगाय
सहस भुजधारी रूप बनाय

दोहा – पर्वत पै बैठे प्रगट पावैं नाना भोग,
मुसक्यावैं श्री लाड़िली खूब बन्यो संजोग।

ग्वाल कहैं कान्हा ने साँचो देव जनायो है ॥
यह सुन इन्द्र बहुत खिसियायो
मेघन को ये हुकम सुनायो ।
करो तुम ब्रज में पट्टाढार
जाय बरसो ह्वां मूसर-धार
बहुत गरवाये ब्रज के ग्वार

दोहा – तैंतिस कोटि देवतन कौ मैं स्वामी सुरराज,
पर्वत पूज्यौ, छोड़ि मोय, प्रलय करो तुम आज।

मेघवर्त जलवर्त उड़े अंधियारौ छायो है॥
बरसन लगे मेघ मद्वारे
दुखी भये ब्रजवासी सारे।
बीजरा चमकै बारम्बार
पड़ै बूँदन की भारी मार
गरज की घोर प्रलय की ब्यार

दोहा – तीखी बानन ज्यों लगैं बूँदन की बौछार,
बछरा गऊ ग्वाल-बाला सब विकल भई ब्रजनार ।

कृष्ण-कृष्ण कह टेरन लागे ब्रज घबरायो है॥
गोवर्द्धन की शरण गये सब
रक्षा की सोची प्रभु नें तब।
अचक हरि गिरि को लियो उठाय
धर्‍यो बांये कर पै उचकाय
छिंगुलिया के नख पै गिरिराय।

दोहा – ब्रजवासी भीतर गये दूर भये दुख-द्वन्द,
भूख प्यास सब मिट गई दरसन कर नन्दनन्द ।

सब जल गिरि नें सोख्यो छींटा एक न आयो है॥
हरि कौ हाथ दबावै माई
लेय बलैंयाँ देव मनाई।

मेरे लाला की करौ सहाय
लकुटिया ग्वाला देंय उठाय
जोर जयकार करैं हरसाय

दोहा – सात दिना तक जल पर्‌यो गिरि धार्‌यो नन्दनन्द,
मारैं गूंठा इन्द्र को ग्वाल करैं आनन्द ।

सात बरस के कान्हा ने ये इन्द्र हरायौ है ॥
मेघन कौ जल खतम भयौ जब
हार मान कें लौट गये तब।
कही सुरपति सों जाय हवाल
अनोखौ भयौ नन्द कौ लाल
नचैं ब्रज में सब गोपी-ग्वाल

दोहा – परिकम्मा दै पूजहीं गिरिवर को सज साज
सुरपति चरनन में पर्‌यो क्षमा कियौ ब्रजराज ।

है अनन्य हरि भजौ यही लीला अरथायौ है ॥

गिरिवर धार लियो अँगुरी पै, सात बरस कौ रसिया ॥

इन्दर ने जब जुलम गुजारे
भेजे बादर परलय वारे
बरसे ब्रज में मूसर धारे
पानी पानी अम्बर में बह उमगी नदिया।
बोल्यो लाला नन्द महर कौ
कछू काम ना नेक डरन कौ
धारूँ गिरिवर दुख हरन कौ
गिरि को लियो उखाड़ छत्र तान्यो ब्रजबसिया।
गिरिवर नीचे सब ब्रजवासी
गाय गोप गोपी सुखरासी
सींग दिखाय करैं सब हाँसी
नाचैं गावैं ढोल बजावैं बाजै बंसिया।
इन्दर हार पर्यो चरनन में
लै सुरभी आयो सरनन में
गोविन्द नाम भयो लोकन में
दै परिकम्मा पूजैं गिरिवर सब दुख नसिया।

गिरिवर गिर ना परै, सहारो सब देवो रे ॥
बारो सो है मेरो कन्हैया
छोटी बैयाँ नरम कलैयाँ
गिरिवर ना सम्हरै, सहारो सब देवो रे ।
विकल भई है यशुदा रानी
सोच-सोच मन में पछतानी
मेरी कोई न पीर हरै, सहारो सब देवो रे ।
दौर श्याम के ढिंग है आई
हरि को हाथ दबावै माई
धीरज मन ना धरै, सहारो सब देवो रे ।
मुसकावैं ठाढ़े श्री गिरिधर
मैया हलको है यह गिरिवर
तू काहे फिकर करै, सहारो सब देवो रे ॥

गो-चारण

मैया टीको कर रोरी कौ गऊ चरायवे जावै श्याम ॥

ग्वाल बाला सब पौरी में
दरस की आस है मन में
नन्द बाबा फूले तन में
कर सिंगार चले नन्दनन्दन रीझैं ब्रज की भाम ।
सीस पै मोर मुकुट झूमैं
लटक कारी लट मुख चूमैं
अदा की चाल नयन घूमैं
लकुट हाथ औ काँधे कामर बनमाला अभिराम ।
बजाई वंशी मोहन लाल
चले सब नाचत ब्रज के ग्वाल
दिए गलबैंया मदन गुपाल
फूली लता वृक्ष फूले फूल्यो वृन्दावन धाम ।
चरैं गैयाँ सब कोमल पास
हिलोरे लेवैं जमुना पास
सबन कूँ कृष्ण चरण की आस
ऊपर मेघन की छाया में नांहि सतावै घाम ॥

चलहु श्याम अब गऊ चरायवे अब ताई तू सोवै है,

बुरी टेव तोय परी नन्द के औगुन नये बखेरै है ॥
घर-घर ते सब सखा संगाती आये तोय बुलावैं हैं,
तू तौ सो रह्यौ अपनी नींदन हेला हेल मचावैं हैं,
मात यशोदा तोय जगावे नेंकहु आँख न खोलै है।
बुरी टेव तोय परी नन्द के ... ॥
बछरा सबनें ढील दिये औ गैया खड़ी रंभावैं हैं,
घर-घर ते सब गोपी निकसीं पनियाँ भरवे जावैं हैं,
सदलौनी लै मैया ठाढ़ी उठ-उठ कें फिर सोवै है।
बुरी टेव तोय परी नन्द के ... ॥
सदलौनी कौ नाम सुन्यौ तब उठ्यौ लाड़लौ बोलै है,
दै दै मैया माखन मिसरी बहुत देर मोय होवै है,
मात यशोदा गोद बिठारै आनन्द मंगल गावै है।
बुरी टेव तोय परी नन्द के ... ॥

सब उपनिषद् तपस्या करके, ब्रज में आय बसे बन गाय ।

पहले ब्रह्मानन्द लयो इन,
ब्रह्माकार वृत्ति प्रगटी तिन,
अति तप किय ज्ञानिन के स्वामिन,
रसमय ब्रह्म कृष्ण की लीला देखन को हुलसाय ।
कृपा करी तब हरि रसदानी,
कृष्णात्मा राधा ठकुरानी,
युगल कृपा पाई मनमानी,
गैया बन ब्रजवन में डोलैं घेरैं गोकुल राय ।
ब्रज बारह वन बारह उपवन,
बारह प्रतिवन बारह अधिवन,
ये तो मुख्य हैं और गौण वन,
वन-वन प्रभु संग विहरैं हरि कूँ देखत रहैं रंभाय ।
समझैं सब वंशी के भावैं,
वंशी ते वन आवैं जावैं,
वंशी ते जल पियैं नहावैं,
युगल चरण रस युत ब्रज घासन आनन्द सों नित खाय ।
वंशी सुन दृग आँसू ढारैं,
चाटैं हरि के तन सुकुमारैं,
सहरावैं हरि रज कूँ झारैं,
राधारानी लेय दोहनी दुहैं श्याम सुख पाय ।

बसंत

प्यारी आओ खेलैं आज, ये ऋतु बसंत की आय गई ॥

कैसो सुन्दर है वृन्दावन
देखत ही मोहै मेरौ मन
सरसों फूली सोहै खेतन
आयो है ऋतुराज ये ऋतु बसंत की आय गई।
सुन्दर ब्यार चलै सुखदाई
जमुना हू कैसी लहराई
कमलन की माला लै आई
पहरावन के काज ये ऋतु बसंत की आय गई।
ऐसी शोभा है मतवारी
आँखन में छाई है प्यारी
चलिये उठ कै भानुदुलारी
तज कै सबकी लाज ये ऋतु बसंत की आय गई।
खेली जाय बसंत बंधावन
डफ मुरली की घोर सुहावन
उड़त गुलाल घटा भई सावन
छायो है रसराज ये ऋतु बसंत की आय गई ॥

बसंती रंग बरसैगो, आई-आई रे बसंत बहार ॥

लौहरी सौत चलै मत इकली चूनर ओढ़ बसंती,
ये ब्रज है रसिकन को अखारो तू है नई लजवंती,
श्याम रस पावैगो, आई-आई रे ... ।
लगी बसंत पंचमी ब्रज में मस्ती रही है छाय,
झूम-झूम के रसिया गावैं नाचैं कमर लचकाय,
देखत लै जावैगो, आई-आई रे ... ।
गोरी तेरी उमर है बारी ज्वानी को रंग भारी,
लाल गाल तेरे लाल होठ की लाली है मनहारी,
लाल तोपै रीझैगो, आई-आई रे ... ।
ब्रज की सूनसान गलियन में डोलै नंद को लाल,
जो कहूँ पावै कोई नवेली गालन मलै गुलाल,
खेल ऐसो खेलैगो, आई-आई रे ... ॥

धनि धनि बरसाने की लाड़ो ॥

वश करि नंदगांव कौ कान्हा मिली अंक भरि गाढ़ो ।
अधर सुधा रस प्याय कुँवर को विरह सिंधु ते काढ़ो ।
रहत अधीन सदा पिय सनमुख कर जोरे है ठाढ़ो ।
युगल केलि गहवर वीथिन में प्रेम तरंगनि बाढ़ो ॥

होरी माधुरी

कन्हैया रंग तोपै डारैगो सखि घूँघट काहे खोलै ॥

पहली पिचकारी तेंरे माथे मारै
बिंदिया की सुरंग बिगारैगो, सखि घूँघट ... ।
दूजी पिचकारी तेंरे अँखियन मारै
काजर की रेख बिगारैगो, सखि घूँघट ... ।
तीजी पिचकारी तेंरे मुख पै मारै
नथली की गूँज बिगारैगो, सखि घूँघट ... ।
चौथी पिचकारी तेरी छतियन मारै
चोली की चटक बिगारैगो, सखि घूँघट ... ।
पाँची पिचकारी तेंरे घुटुवन मारै
लहँगा की धूम बिगारैगो, सखि घूँघट ... ।
छटी पिचकारी तेंरे पांयन मारै
बिछुवन की घोर बिगारैगो, सखि घूँघट ... ।
साती पिचकारी तेंरे सबरेई मारै
जोबन को फूल बिगारैगो, सखि घूँघट ... ॥

कान्हा पिचकारी मत मारै, चूनर रंग बिरंगी होय ॥

चूनर नयी हमारी प्यारे
हे मनमोहन वंशी वारे
इतनी सुनलै नन्ददुलारे
पूछैंगी वो सास हमारी, कहाँ ते लई भिजोय ।
सबकौ ढंग भयौ मतवारौ
दुखदाई है फागुन वारौ
कुलवंतिन कौ औगुन गारौ
मारग मेरो अब मत रोकै, मैं समझाऊँ तोय।
बहु विधि विनय करैं सुकुमारी
आड़े ठाढ़े हैं गिरिधारी
बोलैं मीठे वचन बिहारी
होरी खेल अरी मन भाई, फागुन के दिन दोय।
छाँड़ दई रंग की पिचकारी
हँस हँस के रसिया बनवारी
भीज गयी सबरी ब्रजनारी
ग्वालिन ने हरि कौ पीताम्बर छोर्‌यो मद में खोय ॥

चूनरिया रंग में बोर गयौ कान्हा वंशी वारौ ॥

चूनर नई बड़ी चटकीली
चटकीलौ रंग घोर गयौ, कान्हा वंशी वारौ।
जान न पाई कित ते आयो
औचक ही झकझोर गयौ, कान्हा वंशी वारौ।
गालन मल्यो गुलाल निरदई
घूँघट कौ पट छोर गयौ, कान्हा वंशी वारौ।
बरजन लगी हाथ पकरे जब
बैंया तनक मरोर गयौ, कान्हा वंशी वारौ।
लिपटन लग्यौ नन्द कौ मो ते
हियरे प्रेम हिलोर गयौ, कान्हा वंशी वारौ।
खैंचा खैंची करकें छूटी
मोतिन की लर तोर गयौ, कान्हा बंशी वारौ।
ऐसौ रसिया कब मैं देखूँ
छोटो सो मन चोर गयौ, कान्हा वंशी वारौ।
होरी खेलन के दिन मोते
डोर प्रीति की जोर गयौ, कान्हा वंशी वारौ ॥

छेड़ै रोज डगरिया में, तेरो ढीट कन्हैया मैया ॥

बरस दिना याकी होरी होवै
पूछो सबै नगरिया में, तेरो ढीट कन्हैया ... ।
फागुन की तौ कहा बताऊँ
छांड़ै रंग घघरिया में, तेरो ढीट कन्हैया ... ।
भर भर फेंट गुलाल उड़ावै
करदे छेद बदरिया में, तेरो ढीट कन्हैया ... ।
ऊबट बाट अकेली घेरै
रोकै गली संकरिया में, तेरो ढीट कन्हैया ... ।
बैठ कदम पै वंशी बजावै
लै लै नाम बँसुरिया में, तेरो ढीट कन्हैया ... ।
भयो दिवानों फाग खेल जाय
देखो गली बजरिया में, तेरो ढीट कन्हैया ... ।
कैसे कोई बचैगी याते
डारै जाल मछरिया में, तेरो ढीट कन्हैया ... ॥

या में कहा लाज कौ काज, खेल लै होरी रंग भरी ॥

बरस दिना में होरी आई
रसिकन कौ ऐसी सुखदाई
मानो बूढ़े मिली लुगाई
मन की बतियाँ पूरी कर लै, नहिं तो रहैं धरी।
ऐसो समय फेर नाय आवै
भागन ते फागुन रस पावै
नीरस देख-देख खिसियावै
सुनकैं निकर चली वह ग्वालिन मोहन नें पकरी।
लै गुलाल वाको मुख माड़यो
प्रेम बीज हियरे में गाड़यो
रंग बिरंगी करके छाड़यो
ऐसी दीख रही वह ग्वालिन जैसे फूल-छरी।
पीताम्बर हरि कौ वह पकर्यो
रंग भर्यो अपनो मुख पोंछ्यो
देखै श्याम प्रेम में जकर्यो
तबते नेह जुरयो ग्वालिन कौ गौहन आय परी ॥

हरि होरी कौ खिलार आयौ सब मिल घेरो री ॥

बहुत बार याने मटकी फोरी
दीखै जहाँ साँकरी खोरी
सबरी घेरीं ब्रज की गोरी
या नें बहुतै कियो बिगार याकी वंशी चोरो री ।
याद करो जब चीर चुरायौ
ऊपर चढ़ गूंठा दिखरायौ
सबन हाथ ऊपर जुरवायौ
ये कैसा ऊधमगार मिल पीताम्बर छीनो री ।
आज हमारौ दांव बन्यो है
देखौ कैसौ आज सज्यो है
तिलक मुकुट ते खूब फब्यो है
ठकुराई लेओ निकार याकौ रंगन बौरौ री ।
सब मिल पकरीं नन्द कौ लाला
मगन भईं ब्रज की सब बाला
मन की करी सबै तिहि काला
हँस देवैं गुलचा मार राख्यौ कर चेरौ री ।

अरी होरी में है गयौ झगरौ, सखियन ने मोहन पकरौ ।

धावा बोल दियौ गिरिधारी
नन्द गाँव के ग्वाला भारी
छाँड़ रहे रंग की पिचकारी
निकसत में रिपटैं सबरौ, सखियन ने ... ।
सखियन के संग भानदुलारी
लै गुलाल की पोटैं भारी
मार रहीं हैं भई अँधियारी
हां दीखै नाही दगरौ, सखियन ने ... ।
सखा भेष सखियन ने धार्‌यौ
सबही मिलकैं बादर फार्‌यौ
अचक जाय के फंदा डार्‌यौ
छैला कूँ कसकैं जकरौ, सखियन ने ... ।
धोखौ भयो समझ गये मोहन
लाईं बरसाने की टोलन
हँस हँस आईं हरि के गोहन
गुलचन ते कर दियौ पतरौ, सखियन ने ... ।
मन भाई कर लीनी हरि ते

बतरावैं तीखी आँखन ते
सखि रूप कर दियो पुरुष ते
परमेश्वर कौ झरौ नखरौ, सखियन ने ... ॥

मेरी अँखियन में निरदई, श्याम ने मारी मूठ गुलाल ॥

भई किरकिरी आँख हमारी
अचक आयकें घूँघट टारी
पूछन लग्यो कहा भयो प्यारी
मेरी अँखियन पे पीताम्बर मलन लगे गोपाल ।
आँखन ते गुलाल काढ़ै वह
फूँक मार रस की बातें कह
चूमै नैंन हटाये हू रह
आग लगै होरी में ऐसो ऊधम ब्रज यहि काल ।
या विधि नित ही होरी खेलै
रोकत टोकत ब्रज में डोलै
बिना बुलाए मीठे बोलै
ऐसी बात करै रस की सुन जियरा होय बिहाल ।
नन्द महर कौ बड़ौ रसीलौ
नयौ फाग जोबन गरबीलौ
झूमक दै नाँचै मटकीलौ
पाय अकेली संग न छाँड़ै होरी के लै ख्याल ॥

रंगीली होरी आई, धूम मची बरसाने ॥

छैला दूल्ह आज बन्यौ है
सखा संग लै आय अर्‌यो है
रात दिना को खेल मच्यौ है
नगारिन जोरी आई, धूम मची बरसाने।
ढप बाजत सुन के ब्रजनारी
चाव भई खेलन की भारी
निकर परीं लै भानुदुलारी
रूप की घटा सुहाई, धूम मची बरसाने।
धाय चलीं बिन घूँघट मारै
मतवारी अँचरा न सँवारै
अनवट और बिछुवन छनकारें
लगीं गावन सुखदाई, धूम मची बरसाने।
चढ़े ग्वाल जोवन मदवारे
नाँचैं अखियन डोरा डारे
नेंक न मानैं बकैं उघारे
चली रंगन पिचकाई, धूम मची बरसाने।
लै हाथन फूलन की छरियाँ
लटक लटक के मारैं सखियाँ
सखा बचावैं लै फिरकैंयाँ

हार ग्वालन नें पाई, धूम मची बरसाने।
कह्यो श्याम ने सुनो रे भैया
बरसाने की चतुर लुगैया
फगुवा देवो घर बगदैया
जीत राधे पै छाई, धूम मची बरसाने॥

मेंरे मुख पै अबीर, मेंरे मुख पै अबीर,

कान्हा ने कैसी मारी।
ये मारी वो मारी हाँ मारी रे॥
काहे की लै लई पिचकारी,
काहे को नीर, काहे को नीर, कान्हा ने ...।
कंचन की लै लई पिचकारी,
रंगन को नीर, रंगन को नीर, कान्हा ने ...।
लाज छोड़ मोय दीनी गारी,
कैसे धरूँ धीर, कैसे धरूँ धीर, कान्हा ने ...।
नरम कलैया पकर मरोरी,
ऐसौ है बेपीर, ऐसौ है बेपीर, कान्हा ने ...।
हार मेरो तोर्‌यो पकर लिपटाई,
मेरो फार्‌यो चीर, मेरो फार्‌यो चीर, कान्हा ने ...।
बीरी लै मुख आप खवावै,

मारै नैनन तीर, मारै नैनन तीर, कान्हा ने ... ।
ऊधम पै हू प्यारो लागै,
अचरज मेरी बीर, अचरज मेरी बीर, कान्हा ने ... ।
अँखियाँ प्यासी रहैं रैन दिन,
देखन यदुवीर, देखन यदुवीर, कान्हा ने ... ।
लाख लोग नगरी बसैं,
सब लागै भीर, सब लागै भीर, कान्हा ने ... ।
रसिया बिना लगै सब सूनो,
छेदै शमशीर, छेदै शमशीर, कान्हा ने ... ॥

होरी खेलै तो आय जैयौ बरसाने छैला श्याम ॥

मस्त महीना फागुन कौ सुन रसिया नन्दकुमार
मेरौ तेरौ नेह जुर्‌यो है जोवन धूँवाधार
तू साज बाज ते आय जैयो बरसाने छैला ... ।
इकलौ इकलौ जो खेलै तो गहवर मिलियौ लाल
रंग बिरंगे फूल तोर कै मारूँ तेरे गाल
तू मन की हौंस बुझाय जैयो बरसाने छैला ... ।
बरस दिना है माखन खायो चोरी कर घनश्याम
देखूँगी वा दिन तोकूँ सूधी नाय ब्रज की बाम
तू अपनो जोर जमाय जैयो बरसाने छैला ... ।
डारूँगी मैं रंग वैजंती हरौ गुलाबी लाल
भर पिचकारी मारूँ तक-तक और उड़ाऊँ गुलाल
तू फगुवा लैकै आय जैयो बरसाने छैला ... ।
लठामार जो खेलै प्यारे संग में लैयो ढाल
तक-तक लठिया मारूँ उछर बचैयो तू नन्दलाल
सिर पगिया बाँधे आय जैयो बरसाने छैला ... ॥

मैं कैसे होरी खेलूँ री, मन मोहन मुरली वारे ते ॥

ऊँची अटा पै रहन हमारी
नई-नई मैं घूँघट वारी
सबै करैं मेरी रखवारी
फाग मच्यो ढप बाजन लागे सुन लीनी पिछवारे ते ।
होरी खेल रहे गिरिधारी
गीतन की धुनि लागै प्यारी
सबरी रात नाचैं मतवारी
सुन-सुन मेरी पिंडुरी काँपै फुंदना लट्क्यौ नारे ते ।
जोबन की मदमाती सखियाँ
रंग रंग की पहरैं फरियाँ
सैन चलावैं रस की घतियाँ
होरी कौ रस लेवैं देवैं जुलमी औगुनहारे ते ।
गली-गली में फाग मच्यौ है
रात दिना कौ खेल जम्यौ है
नीको छैला श्याम नच्यौ है
झमक जाय के नाचन लागीं नन्दलाल हुरियारे ते ॥

अँगिया मैं का पै रंगवाऊँ री, रंगरेजा रंग नाय जानै ॥

ऐसी अँगिया मैं रंगवाऊँ
वाय पहर होरी खिलवाऊँ
देखत ही रसिकन बिकवाऊँ
फागुन खूब मनाऊँ री रंगरेजा रंग नाय जानै।
वा अँगिया में बाग लगाऊँ
बेला फूल चमेली लाऊँ
गूँथ-गूँथ के हार बनाऊँ
छैला को पहराऊँ री रंगरेजा रंग नाय जानै।
वाई में रंगवाऊँ पपैया
पीउ पीउ की रटन लगैया
वा में पवन चलै पुरवैया
मोरन कूँ नचवाऊँ री रंगरेजा रंग नाय जानै।
वा अँगिया में महल रंगाऊँ
वा में पचरंग पलँग बिछाऊँ
गिलम गलीचा तकिया लाऊँ
वा में प्रियतम पाऊँरी रंगरेजा रंग नाय जानै।

मेंरे मन की समझै कौन जूझ रहे रेलापेली में ॥

लोग यहाँ लाखन जुरे होरी के खिलवार,
रस को मरम न जानही जानैं कहा गमार,
चिपट जाय गुड़ की भेली में। मेंरे मन की ...।
रूप देख सब कोऊ खिचैं जो घूँघट बिच होय,
सांची प्रीति पतंग की तन मन डारै खोय,
लिपट जाय अगिन नवेली में। मेंरे मन की ...।
यह जोबन दिन चार कौ थोरे याके खेल,
रसिया को रस जो पिये अमर होय यह बेल,
रसिक क्यो बिक गयो धेली में। मेंरे मन की ...।
गुड़ की भरी परात ते मिश्री की एक डरी,
मोधू की सब रात बुरी छैला की एक घरी,
धर्‌यो का ठेला ठेली में। मेंरे मन की ...।
बाँको रसिया नान कौ बाँकौ वा कौ प्रेम,
जाकौ जग फीको लगै सोई साधै नेम,
चढ़े गिरिधर की हवेली में। मेंरे मन की ... ॥

होरी आई री बिरज में होरी आई री ॥

गैल गिरारे होरी है रही घर घर छाई री ॥
अपनी अपनी जोट लाग ते सब कोई खेलैं फाग,
बड़ौ अनोखौ नन्द महर को जोट न देखै लाग।
कोई खेलै छिरका छिरकी पिचकारी लै मार,
मोहन ऐसी होरी खेलै गागर सिर पै ढार।
रंग-रंग के लियो गुलालन मूठ मूठ रहे मार,
नन्द को ऐसो भयौ खिलारी भर-भर पोटैं मार।
कोई उझकै सैन चलावै घूँघट देय उघार,
नन्द को ऐसो है मदमातौ चोली देवै फार।
कोई छाँड़े हरो गुलाबी रंग बैजंती लाल,
श्याम रंग में भीतर बाहर रंग दीनी गोपाल।
सबै रंग मिट जावैं होरी के धोये एक बार,
श्याम रंग दिन दूनो निखरै धोऔ बार हजार ॥

चढ़ के नन्द गाँव पै आई, गोपी बरसाने वारी ॥

नंद भवन घेर्‌यो है जाई
ऊपर चढ़ के छिपे कन्हाई
पकरी जाय यशोदा माई
कहाँ छिपाये कुँवर आपने बोलो महतारी।
हमें दिखाओ अपने लाला
किये लाल यशुदा के गाला
रंगन करीं महर बेहाला
दियौ बताय यशोदा ऊपर ढूँढौ गिरिधारी।
ऊपर चढ़ पकरी मनमोहन
सब मिलके लागी हैं गोहन
गुलचा दिये कटीली भौंहन
कैसे आय छिप्यौ होरी में भड़ुआ बटमारी।
छीन लई मुरली पीताम्बर
दियो ओढ़ाय रंगीली चूनर
लहँगा फरिया मोतिन झालर
काजर बेंदी कमर कौंधनी करी एक नारी।
सब मिलि घूँघट मार नचावैं
यशुदा की छोरी बतरावैं
देख-देख सब हँसैं हँसावैं

यशुदा की गोदी बैठारी लाली है प्यारी।
मैया भेद समझ ना पाई
बहू श्याम की यह मन भाई
या आसा दुलरावै माई
चूमत समझ हँसी सब गोपीं हँसैं देय तारी ॥

होरी में कीरति ने समधिन जशुदा न्योत बुलाई है ॥

कीरति ने अगबानी कीनी
कृपा हमें अपनी कर लीनी
बहुतै रस सुख सब कूँ दीनी
तुम तो नामी दाता तन मन सबहि लुटाई है।
एक बात सांची बोलो तुम
कृष्ण पिता वसुदेव सुने हम
कहाँ कियौ तुम उनसौं संगम
शंका भरी तुम्हारी बतियाँ समझ न आई हैं।
नंद महर सूधे हैं गोरे
पूत चोर लम्पट और कारे
मिले न कुल की रीति तिहारे
खोलो या को भेद गुपत कछु बात छिपाई है।
हम कूँ अपनो करि कें मानों

नन्दगाँव सोई बरसानों
नंद समान भानु कूँ जानों
बसौं भानु ढिंग सबै तिहारी रीति सुहाई है।
मुसकाईं सुन यशुदा रानी
हँस बोलीं रस मधुरी बानी
हमरी बात तुमनेइ बखानी
नन्दगाँव चल बसौ नन्द ने आस लगाई है।
हँसीं सबै बरसाने वारी
समधिन नहिं यह भोरी भारी
गावन लागीं मिलि सब गारी
बरसै रस बरसाने राधा कृपा जनाई है॥

गोरी बरसाने की गावैं गारी होरी में लै नाम ॥

पहली गारी है यसुदा की
जाकौ पूत धूत चालाकी
रीति पिता सौं मिलै न जाकी
गोरे भोरे नन्दराय पै पूत कहाँ ते श्याम।
दूजी गारी नन्दराय की
अति चंचल घरवारी जाकी
दादी हू नहिं जात पांत की
देवमीढ़ बाबा क्षत्रिय ने करी बनेंनी भाम।
तीजी गारी बलदाऊ की
होरी में गति देखी जाकी
संग के हारे हुरियारन की
घोटा लगै भाँग कौ ऊपर वारुणी छ्कै ललाम।
चौथी गारी गिरिधारी की
पितु वसुदेव सुनत मति थाकी
नंद घरनि माता है जाकी
पूत एक द्वै बाप सुने नहिं कुल के बिगरे काम।
निश्चय भयौ न कौंन बाप है
घर घर चोरी करन जात है
गोरिन घर मटकी चाटत है

माँगे भात न मिल्यो फेर मागत न लाज हे राम।
जमुना न्हावें गोप लली जब
वस्त्र खोल तट धरे नग्न सब
चीर चुराय चढ़े कदमन तब
बाहर नगन बुलाई ऐसे बिगरे काम तमाम।
सूने भवनन जाय ढिंढोरे
माखन चोर मटुकिया फोरे
लालच जीभ मात पित छोरे
झाँकत डोलै पर नारिन कौ नन्दगाँव बदनाम।
नन्दराय घर भर्‍यो रतन है
माथे पूँछ मोर धार्‍यो है
गुंजा की माला लटकत है
रस नहिं जानै गाय चरैया चोरी कौ है काम।
हँस मुसकानै नन्द कौ लाला
तिरछी देख हसैं ब्रजबाला
बूंका बंदन उड़े गुलाला
तरसैं देव देख ब्रज होरी आनंद आठों जाम॥

आज भोर बरसाने वारी आईं नन्दगाँव पै धाय ॥

नन्द द्वार पै मिल्यौ पौरिया
पटक पछारी भरीं कौरिया
करी पिटाई भज्यो बौरिया
निधरक घुसीं नन्द मंदिर में घेरी जसुदा माय।
पकर नचाई जसुदा रानी
कहाँ तिहारे दधि के दानी
होरी के रस में बौरानी
गावैं गीत फाग के प्यारे बकैं जोइ मन भाय।
नन्दभवन में शोर मचाई
मानों फौज बड़ी चढ़ि आई
ढूँढ रहीं सब जादो राई
हरि भाजे, हलधर हू भाजे, भाजे हैं नन्दराय।
ऊपर अटा चढ़ गिरिधारी
सखन नाम लै टेरैं भारी
आओ चढ़ आई ब्रजनारी
टेर सुनत ग्वारिया भजे सब दौरे होड़ लगाय।
द्वारन मूंद रहीं ब्रज गोपी

प्रेम भरी हरि पै तब कोपीं
छीने बसन लाज सब लोपी
गुलचा दियौ कियौ मन भायौ फगुवा लियो धराय ॥

कान्हा ते कैसे खेलूँगी होरी ॥

सबरे ब्रज में धूम मचाई, लै मेरो नाम बकै होरी।
नई-नई मैंतो आई नवेली, कबहूँ न खेली ब्रज होरी।
होरी के हुरियारे छैला, जान न देवैं कोई गोरी।
कैसे बचेगी या होरी में, पीहर की चूनर कोरी।
पोटन भरे गुलाल छैल सब, लै-लै माँट न रंग घोरी।
ऐसी होरी जरै निगोरी, बाहर भीतर रंग बोरी।
होरी में बरजोरी करके, सबकी लाज मटकी फोरी।
रसिकन के छल-बल नहिं जानूँ, दाव पेंच में मैं भोरी।

सुन ब्रज के ठगैल मेरी छाँड़ दै रे गैल,
ऐसी होरी तेरी कैसी होरी हाय मची ॥
अबही तो मैं ब्रज में आई
या ब्रज रीति मैं जान न पाई
तोते जान ना पहिचान मैं हूँ नारी अनजान,
कैसे बीच डगर में फाग रची।
मैं हूँ बेटी बड़े घरन की
नयी ब्याहुली मैं लाजन की
मेरी चूनर छापेदार मेरी सारी जरतार,
हटो छाँड़ो लंगराई मोहे नांय जची।
मोहन नैनन तीर चलावै
घूँघट चीर जिया बिंध जावै
मेरे नैनन तीर ऐसे लागे समसीर,
हटो चल्यो नहिं जावै मेरी कमर लची ॥

बरसाने की गोपीं नन्दगाँव में होरी खेलन आईं ॥

नन्दगाँव पै टेर लगाई
नाचैं गावैं धूमस छाई
बाहर आवौ छैल कन्हाई
काहे छिपे भवन में गारी दिवाय आपनी माई ।
मिलि भीतर ते लाईं मोहन
केशर माँट लगीं तब ढोरन
शीत लगै नहिं कहुं कोमल तन
आंचर ओट करैं हरि ऊपर रोहिणी जसुदा माई ।
कहैं रोहिणी सुनहु किशोरी
नन्दराय पै रंग भरो री
मांगे देहु श्याम हमको री
मांगे ते जो मिलै, देहु होरी में हमें कन्हाई ।
इतते सुबल राम सब छाये
रंग माट गोपिन पर नाये
गोरस लाय शीश ढरकाये
देत असीस चलीं ब्रजनारी फगुवा लै मन भाई ॥

जै जै नित्यधाम बरसानो, श्याम जहाँ पै गारी खाय ॥

अबलौं होरी नित नित होवै
अबलौं हरि नित गारी खावै
गारी सुन सुन हरि सुख पावै
एक एक गारी पै कोटि स्तुति आदर नहिं भाय।
गावैं रस में मिल ब्रजनारी
तुम अब सुनों लाल गिरिधारी
पूछौ तुम अपनी महतारी
गर्ग मुनी ने कैसे पितु वसुदेव बताये आय।
गाय चराय करी रसिकाई
दासी पै मन रहे लुभाई
तीन ठौर ते टेढ़ी पाई
आप त्रिभंग बहू वह कुबरी लीनी जोट मिलाय।
बड़ी खिलार भुआ है तेरी
कुंती ने सुत जायो क्वारी
सूरज ते कर लीनी यारी
पीछे ब्याह पांडु ते रोप्यौ धापी कैसेहू नाय।
ब्याह के कौतुक हैं भारे
बेटा पाँच भये बलवारे
पिता सबन के न्यारे-न्यारे

सात खसम कर लिये तऊ सतवंती रही कहाय।
सुनी सती एक भाभी प्यारी
पाँच पुरुष की एकै नारी
बीच सभा में भयी उघारी
अपनी नाक कटत जब देखी दौरे करी सहाय।
बहन फुफेरी जाय हरी तुम
बहू बनावत आई न सरम
धरम धींगरन के ये ऊधम
भूअन ते जाय सास कही तुम ऐसी करी हँसाय।
बहिन तिहारी क्वारी के ढंग
भजी सुभद्रा अर्जुन लै संग
भाई पति है यारी के रंग
वह यारी तुमने जुरवाई भारी गजबहि ढाय।
गारी सुनत श्याम मुसकाये
लै लै पोट गुलाल उड़ाये
गोपिन मुख पै मूठ चलाये
ये गारी सुनवे को हरि अबहू बरसाने धाय॥

आज रंगीली होरी रे रसिया ॥

साज सिंगार हाथ लठिया लै
घर घर ते चली गोरी रे रसिया।
जा दिन ते लगी बसंत पंचमी
ता दिन ते लगी होरी रे रसिया।
सोरह बरस की चौदह बरस की
कोई उमर की थोरी रे रसिया।
कोऊ आवै लपकत कोऊ आवै झपकत
कोई भौंह मरोरी रे रसिया।
लै लै ढाल चले नन्द गैंया
हरि हलधर की जोरी रे रसिया।
गली रंगीली लठामार भई
भजे ग्वारिया चोरी रे रसिया।
दिये छुड़ाय कृष्ण बलदाऊ
भानुलली बड़ी भोरी रे रसिया ॥

जतन सौं राखियो हमारौ गिल्ली डंडा ॥

समधिन सौत छिनार कहावै
सोरह यार गरे लिपटावै
बत्तिस करके सैन चलावै डारै ठगनी फंदा।
समधिन सौत छिनार के नखरे
मोह लिये सुर नर मुनि सिगरे
बड़े-बड़े तपधारी मोहे बाबाजी मुछमुण्डा।
समधिन सौत छिनार रसीली
याकी तिरछी भौंह कटीली
भीतर लै बाहर भरमावै ये ही याको धन्धा।
समधिन सौत छिनार है गन्दी
खसम अनेक किये छरछंदी
बूढ़े वर ते झिकीं न सब जग किये रंड के भंडा।
समधिन सौत छिनट्टी डोलै
छोड़े नाय कोई बिन बोलै
पंडित को खंडित कर डारे और पुजारी पंडा।
समधिन सौत छिनार बेसरम
रात दिना करवावै कुकरम
तीन रंग की चोली पहरे गली-गली फरसंडा।
समधिन सौत छिनार उचंगी

पहरी औढ़ी तौहू नंगी
राजा ते भंगी तक याके यार बने मुस्तंडा।
समधिन सौत है जादूगरनी
छिन-छिन रंग और रूप बदलनी
समधी ने ऐसी धर दाबी जन दियो भारी अंडा
(सब ब्रह्मंडा) ॥

रंग मत डारै रे अरे साँवरिया ॥

साँवरिया होरी के खिलार, रंग मत डारै ...।
मेरी सास बड़ी लड़हारी रे सुन साँवरिया,
मेरी ननदी फरिया फार, रंग मत डारै ...।
मेरे तो बलम की रीति बुरी सुन साँवरिया,
वो हरदम रखै कटार, रंग मत डारै ...।
मेरे ससुर की मूंछ बड़ी है साँवरिया,
वो तो लम्बी छल्लेदार, रंग मत डारै ...।
सवा लाख की मेरी चूनर साँवरिया,
मेरी साड़ी तो जरतार, रंग मत डारै ...।
तेरी कमरिया को कहा बिगरैगो साँवरिया,
जब चाहे झरकार, रंग मत डारै ...॥

खेलो-खेलो रे साँवरिया होरी संभर-संभर के आज ॥

हारे तुम होरी खेलत कल गये यहा ते भाज,
फिर होरी खेलन को कैसे तुम आये महाराज।
टेढ़ी चाल मुकुट टेढ़ो टेढ़ी चितवन सब साज,
सूधौ तुम्हें आज हम करिहैं तुम छलियन सरताज।
होरी में तुम गारी गावत गारी तुम को छाज,
द्वै बापन के बारे याते कारे तुम्हें न लाज।
बाँस बँसुरिया पोली-पोली वा पै इतनों नाज,
लठामार में टूटैगी बैरिन अधरन रही गाज।
बतरावन में पकर लियौ झपटीं जैसे सब बाज,
नारि साँवरी करके नचवत होरी भरे समाज॥

मेरी सास लड़ै मेरी ननद लड़ै

तेरी कैसी पड़ गई लाग ॥
रोज-रोज तेरी होरी औ बरजोरी में दै दऊँ आग ॥
कोई नवेली घूँघट मारे घूँघट उझकै आय,
कैसे निकसें बकै उघारे हेला हेल मचाय।
गलियन-गलियन फेरा देवै रोकै टोकै झगरै,
लपटै झपटै फरिया फारै मोतिन माँग बिखेरै।
छोड़ूँगी मैं ब्रज कौ बसिबौ ह्याँ की रीति अनीति,
गोरे गालन पै पिचकारी छतियन कौ बन्यौ मीत।
पहले भरे गुलाल आँख में पीछे काढ़ै आय,
फूँकै आँख रसीली फूँकन निरखै रूप अघाय।
पहले ऊधम करै अनौखे पीछे जोरै हाथ,
पैंया परै रसीली बतियन और नवावै माथ।
कौन बिकैगी नार नवेली ऐसी बानन देख,
जोबन नयो रसीलो मोहन उठत कछुत मुख रेख ॥

ठाढ़ी अपनी अटरिया पै गारी दै गयो दैया ॥

लै-लै मेरो नाम करी मोकूँ बदनाम,
कैसे छोड़ूँ नन्दगाँव मेरी मैया।
आवै है अचम्भो मेरो नाम कहाँ ते जान्यो,
नई-नई आई मैं लुगैया।
गारी जो सुनाई और मंद मुसकाई,
मेरे है गई पार नजरिया।
मीठी-मीठी गारी दैकें सब कुछ हर लियौ,
होरी गावै जसुदा को छैया।
ऐसी बुरी होरी आई जामें गारी मन भाई,
कुल की लाज नसैया।
देखत सरम आवै देखे बिन न रहावै,
है कोई गैल बतैया।
अटा चढ़ूँ बार बार कर बहानों हजार,
तऊ अब होय हँसैया ॥

होरी खेलैं राधा यदुवीर, बिरज में हरररररर ।

रंगन बरसै नीर बिरज में झरररररर ॥
इतते कान्हा धूम मचाये
हुरियारे सब संग में लाये
फेंटा कस-कस फाग जमाये
उछर-उछर के नाच दिखाये
होरी गाय रहे भई भीर बिरज में अरररररर ।
उत ते आईं राधा प्यारी
संग में हुरियारीं मतवारी
कसके कमर करी तैयारी
गूंठा मार नाच रहीं प्यारी
गारी गाय रहीं तज धीर बिरज में गरररररर ।
गोरी-गोरी जसुदा मैया
गोरे बाप और गोरे भैया
काहे कारे भये कन्हैया
कहा मरम की बात है दैया
कहाँ खाई जसुदा खीर बिरज में खरररररर ।
नाम गरग ने तेरे धराये
त्यारे पितु वसुदेव बताये
नन्दराय जसुदा को ब्याहे

जसुदा कहँ वसुदेव को पाये
वो तो रहें जसुदा के तीर बिरज में तररररर।
प्रीति करत तुम देओ गारी
गोरी तुम सब मन की कारीं
कारे नैनन रेखा कारी
हाव भाव चितवन की कारी
कारी बेनी त्यारे सीर बिरज में सररररर॥

रंग चतुर गुजरिया डार गई री॥

मटकी उचवे को मोय टेरयो
झालो मार बुलाय गई री, रंग चतुर ...।
मटकी ते मैंने हाथ लगायो
गगरी मोपै ढुराय गई री, रंग चतुर ...।
घूँघट में लगी भोरी भारी
गूंठा मार दिखाय गई री, रंग चतुर ...।

राधा नव ब्रजबाल होरी खेलैं ।

नंदलाल ब्रजबाल होरी खेलैं ॥
बरसाने में पकरि कृष्ण को छीन पीताम्बर छीनी मुरली
भर पिचकारी गालन मारी नैनन मारी छतियन मारी
सररररररर, राधा नव ब्रजबाल होरी खेलैं... ।
अँखियन में कजरा जु लगायो रंगबिरंगो भड़ुआ कर दियौ
फगुवा लै कें गुलचा मारै बोली ऐयो फिर खेलन कूँ
अरररररररर, राधा नव ब्रजबाल होरी खेलैं ... ।
छूट के आये ह्याँ मनमोहन खीजीं सब ग्वालन की टोलन
भर-भर पोट लदे अपने सिर रहे उड़ाय अबीर की झोरन
झरररररररर, राधा नव ब्रजबाल होरी खेलैं ... ।
लाल भई सब गोपी जमुना लाल भये सब बादर लाल
लाल चूनरी लालइ सारी भई मुतियन की माल
लरररररररर, राधा नव ब्रजबाल होरी खेलैं ... ॥

होरी की मौज आई ऐ श्याम चले आओ।

मैदान फाग का है, तुम जोर आजमाओ॥
तू है सजीला रसिया, मैं हूँ नवेली गोरी,
दोनों के जंग में तुम, अपना हुनर दिखाओ।
चोरी से रंग डाला, कल भाग जो गये थे,
कर लूं तमन्ना पूरी, यारा जरा रुक जाओ।
रुसवा करूँगी तुझको, रसिया मैं बीच महफ़िल,
माशूका तू मैं आशिक, यूं गाँठ तो जुड़वावो॥
साँवरिया होरी खेलन आयौ बरसाने में होरी॥
कृष्ण कहें तुम सुनो सखाऔ रहियौ चौकस जोरी,
पकरैंगी ये चतुर बहुत हैं जानों ना इन्हे भोरी।
भर पिचकारी छोड़ो इनपै रहै न चूनर कोरी,
होरी गाओ रंग जमाओ भानु-भवन की पौरी।
खेल भयो रंग होरी कौ सब केसर रंग लै घोरी,
भर-भर पोट गुलाल उड़ावैं मारैं भर-भर झोरी।
ढोलक झाँझ बजै ढप महुवर और नगारे की जोरी,
साँवरिया की वंशी बाजै नाचैं राधा गोरी।
नाचत में लई पकर श्याम कौ गोपिन ने कियौ चोरी,
लहँगा फरिया अँगिया लै छोरा ते कर दियौ छोरी।
दियौ बनाय साँवरी दुलहन मुख पै घूँघट थोरी,

दूल्हा भेष कियौ राधे को कर दियो है गठ जोरी।
ब्याह कियो होरी की गारिन लोक लाज सब तोरी,
गौने चार कियौ गहवर वन चिरजीयौ यह जोरी॥

होरी में काहे भागै अरे लगवाय लै, कजरा नंद जू के॥

काजर तोय लगाऊँ ऐसो
तिलक लगावै सज के जैसो
छैला अपनो साज आज सजवाय लै, ढोटा नंद ...।
तिरछी चाल चलै ऐंडातो
सबरे ब्रज डोलै मदमातो
ऐंठो डोलै सबरी ऐंठ झराय लै, छोरा नंद ...।
बहुत दिना तक मटकी फोरी
बहुतै करी तैंनें माखन चोरी
अपनी सबरी करनी को फल पाय लै, लाला नंद ...।
भर-भर डारूँ रंग को गड़ुवा
तोय करूँ होरी को भड़ुवा
बन्यो ठन्यो डोलै रसिया रस पाय लै, लाड़ले नंद ...॥

मैं तो होरी खेलन जाऊँगी, नांय मानै मेरो मनुवा ॥

होरी को अलबेलो छैला
मैं तो वाही ते नेह लगाऊँगी, नाय मानै ... ।
भर पिचकारी रंग की मारूँ
अबीर गुलाल उड़ाऊँगी, नाय मानै ... ।
ऐसो रंग डारूँ कारे पै
गोरो आज बनाऊँगी, नाय मानै ... ।
दै गुलचा सूधो कर डारूँ
सबरी टेड़ निकारूँगी, नाय मानै ... ।
चीर हरन को बदलो लूँगी
पीताम्बर छुड़ाऊँगी, नाय मानै ... ।
हरि को नंगो कर होरी में
नैनन नैन लड़ाऊँगी, नाय मानै ... ॥

होरी गये रंग डार्‌यो रे काहे नन्दलाला ॥

फागुन गयो गई धूरेणी,
अब तैंने गड़ुआ ढार्‌यो रे काहे नन्दलाला।
जुल्म करै तेरी मति बौराई,
ऐसौ ढंग सँवार्‌यो रे काहे नन्दलाला।
तेरे लोक लाज ना नेंकहु,
कारो सब कछु हार्‌यो रे काहे नन्दलाला।
आप भयो बदनाम बिरज में,
गलियन नाम निकार्‌यो रे काहे नन्दलाला।
मेरी बात चलेगी घर-घर,
घूँघट मेरो टार्‌यो रे काहे नन्दलाला।
ब्रजराजा कौ बेटा है के,
अपनो नाम बिगार्‌यो रे काहे नन्दलाला।
घर-घर चोरी करै निधरके,
चोर नाम यह धार्‌यो रे काहे नन्दलाला।
ब्याही अनब्याही परनारी,
नेंकहु नाय बिचार्‌यो रे काहे नन्दलाला।
औगुन भर्‌यो श्याम तौहू ब्रज,
सगरो यापै वार्‌यो रे काहे नन्दलाला।

पनघट माधुरी

गोपिन की लागी भीर, पनघट प्यारो लगै ॥

ब्रज की गोरी चली जुरि मिल कैं,
पीछे लग्यौ बलबीर, पनघट प्यारो लगै।
एक पनिहारी दूजी ते बोली,
कैसे बचूँ मेरी बीर, पनघट प्यारो लगै।
नंद जू कौ छौना पीछे पर्यो है,
नैना के मारै हँस तीर, पनघट प्यारो लगै।
चुभ-चुभ जावै वाकी काजर रेखा,
मेरी अँखियन छलकै नीर, पनघट प्यारो लगै।
पायन छाया मुकुट छुवावै,
छाँह करै लै चीर, पनघट प्यारो लगै।
मो पै पानी वारै पीवै,
कैसे धरूँ मैं धीर, पनघट प्यारो लगै।
नैनन ही में हा हा खावै,
बहुत दिखावै पीर, पनघट प्यारो लगै।
कबहूँ जोरै हाथ गरज ते,
देखत होय अधीर, पनघट प्यारो लगै।
प्रेमी रसिया के फंदन ते,
बचवो टेढ़ी खीर, पनघट प्यारो लगै ॥

श्याम नैयनों की मारै कटार, पनघट नांय जाऊँ ॥

आगै चलूं तो आगै आवै
पीछे मुड़ू तो संग मुड़ जावै
ऐसी इकली फँसी बिच धार, पनघट ... ।
बैठ जाऊँ तो बैठे संग-संग
छूवन लागै सबरो अंग-अंग
वो तो विनती करै बार-बार, पनघट ... ।
मैं ही ऐसी कहा अनोंखी
मैं ही लागों वाको चोखी
भँवरा सो करै गुंजार, पनघट नांय जाऊँ ॥

कहाँ जाऊँ कहा करूँ गिरिधर अटकै ॥

गगरी भरन पनघट पै गई
गगरी फोर दई चूनर भिजई
भीजी भीजी कैसे आऊँ चटकै मटकै।
दही बेचवे घर ते निकसी
दही लूट लई मटकी फोर दई
कैसौ नयौ भयौ दानी दुलरी झटकै।
साँकरी गली में मैं जाय रही
मोय घेर लई मोय गैल न दई
कैसौ कारो मन कौ लपटै झपटै।
हार मेरो तोरयो पकर के खैंच्यो
बरजोरी करी मैंतो लाजन मरी
कैसे कहूँ कौन सुनै कौन याको हटकै ॥

कोई इकली जैयो मत गोरी ॥

जो तू जावैगी पनघट पै, ठाढ़ो पावैगी पनघट पै।
गगरी फुरवैयो मत गोरी।
जो तू जावैगी दधि बेचन, आगे पावैगी नंदनंदन।
माखन लुटवैयो मत गोरी।
जो तू जावैगी जमुना पै, मोहन पावैगी जमुना पै।
फरिया चुरवैयो मत गोरी।
जो तू जावैगी वन कुंजन, बैठ्यो पावैगी मनमोहन।
वा ते बतरैयो मत गोरी ॥

मेरे पीछे ते मारै हेला, ये नंद जू को ढोटा अलबेला ॥

घाट बाट औ गली गिलारे, डोलै बन के छैला।
लै लै मेरो नाम बुलावै, जो कहूँ मिलै अकेला।
पीताम्बर को झालो देवै, देख कुंज की गैला।
एक दिन मिल्यो न्हात यमुना पै, दै पानी को रेला।
सास ननद के बीच हों बैठी, अचक मार गयो डेला ॥

इंडुरी मेरी लै गयो साँवरिया ॥

पनघट पै वह आयो रसिया, मैं भर रही री गगरिया
गगरी भरके चली मैं उचवे, पकर्‌यो कर लंगरैया।
झटक छुडाय कलैया अपनी,
ओढ़न लगी मैं चुनरिया।
इंडुरी लै गयो नंद महर को, देखत मैं रही डागरिया।
इंडुरी संग मेरो मनहू लै गयो,
कर गयो मोकूँ बावरिया।
जाने कैसे जादू कर गई, वाकी बाँस की बँसुरिया ॥

कन्हैया मेरी गगरी उचाय ॥

इकली ठाढ़ी भरकें गगरी, कोई न उचवाय।
ऐयो रे मेरे नंद के खिलारी, दीजो हाथ लगाय।
जिठानी मेरी बैरिन भई, देवुरानी सोर मचाय।
मैं इकली कहा कहूँ रे रसिया, तू ही गैल बताय।
जब जब तेरी बंशी बाजै, मोकूँ नींद न आय।
पलका पै करवट बदलत ही, सिगरी रात बताय।
जब-जब तू गैयन को टेरै, ऊँची बाँह कराय।
देख देख तेरी मधुरी छवि, मेरो मन बिक जाय ॥

नंद जू को छैया अलबेलौ, मेरी मटकी में मार गयो डेलो ॥

गगरी भरी चली मैं उचके,
आयो कहूँते छैलो, मेरी ...।
चूनर सारी सबरी भीजी,
पानी सबरो फैलो, मेरी ...।
चूनर मेरी लग्यो निचोरन,
कारो मन को मैलो, मेरी ...।
कबहूँ पनघट औ यमुना तट,
वंशी बजावै अकेलो, मेरी ...।
कबहूँ घेरै खोर साँकरी,
लै ग्वालन को मेलो, मेरी ... ॥

श्याम इंडुरी दे दो मैं पनिया भरवे जाऊँगी ।

जो श्याम तुम मेरी इंडुरी न दोगे,
इंडुरी के बदले मैं मुंदरी चुराऊँगी ।
जो श्याम तुम मेरी कमरी न दोगे,
कमरी के बदले मैं लकुटी चुराऊँगी ।
जो श्याम तुम मेरी बंशी न दोगे,
बंशी के बदले मैं मुकुट चुराऊँगी ।

ले गयो चीर मुरारी, कन्हैया लाल बनवारी ॥

लैकें चीर कदम चढ़ बैठे
हम जल माहिं उघारी, कन्हैया ...।
चीर हमारी देओ लालन
हमको लाज लगै भारी, कन्हैया ...।
चीर तुम्हारो तबै मिलैगो
जल ते है जाओ न्यारी, कन्हैया ...।
जल ते न्यारी कैसे होवैं
लोग हँसैं दै तारी, कन्हैया ...।
लोग हँसैं तो हँसवै देओ
हम हैं पुरुष तुम नारी, कन्हैया ...।
जल के पार बाँध बाँह आई
चीर दियो गिरधारी, कन्हैया ...।
बोले श्याम सुनो ब्रज बाला
पूजा सफल तुम्हारी, कन्हैया ...।
ब्रज कर देवी पूजी तुमनें
सिद्ध भई सब प्यारी, कन्हैया ...।
तुम संग रास करूँ वृन्दावन
यमुना तट सुखकारी, कन्हैया ... ॥

यमुना पै श्याम बुलाय गयो री ॥
सास ननद जिठनी बिच बैठी,
पीताम्बर छोर हिलाय गयो री।
कदम ओट है मन कौ रसिया,
झालो मोहि दिखाय गयो री।
दूर जाय के वन कुंजन में,
बंशी मधुर बजाय गयो री।
बंशी में लै नाम हमारो,
गीत रसीले गाय गयो री ॥

उमड़ रह्यो उमड़ रह्यो,
दरसन को मेरो मन उमड़ रह्यो ॥
निरमल नीर बहै यमुना को,
न्हावन को मेरो मन उमड़ रह्यो।
यमुना तीर रहै एक ढोटा,
देखन को मेरो मन उमड़ रह्यो।
सुन्दर स्याम सरीर सलोना,
परसन को मेरो मन उमड़ रह्यो।
मधुरे मधुरे बंशी बजावै,
सुनवे के मेरो मन उमड़ रह्यो ॥

कान्हा काहे को हमारी तैंने फोरी गगरी।

प्यारी काहे को हमारी तैंनें छीनी बंसरी॥
मैं तो यमुना नीर भरन गई पायो कुँवर कन्हाई।
इकली मोते बीच बनी में नाहक रार मचाई
गगरी फोरी तैंनें दीनी पीछे कँकरी।
बंसी बिन मैं चैन न पाऊं बंसी देओ हमारी
जो नहिं बंसी देओ भामिनी का गति करूँ तिहारी
ये बंसी प्राणन ते प्यारी देखो हमरी।
ग्वाल बाल नित ही लैकें क्यों रोकैं गैल हमारी
नित प्रति रार मचावै मोते नटखट कृष्ण मुरारी।
ठाड़ो पनघट रार मचावै रोकै मेरी डगरी
काहे रार बढ़ावै मोते ओ गोरी ब्रजनारी
लै गई बंसी देओ मेरी ओ बरसाने वारी
न्याय करैगी भानु कुंवरि दाता जो भोरी-भारी॥

देख्यो री आज बांका साँवरिया ॥

मैं यमुना जी न्हाय रही थी,
आयो री वो तो यमुना किनरिया।
कमल सो मुख ओ चंदा सी चितवन,
री अँखियाँ जैसे कमल पंखुरियां।
अधरन मधुरी बंसी बाजी,
भूल गई मैंतो भरन गगरिया।
न्हावन धोवन भूल गई मैं,
धुन सुन रुक गई यमुना लहरिया।
लहँगा ओढ़ पहर लई चूनर,
ऐसी बाजी वो बैरिन बँसुरिया।
जैसी बंसी तैसो बजैया,
बिक गई मैं बिन मोल गुजरिया॥

पनघट पै आयो नंद लाल, सखी लटक रही बैजंती माल ॥

वो आवत गगरी भरन लग्यो
भर-भर के मोय उचावन लग्यो
झट घूँघट खोल मेरो छुवत गाल, सखी ... ।
मुख मोर चली मेरे संग चल्यो
मैंतो कमल कली वोतो भँवर बन्यो
पीछे ते गावै रस के ख्याल, सखी ... ।
यह नन्द महर को है रसिया
कैसी मीठी बजावै है बंसिया
जादू चेटक के करै है जाल, सखी ... ॥

ए कान्हा छाँड़ो न मेरी बैंया ॥

पायल बाजै छन ननननननन
बिछुवा बोलैं झन ननननननन
चुरियाँ खनकैं खन ननननननन
ए कान्हा सुन लेंगी ब्रज की लुगैया ।
अटकै मत फूटैगी गगरी
सूनी नांय यमुना की डगरी
चतुरन की यह गोकुल नगरी
ए कान्हा मान परूँ तेरे पैयाँ ॥

आई-आई नन्द के रे जुलमी, मत जा मत जा बेदरदी ॥

ऐसी तैंनें मारी कांकरिया
फूटी जो मेरी गगरिया
भीजी-भीजी नंद के रे जुलमी रे मत जा ... ।
भीजी हीरा जड़ी मेरी अँगिया
बिगरी मेरी सारी औ चुनरिया
भाजै भजै काहे अरे जुलमी मत जा ... ।
पहले पहल मन आई बहुरिया
कैसे जाऊँ सब हँसैं गामरिया
कैसी करी तैंनें नंद के रे जुलमी मत जा ... ।
आज तैंनें बहुत अनीती करी
ऐसी देखी न सुनी कहुं अचगरी
डरै नैंक न नंद के रे जुलमी रे मत जा ... ॥

चोर शिखामणि

ऐसौ ढीठ भयौ नंदलाला, ब्रज में धूम मचायो है ॥

मैया री या ब्रज कौ बसिवौ
हाय कठिन है ह्याँ कौ रहिबौ
नये-नये ऊधम कौ सहिबौ
सास नन्द ते होय फजीतो, नित कौ दायो है ।
ग्वाल बाल लै घर में आवै
बछरा खोल कहूँ छिप जावै
बछरा कूदें वह भज जावै
वन-वन बछरा ढूँढन जावैं, गैल भुलायो है ।
पलका पै मैं सोय रही दिन
अचक अचक आयो ताही छिन
पाटी ते बाँध्यो चोटी तिन
चोटी खोलत माखन सबरौ, झट गटकायो है ।
पिछवारे ते हेला मारे
गई देखवे घूँघट धारे
तौ लौं जुलम कियौ वह भारे
घर में दूध दही मिसरी कौ कियौ सफायौ है ॥

सगाई तेरी फिर जायेगी, चोरी छोड़ कन्हाई ॥

सुनलै प्यारे नंद लाड़ले, चतुर छैल हरजाई,
सुन-सुन के चोरी की बतियाँ, फिर गये बाम्हन नाई,
बात ये बिगर जायेगी, चोरी छोड़ कन्हाई।
दूध दही माखन बहुतेरो, घैया और मलाई,
काहे माँगे दान दही कौ, गैल गिलारे जाई,
समझ कब पर जायेगी, चोरी छोड़ कन्हाई।
तेरे कारन नंदराय की, घर-घर होय हंसाई,
बरसानें की राजकुंवरी सों, तोरी बात चलाई,
बुराई तेरी है जायेगी, चोरी छोड़ कन्हाई॥

मैया मेरे बैर परी हैं ब्रज की गोपी फरिया फार ॥

लालाजी कह मोय बुलावैं
घर में पट्टा पै बैठावैं
हँस हँस सैनन ते बतरावैं
मैया बेटा हम दोउ भोरे भोरेन को न गुजार।
विनती कर माखनै खवावैं
वंशी सुन के नाँच नचावैं
जान न देवै आँख दिखावैं
जब मैं चलूं लगावैं चोरी, नाहक ठानैं रार।

पनघट पै ये झालो देवैं
ना जाऊँ तो ऊधम देवैं
नये ढोंग नित ही रच लेवैं
फोरैं खुद मटकी पै मेरो नाम लगावैं नार।
इक दिन खोर साँकरी पाई
बोली मैं करवाऊँ सगाई
कारे की को करै सगाई
मैंने कही यहाँ पै तेरी नाय गरैगी दार।
आपै दूध दही लुढकावैं
मेरे सिर पै दोष लगावैं
सैन चलावैं लिपटत आवैं
झूठे चोर बतावैं मोते ऐसी खावैं खार।
आपै घूँघट खोल दिखावैं
खोल्यो घूँघट श्याम बतावैं
पानी में ये आग लगावैं
देन उराहनो छिन-छिन आवैं, मैंने मानी हार॥

मारवन चोरन गये श्याम, घर काऊ चतुर सुनारी के ॥

पहले झाँक रहे बाहर ते
आहट लेन लगे चुपके ते,
भीतर बैठी छिप चोरी ते
जान न सकै श्याम घुस बैठे, लालच मारवन के।
छींके पै ही धरी कमोरी
चल्यो खाट चढ़ करवे चोरी
देख रही छिप के वह गोरी
लई उतार कमोरी, मारवन खायो मन भर के।
झपट पकर लई नन्द कौ लाला
संग लै चली धींगरी बाला
मारवन लग्यो हाथ औ गाला
आगे बाला पीछे लाला, चलीं महल माँ के।
घूँघट मार चलीं ब्रजनारी
पति कौ रूप धरयो बनवारी
जाय कही जसुदा महतारी
हम लाईं हरि चोर मात, आ बाहर महलन ते।
देखत हँसी यशोदा मैया
बोली यह नहीं कुँवर कन्हैया
ये तो तेरौ सजन लुगैया
भई सरम ते पानी, देखत मुख घरवारे के ॥

चोरी की सब झूठी बात मात तैनें साँची जान लई ॥

झूठीं ये सब ब्रज की बाला
झूठे झूठ बजावैं गाला
झूठे आय लगावैं जाला
झूठेई नाम लगाय सबन नें बहुतै ऐब दई।
तेरौ मैं छोटो सौ लाला,
भोरे मेरे ब्रज के ग्वाला
भोरन कूँ ये समझै ठाला
जहाँ तहाँ ये करैं बुराई इननें बैर ठई।
बाहर मोते हौले बोलैं
मीठे-मीठे रस कूँ घोलैं
बिना मोल दधि मटकी खोलैं
हँस-हँस मनुआ चोरैं मेरौ बेनु चुराय गई।
एक दिना की सुन लै मैया
ये तो बाँधन लागी गैया
बन्दर एक धँस्यौ धमधैया
माखन दूध दही सब खायौ मोपै कुपित भई।
मुस्क्यावै सुन जसुदा रानी
तेरी बात नांय है छानी
भयौ लाड़िलौ तू मनमानी
पर घर में जायवे तें लाला सीखै बात नई ॥

बन्दर लीला

धनि धनि ब्रज मण्डल के बन्दर हरि संग चोरी करवे जाँय ॥

पहलै भवनन पर चढ़ जावैं
उछर कूद कै धूम मचावैं
खिर-खिर खौं-खौं सबन डरावैं
लै डंडा जब चढ़ी गोपिका छत से सब भग जाँय।
तब तक हरि नीचे भवनन में
लगे अचक भांड खखोरन में
माखन दूध दही चोरन में
मिसरी बूरा लड्डुआ गूंजा ग्वाल सबै समगांय।
छत पर चार पांव के बानर
घर भीतर द्वै पांये बानर
नीचे ग्वाला ऊपर बानर
भई फजीती बहुत, चोर सब भागे, पकर न जाँय।
बाहर दूर सबै मिलि आये
बाँट-बाँट के भोग लगाये
हरि ने बानर खूब झिकाये
हरि के कर कमलन सों लै लै बानर माखन खांय।

रामादल के ये हैं बानर
लंका जीत्यो प्रबल युद्ध कर
मारे पापी दुष्ट निशाचर
त्रेता करी सहाय यहाँ दधि चोरी भये सहाय॥

ठगिया बड़ौ नन्द कौ छैया, ये तो चोरन कौ सरताज॥

दादा गुरु चोर मण्डल कौ
बहु छल जानैं दधि चोरन कौ
खावै फोरै दधि भाजन कौ
ग्वाल बाल चेला चंटारी श्याम गुरु महाराज।
सखा एक बन सखी नवेली
मेरी देवरानी सों बोली
भेज जिठानी अपनी भोली
बाके पीहर ते मैं आई मिलवे को इक काज।
मैं सुन गई दौर मिलवे को
पहुँची ढूँढ न पाई वाको
ढूंढन लगी बहुत मैं ताको
लौटी घर को तब समझी यह धोखे कौ सब साज॥
दूरइ ते देखे सब ग्वाला
निकसे घर ते हँस दै ताला

गूंठा मार रह्यो नन्दलाला
पछताई मैं बहुत गिरी मोपै कैसी यह गाज।
दूर खड़ी चोरन की टोली
हँस-हँस मोतें करैं ठिठोली
बोलैं मोते तू है भोली
सूने घर ते हमने टारे बन्दर खा रहे नाज।
घर कूँ छोड़ कबहु ना जैयो
चोरी कौ मत नाम लगैयो
हमनें करी भलाई सुनियो
तेंरे घर ते कुत्ता बिल्ली बन्दर टारे आज।
घर में घुसी बहुत पछताई
दूध दही की करी सफाई
सद लौनी सबरी गटकाई
खायो जो कछु हाथ पर्‌यो फैलायो जल बेकाज॥

मान लीला

मन्दिर शिखर मानगढ़ ऊपर राधा मानविहारी लाल ॥

पर्वत ब्रह्माचल बरसाने
राधा माधव रस सरसाने
बिहरैं प्रेम भरे मनमाने
गहवरवन के पश्चिम न्यारी चोटी चमकै भाल ।
बैठी सुन्दर कीरति बाला
नटखट चंचल नंद के लाला
कछु लंगराई करी गोपाला
गोरी भरी गुमान रूप की मान कियो तत्काल ।
बिनती बचन सुनै नहिं प्यारी
दर्पन दिखरावैं गिरिधारी
नहिं देखैं अधरन फरकारी
प्रियाचरण निज मोरमुकुट ते सहरावैं गोपाल ।
सखी सहचरी मेल करावैं
हरि नैंनन आँसू ढरकावैं
कबहु गावैं नृत्य दिखावैं
नाना भांति रिझावैं तब कहुं रीझै गोरी बाल ॥

चढ़ पर्वत ऊपर बैठी, खेलत में प्यारी रूठी ॥

गहवरवन में रास रच्यो, ता थेई तत्त थेई बोलै है,
नाचत अगनित फिरकैंया लै,
तब सम को दिखरावै है,
ताल अनेक ताल माला में, नाचत घूम बनैठी।
उरप तिरप गति आड़ कुआड़हि
लै दिखाय संग नाँचैं हैं,
अद्भुत लास्य देखि प्यारी कौ वाह वाह पिय भाखै है,
एक बोल पै टोक्यो लालन ठान्यो मान अनूठी।
चढ़ी मानगढ़ ऊपर मान कियो राधा ठकुरानी हैं,
सब ठाकुर कौ ठाकुर रासबिहारी की महारानी हैं,
हाथ जोड़ पिय आगे ठाढ़े तबहू तिय नहिं तूठी।
जब जब प्यारौ आगे आवै, पीठ देय मुख फेर्यो है,
मुकुट छुआवत चरनन में तब हाथ पकर कैं टार्यो है,
सब सिंगार उतार धरे फेंकी पिय दई अंगूठी।
पीताम्बर की छाँह करैं, तब हटै उठै जब व्यारै है,
नयन न देखत देखत कोरन छू नहिं जाय बचावै है,
सुनै न दीन वचन कानन में देत आँगुरी झूठी।
सखी मानगढ़ वारी की पिय किय अधीनता गिरिधारी,
वाके जतन प्रिया तब रीझीं निरखीं प्यारे बनवारी,
पिय याचत मुख बीरी प्यारी दीनी करके जूठी ॥

मन्दिर मान मानगढ़ ऊपर गहवरवन बरसाने में ॥

इकली ऊँची शिखर निराली
चारों ओर झुकी हरियाली
बिहरैं नित्य प्रिया वनमाली
प्रीति रंगीली खेल रंगीले नित गहवर वन में।
सकल कला की मूल स्वामिनी
गायी एक दिन नई रागिनी
करैं अचम्भौ सकल कामिनी
सीखन लगे श्याम प्यारी सों अति उत्कंठा में।
स्वर विस्तार प्रिया समझावैं
राग वक्र गति गाय बतावैं
मोहित पिय पूछत ही जावैं
प्यारी कोयल के कोमल सुर सुनवे लालच में।
रूठी भामिनी भानुदुलारी
बोले ते नहिं बोलीं प्यारी
देखे नहिं देखे सुकुमारी
कोमल चरन छुवन नहिं देवैं सुदृढ मान मन में।
बोले पिय सुन बिनती प्यारी
तुम उदार गुरु बनी हमारी
सीखी रागिनी कृपा तिहारी

तुम्हरे मीठे स्वर सुनवे को फिर फिर पूछ्यौ छल में।
वही राग हरि गाय सुनायौ
सुन वह राग मान बिसरायौ
रीझीं प्यारी कंठ लगायौ
प्रणय मान जाने ना नीरस कलह मान सब जग में॥

ब्याहुलौ

वृषभानुनन्दिनी सजनी बनी, प्यारी सजनी बनी ॥

कुंज महल में ब्याह रचायो, सखियन के मन ऐसी ठनी ।
श्री राधा को करौ दुलहिनी, दूल्ह याकौ श्याम धनी ।
हरद चढ़ाय बँधाय सेहरा, गीत गवावैं सकल जनी ।
कछु तो सखियाँ बनी घराती, सजी बराती बनी ठनी ।
चढ़ी बरात बजे बाजे सब, दूल्ह की घुड़चढ़ी मनी ।
पाणिग्रहण कराय लली कौ, लाल भये राधारमनी ।
सखी पुरोहित मंत्र उचारैं, पड़ी भाँवरी सात गनी ।
कंकण छोरन चले लालजी, पकर न पावैं छोर तनी ।
प्रेम चढ़्यो तन काँपन लाग्यो, हँसी सहचरी ताल धुनी ।
दूध पियौ यशुदा कौ तौहू, भई निबलता कुल लजनी ।
गोरे मात-पिता तुम कारे, बात तिहारी लाज घनी ।
तन के कारे मन के कारे, ब्याही कैसे शशिबदनी ।
लली चरन पादुका लाय के, पुजवावे सब मृदु वचनी ।
जान मान कें पूज रहे हरि, भाग मान मन्मथमथनी ।
गाँठ जोर के दई देवता, पूज रही जोरी कमनी ।
अपने मन की आशा माँगो, बोली सखी सुभग सदनी ।

बरनी ने मांग्यो बरना की, बनै बान लजनी समनी।
हरि बोले वृन्दावन देवा, कबहुँ न रूठे मनबसनी।
गाय रहीं सब गीत ब्याह के, गारी मीठी मधुहँसनी।
नाँच रहीं भई घोर कौंधनी, पायल और बिछुवा बजनी।
बज रहे ब्याह बंधाये कुंजन, जोरी कंचन हीरकनी॥

भानु की पौरी झाँकै श्याम, आयकें लुक-छिप चोरी ते ॥

नजर बचाय सबन की मोहन
लागें श्री राधा के गोहन
छद्म अनेक धरे मुख जोहन
महलन ड्योढ़ी उझकै, आँख मिलावैं गोरी ते ।
श्री वृषभानुराय की बेटी
मोहन लाल लाय उर भेंटी
गाढ़ी प्रीति कान सब मेटी
लिपटी ज्यों दामिनि बादर ते, भुज भर कौरी ते ।
वट संकेत मिले वे कबहूँ
प्रेम सरोवर खेलैं कबहूँ
श्री गहवरवन विहरैं कबहूँ
कबहूँ इकले कबहूँ सखियन सांकरि खोरी ते ।
राधा श्याम सगाई जब ते
कमल घिर्‌यो जैसे भँवरा ते
सखी रूप धर्‌यो जमाई ते
चूनर ओढ़ भानु मन्दिर में रहै छिछोरी ते ॥

कालीदह

वृन्दावन कालीदह पै मोहन, गेंद कौ खेल मचावै री ॥

जहाँ कालीनाग रह्यो भारी
सौ-सौ फन कौ वो विषधारी
जाके विष ते उड़ते पंछी जर भुंज नीचे गिर जावैं री ।
खेलत में मोहन गेंद लई
औ जमुना जल में फैंक दई
उठ श्रीदामा रिस खाय कृष्ण ते वही गेंद मँगवावै री ।
फैंट बाँध चढ़ गये कदम पै
कूद परे दह में ऊँचे ते
भारी भयो धमाकौ विषकौ जल तट चढ़ उफनावै री ।
देख्यो नाग श्याम सुन्दर कौ
रूप लजावै जो चन्दा कौ
हँस हँस निरभय खेल रह्यो औ मधुर मधुर मुस्कावै री ।
फन बढ़ाय काली फुंकारै
आँखन ते बरसै अंगारे
जीभ निकार दौर मोहन कौ अंग लपेटा खावै री ॥
ब्रजवासी ढूँढ़त ह्वां आए

देख-देख रोये पछताए
नंद यशोदा दह में कूदत ते दाऊ बगदावै री।
दुखी देख सब को मनमोहन
अंग बढ़ाय कै तोर्‌यो बन्धन
कूद चढ़े ऊँचे फन पै तब ब्रजगोपी सुख पावैं री।
नाचन लगै कृष्ण मतवारे
एक-एक सब फन बैठारे
बाजे बहुत बजाय देवता फूलन कौ बरसावैं री।
शरण-शरण कह नागिन धाईं
तुम रक्षक हे कृष्ण गुसाईं
चरण चिन्ह दै दया करी हरि भय ते मुक्त करावैं री।
भेज्यौ नाग द्वीप रमणक को
नाथ्यो काली जल निरमल को
आनन्द ब्रज में भये सबइ जमुना में गोत लगावैं री॥

काली दह ते निकस कें आयो री नंदलाला कुँवर कन्हैया ॥

काली के फन पै ठाढ़े हरि
सौ फन पै मनियां चमकैं झरि
मणियन पै नाच दिखायो री नंदलाल ... ।
नागिन की पूजा लै नटवर
मणियन की माला पहरै उर
नयो पीताम्बर धार्यो री नंदलाल ... ।
कमलन की माला लटकै है
जैसेई तट पै पाँव धरै है
यशुदा कंठ लगायो री नंदलाल ... ।
मैया के स्तन दूध चुचावै
सबके नैना भरि-भरि आवैं
जै-जैकार करायो री नंदलाल ... ।
आज्ञा लैकें नाग सिधार्यो
यमुना जल निर्मल कर डार्यो
ब्रज में मंगल गायो री नंदलाल ... ॥

श्री गहवर-कुञ्ज लीला

दिखाय दै प्यारी मुख अपनों राधे वृषभानु-दुलार।

दिखाय दै नैना मतवारे रसिया पिय नन्द-कुमार॥
गोरो मुख चन्दा सों जा पै सटकारी लट झूमती,
सुधापान हितकारी नागिन मुख चन्दा को चूमती,
सटका दै प्यारी लट लटकी राधे वृषभानु-दुलार।
नील कमल सौ सुन्दर मुख पिय जापै लटुरी झूमती,
भ्रमर भांति रस पान करन कौ उड़ कमलन दल टूटती,
उठा दै लटकी लटुरी रसिया पिय नन्द-कुमार।
शुक सी सुन्दर नासिका नथ है सुनहरी सोहनी,
उड़ नहिं जावैं कीर कहूँ वह फन्दा सी मनमोहनी,
हटा दै प्यारी पट घूँघटा राधे वृषभानु-दुलार।
मधुरस भरे होठ दोनूँ हैं बिम्बाफल से लाल,
वंशी की वंशी में पोये रसफल गोरे गाल,
सुना दै प्यारे धुन मुरली रसिया पिय नन्द-कुमार॥

राधा-माधव खेलैं गहवरवन में दिव्य प्रेम के खेल ॥

नित्य विहार भूमि गहवर वन
चिन्मय धाम नित्य वृन्दावन
लता बेलि द्रुम कुंज निकुंजन
सोरह बरसी श्यामा सोरह बरसो नागर छैल।
झलकै दिव्य देह दरपन से
नील देह में श्यामा दरसे
गौर देह में मोहन दरसे
अपनी-अपनी झाँकी देख करैं अचरज की केल।
प्रिया रूप में श्याम देखकर
कहैं श्याम यह कौन श्याम नर
श्याम देह में प्रिया देखकर
श्यामा कहें श्याम सों आई कौन नारि अलबेल।
दिव्य देह की अद्भुत लीला
सहचरी देखें तत्सुख लीला
रस पीवैं नहिं गुठली छीला
रसिकन संग मिलै दुर्लभ रस प्रिया कृपा की गैल ॥

राधा सोने हू ते गोरी, सोनो देख लजायो है ॥

झमकै रूप अधिक सोने ते
झलकै चमक अधिक दरपन ते
द्वै द्वै श्याम दिखैं हियरे ते
अपने रूप देख कै मोहित श्याम लुभायो है।
मोहन कहैं सुनहु मृगनयनी
ये द्वै युवक कौंन पिक बैंनी
सखी बनाय मोहि सुख दैनी
हम द्वै सखी श्याम द्वै साजन मेल सुहायो है।
सुन मुसकावैं गोरी बाला
अति मोहित जाने नन्दलाला
पहिराई लैकर मणिमाला
बिम्बन में हू माला देखत भरम भगायो है।
विहरैं चिन्मय देह सदा ही
पाँच भूत मल मैथुन नाहीं
शुद्ध प्रेम मय रूप कहाही
लीला शक्ति युगल की नाना खेल दिखायौ है ॥

नैना ही में नैना देखैं नैना रूप दिवाने हैं।

अँखियन में अँखियन को डारे
झूम रहे गलबैंयन प्यारे, प्रेम वारुणी के मतवारे
इक टक भये पलक ना डारैं ये मनमाने हैं।
राधा माधव परम सनेही
एक प्राण यद्यपि द्वै देही
प्रेम तत्व द्वै रूप धरे ही
नित्य विहार करैं गहवर वन रसिकन जाने हैं।
विहरैं सदा अनादि काल ते
अब हू विहरैं रसिकन मत ते
लीला मिटै न महाप्रलय ते
रूप नयो नित इक दूजे को नहिं पहचाने हैं।
नैना मार करैं बानन ते
नैना ही झेलैं घातन ते
काजर धार चढ़े सानन ते
चारों नैन लड़ें जोधा से रूप रिझाने हैं।
यद्यपि श्याम हरिप्रिया गौर तन
काया अलग भिन्न सब अंगन

किन्तु एक से चारों नैनन
श्याम श्वेत और कारे नैना हिये समाने हैं ॥

हम तोहे पुकारैं रह रह के किनारे ठाढ़ी जमुना के,
ला रे नाव अरे मल्लाह के उतार पार जमुना के ।
लै रही जमुना अधिक हिलोरैं,
चढ़ रही ऊपर देय झकोरैं,
उड़ै चुनरी ये झोंके ब्यार के उतार पार जमुना के ।
आओ बैठो ब्रज की नारी,
उतराई कहा देंगी सारी,
मैं पहले लऊँ ठहराय के उतारूँ पार यमुना के ।
पहले पार उतार नवरिया,
दैगी नाव लगाय किनरिया,
जाय बैठीं हैं ऊपर नाव के उतार पार जमुना के ।
जमुना बीच पहुँच गइ नैया,
गाय उठ्यो कछु गीत नवरिया,
अरि ये तो हैं ढोटा नंद के उतार पार जमुना के ।
सबरी हँसी हँसी हैं प्यारी,
आय मिले प्यारे गिरिधारी,
कैसे कैसे हैं छंद नंदलाल के उतार पार जमुना के ।

अपने-अपने रूपन देखैं इक-दूजे की अँखियन माहिं ॥

एक किशोरी राधा गोरी
चौंसठ कला चतुर पै भोरी
दूजै पिय चतुर सांवरो री
गौर रूप में भूल चतुरता अति भोरे है जाहिं ।
पूछैं श्याम प्रिया सों भोरे
कौंन बसैं अँखियन में चोरे
अँखियन में घर कर बरजोरे
प्रिया कहैं पहले तुम प्यारे हमकूँ देहु बताहि ।
श्याम नैन में कौन बसी हैं
चन्द्रमुखी कलिका विकसी है
ओठन पै कछु मन्द हँसी है
नैन बसेरो करि रस घातें तुम कूँ कहा सिखाहिं ।
कहैं श्याम तुम बसों नैन में
तन में मन में औ प्रानन में
प्यारी मेरे रोम-रोम में
पहले तुम पीछे हम तब ही राधेश्याम कहाहिं ।
प्रिया कहैं तुम नैनन तारे
मेरे नैनन के उजियारे
तन मन प्रान तुमहि पर वारे
राखूँ श्याम केश माथे पै बेनी तुमहि गुहाहिं ॥

गहवरवन की कुञ्ज गलिन में, खेलैं राधा कुँवर कन्हैया ॥

घिर रही घटा जु कारी कारी
नाचन लगे श्याम बनवारी
मोर नाच नाचैं गिरिधारी
मोर कुटी की शिखर बन गई, पवन चलै पुरवैया।
ऊपर मान कियौ है प्यारी
चरनन कूँ पकरैं गिरिधारी
मान मनावन कौ रस भारी
मन्दिर मान बन्यौ पर्वत पै झाँकी है सुखदैया।
हरी लता फूलीं फुलवारी
झूम झूम रही डारी डारी
खिल रही रैन चन्द्र उजियारी
प्यारी प्यारे नाँचैं हँस हँस रीझि देत गलबैंया।
दक्षिण कुण्ड दोहनी दमकै
उत्तर श्रीजी मन्दिर चमकै
पूरब मोर बिहारी झमकै
पच्छिम मान बिहारी मान मिलन रस सिन्धु बहैया।

दाऊजी

यमुना लहर-लहर लहरावै दाऊ तट पै रास रचाय ॥

रथ चढ़ दाऊ आये ब्रज को
कियो प्रणाम नंद यशुमति को
हँस भेंटे सब गोप सखन को
सखा कहें दाऊ ब्याहे ते ब्रज को दियो भुलाय ।
गोपी बोली निठुर कन्हैया
चतुर बड़ो है वह छलबलिया
प्रीति डोर तोड़्यो निरमोहिया
हरि संदेश कह्यो दाऊ ने धीरज दियो बंधाय ।
यमुना तट उजियारी छाई
वरुण पुत्रिका वारुणी आई
महक उठ्यो सब वन रसदाई
जल क्रीड़ा को दाऊ टेरैं यमुना आवैं नांय ।
हल ते खेंची यमुना आई
करी क्षमा छोड़ी यदुराई
ऋतु बसंत विहरे सुखदाई
लक्ष्मी ने नीलाम्बर दीयो गहने हार धराय ॥

ब्रज के राजा इन को कहियत, दीनदयाल बड़े बलराम ॥

गोरो अंग चमक बिजली सी
नीलो बसन मेघमाला सी
माला बड़ी इन्द्र धनुषी सी
जामा कठुला कंकण हाथन लकुट सुनहली थाम।
राम कृष्ण गोपालक ब्रज में
खेलैं खेल अनेक सखन में
यमुना तट और कुंज वनन में
नौबत बाजै बजै नगाड़ौ सदा ही धूमस धाम।
राम कृष्ण ये दोनो भैया
संग संग नाँचैं ता ता थैया
ग्वाल बाल ढप ढोल बजैया
बंशी सींगी तुरही बाजै रस बरसै अविराम।
माखन मिश्री भोग लगावै
कमलन की माला पहरावै
लाल नेत्र वारुणी छकावै
रसिया बड़ो रसीलो छैला अलबेलो है गाम ॥

ता ता थेइया ता ता थेइया नाचैं राम गुपाल ॥

दाऊ गावैं मोहन नाँचैं मोहन गावैं दाऊ नाँचैं,
ठुमका दै दै नाँचैं देवै हाथन ते करताल।
दोऊ गावैं ग्वाला नाचैं, ग्वाला गावैं दोऊ नाचैं,
नाचैं गावैं हँसैं हंसावैं रंग रंगीले ग्वाल।
होड़ा होड़ी भयी लड़ाई, सब में है गई हाथापायी,
दाऊ ते तब न्याय कराई, नाचैं गावैं सबै भुलाई,
ऐसे खेलैं खेल सबै मिल बछरन के प्रतिपाल।

यमुना तट

अब घर कैसे जाऊँ मेरी माय, चुनरिया भीज गई ॥

सखी री पनियाँ को निकसी
पहुँच यमुना पै गई, अब घर कैसे ... ।
सखी री न्हाय भरी गगरी
गगरिया सीस लई, अब घर कैसे ... ।
सखी री पतरी कमर लचकै
गगरिया भारी भई, अब घर कैसे ... ।
सखी री औचक आये श्याम
लकुटिया तान लई, अब घर कैसे ... ।
सखी री बरज रही कर जोर
गगरिया फोर दई, अब घर कैसे ... ।
सखी री भीज गई सबरी
जुलम की बात नई, अब घर कैसे ... ।
सखी री पूछैगी घर की
कहाँ अँगिया भिजई, अब घर कैसे ... ॥

यमुना लहर-लहर लहरावै कान्हा दीजो पार लगाय ।

जब यमुना टखने लों आई
मेरी बाँह पकर गिरिधारी, मेरी पायल भीजी जाय ।
जब यमुना घुटुमन लों आई
मेरी बाँह पकर गिरिधारी, मेरी साड़ी भीजी जाय ।
जब यमुना जांघन लों आई
मेरी बाँह पकर गिरिधारी, मेरो लहँगा भीजो जाय ।
जब यमुना कमरन लों आई
मेरी बाँह पकर गिरिधारी, मेरी तगड़ी भीजी जाय ।
जब यमुना छतियन लों आई
मेरी बाँह पकर गिरिधारी, मेरी चोली भीजी जाय ।
जब यमुना गरवा लों आई
मेरी बाँह पकर गिरिधारी, मेरी चूनर भीजी जाय ।
डूब न जाऊँ कुँवर कन्हैया
मेरी बाँह पकर गिरिधारी, मोय लीजो अधर उठाय ॥

अरे ह्याँ गहरो पानी नंद के, मेरी लीजो बाँह पकर के ॥

अरे नंद के मोय पकरियो नहिं तो मैं बह जाऊँगी,
भारी गहनन बोझ भरी मन तेरी हा-हा खाऊँगी,
जल्दी ऐयो बह रही यमुना धार सरर सर करके।
नीली यमुना नीलो पानी नीलोई तेरो रंग है,
बहती धारा रुक जावै जब बंशी मधुर बजावै है,
एक बार फिर फूँक लगैयो बंशी होठन धरके।
अचक पकरियो मेरी कलैया बहुतइ नरम-नरम सी है,
वा दिन तनक मरोरी तैंनें अब ताईं वो दुखै है,
दै गलबैया अचकै लै गये ऊपर हाथ पकर के॥

धाम बरसाना

जै जै बरसानो गाँव जहँ राधा रानी राज रहीं ॥

पर्वत ऊपर महल मणिन कौ
जाके आगे त्रिभुवन फीकौ
ब्रह्मा रूप धरें पर्वत कौ
श्री चरनन को है धाम जहँ राधा रानी ... ।
इत में मन्दिर दान बिहारी
ह्याँ पै दान दियो पिय प्यारी
देत परस्पर कौतुक भारी
ह्याँ रस देवे कौ काम जहँ राधा रानी ... ।
गढ़ विलास की चोटी समतल
ऐसी प्रीति बढ़ी ह्याँ निश्चल
राधा माधव खेलैं सब थल
अति सुन्दर छटा ललाम जहँ राधा रानी ... ।
मोर कुटी की शिखर निराली
जहँ बैठीं वृषभानु की लाली
नाचैं श्याम बजावैं ताली
धर मोर रूप अभिराम जहँ राधा रानी ... ।

उत में मन्दिर मान बिहारी
मान कियो जहँ राधा प्यारी
पकरें चरन जाय गिरधारी
मत रूसौ मानिनि भाम जहँ राधा रानी ... ।
ब्रह्माचल पर्वत मन भायौ
सब शिखरन की लीला गायौ
लीला नित्य यहाँ दरसायौ
जै गावैं राधा नाम जहँ राधा रानी ... ॥

राधा रानी को है बरसानों, रंगीलो बरसानों ॥

राधा महारानी जहँ राजैं
श्याम करैं अगवानों, रंगीलो बरसानों।
पीरी पोखर प्रेम सरोवर
भानोखर कौ न्हानो, रंगीलो बरसानों।
जहाँ भानुगढ़ भानु भवन है
मन्दिर है जगजानों, रंगीलो बरसानों।
ओढ़ चूनरी प्यारो आवै
सखी वेष को बानों, रंगीलो बरसानों।
जहँ होरी की गली रंगीली
लठामार मनमानो, रंगीलो बरसानों।

जहाँ खोर साँकरी रसीली
होय जहाँ दधि दानों, रंगीलो बरसानों।
जहाँ विलास दान गढ़ सोहै
रसलीला रसखानों, रंगीलो बरसानों।
जहाँ रंगीलो गहवर वन है
नित्य रास कौ थानों, रंगीलो बरसानों।
जहाँ निराली मोरकुटी है
मोर नाच नचवानों, रंगीलो बरसानों।
जहाँ मानगढ़ प्यारी रूठै
होवै मान मनानों, रंगीलो बरसानों॥

बरसानो रसमय बरसानो ॥

राधा प्रेममयी तहाँ खेलत, कन कन रस कौ थानो।
रस ही खानो रस ही पानो, रस ही रस सरसानो।
बहुत दिना ते रहि बरसानो, अजहूँ रस नहिं जानो।
अब भव में कहाँ जाऊँ रसिकनी, यह तव नाम हँसानो।
वास दियो अब देहु रास रस, निर्मल करि मनमानो॥

सबसौं सुन्दर है बरसानों ब्रज में राधा रानी कौ ॥

जहाँ बिराजैं राधा रानी
जाकी श्याम करैं अगवानी
महिमा वेदन हू नाय जानी
पर्वत ऊपर मन्दिर चमकै सब जग जानी कौ ।
खोर साँकरी बड़ी रसीली
दधि लै चलीं कुंवरि गरबीली
सखियाँ संग में बहुत हठीली
आगे मोहन गैल रोक दियौ रूप लुभानी कौ ।
दैजा दान कुंवरि रसिया कौ
पीत पिछोरी कटि कसिया कौ
कुँवरि हँसी लखि मन बसिया कौ
घूँघट में ते छीन लियौ मन वा मनमानी कौ ।
गहवर वन की लता-पतन में
बिहरें राधा मोहन वन में
फूले-फूले तन में मन में
बड़े-बड़े सुर नर मुनि तरसैं या रजधानी कौ ॥

श्री बरसानों रस बरसानों राजै राधा अलबेली ॥

जानें बस में कियौ बिहारी
जैसे फूल कमल भँवरा री
रस की पैनीं मार दुधारी
ऐसी प्रीति बढ़ी ज्यों नदिया सावन में रेली ।
दयामयी दीनों की श्यामा
मोहन गावैं राधा नामा
पूर्ण ब्रह्म की पूरण कामा
रंग रंगीले खेल रस भरे मोहन संग खेली ।
जाकी लीला कहत न आवै
गुप्त जान शुकदेव न गावै
कृपा बिना कोइ समझ न पावै
प्रेम खिलौना राधा माधव करैं प्रेम केली ।
गहवर वन की भूमि रसमयी
लता पता सब साज रसमयी
सखी सहचरी बनी रसमयी
गहवर कुंजन फूल बिछौना छाई रसबेली ॥

ब्रज की रज में धूर बनूँ मैं, ऐसी कृपा करो महाराज ॥

धूर बनूँ हरि चरनन पागूँ
उड़ उड़ के अंगन में लागूँ
बार बार ये ही मैं माँगूँ
मोपै विहरैं श्याम राधिका सब दुख जावैं भाज।
कोमल चरन राधिका प्यारी
उर धरि सेवैं छैल बिहारी
ऐसौ रस चरनन में भारी
वाकूँ पाऊँ बनूँ धन्य वृन्दावन रस सरताज।
रज में खेलैं रंग मचावैं
रज में हिल मिल रास रचावैं
रज में फूलन सेज बिछावैं
रज में करैं विलास जुगल मिलि जानैं रसिक समाज।
ब्रज की धूर श्याम को प्यारी
खाई बालकृष्ण मुख डारी
धमकावै जसुदा महतारी
माखन दूध दही तज रोवै रज खावन के काज॥

ब्रज तो है प्रेम बजार रे, सौदागर श्याम घरन डोलै ॥

पर्वत ऊपर भानु महल है
ऊँची जाकी किवार रे, सौदागर श्याम ... ।
महलन राज रही महारानी
भोरी भानु दुलार रे, सौदागर श्याम ... ।
राधा नाम धाम बरसानो
अलबेली सरकार रे, सौदागर श्याम ... ।
ठाढ़े बाट तकें मनमोहन
कब खूटैगो द्वार रे, सौदागर श्याम ... ।
सखी दलाल ऐंठ ते बोलैं
कर रहे हरि मनुहार रे, सौदागर श्याम ... ।
मोर मुकुट कूँ चरण छुवावे
ऐसे हैं रिझवार रे, सौदागर श्याम ... ।
द्वार खुलेपै भीतर जावै
जहाँ दियो अपनपौ वार रे, सौदागर श्याम ... ।
ऐसी प्रेम मयी ब्रजभूमि
ऐसो रस व्योहार रे, सौदागर श्याम ... ॥

झुक ही गयो सिर देखी जो शिखर, बरसाने पर्वतवारी की ॥

येई वो पर्वत ब्रह्माचल
जहँ राधे खेली हैं सब थल
आँख लगी उधर, देखी जो शिखर ... ।
ये वही भानुगढ़ की चोटी
रहै राधे भागन की मोटी
चलो महलन पर, देखी जो शिखर ... ।
जैकारे हों वृषभानु भवन
जै राधे गावैं भक्त सुजन
जै भानु कुँवर, देखी जो शिखर ... ।
रसभरी साँकरी की गलियाँ
दधिदान दियो ब्रज की सखियाँ
लियो नंद कुँवर, देखी जो शिखर ... ।
ये वही रसीलो गहवरवन
जहाँ रास विलास करैं दोऊ जन
रस बरसै झर, देखी जो शिखर ... ॥

मोर कुटी

पर्वत पै कोंहक भयो भारी, गहवर वन बोलै मोर ॥

उठे उनींदे गहवर कुंजन
वन विहरैं दोउ भोर, पर्वत पै कोंहक ... ।
मोर कुटी बैठे प्यारी संग
मोहन चित के चोर, पर्वत पै कोंहक ... ।
हरियाली पै झुकी बदरिया
पुरवैया झकझोर, पर्वत पै कोंहक ... ।
प्यारे-प्यारी को पटुका और
उड़ै चुनरिया छोर, पर्वत पै कोंहक ... ।
उड़-उड़ आय गये सब मोरा
देखन युगल किशोर, पर्वत पै कोंहक ... ।
श्यामा मोर मंडली सब
नचवैं नैनन की कोर, पर्वत पै कोंहक ... ।
पंखन खोलैं ताली पै सब
नाचैं मण्डल जोर, पर्वत पै कोंहक ... ।
श्यामा की पैजनियाँ बाजै
मुरली हरि की घोर, पर्वत पै कोंहक ... ॥

नन्दगाँव

ऊँचे नंदीश्वर पर्वत पै सोहै मोहन को नन्दगाँव ॥

शिव नें रूप धर्यो पर्वत कौ
लै हरि पद रज की आशा कौ
कृष्ण दरस हित आये ब्रज कौ
नंदभवन चोटी पै चमकै मणिमय सुन्दर धाम।
जसुदा लाला नांहि दिखाये
शिव ने रोवत श्याम हँसाये
गंडा हरि के हाथ बंधाये
मैया वास दियो शिव महलन उत्तर द्वार विराम।
ऊँचे चारों द्वार महल के
चार छ्त्तरी हैं द्वारन पै
ऊपर ते दरसन सब ब्रज के
दक्षिण बरसानौ दमकै जहँ राधा दुलहिन भाम।
हरि दाऊ राजैं मन्दिर में
नन्द जसोदा दोउन संग में
श्रीराधा दुलहिन की छवि में
चारों ओर बसे मन्दिर के सखा खिलावैं श्याम ॥

मोहन वृन्दावन के राजा राधा महारानी सुकुमार ॥

बीस कोस वृन्दावन गायो
बरसानों गहवर तक छायो
गोवर्द्धन हू वन में आयो
ठौर-ठौर पै रस की लीला करी जुगल सरकार।
योजन पाँच बन्यो वृन्दावन
मुख्य भूमि तट यमुना कंकन
रास विहार होय जहँ कुंजन
विधि हरि हर दुर्लभ रजधानी नित बरसै रसधार।
सृष्टि चक्र में यह बन नाहीं
माया की गति नहिं अवगाहीं
काल शक्ति वन में नहिं जाहीं
महाप्रलय ब्रज-धूरि न नासै जगमग ज्योति अपार।
भूमि चिन्मयी है अविनासी
हेममयी मणिमयी प्रकासी
दिव्य लता द्रुमबेलि विलासी
परब्रह्म हू धाम ज्योति है सब ऋतु सदा संवार।
ब्रह्मा देख्यो वैभव वन कौ
रमा चतुर्भुजमय कन कन कौ
अगनित विधि सेवत रज कन कौ
है चौमुहा भयो जड़ सौं गिरि वृन्दा भूमि मँझार ॥

गोकुल में सोर भयो भारी, वृन्दावन बोलें मोर ॥

उड़-उड़ मोर कदम पै चढ़ गये
बैठे पंख मरोर, गोकुल में सोर ... ।
टप-टप पेंच गिरैं जमुना में
बीनैं नन्द किशोर, गोकुल में सोर ... ।
उन पेंचन को मुकुट बनायौ
पहिरैं श्याम किशोर, गोकुल में सोर ... ।
धन्य-धन्य ये ब्रज के मोरा
जाय रीझैं माखन चोर, गोकुल में सोर ... ।
नाचैं देख देख घनश्यामहि
कुहकैं सुन्दर घोर, गोकुल में सोर ... ॥

अरी नन्दगाँव बड़ौ है प्यारौ, जहँ खेलै वंशी वारो ॥

ऊँची शिखर नन्दबाबा की ऊँचौ भवन विराजत है,
चारों ओर गोप गोपिन सों बस्यो गाँव छवि पावत है,
नंदीश्वर पर्वत बन शिव ने हरि चरनन उर धारौ।
नन्द बाबा जसुदा मैया बलदाऊ लाड़ लड़ावत हैं,
सुबल सुबाहु तोष मधु मंगल टोल सखन कौ राजत हैं,
नौ लख गाय बंधी खूंटा पै गाय चरावनहारो।
पावन सर यशुदा कुंड ललिता कृष्ण कुण्ड मधुसूदन है,
छप्पन कुण्ड आचमन उद्धव क्यारी और आसेश्वर हैं,
टेर कदम चढ़ गाय बुलावै या ब्रज कौ रखवारौ।
नन्दगाँव बरसानों सजन सनेही मीठो नातो है,
लाल लाड़ली प्रीति ब्याह कौ आनन्द रसिक सुहातो है,
कृपा करें जब हिय में आवें यह ब्रज रस उजियारो ॥

वात्सल्य माधुरी

माखन खाय लै खूब अघाय, गोपिन के घर मत जैयो ॥

यों कहै यशोदा मैया
सुन लै तू लाल कन्हैया
में तेरी लऊँ बलाय, गोपिन के घर ... ।
लौनी की भरी मथनियां
तेरे आगे धरी कन्हैया
मिश्री मन कर लेय मिलाय, गोपिन के घर ... ।
तेरे बाबा नन्द बिरज में
है नाम बड़े गोपन में
कारो नाम न तू करवाय, गोपिन के घर ... ।
सुन बोल उठयो नंदलाला
ये झूठी हैं ब्रजबाला
इनने गजब ही दीयो ढाय, गोपिन के घर ... ।
ये मोकूँ टेर बुलावैं
औ हाथ पकर ले जावैं
सौगंध तेरी देंय खवाय तू इनपै मत पतियैयो ॥

मेरो कनुआ आँखिन तारो है,

कोई गारी भूल न दीजो ॥
लहुरो सो मेरो भोरो-भारो
मेरो प्राण अधारो री, कोई गारी ... ।
जाको जितनों दूध ढुरायो
मोते चुकौ उधारौ री, कोई गारी ... ।
दुगनों तिगुनों लेहु सौगुनों
दूध दही कौ गारौ री, कोई गारी ... ।
अपनों सो बालक तुम जानों
घोंटुन चोंहकायो मेरो री, कोई गारी ... ।
तुम्हरो ही आशीष फल्यो जो
नन्द महर कौ बारौ री, कोई गारी ... ।
मांगू भीख पसारे आँचर
मेरी ओर निहारो री, कोई गारी ... ॥

बाँध्यो मैया यशोदा अपनों लला ।

कोमल कर रसरी ते बाँध्यो डरपै लला ॥
रोय रोय अँसुआ ढरकावै
हाथन नैंना मींड़त जावै
सबरे मुख कजरा फैलावै
हिलकी दै दै लेय उसासें रूँध्यो गला ।
चम्पकली, कुंदकली आयीं देखन
भीर भई ब्रज की जुरी सखियन
बँधे श्याम ठाढ़े है आँगन
बोलीं मत बाँधो तुम छाँड़ो अपनो लला ॥

श्याम चराय ला गैया, तोय माखन दूँगी ॥

माखन दूँगी मिसरी दूँगी,
दूँगी दूध मलैया, तोय माखन दूँगी।
दूर न जैयो पास चरैयो,
असुरन को डर भैया, तोय माखन दूँगी।
जमुना न जैयो नाय न्हैयो,
काली तहां रहैया, तोय माखन दूँगी।
मिलके रहियो सखन ते न लड़ियो,
सब रहियो इक ठैया, तोय माखन दूँगी।
दाऊ संग रहियो, अलग न जैयो,
मै तेरी बलि जैंया, तोय माखन दूँगी।
जल्दी ऐयो देर न करियो,
कहै जसोदा मैया, तोय माखन दूँगी ॥

श्री राम

लालन धीरे धीरे चलिये लली की गलियाँ ॥

ये तो नाहिं अवधपुर नगरी,
लालन ये चिकनी मिथिला गलियाँ।
है गोरे जनक औ सुनयना गोरी,
लालन गोरी हमारी सिया ललियां।
कौसल्या है गोरी औ गोरे दसरथ,
लालन तुम कैसे भये साँवरे वरनियां।
गोरी कौसल्या ने गोरी खीर खाई,
लालन कहाँ ते लाई सांवरो रंगिया ॥

देखो देखो आये रघुवीर बगिया में ॥

सखी री फुलवा बीनन गुरू काजे, विश्वामित्र काजे,
संग सोहे लखन छोटो बीर बगिया में।
सखी री दशरथ के ये ढोटा, राजा के ये ढोटा,
खेलैं-खेलैं सरजू के तीर बगिया में।
सखी री दोनो के हाथ धनुष है, हाथ धनुष है,
बाँधे कंधे पै तरकस तीर बगिया में।
सखी री श्याम वरन बड़ भैया, वरन बड़ भैया,
छोटे भैया को गोरो सरीर बगिया में।
सखी री माथे मुकुट कानों कुण्डल, मुकुट कानों कुण्डल,
इन्हें देखन को लागी भीर बगिया में।
सखी री सीता के योग लला राम, कुँवर लला राम,
जगदम्बा हरैगी पीर बगिया में ॥

सखी मिथिला सहर गुलजार री सखी मिथिला ।

मिथिला नगर की सुंदर सुंदर गलियाँ
बीच में चौक बजार जी ॥ सखी ...
ऊँचै चबूतरा पै दूल्हा आज ठाढ़े
अपनी बहनों का करते प्रचार जी ॥ सखी ...
बड़की की कीमत चवन्नी अठन्नी
छोटकी का मोल बेसुमार जी ॥ सखी ...
राजा न पावै कोई प्रजा न पावै
याहि लै गये बाबाजी उधार जी ॥ सखी ...
मिथिला की गारी राम को प्यारी
ये गारी वेदों का सार जी ॥ सखी ...

कैसे खेली सखी श्याम बिन कजरिया-२ ना ।

दिन रात देखी जोह, तन मन के बिछोह,
निरमोही मैले कंत की नजरिया । श्याम बिन ...
सुन कै पपीहा के बोली, लागै जीयरा मा गोली,
हम जोली बिना भावे ना सेजरिया । श्याम बिन ...
झरै पावस फुहार वन के अनल अंगार,
जीय जारी जाई कारी रे बदरिया । श्याम बिन ...
दीन्ह पाती ना सनेस, जव ते छावल विदेस,
ना कलेस पूछ मोर हाय अनरिया । श्याम बिन ...
दीहेन अंसुवा में बोर, गैले प्रेमवा के तोर,
चीतचोर बसे मथुरा नगरिया । श्याम बिन ...
मोर बोलत है वन मा, जमना बाढ़ी है सामन मा,
कैसे डारी झूला कदम की डरिया । श्याम बिन ...

जयमाल कर लैकें चली जनक दुलार ॥

राम ने तोर्‌यो धनुष शम्भु कौ, सब करैं जै जैकार।
हौलै चलीं सीता चल्यो न जावै, तन काँपै सुकुमार।
बैयां पकरि सखि आगे चलावें, सीता भई लाचार।
देवी ते माँग्यो वर मिल्यो सोई आयो, यह समय न टार।
राम के आगे जाय ठाढ़ी भई सखीं, सब गावें मंगलाचार।
गुरुतन देख राम शीश झुकायौ, माला दियो गर धार।
सियावर राम चन्द्र जय कहैं सब, जाऊँ जोरी बलिहार ॥

आज छोड़ के अयोध्या चलै हैं रघुराई ॥

राज महल के सब सुख छोड़े,
छोड़ी सरयू नदी सुखदाई, आज छोड़ ... ।
दशरथ पिता बिलखते छोड़े,
छोड़ी कौसल्या-सी माई, आज छोड़ ... ।
ऐसो पाठ पढ़्यो दासी ते,
कैकई ने वन दिये हैं पठाई, आज छोड़ ... ।
फूलन सों सुकुमारी सीता,
वन को लै पति संग हरषाई, आज छोड़ ... ।
सीता राम चरण अनुरागी,
संग चले लछमन से भाई, आज छोड़ ... ।
अब के बिछुरे कबहि मिलेंगे,
इनकी विपति कही नहिं जाई, आज छोड़ ... ॥

राजा जनकराज की बेटी सीता वन में प्यासी जाय ॥

दूधन पली लाड़ली बेटी
धनुष यज्ञ में रामहि भेंटी
बहू अवध में लाज लपेटी
सेवा कूँ वन चली पिया के चरनन में चित लाय ॥
थोड़ी दूर चली जब वन में
ताती धूप लगी तब तन में
ताती ब्यार बहै चौड़े में
नेकइ दूर चलत कुम्हलानी फूलन सी मुरझाय ॥
बैठे नीचे एक वृक्ष के
सीता लेटी गोद राम के
लखन गये जल कूँ लैवे
इत उत डोलत पानी ढूँढत पर्वत पै जल नाय ॥
तो लौं घुमड़ी एक बदरिया
बरसन लगी सजल बूँदरिया
भीज रही सीता की चुनरिया
प्यास बुझी सीता की पिय के दर्शन नैन सिराय ॥

लंका जीत गये श्री राम मार्‌यो रावण नौलखिया ॥

एक लख पूत सवा लख नाती
ताके घर में दिया न बाती
मंदोदरी पीट रही छाती
दस सिर बीस भुजा गोदी लै रोवै वह दुखिया ।
परनारी चोरी ते लायो
सबने तोय बहुत समझायो
तैंनें प्रभु ते रार बढ़ायो
हनूमान नें लंका फूंकी बन्यो दूत खुपिया ।
बाँध्यो काल जीत पाटी ते
सूरज काँपै तेरे भय ते
तैंतीस कोटि भजे सुर रण ते
स्यार गीध सिर खावें तेरे भिनख रही मखियां ।
नांय मानी छोटे भैया की
मारी लात सीख सुन हित की
गयो शरण वह राम चंद्र की
लंका राज विभीषण पायो अटल छत्र सुखिया ।

आज के चोर

इनको कृष्ण रूप ही जानो, धनि धनि ब्रज मण्डल के चोर।

ब्रज में साधू भजन कूँ आवैं
कर वैराग्य जुगल कूँ ध्यावैं
सेवैं नाम रूप गुन गावैं
भगवत् भक्ति लेश ते हू उनको जस फैले घोर।
भजन प्रताप सिद्धि सब आवैं
संग ऐश्वर्य बहुत ही लावैं
चेला चेली फौज जुरावैं
घुटन लगैं तब माल मलाई लड्डुआ लुडकें जोर।
माया वश तब भजन न होवै
संग्रह की आदत बढ़ जावै
इन्द्रिय सुख में हरि बिसरावै
तोंदू सेठन कारन सेठ साँवरिया ते लई तोर।
पतन देख के प्रभु तब धावैं
चोरन कौ सौ रूप बनावैं
पाँच सात ग्वाला संग लावैं
घुसैं रात में सबही माया लेवैं माल खखोर।

कबहूँ कबहूँ मार लगावैं
देंय दण्ड और त्याग सिखावैं
भूल्यो भयो फेर सम्हरावैं
घर ते आयो हरि दर्शन कूँ ह्याँ बन गयो छिछोर।
रहै विरक्त संत सरनन में
गुरुजन के कठोर शासन में
होय न पतन कबहु भावन में
प्रतिपल बढ़ै भजन औ निश्चय पावै जुगल किशोर॥

वैराग्य माधुरी

काउ दिन एक पलक में ढह जाएगी,
तेरी काया की हवेली ॥
हड्डी की है ईंट लगाई
खून माँस ते भई चिनाई
खाल चीकनी भई लिसाई
काउ दिन चौमासे में बह जाएगी तेरी काया ... ।
चाहे जितनी मौज उड़ाय लै
मल-मल के स्नान कराय लै
तेल फुलेलन ते सजवाय लै
काउ दिन एक फूँक में उड़ जाएगी तेरी काया ... ।
महल दुमहले खूब बनायलै
नार नवेली गले लगायलै
बेटा लैकें लाड़ लड़ायलै
काउ दिन तिरिया रोवत रह जाएगी तेरी काया ... ।
तैंने ना भोगन कू भोगे
भोगन ने तोकूँ है भोगे
मरी न तृष्णा घेरे रोगे
काउ दिन नाम निसानी मिट जाएगी तेरी काया ... ॥

बिगड़ी बनाले संकट हटाले,

हरि की शरण चल ओ अनजान ॥
ध्रुव ने बनायो उच्च पद पायो
नमो भगवते वासुदेव गायो
राधे-राधे गा ले संकट हटा ले, हरि की ... ।
द्रोपदी पुकारी हे गिरिधारी
नगन भई मेरी साड़ी उघारी
हरि को बुला ले संकट हटा ले, हरि की ... ।
रानी महारानी मीरा दिवानी
विष को पी गई सर्प लिपटानी
नृत्य करा ले संकट हटा ले, हरि की ... ।
अधम ते अधम अधम अति नारी
बेर खवाय सबरी ने सँवारी
भोग लगा ले संकट हटा ले, हरि की ... ।
प्रहलाद ने गायो नरसिंह पायो,
हिरणाकुश वाय मार न पायो,
सुरत करा ले संकट हटा ले, हरि की ... ।

जानै कब तक कानन मूँदैगो मैं टेर-टेर के हारी ॥

सभा बीच द्रोपदी पुकारी
नगन करन को मोय उघारी
जाने कब तक लाज बचावैगो, गोवर्द्धन गिरिधारी।
पाँचो पति सामइ बैठे हैं
जूआ में मोय हार गये हैं
बुआ की पत राखैगो तेरे, भैयन की मैं नारी।
दादा भीष्म द्रोण गुरू चुप हैं
सुसर आंधरो ना देखै है
कोई सुनैं न कान फूट गये, सभा अधरमी भारी।
धरती के सब चुप हैं राजा
अन्यायी कौ डंका बाजा
दुःशासन को को रोकै दस सहस गजन बल धारी।
दुःशासन खैंचे मेरी सारी
पाँच पती तौहू मेरी ख्वारी
जाने कब तक चीर छुड़ावैगो, मैं अबला घिरी बिचारी।
दाँतन दाब रही है सारी
दोनों हाथन पकर किनारी
अबहू तो वह आवैगो, ब्रजवासी कृष्ण मुरारी।

झटके ते छूटी है सारी
गोविन्द टेर रही है नारी
या सारी बीच समावैगो, वह व्यापक ब्रह्म विहारी।
खेंचत-खेंचत हार थक्यो वह
गिर्‌यो दुःशासन चीर रह्यो बह
वह शरणागत को राखैगो, यह विरद कबहुँ ना टारी॥

पुरवैया बह रही सनन सनन पत्ता उड़तो जाय॥

ऊँचौ वृक्ष बड़ो दरसायौ
फल फूलन ते घनो सुहायौ, हर्‌यौ भर्‌यो लहराय।
पत्ता टूट गिर्‌यो डारी ते
लै गई ब्यार एक झौंके ते, कौन देश लै जाय।
उड़तो छोड़ गयो गामन को
पर्वत नदिया अरु बागन को, धरती पै गिर जाय।
पत्ता हम सब जीव बने हैं
काल ब्यार ते नाच रहे हैं, अन्त धूर है जायं।
कृष्ण बहिर्मुख है यह जब तक
चढ़ी अविद्या छावै तब तक, शरण अविद्या जाय॥

जारै ईंधन राशि को धूमकेतु जु प्रचंड।

नाम जरावै अति प्रबल पाप पुंज पाखंड॥
हीरा फोर्‍यो न फुटै घन की चोट चलाय,
जा मुख हरि को नाम वह कैसेहु नहिं फुट जाय।
लंका सोने की जरी तनक भक्त अपराध,
कोटि जन्म जरते रहें जे दुःखवत हैं साध।
गर्जन सुन वन केहरी भाजे गर्दभ स्यार,
पाप भजत सुन नाम को कीर्तन सब कौ सार।
चपला चीरै घन पटल करके हा हा कार,
नाम जरावै पाप को बोलो जै जै कार।
भक्त सताये होत नर सार हीन ज्यों छूँछ,
सुवरन लंका जल गई ज्यों हनुमान की पूँछ॥

बंगला तीन खनन कौ सुन्दर, बंगला भीतर बैठ्यो कौन ॥

ऊपर को खन ज्ञान करन को
मध्य खण्ड है प्राण धरन को
नीचे नीव अधार कर्म को
कोटि बहत्तर लगी नसैनी, चढ़वे वारो कौन।
मट्टी ईंट औ गारो जल को
रूप अगिन को प्राण वायु को
नभ को छिद्र ठौर पाचन को
छह तारन में बन्द कौन और छूटनहारौ कौन।
आँख न देखै देखै वोई
कान न सुनै सुनै है वोई
नाक न सूंघै सूंघै वोई
बुद्धि न सोचै सोचनहारो बुद्धि प्रकाशक कौन।
समझी कहा बताय सहेली
अंधी बन मत तू अलबेली
अबलौं अंधरन में तू खेली
बूझ पहेली बूझनहारो पूछनहारो कौन॥

काया पिंजरा नौ दरवाजे, हंसा जाने कब उड़ जाय ॥

द्वै द्वै कान आँख नासा हैं
ये छह सतमो मुख कौ द्वार है
आठ नवौ मल मूत्र द्वार है
कोई न जानै कौन द्वार ते साँसा अपनी जाय।
बैठ्यो पंछी जीव पींजरे
हरि माया सब भये बावरे
केवल पिंजरा सेवत सबरे
पंछी अपनी हू सुधि भूल्यो, पिंजरा रहे लुभाय।
पिंजरा गंदौ मल मूत्रन को
हाड़ मांस कीड़ा पीपन को
धोखो खायो देख चाम को
पल में पिंजरा टूट जायगौ, मूरख चेतै नाय।
दुनिया है पिंजरन को मेलो
रूखन पै चिरियन को मेलो
फुर्र उड़े गिर ते इक डेलो
ना जानैं को कहाँ ते आयो कौंन कहाँ पै जाय ॥

कोई न जानै कब फट जावै, काया जल को एक बबूलो ।

पानी आयो मात पिता ते
बन्यो बबूलो रंग रूप ते
नौ मासन में काल ब्यार ते
हाथ पाँव सिर अंग बने तब बन गयो मोट मटूलो ।
त्वचा मांस औ रक्त मात को
मज्जा हड्डी स्नायु पिता को
ये छह कोष बनावैं तन को
चिकनी चुपरी खाल लपेटी जाय देख मन भूलो ।
यह तन मल मूत्रन की हंडी
देख बने सब रंडी भंडी
भोगत सबरी आयु विखंडी
रूप तेज बल खोवत भोगत नरक द्वार को झूलो ।
काल ब्यार बह रही प्रचंडी
चेतन काया करती ठंडी
हंडी में लै मारै डंडी
हंसा उड़ जावै जब लागै काल दंड को हूलो ॥

मेरे मन मन्दिर में एक बार तो आ जाओ गिरिधारी,

प्यारे आ जाओ गिरिधारी।
गिरिधारी बनवारी, मन मोहन कुंज बिहारी
प्यारे आ जाओ गिरिधारी॥
बहुत बार है टेर लगाई
करुणा नैनन में घिर आई
ये रोया एक दुखारी प्यारे आ जाओ ...।
मग जोहत अँखियाँ पथरायीं
दर दर पै माया टकरायी
ये देखो दशा हमारी प्यारे आ जाओ ...।
थोड़ी कृपा इधर बरसाओ
प्रेम बूँद प्यासे को प्याओ
मैं प्यासा एक भिखारी प्यारे आ जाओ ...।
भेंट नहीं मैं कुछ भी लाया
खाली हाथ तेरे दर आया
मैं तेरा प्रेम पुजारी प्यारे आ जाओ ...।
प्यार करो चाहे ठुकरा दो
पास बुलाओ दूर भगा दो
मैं सब विधि शरण तिहारी प्यारे आ जाओ ...॥

अरे हरि चरनन नेह लगाय लै, सिर पै काल रह्यौ मंडराय ॥

देख यह काया फुँक जाएगी
छूट ह्याँ माया रह जाएगी
तेरी तिरिया संग नाय जाएगी
आज काल में ठाठ उठैगो, फिर काहे बौराय।
देख क्यौं तू ऐंठो डोलै
गरब की बानी क्यौं बोलै
कपट की गाँठें नहिं खोलै
लख चौरासी में भरमैगो, फिर पीछे पछताय।
सीख की बात नाय मानै
मोह-ममता में मन सानै
कृष्ण कौ प्रेम नाय जानै
मानुष कौ तन छूटे पीछे फिर मिलवे कौ नाय।
साधु की संगत कर भैया
मिलै निश्चय कृष्ण कन्हैया
भँवर ते लगै पार नैया
काल फाँस ते छूट जायगो सुख सागर लहराय।

मनुआ नेक कह्यो नाय मानै, मैं तो पच-पच के गयो हार ॥

कहा सुनाऊँ अंतरयामी
विषयन की जो करै गुलामी
दीन दयाल कृपानिधि स्वामी
दीनानाथ कृपा करकें अब मोहे लेहु उबार।
तुम को छाँड़ कहाँ मैं जाऊँ
काके द्वार निहोरा खाऊँ
काके हाथन जाय बिकाऊँ
ऐसो कौन सुनै जो चित दै मेरी करै सम्हार।
गौर नील छवि नेंक दिखाओ
जुगल चरण रस मोहि पिवाओ
कुञ्ज कुटी की छाँह बसाओ
बिचरौं गहवर वन कुञ्जन में राधे कृष्ण पुकार।
टहल बुहारी करिहौं निशिदिन
जुगल नाम गुन गैहों निशिदिन
जूठन को रस पैहों निशिदिन
लाल-लाड़ली मेरे मन-मन्दिर में करो विहार ॥

खिलौना माटी को तू, मांटी में मिल जाय नाम ॥

मांटी में ते अन्न बन्यौ है
अन्न खायके खून बन्यौ है
हाड़ मांस औ वीर्य बन्यौ है
पिता-माता की मांटी मिलवे ते बनी तेरी चाम ।
मांटी पै ये महल बनायौ
लकड़ी लोहा ईंट लगायौ
ये सब मांटी ने प्रगटायौ
हवेली नाय बचै जब मांटी में मिल जाँय गाँम ।
सोना चाँदी हीरा लायो
ये सब मांटी ते खुदवायो
या मांटी तारे मुंदवायो
मर्‌यो जब रह गई मांटी बंद तिजोरी दाम ।
मांटी ते तेरी बनी बहुरिया
जाको लायो गहनो रुपिया
मांटी छोरा छोरी दुनियाँ
छोड़ दै माया मांटी राधे भजो और श्याम ॥

परयो पलका पै सोवै, मरवे की खबर है नांय ॥

मौत परेखौ करै कौंन कौ
बालक बूढ़े और ज्वानन कौ
जब आवै तब तोरै तन कौ
गई स्वाँसा नांय आवै, मरवे की खबर है नांय।
जा काया को दूध पिवायो
सुन्दर वस्त्रन ते सजवायो
सुन्दर नारी कंठ लगायो
वही काया फुंक जावै, मरवे की खबर है नांय।
माया जोड़ बड़ो गरबायो
टेढ़ी मेढ़ी चाल दिखायो
जिनते हँस-हँस प्रेम बढ़ायो
वही रोवत रह जावैं, मरवे की खबर है नांय।
मूरख जग सों प्रेम हटाय लै
चेत-चेत हरि को अपनाय लै
या देही को सफल बनाय लै
उमरिया कटती जावै, मरवे की खबर है नांय।

पल पल आयु घटै रे प्राणी, हरि भज छोड़ सबइ जंजाल।

उमरिया घटती ही जावै
गयो दिन फेर नहीं आवै
मौत सिर पै चढ़ती आवै
भजन करै ना भूल्यो डोलै पर्‍यो काल के गाल।
भये ह्याँ बहुत बड़े बलवान
तीन लोकन में उनके नाम
धूर में मिले न रहे निशान
हिरणाकश्यप रावण कंसा खाय लियो यह काल।
बचैगो तू हू कैसेहु नाय
भलै करलै कितनोई उपाय
कहूँ मैं भैया प्रेम लगाय
झूठे दुनियाँ के काजन में मत भूलै गोपाल।
बड़े हैं गोविन्द दीनदयाल
पिवायो जहर पूतना घाल
दई मैया की गति नन्दलाल
ऐसे स्वामी के चरनन की धूरि लगावो भाल।

दीनानाथ कृष्ण गिरिधारी, मेरी टेर सुनो चित लाय ॥

तुम ही एक हमारे प्यारे
तुम ही सब कुछ नन्ददुलारे
तुम ही जीवन तुम रखवारे
मेरी अँखियन के हो तारे मारग तो दरसाय।
आस तिहारी हम कूँ पल-पल
जैसे मछरी और जमुना-जल
बिना मिले तरफै वह कल-कल
हे घनश्याम सुजान साँवरे प्रेम बूँद बरसाय।
कहूँ कहा तुम जाननहारे
घट-घट के हो परखनहारे
हम भिक्षुक तुम राजदुलारे
तनक दया की तनक कोर पै तुम्हरो कछु नाय जाय।
टेरत-टेरत हम तो हारे
खोजत खोजत थक गए भारे
ढूँढ़त ढूँढ़त नैना मारे
तन मन औ जीवन ते हारे परे द्वार पै आय॥

करुणा सुनो कृपा के सागर, दुखिया पर्‌यो एक असहाय ॥

करुणा कर द्रोपदी पुकारी
नग्न करन कूँ चीर उघारी
लज्जा रखो मेरी गिरिधारी
देर करी नाय प्रगट भये, साड़िन के ढेर लगाय।
करुणा कर गजराज पुकार्‌यो
लड़त-लड़त निज बल को हार्‌यो
एक पुष्प हरि तुम पर वार्‌यो
देर करी नाय रक्षा कीनी, नंगे पायन धाय।
मेरी बेर देर क्यों कीनी
मेरी तनक खबर नांय लीनी
इतनी निठुराई क्यों दीनी
पकरो हाथ बड़ो भवसागर, मेरी करो सहाय।
कृष्ण कृपा लो प्राण नाथ प्रिय
सर्वस स्वामी श्री राधा पिय
हृदयेश्वर तुम हो तन में जिय
शरण-शरण हरि देखो इतकूँ कृपा प्रेम बरसाय ॥

ये गौर-श्याम की जोरी मो अँधरे की दो आँखी ॥

आत्मा ज्योति शुद्ध चेतन यह
माया विषय अशुद्ध अंधकह
भूल्यो रूप भोग तापन सह
जीव पखेरू जड़ता पायो कटी सबइ पाँखी ।
बहुतै सुन्यो पुरानन वेदन
चेत्यो ना यह रह्यो अचेतन
केवल पर्‍यो कृपा के आसन
भजन कियो ना कबहुँक यद्यपि संतन बहु भाखी ।
नहिं विद्या नहिं साधन कौ बल
भक्ति भाव कौ नाहीं संबल
विषयन में मन है रह्यो चंचल
ऐस्यो सन रह्यो विषय विलासन ज्यों विष्ठा माखी ।
तुम बिन कोउ सँभार सकै ना
दया भाव दिखराय सकै ना
बिगरो जीव सुधार सकै ना
ऐसी कृपा करौ लीलारस लै अँखियाँ चाखी ॥

करले दृढ़ विश्वास युगल कौ, काहे रह्यो झकोरा खाय ॥

भूल गयो जब मात पेट में
उलटो टँग रह्यो मल मूतन में
रक्षा करी वहाँ छिन-छिन में
जठर अग्नि ते जरन न दीयो, लीयो तोय बचाय ।
गर्भवास में भोजन दीयो
बाहर तैनें दूध जो पीयो
दूध भर्‌यो स्तन हरि ने कीयो
जल में थल में नभ में देवै, क्यों चिन्ता मंड़राय ।
मूरख तोय इन्द्रिन ने लूटी
तोहि पिवाय विषय विष घूँटी
विषय भोग ते दोनूँ फूटीं
आनन्द रूप जुगल को भूल्यौ, झूठे सुख भरमाय ।
भूल्यो प्रभु को ऐसी माया
तृष्णा गली न गल गई काया
ऊपर देख मृत्यु की छाया
कृष्ण भरोसो छाड़ नरक कूँ सरपट दौर्यो जाय ।

राधे गोविन्द भज मस्ताने काहे माया में बौरे ॥

ये काया तेरी ना ये तो बनी काल कौरे,
ब्रज रज घिस माथे मिट जावै चौरासी दौरे।
मीठो खट्टो चिकनो चुपरो जेंवत रस लौरे,
अमृत नाम युगल रस भूल्यौ विषयन झकझोरे।
केश संवार पहिर अम्बर नीले पीरे धौरे,
तज हरि आश्रय श्वान बन्यो उझकत ठौरे-ठौरे।
सोना चाँदी गहनो गांठी गिन गिन के जोरे,
साँसा छोड़ गई यह देही सुत कपाल फोरे।
जा गोरी गोरी तिरिया नें तेरो चित चोरे,
खावैगी तोकूँ तन धन चूसत थोरे-थोरे।
जीजा सारी काकी ताई भाभी सब भोरे,
स्वारथ बिगरत आँख दिखावैं नाते हैं तोरे।
मैं मेरी, तू तेरी, या ने भव में हैं बौरे,
कृष्ण नाम भज जाने बन्धन पापिन के छौरे ॥

काहे मल-मल चाम कौ धोवै काया गंदी देख गुमानी ॥

या चमड़ी के भीतर औरे
मांस हाड़ की गंदी ठौरे
ऊपर वस्त्र लपेटै धौरे
मल मूत्रन हंडी पर, तेरी नीयत बुरी लुभानी।
सुख में खाये पानन बीड़ा
विष्ठा विषयन कौ बन्यो कीड़ा
भोगन में रोगन की पीड़ा
भोग रोग ते मृत्यु निकट फिर लंबी दुःख कहानी।
एक दिना जब प्राण जायेगो
मुर्दा बनके तू सोवैगो
तेरो बेटा तन धोवैगो
धोय ओढ़ाय चादरो फूँकै, रह जाय राख निशानी।
मन मन्दिर कूँ निर्मल कर लै
ज्ञान दीप की ज्योति जोर लै
भक्ति भाव कौ साज सजाय लै
मन में धर लै ध्यान श्याम राजा राधा रानी ॥

ये काया मेरी अवगुन की है भरी,

नाथ कैसे भव सिन्धु से हो तरी ॥
तुम्हे रिझावे को कछु गुन नाही
संमुख आयवे को मुख नाही
ये काया मेरी पापों की है भरी, नाथ कैसे .... ।
नाम पतित पावन सुन्यो तेरो
याते साहस पर्‍यो कछु मेरो
ये काया मेरी सब विधि है बिगरी, नाथ कैसे .... ।
तेरी शरण लई है प्यारे
चाहे जिवावै चाहे मारै
ये काया मेरी निशि दिन जावै गरी, नाथ कैसे .... ।
मेंरे अवगुन पर ही रीझो
मेंरे पापन पर मत खीझो
ये काया मेरी चरनन में आ परी, नाथ कैसे .... ॥

गोरी काम चिता में जर रही, कोई बचायवे वारो नाय ॥

प्रगटी आग हिये में पहले
पीछे सब तन लागी फैले
बाहर भीतर रोम रोम जलै
बैठी बैठी दुनियाँ देखै, गोरी पजरी जाय।
जर रही चोली चूनर छाती
कमर जांघ जरती सब गाती
सेंदुर माँग जरै बिन बाती
लहँगा साया जरै आग ये गहनन में भहराय।
जरै कौंधनी बिछुवा गूंठी
बोल सके ना आग अनूठी
कंगना मेंहदी जर रही मूठी
आँखन को काजर औ बेंदी, आग सबै कुछ खाय।
दस इन्द्रिय मन बुद्धि जरै हैं
अहंकार औ चित्त जरै हैं,
स्थूल सूक्ष्म सब देह जरै हैं
जीते जी सब दुनिया जरती जल थल नभ में छाय।
जग की इच्छा काम अग्नि है
हरि सों प्रीती अग्नि बुझन है
कृपा कन्हैया ताप नशन है
काहे जरती जीव वधूटी हरि पद निर्भय पाय ॥

लड़ैती भानु की प्यारी रे सुनो अलबेली ब्रज रखबार ॥

महल के द्वार पै ठाढ़ो रे भिखारी झोली पसार।
ये अंधा है ये बहरा है सभी पातक से पूरा है,
हजारों जन्म का भटका रे नहीं इसका कोई उद्धार।
सभी भगवान देखे हैं जिन्हें निज भक्ति प्यारी है,
बिना भक्ति कोई तारे जो बताओ कौन है सरकार।
शरण तेरी ए बेटी भानु की बरसाने की दातार,
पड़ा रहने दे अपने द्वार पै जाऊँ सदा बलिहार।
मैं मांगूं बस यही राधे माँगा ही करूँ सौ बार,
पपीहा बन सदा माँगू चरण की रज मस्तक पै धार ॥

विरह माधुरी

मेरे कनुवा को मनुवा लग्यो है कै नांय,

मोय साँची बताय ॥
सुन ऊधो तू सूधी कह दे
वाको मथुरा भाई कै नांय, मोय साँची ... ।
काखन खावै माखन मिसरी
हाँ माखन मिसरी मिली है कै नांय, मोय ... ।
ह्याँ तो रास रचातो कान्हा
हाँ वाय गोपी मिली है कै नांय, मोय ... ।
ह्याँ तो चरातो गैया बछरा
हाँ वाय गैया मिली है कै नांय, मोय ... ।
ह्याँ तो बजातो बाँस बँसुरिया
हाँ वाय बंशी मिली है कै नांय, मोय ... ।
ह्याँ तो कान्हा मटकी फोरै
हाँ वाय मटकी मिली है कै नांय, मोय ... ।

हरि बिन सब दुनिया सूनी, मोय आवै हिचकी ॥

मथुरा गये फिर ब्रज नहिं आये,
निठुराई ऐसी कीनी, मोय आवै हिचकी ।
वे सावन दिन संग-संग झूले,
बूँदरिया पर रहीं झीनी, मोय आवै हिचकी ।
वे रातें अब सपने की भईं,
रास में भुजा भर लीनी, मोय आवै हिचकी ।
खोर साँकरी दान लेन की,
वे बतियाँ रस भीनी, मोय आवै हिचकी ।
यमुना की वे नीली लहरें,
याद श्याम की दीनी, मोय आवै हिचकी ॥

रुक्मिणी लिखी श्याम को पाती मोकूँ बिन ब्याही लै जाय ।

रुक्मि भैया ने ठानी है कृष्ण यहाँ ना आय,
वर ढूँढ्यो शिशुपाल असुर को ऐसी मति बोराय ।
जो कहु ऐसो भयो मरूँगी निश्चय विष कूँ खाय ।
मोकूँ वेग बचावो तुम तो दीन बन्धु कहलाय ॥
तुमरे गुन सुन सुन के मैं गई तुमरे हाथ बिकाय ।
देवी पूजन को जब जाऊँ तबै मोय लै जाय ॥
सुन के कुंडन पुर को रथ पै गये वेग ही धाय ।
रुक्मिणि हरण कियो हरि ने पटरानी लई बनाय ॥

नाम माधुरी

राधा नाम नदिया की धारा बही जाय रे ॥

ब्रह्मा नाम रटैं पोथी लै
पोथी के पन्ना नदिया में बहे जाँय रे।
सरस्वती नाम रटैं बीना लै
बीना के तार नदिया में बहे जाँय रे।
गौरा नाम रटैं सजधज के
गौरा की साड़ी नदिया में बही जाय रे।
विष्णू नाम रटैं आयुध लै
शंख चक्र नदिया में बहे जाँय रे।
लक्ष्मी नाम रटैं कमलन लै
कमल के फूल नदिया में बहे जाँय रे।
नारद नाम रटैं वीणा लै
वीणा के तार नदिया में बहे जाँय रे।
हनुमत नाम रटैं झंझा लै
हनुमत की पूँछ नदिया में बही जाय रे।
गोपी नाम रटैं ठुमका लै
गोपिन को लहँगा नदिया में बह्यो जाय रे ॥

लगन ऐसी लागै कुँवर कन्हैया ॥

नाम तिहारो पल-पल लेऊँ,
पिऊ-पिऊ जैसे रटत पपैया।
छूटै ना ये लगन तिहारी,
जैसे पतंगा अगनी जरैया।
आंसू बहवैं तुमरे मिलन कूँ,
जैसे मेहा झर बरसैया॥

बोल हरी बोल हरी, हरी हरी बोल,

केशव माधव गोविन्द बोल॥
कृष्ण नाम है तारन हारा
सुमिर-सुमिर उतरै नर पारा
मूरख मन की आँखें खोल, केशव ...।
मुट्ठी बाँधे जग में आना
खाली हाथ पसारे जाना
ज्ञान की बातें मन में तोल, केशव ...।
दो दिन में तू मरने वाला
जली चिता पै फुँकने वाला
सुन लै काल का बजता ढोल, केशव ...।
धरती सोना संग न जावैं

महल-दुमहले ह्याँ रह जावैं
इसी गरब में है बेडोल, केशव ... ।
झूठी माया अब तक जोड़ी
जनम-जनम को है गयो कोढ़ी
सच्चे धन का कर ले मोल, केशव ... ।
दिन खोयो झूठे झगरन में
रात गंवाई है विषयन में
मल और मूत्र का है सब झोल, केशव ... ।
अब भी चेत सम्हल जा भैया
प्रेम से भज ले कुँवर कन्हैया
वृन्दावन में करैं किलोल, केशव ... ।

जीवन के ये दिन जावैं हैं, चेतो भैया गोपाल भजो ॥
वा दिन की याद करो तुम सब
वृद्धों से घृणा करै जग सब
तब कोई काम न आवैं हैं, चेतो भैया ... ।
जब नयन पुतरियाँ उलट गईं
तिरिया-सम्पत्ति सब छूट गई
शमशान भूमि लै जावैं हैं, चेतो भैया ... ।
जिनको समझ्यो अपनो अपनो

जिनके हित भयो तेरो मरनो
वे ही अब चिता सजावैं हैं, चेतो भैया ... ।
जिनकी सेवा में जन्म गयो
सब तन मन धन बरबाद भयो
वे ही अब आग लगावैं हैं, चेतो भैया ... ।
ये धूँ धूँ करके चिता जली
कहती जग ममता नहीं भली
सब देख-देख पछतावैं हैं, चेतो भैया ... ।
कह रही चिता की राख यही
सब की इक दिन गति होय यही
अंतिम संदेश सुनावैं हैं, चेतो भैया ... ।
सब प्रेम करो श्री माधव से
वे पार करैं भव सागर से
भक्तन को सुख पहुँचावैं हैं, चेतो भैया ... ।

नाम रस मीठौ है याय पीवै सो अमर है जाय ॥

पाँच बरस के ध्रुव ने पियौ, लीयो अमर पद पाय।
बालक ही प्रह्लाद पियौ है, नरसिंह रूप धराय।
पियौ है पवन सुत रोम रोम में, उर चीर्यो दिखराय।
मीरा पी पी भई बावरी, विष अमरित करवाय।
पी गई रत्नावती निडर है सिंह लियो लिपटाय।
नामदेव ने ऐसी पीनी, हरि ते छान छवाय।
कमला संग पियौ नारायण, श्री भागवत कहाय।
ब्रह्मा पीयो चार मुखन ते, सब जग दियौ बनाय।
काल कूट हू पियौ नाम बल, महादेव कहलाय।
शेष नाग ने पियौ सहस मुख, धरणीधर कहलाय।
नारद पी गये झूम झूम के, बीणा मधुर बजाय।
सुक सनकादिक संत जनन ने, पीनी गरे लगाय॥

जानें राधा नाम न गायो है, वानें विरथा जनम गमायौ है ॥

नवें महीना गर्भ ते निकस्यौ, बालापन खेल बितायो है।
भयो तरुन विषयन को धायो, तिरिया ते नेह लगायो है।
माया जोरी लाख करोरी, तृष्णा लोभ बढ़ायो है।
भाइ बन्धु औ कुटुम कबीला, कोऊ काम न आयो है।
अन्त समय में नैंन मूँद लिये, जीवन धूरि मिलायो है।
स्वाँसा निकली हंस गयो उड़, कोऊ पता न पायो है।
आयो गयो कहाँ पै पंछी, मरम न कोई बतायो है।
जग की रीति यही चली आई, गयो फेर नहिं आयो है।
राधा रट हरि वश है जावैं, गुरु ने ज्ञान सिखायो है ॥

तेरी सब बाधा कट जावै प्राणी सुमिर-सुमिर हरिनाम ॥

काहे को तू भयो उदासा
कृष्ण चरन की करले आसा
देख तोर लै जम की फाँसा
जनम अनेकन भटकत डोल्यौ थक गये तेरे पाम ।
अब भी तेरे वही हैं ढंगे
लग रहे मन में लाखों धन्धे
खतम न होंगे ये सब दंगे
झूठ कपट और छल छंदन में सब जीवन बेकाम ।
सिर चल रही काल की चक्की
बड़े बलिन की छूटी छक्की
फिर भी तेरी धुन है पक्की
मेरी-मेरी कर मर लेगो, झूठे हैं धन-धाम ।
एक दिना जब काल आयगो
झपट प्राण तेरे लै जायगो
पजर-पजर ह्याँही फुक जायगो
राधा कृष्ण शरण चल भैया, ये ही साँचो काम ।
राधा राधा नाम अधारा
निर्मल बहती जमुना धारा
नैया तेरी लग जाय पारा
वृन्दावन कदमन की छैंया, लगै ताप न घाम ॥

जड़भरत

कह रहे भरत रहूगण नृप ते, क्यों भ्रम में भूल्यो भटकै ॥

मांटी देही, राजा मांटी, प्रजा, राज्य सब मांटी है,
मांटी ढोवनहारी पाँव पीड़री जंघा मांटी है,
मांटी है पालकी बैठ तू मांटी चटकै मटकै।
मांटी काया पै गरबायो, मांटी के मद फूल्यो है,
दुर्बल दीनन कूँ फटकारै, दया कृपा ते सूनो है,
सब कौ रक्षक बनैं हिये में दया कृपा ना फटकै।
बात बनावै ज्ञानी जन सी काम कसाई पूरो है,
सबमें आत्मा भाव किये बिन वाचक ज्ञान अधूरो है,
मिथ्या जग व्यवहार फँसे जो संत जनन कौ खटकै।
परमाणुन ते धरती मांटी, मांटी ते सब देह बने,
मिथ्या सब परमाणु कल्पना मन की माया मात्र बने,
वासुदेव श्रीकृष्ण सत्य सब जगती प्रलय में सटकै।
यज्ञ दान तप गायत्री श्रुति साधन कछु नहिं होवै है,
संत शरण है पद-रज सेवैं याते हरि मिल जावैं हैं,
संत वही प्रतिफल हरि चर्चा अन्य कथा सब झटकै ॥

माता देवहूति सों कपिलदेव जी करैं ज्ञान उपदेश ॥

कान त्वचा दृग जीभ नाक ये
कर पद गुदा लिंग बानी ये
ज्ञानेन्द्रिय कर्मेन्द्रिय दश ये
मन स्वाभाविक लगै स्याम में सहजा भक्ति रमेश।
भक्ति अहैतु मुक्ति ते पावन
जरै कोश संस्कार लिंग तन
देवै अनचाहे श्री धामन
नाश न होवै कबहु भक्त कौ, जिनको मैं सर्वेश।
मेरे हित जे तजै अहंता
तन धन नारी सुत की ममता
भक्तन सौं वह करै साधुता
मृत्यु रूप भवसागर तारूँ, तिनको मैं देवेश।
हिंसा दम्भ द्वेष ये तामस
विविध कामना भक्ति है राजस
सात्विक लक्ष्य कर्म जावैं नस
भेद बुद्धि वारी त्रिगुणा ये, भक्ति कही निःशेष।
चौथी निर्गुण भक्ति भाव है
मन मोमें निष्काम लगै है
गंगधार ज्यों सिन्धु चलत है

चारों मुक्ति न चाहै प्रेमी, बिन सेवा को लेश।
जो काहू को करै अनादर
करै उपेक्षा निन्दा मत्सर
भजन न सफल होय कितनों कर
सब सौं द्रोह, द्रोह है मों ते, सबको मैं हृदयेश।
मात भोग वश जीव नरक क्षति
फिर चौरासी भटक मनुज गति
गर्भ नरक ते निकस भोग मति
नारी रति सों नारी होवै, मिले दण्ड नरकेश।
पुण्य सकाम भोग ही लावै
जब निष्काम कृष्ण पद पावै
देह भाव आसक्ति नसावै
भक्ति योग निष्काम भजो हरि सुन मेरी मातेश।
माँ सुन बोली वंदन निश्छल
श्वपच विप्र ते श्रेष्ठ नाम बल
गये कपिल माँ ध्यावैं अविचल
भई सिद्ध मैया पद पाई नित्य मुक्त राधेश॥

शिव ब्याहन को आये देखो सजनी ।

मुंडमाल देखत सब डरपे उर लटकाये देखो सजनी ।
बाघम्बर पहरे सब अंग भभूत लगाये... ।
कारे नाग लपेटे तन फुसकार कराये...।
भूत प्रेत बैताल बराती नाच नचाये... ।
कोई चिग्घाड़े कोई हुंकारे आँख दिखाये... ।
मैना चली आरती करवे जोति जराये... ।
देखत रूप भयानक डरपीं थाल गिराये... ।
देख सती मन करति प्रार्थना, शिव मुसकाये... ।
सुन्दर रूप धरयो गौरीपति, काम लजाये... ।
गोरी देह गंग माथे चंदा चमकाये... ।
सर्प बन गये मणि के गहना, चंदन लगाये... ।
भूत प्रेत सुन्दर नट बन गये, सबन सुहाये... ।
देखत मैना सुखी भईं अति, थार सजाये... ।
दुवराचार आरती करके, मंडप पधराये... ।
शिव ने ब्याही गौरा लोकन गीत बधाये... ॥

अनुक्रमणिका

अँगिया मैं का पै रंगवाऊँ री रंगरेजा रंग नाय जानै 375
अइयो-अइयो कान्हा यमुना किनारे आधी रात 164
अइयो-अइयो रे साँवरिया मेरी गलियन अइयो रे 207
अनोखौ छैला ठाढ़ो माँगै दही कौ दान 272
अपने लालाय तनक समझाय दीजो मोपै ऊधम सह्यो न जाय 184
अपने-अपने रूपन देखैं इक-दूजे की अँखियन माहिं 437
अब घर कैसे जाऊँ मेरी माय चुनरिया भीज गई 442
अरि बरसाने बजी बधाई कीरति नें लाली जाई 252
अरि बिछुर गयौ मन कौ प्यारो कहाँ छिप गयौ बंसी वारौ 61
अरि मनमोहन की है प्यारी राधा वृषभानु दुलारी 16
अरि मेरे दोऊ नैनन कौ तारौ मनमोहन मुरली वारौ 60
अरि मोपै सुन-सुन रह्यो न जाई ये वंशी श्याम बजाई 316
अरी डरपावै आयो हाऊ माँ बड़ो बुरो बलदाऊ 83
अरी दधि बेचनहारी ऐयो अकेले में अरे नांय आऊँ साँवरिया मैं तो अकेले में 104
अरी नन्दगाँव बड़ौ है प्यारौ जहँ खेलै वंशी वारो 457
अरी होरी में है गयौ झगरौ सखियन ने मोहन पकरौ 368
अरे मत घूँघट मेरो खोल मैं परूँ तिहारे पैंया 176
अरे मत निकसै गोकुलचंदा लग जायेगी नजर नंदनंदा 115
अरे मान ले घनश्याम कर जोरूँ छीऊँ तेरे पाम 135
अरे राधा रानी चढ़ी हिंडोरे लैकें गिरिधर को झूलैं 231
अरे हरि चरनन नेह लगाय लै सिर पै काल रह्यौ मंडराय 481
अरे ह्याँ गहरो पानी नंद के मेरी लीजो बाँह पकर के 444
आई घटा कारी-कारी आओ श्याम मुरारी 202
आई रात शरद पूनो की जामे रच्यो कृष्ण महारास 333
आई-आई नन्द के रे जुलमी मत जा मत जा बेदरदी 413
आओ आओ बिहारी मेरे अँगना – आओ आओ बिहारी 211
आओ आओ रे सखा घेरो घेरो रे सखा.. 277
आओ बिहारी मेरे अँगना आओ-आओ बिहारी 159

आज छोड़ के अयोध्या चलै हैं रघुराई 467
आज बजी बधाई भोर राधिका जनम लियो 256
आज बधाई आज बधाई राधा जनमी आज बधाई 261
आज भोर बरसाने वारी आई नन्दगाँव पै धाय 383
आज मिल गई गली संकरिया में गोरी घूँघट वारी कैसे घेरी गली सँकरिया में ओ मोहन दान विहारी 81
आज रंगीली होरी रे रसिया 389
आजा आजा नंदलाल दही मीठो 281
आनन्द झूम रह्यो वृषभानु भवन में राधा जनमी आय 251
आये-आये मन मोहन हमारी गलियाँ 158
आयो आयो मेरे झूलन आयो मोहना 222
आयो माखन चोर मेरी अटरिया में 189
आयो मोहन हमारे वो तो कर गयो काम करारे 275
आवो रे कुँवर कन्हाई साँवरे तोकूँ नंद दुहाई 130
इंडुरी मेरी लै गयो साँवरिया 406
इक श्याम छैल ब्रज आवै री गोरी बचती रहियो 69
इतनी मती उड़ै तू नार चिरैया उड़ कहँ जावैगी 101
इनको कृष्ण रूप ही जानो धनि धनि ब्रज मण्डल के चोर 470
उमड़ रह्यो उमड़ रह्यो दरसन को मेरो मन उमड़ रह्यो 409
ऊँचे नंदीश्वर पर्वत पै सोहै मोहन को नन्दगाँव 454
ऊधम मोपै सह्यो न जाय यशोदा हम तो बसें कहुँ और 204
ए कान्हा छाँड़ो न मेरी बैंया 412
एजी सुनो बंशी बजैया कन्हैया झूलूँगी हिंडोरे 221
ऐ श्याम चलो ऐयो ऐ श्याम चलो ऐयो 183
ऐयो ऐयो मेरे घर रे साँवरे 124
ऐयो ऐयो रे साँवरिया मेरी गलियन ऐयो रे 192
ऐयो रे मेरी डगरिया अरे प्यारे साँवरिया 134
ऐसी कौंन न मोहै श्याम देखे 103
ऐसी गल रही मैं गिरिधर बिन 180
ऐसी वंशी श्याम बजाई सबके मन में गई समाय 311
ऐसो चटक-मटक कौ ठाकुर तीनों लोकनहूँ में नाय 44
ऐसो रास रच्यो वृन्दावन है रही पायल की झनकार 331

ऐसौ ढीठ भयौ नंदलाला ब्रज में धूम मचायो है 414
ऐसौ भयो नन्द कौ ढोटा याय नाय लाज रही 55
कदम वन झूलन आई श्यामा 232
कन्हैया ते प्रीति किये पछतानी 190
कन्हैया प्यारे आय जइयो बरसानों मेरौ गाँव 199
कन्हैया मेरी गगरी उचाय 406
कन्हैया रंग तोपै डारैगो सखि घूँघट काहे खौलै 362
कन्हैया राधा रानी कौ भयो बिना मोल कौ चेरो 33
करले दृढ़ विश्वास युगल कौ काहे रह्यो झकोरा खाय 489
करुणा सुनो कृपा के सागर दुखिया पर्यो एक असहाय 487
कहँ ते आय गयो साँवरिया मेरी बैयां पकरी आय 178
कह रहे भरत रहूगण नृप ते क्यों भ्रम में भूल्यो भटकै 505
कहाँ जाऊँ कहा करूँ गिरिधर अटकै 404
काउ दिन एक पलक में ढह जाएगी.. 472
काउ दिन सबरी अकड़ झराय दूँगी.. 157
कान्हा कारे तुम तो क्यों भये 167
कान्हा काहे को हमारी तैंने फोरी गगरी 410
कान्हा चोरी करवो छोड़ सगाई तेरी है जायगी 177
कान्हा जनम लियौ आधी पै 241
कान्हा ते कैसे खेलूँगी होरी 384
कान्हा तोर ला पतौआ तोये प्याय दऊँगी दही 274
कान्हा पिचकारी मत मारै चूनर रंग बिरंगी होय 363
कान्हा मेरे माखन खायवे आवैगो कि नांय 279
काया पिंजरा नौ दरवाजे हंसा जाने कब उड़ जाय 478
कारे-कारे हट जा रे मोते अंग न छुवा 182
काली दह ते निकस कें आयो री नंदलाला कुँवर कन्हैया 431
काहे बंशी तू रात बजावै रसिया बजावै रसिया.. 313
काहे मल-मल चाम कौ धोवै काया गंदी देख गुमानी 491
काहे मोहन संग हमारे परै ब्रज में मेरो लै लै नाम धरै 150
कीरति की सुकुमारी लाली 27
कीरति जू के कन्या भई जै जै राधा रानी की 254
कैसी ऋतु सामन की आई जामें झूलन की बहार 225

कैसी चतुर सयानी गूजरिया 97
कैसे खेली सखी श्याम बिन कजरिया-२ ना 465
कैसे जाऊँ बचके कान्हा ठाढ़ो अड़कै 149
कैसे जाऊँ रे हाँ-हाँ नंद जू के द्वार सोच रहे वसुदेव जी 246
कैसे झूम रहे अम्बर में प्यारे बादर मतवारे 217
कैसे नाहिं करूँ जब दधि माँगै अँखियन में भर-भर पानी 294
कैसे माँगै दान गँवार ढीठ तू साँवरिया 285
कोई इकली जैयो मत गोरी 405
कोई न जानै कब फट जावै काया जल को एक बबूलो 479
कोई माखन चोर री ब्रज गलियन डोलै 96
कोई मिलाय दै नंद जू के लालन 169
कोई मोते लै लेओ री गोपाला 279
कौन दुहावै गैया कन्हैया छलबलिया 88
कौन मेरे धँस आयो कारी अँधेरी में 191
खिल गये कमल रात में प्यारे जब हरि जनमें आधी रात 244
खिलौना चन्दा लैहौं लाय दै री जसुदा माय 48
खिलौना माटी को तू मांटी में मिल जाय नाम 483
खेलैं गेंद कृष्ण ब्रजराय बिरज की डागरिया 197
खेलैं महारास वृन्दावन राधा प्यारी औ नन्दलाल 324
खेलो-खेलो रे साँवरिया होरी संभर-संभर के आज 392
खोर साँकरी की गलियन में माँगै दान दही कौ श्याम 266
गई री गई कहाँ गोरी एक भोरी सी हाय कहा जाने मोपै कर गई रे 41
गगन में कौन उड़ै मोहि मोहन देहु बताय 302
गहवरवन की कुञ्ज गलिन में खेलैं राधा कुँवर कन्हैया 438
गागरिया मेरी उचावैगौ कन्हैया बंसी वारौ 66
गाय छोड़ हरि दुह रहे नाटे राधा रूप दिवाने हैं 297
गावो गावो री बधायो रानी कीरति के घर आज 249
गिरिवर गिर ना परै सहारो सब देवो रे 356
गिरिवर धार लियो अँगुरी पै सात बरस कौ रसिया 355
गुजरिया झूठी है सुन मेरी मैया 80
गोकुल में सोर भयो भारी वृन्दावन बोलें मोर 456
गोपिन की लागी भीर पनघट प्यारो लगै 402

गोपिन पाछै डोलै कान्हा रूप बावरो 84
गोपी कह रही काहे श्याम निठुरता बैनन सों बोलै 335
गोपी गाई सुरसों रोयीं सुनत ही प्रगट भये गोपाल 345
गोपी जानि गई राधा संग हरि ने कीयो प्रेम विहार 341
गोपी झमक झमक कें नाचैं ग्वाला गावैं मीठे तान 243
गोपी नाची हरि संग महारास में कालिन्दी के तीर 347
गोरी कब तक नैन छिपावैगी तेरे पीछे पर्‌यो कन्हैया 156
गोरी काम चिता में जर रही कोई बचायवे वारो नाय 493
गोरी बच के चली कहाँ कूँ नजरिया फेर फेर फेर 286
गोरी बरसाने की गावैं गारी होरी में लै नाम 381
ग्वालिन कैसी झूँठी बात बनाय रही 107
घूँघट में ते देख-देख पीछे आवै चल्यो नंदलाल 170
चढ़ के नन्द गाँव पै आई गोपी बरसाने वारी 378
चढ़ पर्वत ऊपर बैठी खेलत में प्यारी रूठी 423
चढ़ी रे अटरिया पै कान्ह बुलावै 167
चरन जाके दाबैं गिरिधारी चरन जाके दाबैं गिरिधारी 17
चलहु श्याम अब गऊ चरायवे अब ताई तू सोवै है 358
चली है मटकी लैकैं चली है मटकी लैकैं 283
चलो ऐयो तू मेरी डगरिया 203
चलो लै के बधाई आज री 264
चूनरिया रंग में बोर गयौ कान्हा वंशी वारौ 364
चोर चोर माखन चोर चीर चोर चित चोर 75
चोरी की सब झूठी बात मात तैनें साँची जान लई 418
छेड़ै रोज डगरिया में तेरो ढीट कन्हैया मैया 365
छोटो सो मेरो छोना ये ब्रज को खिलौना 106
छोड़ दै गैल हमारी काहे को ठानी तैंने रार 280
जतन सौं राखियो हमारौ गिल्ली डंडा 390
जनम लियो राधा ने कीरति के बधाई आज 259
जन्में दीनदयाल रे आठें बुद्ध रोहिणी भादों 236
जब ते देख्यो बलबीर मन कूँ प्यारो लगै 141
जयमाल कर लैकें चली जनक दुलार 466
जसुदा मैया लाल तिहारौ भारौ औगुनगारौ है 298

जा परे मोहि मत छुवै साँवरे कारी है जाऊँगी 117
जा रे जा रे मोहना रे छोड़ गैल तो मेरी 284
जाको राखै कृष्ण कन्हैया वाको मार सकै नाय कोय 51
जानें राधा नाम न गायो है वानें विरथा जनम गमायौ है 503
जाने कब मेरे घर आवैगो मोहन मुरली वारो 160
जानै कब तक कानन मूँदैगो मैं टेर-टेर के हारी 474
जारै ईंधन राशि को धूमकेतु जु प्रचंड 476
जीवन के ये दिन जावैं हैं चेतो भैया गोपाल भजो 500
जुलम करैं ये घूँघट मार मेरी भोरी मैया 78
जै जै नित्यधाम बरसानो श्याम जहाँ पै गारी खाय 387
जै जै बरसानो गाँव जहँ राधा रानी राज रहीं 445
जै जै वृषभानु दुलार महारानी ब्रज के मण्डल की 12
जोगिन भेष बनाया 139
झुक ही गयो सिर देखी जो शिखर बरसाने पर्वतवारी की 452
झूठी बड़ी ये लुगैया सुन लै मेरी मैया 108
झूलन चुनरी फररर होय-होय मेरी मैया 234
झूलन लागीं झूला प्यारी हुलसाय 233
झूला झूल रहे पिय प्यारी तीज हरियाली आई है 227
झूला झूलैं यमुना के किनरिया राधा संग साँवरिया 230
झूला झूलैं राधा प्यारी चुनरिया फहर-फहर फहरै 228
टेढ़ो टेढ़ो श्याम टेढ़ी नजरिया तेरी 86
ठगिया बड़ौ नन्द कौ छैया ये तो चोरन कौ सरताज 420
ठाढ़ी अपनी अटरिया पै गारी दै गयो दैया 394
ठाढ़ो यहाँ कहा करै नंद के ठगैल 129
ठाढ़ो रहियो रे मत जैयो तेरी सौं मैं आऊँगी 195
ठाढ़ो रहियो रे श्याम मैं आऊँगी 123
ढाँढ़िनि कहै सजन सों हँस हँस चल बरसाने दोनूँ जाँय 258
ढीटो-ढीटो रे भयो श्याम हाय बड़ो ढीटो 118
ढीठ हठीलो अलबेलो कैसौ जायो यशोदा ने लाल... 99
ढूँढ़त कृष्ण चरण चिन्हन ते मिल गई श्री राधा रानी 340
ढूँढ़त फिरी गोपिका प्यारी कहाँ गये प्यारे नंदलाल 339
ढूँढ़त रही गोपिका वन में कहँ तुम कृष्ण छिपे हो जाय 336

ता ता थेइया ता ता थेइया नाचैं राम गुपाल 441
तू बंशी नेंक बजैयो रे बंशी के बजवैया 317
तेरी नजर है या टोना ये जादू टोना नजरिया मत मारै रे 74
तेरी बंशी ने कियो कमाल रे मुरली के बजैया 303
तेरी सब बाधा कट जावै प्राणी सुमिर-सुमिर हरिनाम 504
तेरे गुलचा गाल जमाय दूँगो क्यों चोर कहै तू मोते 87
तेरे नैना कर रहे टोना श्याम सलोना 85
तेरे नैना बान कमान छैल सुन नंदगैयाँ 114
तेरे बिना मैं रोई रे साँवरिया तेरी याद में कन्हैया तेरी याद में 198
तेरे मन में कहा बसी है मेरौ मारग रोक्यो आय 269
तेरो चाकर है नंदलाल श्रीराधे बरसाने वारी 33
तैंने छोड़े कहाँ मोर मुकुट धारे ओ कृष्ण बँसुरिया वारे 110
तैंने जादू डाला रे अरे साँवरे 119
तो ते नैना जो मिलायो हल्ला है गयो सबरे गाम 132
तोते नेहा लगाय कहा पायो रे 165
दधि लूट लियौ दगरे में कुंजन ते तनक परे में 271
दहिया मथ रही रई घमरकन माखन खा जा साँवरिया 296
दान मैं तो नाय दऊँगी औ नंदलाला 289
दिखाओ गिरिधारी दरद की मैं मारी 140
दिखाय दै प्यारी मुख अपनों राधे वृषभानु-दुलार 432
दिवला भानु भवन में जुर रहे.. 351
दीनानाथ कृष्ण गिरिधारी मेरी टेर सुनो चित लाय 486
दुनियाँ भर के दुख सह लूँगी तेरो विरह सह्यो न जाय 144
देखो किया है ये हाल मैया तेरो नंदलाल हमें रोके रोज डगरिया में 212
देखो छाँड़ो न पकरो हाथ नई री मैं तो नई आई अनजानी 132
देखो देखो आये रघुवीर बगिया में 463
देखो नाँचै कन्हैया देखो नाँचै छूंम छं छं छं छं छन नन नन 92
देख्यो री आज बांका साँवरिया 411
दै जाओ तुम दान अरी औ ग्वालिनियाँ 288
दौर-दौर सब ब्रज की विरहिन राधा चरन गहे सुखसार 342
धनि धनि बरसाने की लाड़ो 361
धनि धनि ब्रज मण्डल के बन्दर हरि संग चोरी करवे जाँय 419

धीरे चलो पीछे ते श्याम रह्यो आय 102
नंद जू को छैया अलबेलौ मेरी मटकी में मार गयो डेलो 407
नखरारो साँवरिया सबन पै जादू डार्‌यो 94
नजरिया मत मारै मर जाऊँगी 162
नन्द के भये नंदलाल बिरज में आनन्द भयो 247
नाँचैं-नाँचैं रे कन्हैया राधारानी रही नचाय 330
नाचूँगी-नाचूँगी-नाचूँगी आज राधा बधाई नाचूँगी 248
नाम रस मीठौ है याय पीवै सो अमर है जाय 502
नाय छोड़ै री मेरी कलैयाँ दान देय तो छोड़ूँ कलैयाँ 291
नीलम का नगीना प्यारा श्याम सलोना 68
नीलम का नगीना मेरा श्याम सलौना 67
नेक हेल उचाय जा रे छोरा नंद जू के 121
नैना गिरिधर ते मिलाय लै भारी सुख पावैगी गोरी 98
नैना चलावै घनघोर बड़ौ री चित चोर लाड़लो नंद को हाय 166
नैना चुभे पीर न जानैं जाके काँटो चुभै सोई जानैं 147
नैना हरि सौं ऐसे उरझे सुरझन की नहीं नेंकहु आस 194
नैना ही में नैना देखैं नैना रूप दिवाने हैं 435
पनघट पै आयो नंद लाल सखी लटक रही बैजंती माल 412
परबस है के ठाढ़ी मोह लइ मोहन ने 73
परलै पर गई बंसी वारे नें बजाय दई बंसिया 318
पर्‌यो पलका पै सोवै मरवे की खबर है नांय 484
पर्वत पै कोंहक भयो भारी गहवर वन बोलै मोर 453
पल पल आयु घटै रे प्राणी हरि भज छोड़ सबइ जंजाल 485
पानी बरसत रात अँधेरी आयो श्याम हमारे द्वार 220
पिय की प्रानन प्यारी री जै जै भानुदुलारी रे 23
पिया तेरे संग नचूँगी नचूँगी 205
पुरवैया बह रही सनन सनन पत्ता उड़तो जाय 475
पूछै प्रश्न परीक्षित राजा काहे रास रच्यो भगवान 349
पूतना जो तारन हारो ऐसो और कौन दया वारौ 93
प्यारी आओ खेलैं आज ये ऋतु बसंत की आय गई 360
प्यारी की पायलिया बाजै 35
प्यारी झूलन में रस बरसै झूलैं चल कें दोऊ आज 226

प्रेम बँधे हरि सेवा करैं थकी जब सब गोपी सुकुमार 348
फुलवा बीनें राधा प्यारी भोरी रंग रंगीली बाल 299
बंगला तीन खनन कौ सुन्दर बंगला भीतर बैठ्यो कौन 477
बंशी तो बाजी आधी रात बिरज में 308
बंशी बाज रही कदमन में कैसे जाऊँ मेरी बीर 314
बंशी बाजै कदम के नीचे मन में कसक रही 320
बंसीवारे ते लगाय लै गोरी नेह प्रेम रस आवैगो 47
बड़ो जुलमी हमारो श्याम रसिया वो कितनो मोय तरसावै है 122
बधाई बाजै भानुराय दरबार 260
बधाई बाजै मन्दिर में मंगल गावैं हुलसाय 240
बन बन ढूँढ़ूँ साँवरिया ऐसी है गयी बावरिया 131
बरसाने की गैलन डोलै रे कान्हा बावरो कान्हा बावरो 24
बरसाने की गोपीं नन्दगाँव में होरी खेलन आईं 386
बरसाने वारी दैजा दान बड़ो प्यासो रसिया 273
बरसाने सुन लई घोर गिरिवर पै बंशी बाज रही 315
बरसानो रसमय बरसानो 447
बलिहारी तेरी बतियाँ प्यारी बड़ी रिझवार 128
बसंती रंग बरसैगो आई-आई रे बसंत बहार 361
बाँध्यो मैया यशोदा अपनों लला 460
बाँसुरिया बजाय जा बंशी वारे श्याम 305
बाज रही आधी रात बंसी बाज रही 318
बाजी बधैया सवेरे सवेरे लली कीरति ने जाई सवेरे सवेरे 265
बाजी बाजी री बँसुरिया कदमवन 307
बाजी मीठी-मीठी बंसी बाजी रे रसिया बंसी के बजैया 321
बाजै बाजै आज बधाई माई सोहिलो 264
बाजै बाजै री बधाई मैया तेरे अँगना 242
बाट तकूँ मैं तेरी श्याम बिरज की गलियाँ 154
बादर गरजैं बिजुरी चमकै पानी बरसै गोलाढार 215
बाबा नन्द द्वार पै ठाढ़े कह रहे सुनो मेरे प्यारे 239
बिक गयो कुंज विहारी देख राधा प्यारी 26
बिगड़ी बनाले संकट हटाले 473
बोल हरी बोल हरी हरी हरी बोल 499

ब्याह कराय दै री कहै कन्हैया मेरी मैया 95
ब्रज की रज में धूर बनूँ मैं ऐसी कृपा करो महाराज 450
ब्रज के राजा इन को कहियत दीनदयाल बड़े बलराम 440
ब्रज कौ रसिया रंगरंगीलौ मेरौ मोहन अलबेलो 45
ब्रज तो है प्रेम बजार रे सौदागर श्याम घरन डोलै 451
ब्रज में कैसे रहूँ बताय भोरी मैया 85
ब्रज में फिर प्रेम भरी प्यारी मुरली की तान सुना देना 323
ब्रज में बादर पानी बरसै हरि गिरिराज उठायौ है 352
ब्रजरस ब्रजवासी ही जानें याको मूरख समझैं नांय 322
भम्भो जो नांय देगी दान आज तेरी चोरी है जायगी 295
भयो देवकी के लाल जसोदा जच्चा बनी 247
भानु की पौरी झाँकै श्याम आयकें लुक-छिप चोरी ते 428
भायेली छैला श्याम आज मेरे दीनो हाथ कमरिया में मोय रोकी गली संकरिया में 186
मटकी बरसाने में फोरेंगे नंदगाँव के ग्वाल 292
मत बनै निरमोही साँवरिया रे 190
मतजा मतजा ओ नन्दलाला सुनजा सुनजा बतियाँ मेरी 187
मन तो मेरो लै लियो राधा के रसिया श्याम नें 201
मन में बस्यो री कन्हैया प्यारो वह मोर मुकुट वंशीवारो 79
मन रम रह्यो नंद के लालन ते 170
मनुआ नेक कह्यो नाय मानै मैं तो पच-पच के गयो हार 482
मन्दिर मान मानगढ़ ऊपर गहवरवन बरसाने में 424
मन्दिर शिखर मानगढ़ ऊपर राधा मानविहारी लाल 422
माखन की चोरी बारम्बार करे फिर भी तो राधा रानी प्यार करे 54
माखन खाय लै खूब अघाय गोपिन के घर मत जैयो 458
माखन चोरन गये श्याम घर काऊ चतुर सुनारी के 417
माखन दै दै तनक गुजरिया अपनी मटकी तनक उतार 278
माता देवहूति सों कपिलदेव जी करैं ज्ञान उपदेश 506
मार गई तानों गुजरिया देखूँगी साँवरिया 180
मार्‍यो मार्‍यो री घड़े में कंकर आय सहेली टूक-टूक घड़ो है गयो 185
मालिन बरसाने में आई 111
मीठी तेरी छाछ पिवाय दै प्यारी मन भरके 276
मुरलिया मधुर बजाई झूलत में गोपाल 229

मुरली वारौ मेरौ प्यारौ जाकौ मोर मुकुट चमकै 46
मेरी अँखियन में निरदई श्याम ने मारी मूठ गुलाल 369
मेरी टेर सुनो महारानी रानी राधे जू महाराज 15
मेरी तोते लागी लगन रे साँवरे पिया 210
मेरी मुँह लगी मुरली री कोई लै गई चुराय कोई लै गई चुराय 319
मेरी सास लड़ै मेरी ननद लड़ै 393
मेरे आगे डोले री वो नंद महर को बारो 145
मेरे कनुवा को मनुवा लग्यो है कै नांय 495
मेरे घर कबहुँ न आवै साँवरिया मोय काहे को तरसावै 64
मेरे धुकर पुकर जिय होय रे 148
मेरे पीछे ते मारै हेला ये नंद जू को ढोटा अलबेला 405
मेरे मन की समझै कौन जूझ रहे रेलापेली में 376
मेरे मन मन्दिर में एक बार तो आ जाओ गिरिधारी 480
मेरे मन में बस्यो कन्हैया नंद लाल मुरलिया वारौ 133
मेरे मुख पै अबीर मेरे मुख पै अबीर 371
मेरे हियरे में आग लगाय रे हो लाड़ले तू बंशी बजाना छोड़ दे 173
मेरे हियरे में बस्यो आय नंद कौ साँवरिया 175
मेरे हूक उठी है मन में दिखाय दै कोई साँवरिया 213
मेरो कनुआ आँखिन तारो है 459
मेरो प्यारो है साँवरिया दुनियाँ बैर करै 153
मेरो सांवरो सलोना न देखो सजनी 67
मेरौ राधा नाम सहारौ जैसे प्यासे कूँ पानी 6
मैं कैसे आऊँ कान्हा पायलिया मेरी बाजै 310
मैं कैसे प्रीति लगाऊँ री मनमोहन बंसी वारे ते 53
मैं कैसे होरी खेलूँ री मन मोहन मुरली वारे ते 374
मैं जागूँ नींद न आवै मेरी अँखियन मोहन करकै री 59
मैं तो जोगनियाँ बन जाऊँगी मेरी लगन लगी गिरिधर सौं 155
मैं तो तेरे हाथ बिकानी औ जादूगर साँवरिया 138
मैं तो श्याम मिलन को जाऊँ बैरिन बाजै पायलिया 146
मैं तो साँवरिया के जाऊँगी चाहे रोकै सबरी दुनियाँ 142
मैं तो होरी खेलन जाऊँगी नांय मानै मेरो मनुवा 400
मैं वारी तेरी अइयो रे कान्हा दऊँगी तोकूँ सदमाखन 196

मैंने तोसों नैन लगाये कहा करैगो कोई रे 58
मैंने तोसौं नैंन लगाये कहा करैगो कोई रे 51
मैंने तोही ते नेह लगायो रे सुन प्यारे नन्द दुलारे 65
मैया टीको कर रोरी कौ गऊ चरायवे जावै श्याम 357
मैया तेरो लाला बड़ो जुलमी 120
मैया ने दियो लड्डू फूट गयो कन्हैया प्यारो मैया ते रूठ गयो 72
मैया मेरे बैर परी हैं ब्रज की गोपी फरिया फार 415
मोय दैजा दधि कौ दान गुजरिया बरसाने वारी 275
मोरा कोंहक कोंहक कें बोलैं आई सावन की बहार 214
मोहन काहे को पकरी बैंया 129
मोहन की प्यारी अँखियाँ बिन देखे रह्यो न जाय 62
मोहन मुरली वारे तुमको लाखों प्रणाम- तुमको लाखों प्रणाम 116
मोहन मोय रिझाय गयौ री बड़े नैनन कजरा वारौ 56
मोहन वृन्दावन के राजा राधा महारानी सुकुमार 455
मोहन सुजान दिन रैन रटैं राधे राधे 63
मोहन है चित्त कौ चोर ढुँढ़वाय लै मेरी भायेली 49
मोहि बावरी कहैं सब गाम की मैं तो चेरी भई कारे कान्ह की 143
यमुना पै श्याम बुलाय गयो री 409
यमुना लहर-लहर लहरावै कान्हा दीजो पार लगाय 443
यमुना लहर-लहर लहरावै दाऊ तट पै रास रचाय 439
यशुदा के छैया आजा कदम के नीचे 127
यशुदा के छैया बहुत नचाई मोय 128
यशुदा को छैया बड़ौ रसिया री बड़ौ रसिया बड़ौ रसिया 172
यशुदा दह्यो बिलोवै कन्हैया बारो अँगना में खेलै 105
यशोदा मैया लालाय पालने झुलावै 120
या में कहा लाज कौ काज खेल लै होरी रंग भरी 366
यारी जोरूँगी मोहन ते मेरो कोई रुकवैया नाय 179
यारी मोहन ते लगाय लै ऐसो यार और कोउ नांय 82
ये आया माखन चोर ब्रज की गलियन 76
ये कहा तो भयो श्याम राधा रानी को गुलाम भयो 70
ये काया मेरी अवगुन की है भरी.......... 492
ये कौन है अनोखी नई आई कहँ ते ये रूप लूट लाई 21

ये गजरा फूलन को पहनाऊँगी तोहे श्याम 126
ये गौर-श्याम की जोरी मो अँधरे की दो आँखी 488
ये तो माटी में लोट-पोट होय यशोदा मैया तेरो ललना 91
ये तो मोहन की लगवार ऐसो हल्लो भयो मोहल्लो 152
रंग चतुर गुजरिया डार गई री 396
रंग मत डारै रे अरे साँवरिया 391
रंगीली होरी आई धूम मची बरसाने 370
रस भीनों साँवरिया राधे को रंग रसिया 90
रसीलो सावन आयो झूलें कदम की छाँह 224
राजा जनकराज की बेटी सीता वन में प्यासी जाय 468
राधा गोरी मोहन कारो सगाई नाय होय प्रोतानी 89
राधा जनम बधाई होय होय मेरी मैया 262
राधा जनम भयौ बरसाने आये नन्द यशोदा धाय 250
राधा नव ब्रजबाल होरी खेलैं 397
राधा नाम नदिया की धारा बही जाय रे 498
राधा प्यारी कमल कौ फूल मोहन भँवर बने 16
राधा बनी कमल की माल श्याम भँवरा सो बन्यो 20
राधा भोरी भोरी नटखट नंदलाला 32
राधा मार गई री मार गई री नैंना तरसैं रे साँवरिया 22
राधा मेरी कंचन गोरी रे 25
राधा रानी को रंगीलो दरबार पर्यो रह कुंजन में 18
राधा रानी को सहारौ मेरौ सांचौ है भली 8
राधा रानी को है बरसानों रंगीलो बरसानों 446
राधा रानी तेरो प्यारो मैं देख आई री 27
राधा सोने हू ते गोरी सोनो देख लजायो है 434
राधा-माधव खेलैं गहवरवन में दिव्य प्रेम के खेल 433
राधारानी को कन्हैया बड़ो प्यारो मन मोहन मुरली वारो 113
राधावर कुञ्जविहारी रे राधे गोविंद बोलो 77
राधिका लाड़िली अलक लड़ी 184
राधे अलबेली सरकार रटे जा राधे श्रीराधे 11
राधे क्लेशनाशनी भाम जय श्री गौरांगी राधे 40
राधे गोविन्द भज मस्ताने काहे माया में बौरे 490

राधे रानी कृपा बरसाओ दरस दिखराओ मैं तेरी हूं शरणी 38
राधे रानी के नथ पै मोर नाँचैं थेई-थेई 10
राधे रानी रस की खानी तेरो जस गायो है 28
रानी कीरति के कन्या भई नाँचैं नन्दराय वृषभान 252
रानी बड़ी है दयाल दयाल महारानी 31
रासेश्वरी राधिका नाचैं मोहन वंशी रहे बजाय 329
रिमझिम बरस रही बादरिया कान्हा भीजी जाऊँ रे 218
रुक्मिणी लिखी श्याम को पाती मोकूँ बिन ब्याही लै जाय 497
रैना कारी नागिन लागै सूनी है गई सेजरिया 171
लंका जीत गये श्री राम मार्यो रावण नौलखिया 469
लग जायेगी नजर (तोहे) घनश्याम मत चलै झूमतो इतरातौ 112
लगन ऐसी लागै कुँवर कन्हैया 121
लगन ऐसी लागै कुँवर कन्हैया 499
लड़ैती भानु की प्यारी रे सुनो अलबेली ब्रज रखबार 494
ला रे नाव अरे मल्लहा के उतार पार यमुना के 109
लालन धीरे धीरे चलिये लली की गलियाँ 462
लाल-लाल चूनर उड़ाय गोरी कहाँ चली छबीली हाय हाय रे कहाँ चली छबीली 37
ले गयो चीर मुरारी कन्हैया लाल बनवारी 408
वंशी के बजैया रे श्याम तेरो रंग कारो 84
वा दिन बिक गई जा दिन देख्यो मैंने सुन्दर नन्द कुमार 193
वा दिन भाज गई गोरी रस की भरी गुजरिया 100
वृन्दावन कालीदह पै मोहन गेंद कौ खेल मचावै री 429
वृन्दावन रास रचायो री मनमोहन रास रचैया 332
वृषभानु कुँवरि सुखधाम जैजै कीरति सुकुमारी की 13
वृषभानुनन्दिनी सजनी बनी प्यारी सजनी बनी 426
शरण में तेरी आयो हेरी बरसाने की 14
शिव ब्याहन को आये देखो सजनी 508
श्याम इंडुरी दे दो मैं पनिया भरवे जाऊँगी 407
श्याम चराय ला गैया तोय माखन दूँगी 461
श्याम टेढ़ी नजर मत मार्यो करै मर जावैगी गोरी कोई 174
श्याम तू बड़ौ अनाड़ी रस कौ 137
श्याम तैंने काहे को रार मचाई 287

श्याम नें अकेली पायकें घेर लई मोहि आज बैरिन आय गई लाज 206
श्याम नैयनों की मारै कटार पनघट नांय जाऊँ 403
श्याम बड़ौ जादूगर सिरमौर 68
श्याम रंग में ऐसी भीजी श्याम भई मैं श्याम 200
श्याम विरह में श्याम विरहिनी मिलकै गावैं गोपी गीत 344
श्यामसुन्दर मन भाय गयौ री मनमोहन मुरली वारौ 57
श्री नन्दबाबा के लाल हमारे अइयो बाखिर में 50
श्री बरसानों रस बरसानों राजै राधा अलबेली 449
श्री राधा प्रेम नदी उमड़ी 235
श्रीराधा पद पद्म रस पगी रसीली भूमि.. 269
श्रीराधा प्यारी लाड़िली रानी कीरति की सुकुमार 29
श्रीराधा प्यारी लाड़िली हरि रसिया की रिझवार 30
सखि अब घनश्याम मिलें कैसें 209
सखी मिथिला सहर गुलजार री सखी मिथिला 464
सगाई तेरी फिर जायेगी चोरी छोड़ कन्हाई 415
सज के चली राधा प्यारी अरे राधा प्यारी 42
सजनी राधे जू रस की खान श्याम की मंद मंद मुसकान 19
सब उपनिषद तपस्या करके ब्रज में आय बसे बन गाय 359
सबरै ब्रज कौ मोह लियो राधा के रसिया श्याम ने 188
सबसौं सुन्दर है बरसानों ब्रज में राधा रानी कौ 448
समझाय लै अपनों कान्ह यानें मटकी मेरी फोरी 293
सररर सररर रे हाँ सररर सररर रे झूला झूलें राधेश्याम 223
सरस मधुर वृषभानु लाड़िली 10
सहारो राधा रानी को जाकी सरन बसै ब्रजराज 39
साँझी खेलैं छैल छबीली राधा श्रीवृषभानु दुलार 300
साँवरिया की प्यारी-प्यारी तिरछी नजरिया मर मर जाये गुजरिया 71
साँवरिया जान दै काहे मारग रोकै श्याम 282
साँवरिया मोते मत अटकै बजमारे 147
साँवरिया लाड़ला प्यारा राधिका लाड़िली प्यारी 36
साँवरिया होलै बोल पिछवारे वारी सुन लेंगी 163
साँवरे तोहे नन्द दुहाई अइयो रे कुँवर कन्हाई 208
सावन की अँधियारी रात बिजुरिया चमकै आरम्पार 216

सुन ब्रज के ठगैल मेरी छाँड़ दै रे गैल 385
सुन री यसोदा मैया री 136
सुनलै री यशोदा मैया ऊधमगारो री तेरो कृष्ण कन्हैया 151
सुन-सुन रसिया मीठी-मीठी नाहिं बजाओ बंसिया 309
सुनाय मुरली कन्हैया प्यारे मधुर मुरली की तान सुना रे 312
सुन्दर भानुराय की बेटी 263
सुन्दर श्याम सलोना सलोना मेरी सजनी 168
सोने के द्वै कमल खिले हैं राधा रानी के चरण 9
हँस हँस कण्ठ लगाय लै पियरवा 125
हम तोहे पुकारैं रह रह के किनारे ठाढ़ी जमुना के 436
हमकूँ कहा और सौं काम हमारी राधे महारानी 7
हमारी श्यामा प्यारी गोरी नथ वारी 43
हरि प्यारे की बंशी बजत आवै प्यारी श्री राधा जू नचत आवै 306
हरि बिन सब दुनिया सूनी मोय आवै हिचकी 496
हरि ही बनि गई ब्रज की गोपी ढूँढ़त हरि को आधी रात 337
हरि होरी कौ खिलार आयौ सब मिल घेरो री 367
हो कान्हा प्यारे सुना दे बँसुरिया 320
हो मोहना मेरे बागों में अैयो 161
होरी आई री बिरज में होरी आई री 377
होरी की मौज आई ऐ श्याम चले आओ 398
होरी खेलैं राधा यदुवीर बिरज में हररररर 395
होरी खेलै तो आय जैयौ बरसाने छैला श्याम 373
होरी गये रंग डार्यो रे काहे नन्दलाला 401
होरी में काहे भागै अरे लगवाय लै कजरा नंद जू के 399
होरी में कीरति ने समधिन जशुदा न्योत बुलाई है 379

श्री रमेश बाबा जी महाराज

श्री मानमंदिर सेवा संस्थान
गहवर वन, बरसाना, मथुरा
उत्तर प्रदेश २८१ ४०५ भारतवर्ष

www.brajdhamseva.org

मान मन्दिर
सेवा संस्थान ट्रस्ट
गहवरवन, बरसाना (मथुरा)

Save Yamuna river
www.SaveYamuna.org

Tel.: +91-99273 38666, 98376 79558, 99271 94000